पद्मावत

(सूची)

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन—सुलभ-साहित्य-माला—१६

मलिक मुहम्मद जायसी

कृत

पद्मावत

(पूर्वार्द्ध)

१ से २३वें खंड तक

सम्पादक

लाला भगवानदीन

प्रकाशक

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग

प्रथम वार १००० | संवत् १९८० | मूल्य सजिल्द १।) ,, साधारण १)

१९२४

विषय सूची

विषय	पृष्ठ

श्रीमान् महाराजा सर सयाजीराव गायकवाड़ बड़ौदा-नरेश

Krishna Press, Allahabad.

कृतज्ञता-प्रकाश

श्रीमान् बड़ौदा-नरेश महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ महोदय ने बम्बई के सम्मेलन में स्वयं उपस्थित होकर जो पांच सहस्र रुपये की सहायता सम्मेलन को प्रदान की थी उसी सहायता से सम्मेलन इस "सुलभ-साहित्य-माला" के प्रकाशन का कार्य कर रहा है। इस "माला" में जिन सुन्दर और मनोरम ग्रन्थ-पुष्पों का ग्रन्थन किया जा रहा है उनकी सुरभि से समस्त हिन्दी-संसार सुवासित हो रहा है। इस "माला" के द्वारा जो हिन्दी-साहित्य की श्रीवृद्धि हो रही है उसका मुख्य श्रेय श्रीमान् बड़ौदा-नरेश महोदय को है। श्रीमान् का यह हिन्दी-प्रेम भारत के अन्य हिन्दी-प्रेमी श्रीमानों के लिए अनुकरणीय है।

निवेदक—

मन्त्री,

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन,

प्रयाग।

पद्मावत

१—पहला खण्ड

सँवरउँ आदि एक करतारू । जेइ जिउ दीन्ह कीन्ह संसारू ॥
कीन्हेसि प्रथम जोति[1] परगासू । कीन्हेसि तिनहिँ प्रीति कयलासू[2] ॥
कीन्हेसि अगिनि पवन जल खेहा[3] । कीन्हेसि बहुतै रंग उरेहा ॥
कीन्हेसि धरती सरग पतारू । कीन्हेसि बरन बरन अवतारू ॥
कीन्हेसि दिन दिनअर[4] ससि राती । कीन्हेसि नखत तराइन पाँती ॥
कीन्हेसि धूप सीउ[5] औ छाँहाँ । कीन्हेसि मेघ बीजु[6] तेहि माहाँ ॥
कीन्हेसि सात दीप नव खंडा । कीन्हेसि चौदह भुवन अखंडा ॥

दोहा—कीन्ह सबै असजाकर दूसर छाज न काहु ।
पहिले ताकर नाउँ लै करौं कथा अवगाहु ॥ १ ॥

---

१ जोति=मुसलमानी मत से ईश्वर ने अपनी ज्योति से सर्वप्रथम मुहम्मद साहेब को पैदा किया और उन्हीं के लिए सारी सृष्टि पैदा की। इस अर्द्धाली में जायसी ने इसी घटना की ओर पाठक का ध्यान आकर्षित किया है। मुसलमानों की 'हदीस' में लिखा है—"अव्वलो मा खलक अल्लाहोनूरी" अर्थात् पहले ईश्वर ने अपनी ज्योति को प्रकाशित किया। फिर लिखा है—"लौ लाक लमा खलकतुल अफलाक"—अर्थात् अगर तू न होता तो सारे संसार और आकाश की सृष्टि भी न होती। (मुहम्मद साहेब की तारीफ़ में दूसरी अर्द्धाली देखो) २ कयलासू=अति ऊँचा स्थान, स्वर्ग, आकाश। ३ खेहा=धूल। ४ दिनअर=(दिनकर) सूर्य। ५ सीउ=शीत, सरदी। ६ बीजु=बिजली।

चौपाई

कीन्हेसि सात समुन्द्र अपारा । कीन्हेसि मेरु खिखिंड[1] पहारा ॥
कीन्हेसि नदी नार औ झरना । कीन्हेसि मगर मच्छ बहु बरना ॥
कीन्हेसि सीप मोति तेहिं भरे । कीन्हेसि बहुतै नग निरमरे[2] ॥
कीन्हेसि बनखँड औ जर मूरी । कीन्हेसि तरवर तार खजूरी ॥
कीन्हेसि साउज[3] आरन[4] रहहीं । कीन्हेसि पंखि[5] उड़ें जहँ चहहीं ॥
कीन्हेसि बरन सेत औ स्यामा । कीन्हेसि नींद भूख बिसरामा ॥
कीन्हेसि पान फूल बहु भोगू । कीन्हेसि बहु ओषद बहु रोगू ॥

दोहा—निमिष न लाग करत ओहि सबै कीन्ह पल एक ।
गगन अंतरिख[6] राखा बाज[7] खाँभ बिन टेक ॥ २ ॥

चौपाई

कीन्हेसि अगर कस्तुरी बेना[8] । कीन्हेसि भीमसेनि कपुरेना[9] ॥
कीन्हेसि नाग जो मुख विष बसा । कीन्हेसि मंत्र हरै जेहि डसा ॥
कीन्हेसि अमिरितु जियै जो पाई । कीन्हेसि विष जो मीचु जेहि खाई ॥
कीन्हेसि ऊख मीठ रस भरी । कीन्हेसि करुअ बेलि भुइँफरी[10] ॥
कीन्हेसि मधु लावै लै माँखी । कीन्हेसि भँवर पंखि औ पाँखी ॥
कीन्हेसि लोवा[11] इंदुर[12] चाँटी[13] । कीन्हेसि बहुत रहहिं खनि माँटी ॥
कीन्हेसि राकस[14] भूत परेता । कीन्हेसि भौकस[15] देव दयेता[16] ॥

दोहा—कीन्हेसि सहस अठारह[17] बरन बरन उपराजि[18] ।
भुगुति दिहिसि पुनि सब कहँ सकल साजना[19] साजि ॥३॥

---

१ खिखिंड=(किष्किंध)=बीहड़ वन । २ निरमरे=निर्मल । ३ साउज=वनजंतु । ४ आरन=(अरण्य)=वन । ५ पंखि=पक्षी । ६ अंतरिख=अंतरिक्ष=(खाली स्थान) । ७ बाज=विना, बगैर । ८ बेना=खस । ९ कपुरेना=कपूर (सभा की प्रति) १० भुइँफरी=भूमिफली नाम की एक लता विशेष जिसके फल कटु होते हैं । ११ लोवा=लोमड़ी । १२ इंदुर=मूस, चूहा । १३ चांटी=चींटी । १४ राकस=राक्षस । १५ भौकस=(भुवौकस)=भूमि पर रहनेवाले, थलचर । १६ दयेता=दैत्य । १७ अठारह=मुसलमान लोग सब सृष्टि के जीवों की संख्या १८००० ही मानते हैं । १८ उपराजना=पैदा करना । १९ साजना=साज सामान ।

चौपाई

कीन्हेसि मानुस दिहिस बड़ाई । कीन्हेसि अन्न भुगुति तेहिं पाई ॥
कीन्हेसि राजा भूजहिं[1] राजू । कीन्हेसि हस्ति घोर तिन्ह साजू ॥
कीन्हेसि तिनकहँ बहुत बिरासू[2] । कीन्हेसि कोइ ठाकुर[3] कोइ दासू ॥
कीन्हेसि दरब[4] गरब जेहि होई । कीन्हेसि लोभ अघाय न कोई ॥
कीन्हेसि जियन[5] सदा सब चहा । कीन्हेसि मीचु न कोऊ रहा ॥
कीन्हेसि सुख औ कोटि अनंदू । कीन्हेसि दुख चिंता औ दंदू[6] ॥
कीन्हेसि कोइ भिखारि कोइ धनी । कीन्हेसि बिपति संपदा घनी ॥

दोहा—कीन्हेसि कोइ निभरोसी[7] कीन्हेसि कोइ बरियार[8] ।
छारहिं ते सब कीन्हेसि पुनि कीन्हेसि सब छार ॥ ४ ॥

चौपाई

धनपति[9] वहै जेहि क संसारू । सबै देय नित घट न भँडारू ॥
जाँवत जगत हस्ति औ चाँटा[10] । सबकहँभुगुति[11] राति दिन बाँटा ॥
ताकर दृष्टि जो सब उपराहीं । मित्र सत्रु कोउ बिसरै नाहीं ॥
पंखि पतंग न बिसरै कोई । परगट गुपुत जहाँ लग होई ॥
भोग भुगुति बहु भाँति उपाई[12] । सबहिं खवावै आपु न खाई ॥
ताकर वहै जो खाना पियना । सबकहँदेयभुगुति औ जियना[13] ॥
सबहिं आस ताकर हर स्वासा । वह न काहु की आस निरासा ॥

दोहा—जुग जुग देत घटा नहिं उभै हाथ अस कीन्ह ।
औ जो दीन्ह जगत महँ सो सब ताकर दीन्ह ॥ ५ ॥

चौपाई

आदि एक बरनौं सो राजा । आदिहु अंत राज जेहि छाजा ॥
सदा सरबदा राज करेई । औ जेहि चहै राज तेहि देई ॥

---

१ भूजहिं=भोगते हैं। २ बिरासू=विलास। ३ ठाकुर=मालिक। ४ दरब=द्रव्य, धन। ५ जियन=जीवन, ज़िन्दगी। ६ दंदू=(द्वंद) दो विरोधी वस्तुओं का जोड़ा, जैसे—दुःख और सुख, सर्दी और गर्मी, रात और दिन, भला और बुरा इत्यादि। ७ निभरोसी=(निर्बलीयसी)=दुर्बल, कमज़ोर। ८ बरियार=बलवान। ९ धनपति=भंडारी, खजान्ची। १० चाँटा=चींटी। ११ भुगुति=(भुक्ति)=भोजन, ख़ूराक। १२ उपाई=पैदा की। १३ जियना=जीवन, जिन्दगी।

छत्रहि अछत[१] निछत्रहि छावा। दूसर नाहिँ जो सरवरि पावा॥
परबत ढाह देख सब लोगू। चाँटहिं करै हस्ति सरि[२] जोगू॥
बज्रहि तिनुका मारि उड़ाई। तिनहिँ बज्रकरि देइ बड़ाई॥
काहुइ भोग भुगुति सुखसारा। काहुइ भीख-भवन-दुख[३] मारा॥
ताकर कीन्ह न जानै कोई। करै सोइ मन चित[४] न होई॥

दोहा—सबै नास्ति[५] वह इस्थिर[६] ऐस साज जेहि केर।
एक साजै एक भाँजै[७] चहै सँवारै फेरि॥ ६॥

चौपाई

अलख रूप अबरन[८] सो करता। सब ओहि सौँ वह सब सौँ बरता॥
परगट गुपुत सो सरब-बियापी[९]। धरमी चीन्ह चीन्ह नहिँ पापी॥
ना ओहि पूत पिता नहिँ माता। ना ओहि कुटुँब न कोइ सँग नाता॥
जना न काहु न कोउ ओहि जना। जहँ लग सब ताकर सिरजना[१०]॥
वैं[११] सब कीन्ह जहाँ लग कोई। वह नहिँ कीन्ह काहु कर होई॥
हुत[१२] पहले औ अब है सोई। पुनि सो रहै रहै नहिँ कोई॥
और जो होय सो बाउर अंधा। दिन दुइ चारि मरै करि धंधा[१३]॥

दोहा—जो वैं चहा सो कीन्हेसि करै जो चाहै कीन्ह।
बरजनहार न कोऊ सबै चाहि[१४] जिउ दीन्ह॥ ७॥

चौपाई

यहि विधि चीन्हहु करौ गियानू। जस पुरान महँ लिखा बखानू[१५]॥

---

१ अछत=छत्रधारी को अछत्र बना देता है और छत्ररहित (रंक) के सिर पर छत्र छा देता है (राजा बनाता है) २ सरि=बराबरी। ३ भीख-भवन=(भिचा-भ्रमण) भीख के वास्ते इधर उधर घूमने के दुख से मारता है। ४ चिंत=वह ईश्वर ऐसा काम कर डालता है जो किसी के चिंतवन में भी न आया हो। ५ नास्ति=नाशवान। ६ इस्थिर=(स्थिर)=सदा एक सा रहनेवाला। ७ भाँजै=भंग करता है, तोड़ डालता है, बिगाड़ देता है। ८ अबरन=जिसका कोई रंग न हो, रंग रहित। ९ सरब-बियापी=सर्वव्यापी। १० सिरजना=सृष्टि, बनाई हुई वस्तु। ११ वैं=वह। १२ हुत=था। १३ धंधा=कामकाज। १४ सबै चाहि=सबसे बढ़कर। १५ बखानू=(व्याख्यान)=वर्णन।

जीव नाहिं पै जिय गोसाईं । कर नाहीं पै करै सबाईं[१] ॥
*जीभ नाहिं पै सब कुछ बोला । तन नाहीं सब ठाहर[२] डोला ॥
स्रवन नाहि पै सब कुछ सुना । हिया नाहिं पै सब कुछ गुना[३] ॥
नैन नाहिं पै सब कुछ देखा । कौन[४] भांति अस जाय बिसेखा ॥
ना कोऊ है ओहि के रूपा । ना ओहि सों कोउ आय अनूपा ॥
ना ओहि ठांउ न ओहि बिन ठाऊँ । रूप[५] रेख बिन निरमल नाऊँ ॥

दोहा—ना वह मिला न बीहर[६] ऐस रहा भरिपूर ।
दिष्टिवंत कहँ नियरे अंध मुरुख कहँ दूर ॥ ८ ॥

चौपाई

और जो दीन्हेसि रतन अमोला । ताकर मरम न जानै भोला[७] ॥
दीन्हेसि रसना औ रस भोगू । दीन्हेसि दसन जो विहसै जोगू ॥
दीन्हेसि जग देखन कहँ नैना । दीन्हेसि स्रवन सुनै कहँ बैना ॥
दीन्हेसि कंठ बोल जेहि माहाँ । दीन्हेसि कर-पल्लव बर बाहाँ ॥
दीन्हेसि चरन अनूप चलाहीं । सो पै मरम जानु जेहि नाहीं ॥
जोबन[८] मरम[९] जान पै बूढ़ा । मिलै न तरुनापा[१०] जग ढूंढ़ा ॥
सुख कर मरम न जानै राजा । दुखी जान जा कहँ दुख बाजा[११] ॥

---

१ सबाईं=सब कुछ । २-ठाहर=ठौर, स्थान, जगह । ३ गुना=सोचा और समझा । ४ कौन······बिसेखा=ऐसे ईश्वर का विशेष वर्णन कैसे किया जा सकता है । ५ रूप रेख=आकार और मूर्ति कुछ भी नहीं है, पर पवित्र नाम है । ६ बीहर=वीरर, विरल, (जो घना न हो), जुदा जुदा, दूर दूर पर । ७ भोला=मूर्ख । ८ जोवन=जवानी । ९ मरम=भेद । १० तरुनापा=जवानी । ११ बाजना=लड़ना । (सुख का मर्म राजा नहीं जानता, क्योंकि वह तो सदा सुख में ही रहता है, अतएव सुख का मर्म दुखी मनुष्य ही जानता है जिससे दुःख आकर लड़ाई करता है अर्थात् सुखी मनुष्य सुख की कदर नहीं जानता; जो बहुत दुःख उठाता है वही सुख की कदर जानता है)।

* मिलान के लियेः—

बिनु पद चलै सुनै बिनु काना । कर बिनु कर्म करै विधि नाना ।
आनन रहित सकल रस भोगी । बिनु बानी बकता बड़ जोगी ।

(तुलसीदास)

दोहा—मरम ज्ञान पै रोगी भोगी रहै निचिंत।
सब कर मरम सो जानै जो घट घट रह नित[1] ॥ ९ ॥

चौपाई

अति अपार करता कै करना[2]। बरनि न कोऊ पावै बरना ॥
*सात सरग जो कागद करई। धरती सात समुँद मसि[3] भरई ॥
जाँवत जग साखा वन ढाँखा[4]। जाँवत केस रोम पँखि पाँखा ॥
जाँवत खेह रेह दुनियाई। मेघ बूंद औ गगन तराई ॥
सब लिखनी[5] करि लिख संसारू। लिखि न जायँ गुन समुँद अपारू ॥
एत[6] कीन्ह सब गुन परगटा। वहि समुंद्र ते बूंद न घटा ॥
ऐस जानि मन गरब न होई। गरब करै मन बाउर सोई ॥

दोहा—बड़ गुनवंत गोसाईं चहै होय सो वेग।
औ अस गुनी सँवारै जो गुन करैं अनेग[7] ॥ १० ॥

मुहम्मद साहेब की तारीफ़

चौपाई

कीन्हेसि पुरुष एक निरमरा नाउँ मुहम्मद पून्योकरा[8] ॥
प्रथम[9] जोति विधि तिनहिं क साजी। औ तेहि प्रीति सिष्टि उपराजी ॥
दीपक ऐस जगत कहँ दीन्हा। भा निर्मल जग मारग चीन्हा ॥
जो न होत अस पुरुष उज्यारा। सूझि न परत पंथ अँधियारा ॥

---

१ नित=नित्य, सदा। २ करना=कार्य। ३ मसि=स्याही। ४ ढाँख=पलास वृक्ष। ५ लिखनी=कलम। ६ एत=इतना। ७ अनेग=(अनेक) बहुत से। ८ पून्योकरा=पूर्णमासी का संपूर्ण कला संयुक्त चंद्रमा। ९ प्रथम=(मिलान कीजिये—कीन्हेसि प्रथम जोति परगासू। कीन्हेसि तिनहिं प्रीति कयलासू।"

* देखो महिम्नस्तोत्र का—"असित गिरि समंस्यात् कज्जलं सिन्धु पात्रे सुरतरुवर शाखा लेखनी पत्र मुर्वीम। लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्व कालं तदपि तवगुणाना मीश पारं न याति ॥

दूसर[1] ठाउँ दई ओहि लिखे । भए धरमी जे पाढ़त[2] सिखे ॥
जिन्ह नहिं लीन्ह जनम वह नाऊँ । तिनकहँ दीन्ह नरक महँ ठाऊँ ॥
जगत बसीठ[3] दई[4] ओहि कीन्हा । दोउ जग तरा नाउँ जेइ लीन्हा ॥

दोहा—गुन औगुन विधि[5] पूछत होय लेख औ जोख ।
वहि विनवत आगे है करै जगत कर मोख[6] ॥ ११ ॥

चार यार का वर्णन

चौपाई

चारि मीत जो मुहम्मद ठाऊँ । चहूं क दुहुँ जग निर्मल नाऊँ ॥
अबाबक्कर सिद्दीक़ सयाने । पहले सिदिक[7] दीन[8] वेइ आने ॥
पुनि सो उमर खताब[9] सोहाये । भा जग अदल[10] दीन ओहि आये॥
पुनि उसमान जो पंडित गुनी । लिखा पुरान[11] जो आयत सुनी ॥
चौथे अली सिंह बरियारू । जिन्ह डर कांपै सरग पतारू ॥
चारों एक मते एक बाता । एक पंथ औ एक सँघाता[12] ॥
बचन एक जो सुनावहिं साँचा । भा परवान[13] दुहूं जग बाचा ॥

दोहा—जो पुरान विधि पठवा सोई पढ़त गिरंथ ।
औ जो भूले आवत सो सुनि लागत पंथ ॥ १२ ॥

---

१ दूसर=मुसलमानी मुख्य मंत्र में (कलमा शरीफ में) ईश्वर के नाम के बाद दूसरे स्थान पर मुहम्मद ही का नाम लिखा गया है । कलमा यों है:—"लाइलाह इल लिल्लाह मुहम्मद रसूलिल्लाह" । २ पाढ़त=वह पढंत अर्थात वह कलमा की शिक्षा । ३ बसीठ=पैगंबर, ईश्वर दूत । ४, ५ 'दई और विधि' शब्दों का प्रयोग जायसी ने 'ईश्वर' के अर्थ में बहुधा किया है । ६ मोख=क़यामत के दिन मुहम्मद साहेब की सिफारिश से मुसलमानों को मोक्ष मिलेगी । ७ सिदिक=दृढ़ विश्वास । ८ दीन=मुसलमानीय । ९ खताब=खताब के पुत्र । १० अदल= न्याय । ११ पुरान=मुहम्मद साहेब से सुनी हुई आयतें (कोरान शरीफ के मंत्र) यही महाशय लिखते जाया करते थे । १२ संघात=समूह, जमाअत । १३ पर-वान=जो लोग उनका वचन प्रमाण मानते थे वे दोनों लोकों के कष्टों से बच जाते थे।

सामयिक राजा शेरशाह सूर की तारीफ़

चौपाई

सेर साह देहली सुलतानू। चारहु खूंट[1] तपै जस भानू॥
ओही छाज छात औ पाटू[2]। सब राजन भुइँ धरा लिलाटू॥
जाति सूर औ खाँड़े सूरा। औ बुधिवंत सबै गुन पूरा॥
सूर-नवाई[3] नव खँड भई। सातौ दीप दुनी सब नई॥
तहँ लग राज खड़ग बर[4] लीन्हा। इसकंदर[5] जुलकरन जो कीन्हा॥
हाथ सुलैमां[6] केरि अँगूठी। जग कहँ दान दीन्ह भरि मूठी॥
औ अति गरुअ पुहुमिपति भारी। टेकि पुहुमि सब सिष्टि सँभारी॥

दो०—दीन्ह असीस मुहम्मद करहु जुगहि जुग राज।
पातसाह तुम जग के जग तुम्हार मुहताज[7]॥ १२॥

चौपाई

बरनौ सूर भूमिपति राजा। भूमि न भार सहै जेहि साजा॥
हय गय सैन चलै जग पूरी। परबत टूटि उड़हिं ह्वै धूरी॥
रेनु रइनि ह्वै रबिहि गरासा। मानुस पंखि लेहिं फिरि बासा॥
*सत खँड धरती भइ खट खंडा। ऊपर अष्ट होहिं ब्रह्मंडा॥
डोलै गगन इँदर डरि कांपा। बासुकि जाय पतारहिं चाँपा॥

खूंट=(छोर) दिशा। २ पाट=सिंहासन। ३ सूर-नवाई=शूरवीरों के झुकाने (विजित करने) की क्रिया। ४ बर=बल। ५ इसकंदर=सिकंदर जुलकर्नैन। ६ सुलैमान=एक प्राचीन यहूदी राजा जो बड़ा प्रतापी और दानी था। इसकी अंगुठी में यह सिद्धि थी कि ज्यों ज्यों दान देता त्यों त्यों धन बढ़ता था। ७ मुहताज=मुखापेक्षी। * यह उक्ति जायसी ने फिरदौसी के शाहनामा से ली है। फिरदौसी ने लिखा है:—

* زسم ستوران دران پہن دشت
زمین شش شدو آسمان گشت هشت (فردوسي)

मेरु धसमसै समुंद सुखाई। बनखँड टूटि खेह मिलि आई॥
अगिलन कहँ पानी खर[1] बाँटा। पछिलन कहँ नहिं काँदौ[2] आँटा[3]॥

दोहा—जे गढ़ नए न काहुइ चलत[4] होहिं ते चूर।
जो वह चढ़ै पुहुमिपति सेर साह जग सूर॥ १४॥

चौपाई

अदल कहौं जस पृथिमीं होई। चाँटा चलत न दुखवै कोई॥
नौशेरवाँ[5] जो आदिल[6] कहा। साह अदल सरि सो नहिं अहा॥
अदल कीन्ह उम्मर[7] की नाईं। फिरी अहान[8] सकल दुनियाईं॥
परी नाथ[9] कोउ छुवै न पारा। मारग मानुस सों उजियारा॥
गाय सिंह रेंगहिं एक बाटा। दोनौं पानि पियैं एक घाटा॥
नीर खीर छानै दरबारा। हंस करै ज्यौं नीर निनारा॥
धरम नियाउ चलै, सत भाषा। दूबर बरी एक सम राखा॥

दोहा—पुहुमी सबै असीसै, जोरि जोरि कै हाथ।
गंग जमुन जौ लहि जल, तौ लहि अमर सो नाथ॥ १५॥

चौपाई

पुनि रुपवंत बखानौं काहा। जाँवत जगत सबै मुख चाहा[10]॥
ससि चौदस जो दई सँवारा। तेहू चाहि[11] रूप उजियारा॥
पाप जाय जो दरसन दीसा। जग जोहारि[12] कै देइ असीसा॥
जैस भानु जग ऊपर तपा। सबै रूप ओहि आगे छपा[13]॥
अस भा सूर पुरुष निरमरा। सूर चाहि ओहि आगर[14] करा॥
सौंह दिष्टि कै हेरि न जाई। जेइँ देखा सो रह सिर नाई॥
रूप सवाई दिन दिन चढ़ा। बिधि सुरूप जग ऊपर गढ़ा॥

---

१ खर=लकड़ी घास। २ कांदौ=कीचड़। ३ आंटा=(अटना) काफी होना। ४ इसमें चपलातिशयोक्ति है। ५ नौशेरवां=फारिस देश का एक राजा जो न्याय करने में प्रसिद्ध था। ६ आदिल=न्यायी। ७ उम्मर=हज़रत उमर (चार यारों में से एक) ८ अहान=आख्यान, कथा, गाथा, कहावत, प्रसिद्धि, नेकनामी। ९ नाथ=नथ, नासाभूषण। १० चाहना=देखना। ११ चाहि=बढ़कर। १२ जोहारना=प्रणाम करना। १३ छपा=छिप गया, रात्रि। १४ आगर=सुन्दर, अच्छी।

दोहा—रूपवंत मनिमाथा[1], चंद्र घाटि वह बाढ़ ।
दरसन मदन लोभाना, अस्तुति बिनवैं ठाढ़ ॥ १६ ॥

चौपाई

पुनि दातार दई बड़ कीन्हा । अस जग दान न काहु दीन्हा ॥
बलि बिक्रम दानी बड़ अहे । हातिम[2] करन तियागी[3] अहे ॥
सेरसाह सरि पूज न कोऊ । समुंद सुमेरु घटहिं नित दोऊ ॥
दान डाँक[4] बाजै दरबारा । कीरति गई समुंदर पारा ॥
परसि सूर कंचन जग भयऊ । दारिद भागि दिसंतर[5] गयऊ ॥
जो कोइ जाय एक बेर माँगा । जनमहु भयो न भूखा नाँगा ॥
दस असुमेध जग्य जेइँ कीन्हा । दान[6] पुन्य सरि सौंह न चीन्हा ॥

दोहा—अस दानी जग उपजा सेरसाह सुलतान ।
ना अस भयो न होई ना कोइ देइ अस दान ॥ १७ ॥

गुरुपरंपरा वर्णन

चौपाई

सैयद अशरफ़[7] पीर पियारा । जिन्ह मोहिं पंथ दीन्ह उजियारा ॥
लेसा[8] हिये प्रेम कर दीया । उठी जोति भा निरमल हीया ॥
मारग हुत जो अँधेर असूझा । भा उजेर सब जाना बूझा ॥
खार समुंद्र पाप मोर मेला । बोहित[9] धरम लीन्ह कै चेला ॥
उन कर मोर पोढ़[10] कै गहा । पायों तीर घाट जेहिं रहा ॥

---

१ मनिमाथा=शिरःमणि, सिरताज । २ हातिम=अरब देश का एक प्रसिद्ध परोपकारी और दानी महात्मा । ३ तियागी=त्यागी । ४ डांक=डंका । ५ दिसंतर=देशान्तर । ६ दान......न चीन्हा=दान पुन्य में किसी को अपने बराबर नहीं समझा । ७ अशरफ़=सैयद अशरफ जहाँगीर चिश्ती । ८ लेसा=जलाया (दिया के लिये) ९ बोहित=जहाज । १० पोढ़ कै=(पुष्ट) मज़बूती से ।

जाकर ऐस होय कनहारा[1] । तुरत बाँह गहि लावै पारा ॥
दस्तगीर[2] गाढ़े के साथी । जहँ अवगाह[3] देहिं तहँ हाथी[4] ॥

दोहा—जहाँगीर[5] वै चिश्ती निःकलंक जस चाँद ।
वै मखदूम[6] जगत के हौं उनके घर बांद[7] ॥ १८ ॥

चौपाई

तिन्ह घर रतन एक निरमरा । हाजी सेख सबै गुन भरा ॥
तिन्ह घर दुइ दीपक उजियारे । पंथ देन कहँ दई सँवारे ॥
सेख मुबारक पून्यो करा । सेख कमाल जगत निरमरा ॥
दोउ अचल धुव डोलैं नाहीं । मेरु खिखिंड तिन्हहु उपराहीं ॥
दीन्ह रूप औ जोति गोसाईं । कीन्ह खाँभ दुइ जग के ताँईं ॥
दुहु खाँभ टेके सब मही । औ तिन्ह भार सिष्टि थिर रही ॥
जिन्ह दरसे औ परसे पाया । पाप हरे निरमल भइ काया ॥

दोहा—मुहम्मद सो निहचिंत पथ जेहि सँग मुरशिद[8] पीर[9] ।
जेहिक नाव वै खेवक[10] बेगि लाग सो तीर ॥ १९ ॥

चौपाई

गुरु मुहिदीं[11] खेवक मैं सेवा । चलै उतायल[12] जिन्ह कर खेवा ॥
अगुवा भयो सेख बुरहानू । पंथ लाय तिन्ह दीन्ह गियानू ॥
अलहदाद भल तिन्ह कर गुरू । दीन दुनी रोसन[13] सुरुखुरू[14] ॥
सैयद मुहमद के वै चेला । भया सिद्ध जो उन्ह सँग खेला ॥
दानियाल गुरु पंथ लखाई । दरसन ख्वाज खिजिर जिन्ह पाई ॥

---

१ कनहार=(कर्णधार) केवट, खेनेवाला । २ दस्तगीर=हाथ पकड़ने वाला (फारसी) । ३ अवगाह=अथाह । ४ हाथी=हाथ का सहारा । ५ 'जहाँगीर'= सैयद अशरफ का लक्ब था और "चिश्ती" उनकी वंशपरंपरा थी । ६ मख-दूम=सेव्य, पूजनीय । ७ बांद=बंदा, चेरा, दास । ८ मुरशिद=सीधा रास्ता दिखाने वाला । ९ पीर=गुरु । १० खेवक=खेनेवाला । ११ मुहिदीं=सैयद मुहीउद्दीन (जायसी के मंत्र गुरु) । १२ उतायल=वेग से । १३ रोसन=प्रसिद्ध । १४ सुरुखुरू= सर्वमान्य ।

भये प्रसन्न उन हजरत ख्वाजे। लै मेरये[१] जिन्ह सैयद राजे॥
उन्ह सों मैं पाई जप[२] करनी[३]। उघरी जीभ प्रेम-कवि[४] बरनी॥

दोहा—वै सु गुरू हौं चेला नित विनवौं भा चेर।
उन्ह हुत[५] देखे पायौं दरस गोसाईं[६] केर॥ २०॥
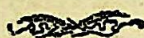
कवि परिचय

चौपाई

*एक नयन कवि मुहमद गुनी। सोइ विमोहा जेइँ कवि[७] सुनी॥
चाँद जैस जग विधि अवतारा। दीन्ह कलंक कीन्ह उजियारा॥
जग सूझा एकै नयनाँहाँ। उआ सूक[८] जस नखतन माँहाँ॥
जौलहि आँवहि डाभ[९] न होई। तौलहि सुगँध बसाइ न कोई॥
कीन्ह समुंदर पानि जो खारा। तौ अस भयो असूझ अपारा॥
जो सुमेर तिरसूल बिनासा। भा कंचन कर लागु अकासा॥
जौलहि घरी[१०] कलंक[११] न परा। तौलहि होय न कंचन खरा॥

दोहा—एक नयन जस दरपन औ निरमल तेहिं भाउ।
सब रुपवंते पाउँ गहि मुख देखै कर चाउ॥ २१॥

चौपाई

चारि मीत कवि मुहमद पाये। जोरि मिताई सरि[१२] पहुँचाये॥
यूसुफ मलिक पंडित औ ज्ञानी। पहिले बात भेद उन्ह जानी॥

---

१ मेरये=मिला दिया। २ जप=ईश्वर स्मरण की युक्ति। ३ करनी=नित्य कृत्य की विधि। ४ प्रेम-कवि=प्रेम काव्य, प्रेममय कथा। ५ हुत=द्वारा, जरिये से। ६ गोसाईं=ईश्वर। ७ कवि=काव्य, कविता। ८ सूक=शुक्र (ग्रह) ९ डाभ=दाग़ (जैसा कोइली में काला दाग होता है।) १० घरी=घरिया जिसमें रखकर सुनार लोग सोना चांदी गलाते हैं। ११ कलंक=पारे और गंधक की कजली। १२ सरि=बराबरी। * जायसी बाईं आँख के काने और बाएँ कान के बहरे थे—(देखो उत्तरार्द्ध दोहा २८)

पुनि सलार कादिम मति माँहाँ। खाँड़े दान उभै नत[1] बाँहाँ॥
मियाँ सलोने सिँह बरियारू। बीर खेतरण खरग जुझारू॥
सेख बड़े बुधिसिंधु बखाना। किय अदेस[2] बड़ सिद्धन माना॥
चारिउ चतुरदशा[3] गुन पढ़े। औ सँग जोग, गुसाईं गढ़े॥
बिरिछ जो आछहि[4] चंदन पासा। चंदन होय भेदि तेहि बासा॥

दोहा—मुहमद चारो मीत मिलि भये जो एकहि चित्त।
यहि जग साथ जो नियहा ओहि जग बिछुरन कित्त॥ २२॥

कवि वासस्थान वर्णन

चौपाई

जायस नगर धरम अस्थानू। तहाँ आय कवि कीन्ह बखानू॥
औ बिनती पंडितन सौं भाषा। टूटि सँवारहु मेरवहु साखा॥
हौं सब कवियन कर पछलगा। तिन्हाबल कछुक चलौं दै डगा[5]॥
हिय भँडार नग आहि जो पूँजी। खोली जीभ तार की कूँजी[6]॥
रतन पदारथ बोले बोला। सुरस[7] प्रेम मधु भरे अमोला॥
जेहि के बोल बिरह के घाया[8]। का तेहिँ रूप सो का तेहिँ माया[9]॥
फ़ेरे[10] भेस रहै भा तपा[11]। धूर लपेटा मानिक छपा[12]॥

दोहा—मुहम्मद कवि[13] जो प्रेम की ना तेहिँ रकत न माँसु।
जेइँ मुख देखा सो हँसा सुनी तेहिँ आये आँसु॥ २३॥

---

१ नत (उन्नत)=ऊंचा (यहां कवि ने "ऊ" उपसर्ग का लोप किया है)। २ अदेस (आदेश)=आज्ञा। ३ चतुरदशा=चौदह। ४ आछहि=होता है। ५ डगा=डग, पैग। ६ कूंजी=कुंजी, ताली, उघन्नी। ७ सुरस=स्वादिष्ट। ८ घाया=घाव, जखम। ९ माया=धन। १० फेरे=बदले हुए। ११ तपा=तपस्वी। १२ छपा=छिपा हुआ। (मिलाओ—"मानुष सङ्कर भरे धूर भरे हीरा हैं"—ठाकुर कवि)। १३ कवि=काव्य।

समय और कथा-मूल वर्णन

चौपाई

सन नौ सै सैंतालिस अहै। कथा उरेहि[1] बैन कवि कहै॥
सिंघल दीप पदुमिनी रानी। रतन सेन चितउर[2] गढ़ आनी॥
अलउदीन[3] दिहली सुलतानू। राघौचेतन[4] कीन्ह बखानू॥
सुनि पदुमिनि गढ़ छेंका आई। हिंदू तुरकन भई लराई॥
आदि अंत जस गाथा अही। कइ चौपाई भाषा कही॥
*कवि वियास[5] रस कँवल अपूरे। दूरिन्ह नेरे नेरेन्ह दूरे॥
नियरें दूर फूल जस काँटा। दूरहिं नियर सो जस गुरु चाँटा॥
दोहा—भँवर आय बनखंड सों लेय कमल रस बास।
दादुर[6] बास न पावई फुलहिं ओ आछे[7] पास॥ २४॥

दूसरा खण्ड

सिंघलदीप वर्णन

चौपाई

सिंहलदीप कथा अब गाऊँ। औ सो पदुमिनि बरनि सुनाऊँ॥
बरनक[8] दरपन भाँति विसेषा। जेहि जस रूप सो तैसहिं देखा॥
धनि सो दीप जहँ दीपक नारी। पदुमिनि दिव्य[9] दई अवतारी॥
सात दीप बरनैं सब लोगू। एको दीप न ओहि सरि जोगू॥

---

१ उरेहि=चित्रित करके, ढाँचा बनाकर। २ चितउर=चित्तौर। ३ अलउदीन=अलाउद्दीन खिलजी। ४ 'राघौचेतन' नामक व्यक्ति ने अलाउद्दीन से रानी पद्मिनी की सुन्दरता का वर्णन किया था। ५ वियास=व्यास, कथा वांचनेवाला ब्राह्मण।

* कविजन और व्यास लोग रस से भरे हुए कमल हैं। (गुणग्राही) दूर निवासियों के लिये निकट वासी ही के समान हैं, और अगुणग्राही निकट निवासियों के लिये दूर निवासी के समान हैं।

६ दादुर=मेंढक। ७ आछे=है, रहता है। ८ बरनक=वर्णन। ९ दिव्य=देवतारूप (अतिसुन्दर)

दिया-दीप नहिं तस उजियारा। सरन्दीप सरि होइ न पारा॥
जंबू दीप कहौं तस नाहीँ। लंक दीप पूज[1] न परछाहीँ॥
दीप कुँभस्थल आरन[2] परा। दीप महुस्थल मानुस हरा॥
दोहा—सब संसार पिरथमी[3] आयँ सो सातो दीप।
एको दीप न उत्तिम सिंघल दीप समीप॥ २५॥

चौपाई

गंध्रप सेन सो खंड नरेसू। सो राजा वह ताकर देसू॥
लंक सुना जो रावन राजू। तेहू चाहि[4] बड़ ताकर साजू॥
छप्पन कोटि कटक दल साजा। सबै छत्रपति औ गढ़राजा॥
सोरह सहस घोर घोरसारा[5]। साँवकरन[6] जस बाँक तुखारा[7]॥
सात सहस हस्ती सिंघली। जनु कैलास[8] ऐरावत बली॥
अश्वपतिक[9] सिरमौर[10] कहावै। गजपतीक आँकुस गज नावै[11]॥
नरपतीक कहु[12] और नरिंदू। भूपतीक जग दूसर इन्दू[13]॥
दोहा—ऐस चक्कवै[14] राजा चहूंखंड भव[15] होय।
सबै आय सिर नावैं सरवरि[16] करै न कोय॥ २६॥

चौपाई

जो ओहि दीप नियर भा जाई। जनु कैलास तीर भा आई॥
घन अँवराउ[17] लाग चहुं पासा। उठी पुहुमि हुति लागि अकासा॥
तरवर[18] सबै मलयगिर[19] लाये। भइ जग छाँह रैनि ह्वै आये॥
मलय समीर सोहाई छाँहाँ। जेठ जाड़ लागै तेहिं माँहाँ॥
ओही छाँहँ रइनि ह्वै आवै। हरियर सबै अकास दिखावै॥

---

१ पूज न=बराबरी नहीं कर सकता। २ आरन (अरण्य)=जंगल। ३ पिरथमी=पृथ्वी। ४ चाहि=बढ़कर। ५ घोरसारा=अस्तबल, पैंड़ा। ६ साँवकरन=श्याम कर्ण। ७ तुखारा=सपेद रंग का घोड़ा। ८ कैलास=इन्द्रलोक, स्वर्ग। ९ अश्वपतिक=शहसवार (अच्छा घोड़सवार)। १० सिरमौर=सरदार। ११ नावै=अंकुश से हाथी को झुका देता है। १२ कहु=गोया, मानो। १३ इन्दु=इन्द्र। १४ चक्कवै=चक्रवर्ती। १५ भव=भय, डर। १६ सरवरि=बराबरी। १७ अँवराउ=आम का बगीचा। १८ तरवर=पेड़। १९ मलयगिर लाये=चंदन लगाये हुए हैं, सुगंध पूर्ण हैं।

पथिक[1] जो पहुँचै लहिकै घाना। दुख बिसरै सुख होय बिसरामा॥
जेइँ वह पाई छाँह अनूपा। बहुरि न आय सहै यह धूपा॥

दोहा—अस अँबराउ सघन घन बरनि न पारौं अंत।
फूलै फरै छहूं रितु जानौ सदा बसंत॥ २७॥

चौपाई

फरे आँब अति सघन सोहाये। औ जस फरे अधिक सिर नाये॥
कटहर डार पेड़ सों पाके। बड़हर सो अनूप अति ताके॥
खिरनी पाकि खाँड़ अस मीठी। जामुनि पाकि भँवर अस दीठी॥
नरियर फरे जो फरी खजूरी। फरी जानु इँदरासनपूरी[2]॥
महुवा चुवैं सो अधिक मिठासू। मधु जस मीठ पुहुप जस बासू॥
और खजहजा[3] आव न नाऊँ। देखा सब रावन[4] अँबराऊ॥
लाग सबै जस अमिरित साखा। रहै लोभाइ सोइ जो चाखा॥

दोहा—लौंग सुपारी जायफर सब फर फरे अपूर।
आसपास घन इँबिली औ घन तार[5] खजूर॥ २८॥

चौपाई

बसहिं पंखि बोलहिं बहु भाषा। करहिं हुलास देखि कै साखा॥
भोर होत बोलहिं चुहँचूँहीं[6]। बोलहिं पंडुक[7] एकै तूहीं॥
सारो सुवा सो रहचह[8] करहीं। घुरहिं[9] परेवा[10] औ करबरहीं[11]॥
पिउ पिउ लागे करै पपीहा। तुहीं तुहीं कर गड़रू खीहा[12]॥

---

१ पथिक=मुसाफिर। २ इन्दरासनपूरी=अमरावती। ३ खजहजा=अनेक प्रकार के छोटे मोटे मेवे। ४ रावन=राजाओं के। ५ तार=ताल। ६ चुहँचूँही=एक पक्षी विशेष जो बड़े सवेरे "चुहचुह" शब्द बोलता है। ७ पंडुक='पेंडुकी' जो "एकतुही, एकतुही" शब्द बोलता है। ८ रहचह=बोलचाल, संभाषण। ९ घुरहिं='घुटुरगूं' शब्द करते हैं। १० परेवा=कबूतर। ११ करबरहीं=कलबल करते हैं, सुंदर शब्द करते हैं (कलरव करते हैं)। १२ खीहा=(खीझा) बोलता है, गड़रू नामक पक्षी "तुही तुही" शब्द इस प्रकार बोलता है, मानो किसी पर क्रुद्ध हो रहा है।

कुहू कुहू कोयल कै राखा। औ भृँगराज[1] बोल बहु भाषा॥
दही दही कै महर[2] पुकारा। हारिल[3] विनवै आपन हारा॥
कुह कहिँ मोर सुहावन लागा। होइ कुराहर[4] बोलहिँ कागा॥

दो०—जाँवत पंखि कहे सब बैठे भरि अँबराउ।
आपन आपन भाषा लेहिँ दइउ[5] कर नाउँ॥ २९॥

चौपाई

पैग पैग पर कुँवा बावरी। साजे बैठक और पाँवरी[6]॥
और कुंड बहु ठावैं ठाऊँ। सब तीरथ औ तिनके नाऊँ॥
मठ मंडफ चहुँ पास सँवारे। जपा तपा सब आसन मारे॥
कोइ रिषीसुर कोइ सन्यासी। कोइ रामजन कोइ मसबासी[7]॥
कोइ महेसुर जंगम जती। कोइ पूजै देवी कोउ सती॥
कोई बरमचर्ज पथ लागे। कोइ दिगंबर आछहिँ नाँगे॥
कोइ मुनि संत सिद्ध कोइ जोगी। कोइ निरास पँथ बैठ बियोगी॥

दो०—सेवरा[8] खेवरा[9] पारथी[10] सिध साधक अवधूत।
आसन मारे बैठि सब जारैं आतमभूत[11]॥३०॥

चौपाई

मानसरोंवर बरनौं काहा। भरा समुँद अस अति अवगाहा[12]॥
पानि मोति अस निरमल तासू। अमिरित बरन कपूर सुबासू॥
लंकदीप की सिला अनाई[13]। बाँधे सरवर घाट बनाई॥
खँड खँड सीढ़ी भूमि गरेरी[14]। उतरहिँ चढ़हिँ लोग चहुँ फेरी॥
फूले कँवल रहा होइ राता। सहस सहस पँखुरिन के छाता॥

---

१ भृँगराज=भुजंगा नामक पक्षी जिसे 'करचोटिया' भी कहते हैं, यह पक्षी अनेक प्रकार की बोली बोलता है। २,३ महर, हारिल=पक्षी विशेष। ४ कुराहर=कोलाहल। ५ दइउ=(देव) ईश्वर। ६ पांवरी=सीढ़ी। ७ मसबासी=वे साधु जो एक स्थान पर एक ही मास ठहरते हैं। ८, ९, १० सेवरा, खेवरा, पारथी=जैन मतावलंबी साधु विशेष। ११ आतमभूत=वासनायें। १२ अवगाह=अथाह। १३ अनाई=मँगवाकर। १४ गरेरी=चारों ओर घूमी हुई।

उथलेहिँ[1] सीप मोति उतराहीँ। चुगहिँ हंस औ केलि कराहीँ॥
कनक[2] पँखुरि पैरहिँ अति लोने। जानो छतर सँवारे सोने॥

दो०—ऊपर पारि[3] चहूँ दिस अमृत फर सब रूख।
देखि रूप सरवर कर गइ पियास औ भूख॥ ३१॥

चौपाई

पानि भरन आवैं पनिहारी। रूप सुरूप पदमिनी नारी॥
पदुम गंध तिन अंग बसाहीँ। भँवर लाग तिन संग फिराहीँ॥
लंक सिंहिनी सारँग नैनी। हंसगामिनी कोकिल बैनी॥
आवहिँ चहुं दिस पाँतिहिँ पाँती। गवन सोहाय सो भाँतिहिँ भाँती॥
केस मेघावर[4] सिरता[5] पाइँ। चमकैं दसन बीजु की नाइँ॥
कनक कलस मुख चंद दिपाहीँ[6]। रहस केलि सों आवहिँ जाहीँ॥
जा सौहैं[7] हेरैं चखु[8] नारी। बाँक नयन जनु हनैं कटारी॥

दो०—मानो मयन-सुरति सब अपछुर[9] बरन अनूप।
जेहि की अस पनिहारीँ ते रानी कस रूप॥ ३२॥

चौपाई

ताल तलाब सो बरनि न जाहीँ। सूझै वार पार तिन्ह नाहीँ॥
फूले कँवल* कुमुद उजियारे। जानो उये गगन महँ तारे॥
उतरहिँ मेघ चढ़हिँ लै पानी। चमकहिँ मच्छ बीजु[10] की बानी॥
पैरहिँ पंखि सो संगहि संगा। सेत पियर राते[11] बहुरंगा॥
चकई चकवा केलि कराहीँ। निसि के बिछुरे दिनहिँ मिलाहीँ॥
कुरलैं[12] सारस भरे हुलासा। जीवन मरन सु एकहि पासा॥

---

१ उथलेहिँ=कम गहरे पानी में। २ कनक पँखुरि=वह कमल जिसकी पँखुरी सोने के से रंग की थीं। ३ पारि=सरोवर के गिर्द का बांध। ४ मेघावरि=मेघावली, मेघसमूह। ५ सिरतापाइँ=सिर से पैर तक। ६ दिपाहीँ=चमकते हैं। ७ सौहैं=सन्मुख। ८ चखु=नेत्र। ९ अपछुर=अप्सरा। १० बीजु की बानी=बिजली की तरह। ११ राते=लाल। १२ कुरलैं=कुरं कुरं करते हैं।

* कँवल कुमुद उजियारे=वे कमल जो कुइं की तरह सफेद थे (पुंडरीक)

बोलहिँ सोनढँक[1] बक-लेदी[2]। रहे अबोल[3] मीन जलभेदी॥
दोहा—नग[4] अमोल तहँ ऊपजैं दिनहिं बरैं जस दीप।
जो मरजीया[5] होय तहँ सो पावै वे सीप॥ ३३॥

चौपाई

आस पास बहु अमिरित बारी[6]। फरीं अपूर[7] होइ रखवारी॥
नौरँग नीबू तुरँज जँभीरी। औ बदाम बहु बेद—अँजीरी[8]॥
गलगल[9] तुरँज सदाफर[10] फरे। औ अनार राते रसभरे॥
किसमिस सेव फरे नौपाता[11]। दारिउँ दाख देखि मन राता॥
लागि सोहाई हरफारयौरी। उनै रही केरा की घौरी[12]॥
फरे तूत कमरख औ न्यौजी[13]। राय करौंदा बेर चिरौंजी॥
संगतरा औ छुहारा डीठे। और खजहजा[14] खाटे मीठे॥
दोहा—पानि देहिं खँडवानी[15] कुवहिं खाँड़ बहु मेलि।
लागी घरी[16] रहँट की सींचैं अमृत बेलि॥ ३४॥

चौपाई

बहु फुलवारि लागि चहुँ पासा। बिरिछ बेधि चंदन भइ बासा॥
बहुत फूल फूले घनबेली[17]। क्यौड़ा चंपा कुंद चँबेली॥
सुरँग गुलाब कदम औ कूजा[18]। सुगँध-बकौरी[19] गँधरप[20] पूजा॥
नागेसर सदबरग[21] नेवारी। और सिंगार-हार फुलवारी॥

---

१ सोनढँक=लंबी गर्दन वाला एक जलपक्षी। २ लेदी=एक छोटी मछलीख़ोर चिड़िया। ३ अबोल=चुपचाप, ख़ामोश। ४ नग=मोती। ५ मरजीया=गोताखोर। ६ बारी=वाटिका। ७ अपूर=आपूर्ण, बहुत अधिक। ८ बेद अंजीरी=बेद अंजीर (एक फल) ९ गलगल=एक प्रकार का निंबू। १० सदाफर=शरीफ़ा। ११ नौपाता=नाशपाती। १२ घौरी=घौद, फलों का गुच्छा। १३ न्यौजी=चिलगोजा। १४ खजहजा=अनेक प्रकार के मेवा। १५ खँडवानी=(खाँड़+पानी) शरबत। १६ घरी=रहँट की थैली। १७ घनबेलि=मोंगरा। १८ कूजा=कुब्जक (एक पुष्प विशेष) १९ सुगँध-बकौरी=सुगंधित बकावली। २० गँधरप=राजा गंधर्वसेन की पूजा के फूल। २१ सदबरग=हजारा गेंदा।

सोनजरद[१] फूली सेवती। रूप-मंजरी[२] और मालती॥
जाहीजूही बकुचन[३] लावा। पुहुप सुदरसन[४] लागु सोहावा॥
मौलसिरी वेला औ करना[५]। सबै फूल फूले बहु बरना॥
दोहा—तिन्ह सिर फूल चढ़ैं वे जिन्ह माथे भल भाग।
आछे सदा सुगंध भइ जनु बसंत औ फाग॥ ३५॥

चौपाई

सिंघल नगर देखि पुनि बेसा[६]। धनि राजा अस जाकर देसा॥
ऊँची पँवरी[७] ऊँच अवासा[८]। जनु कैलास इंद्र कर बासा॥
राउ राँक सब घरघर सुखी। जेहि देखा सो हँसतामुखी॥
रचि रचि साजे चंदन चउरा। पोते अगर मेद[९] औ क्यौरा॥
सब चौपारिन चंदन खँभा। ओठँगि[१०] सभापति बैठे सभा॥
जनउँ सभा देउतन कै जुरी। परै दिष्टि इंदरासन-पुरी॥
सबै गुनी पंडित औ ज्ञाता। संसकिरित सब के मुख बाता॥
दोहा—अह निसि[११] पंथ सँवारे जनु शिवलोक अनूप।
घर घर नारी पदुमिनी सब अपछर के रूप॥ ३६॥

चौपाई

पुनि देखी सिंघल की हाटा। नौ निधि लछिमी चमकै बाटा॥
कनक हाट सब कुंकुहि[१२] लीपी। बैठ महाजन सिंघल दीपी॥
रचे चौहटा रूपे ढारे। चित्र कटाव अनेक सँवारे॥
सोन रूप भल भयो पसारा। धवलसिरी[१३] पोते घर बारा॥
रतन पदारथ मानिक मोती। हीरा पन्ना सरस सु जोती॥
औ कपूर बेना[१४] कस्तूरी। चंदन अगर रहा भरपूरी॥
जेइ न हाट यहि लीन्ह बेसाहा[१५]। ता कहँ आन हाट कित लाहा॥

---

१ सोनजरद=सोने के समान पीली। २ रूपमंजरी=पुष्प विशेष। ३ बकुचन=(बकुचा भर) बहुत अधिक। ४, ५ सुदरसन, करना पुष्प विशेष। ६ वेस=(वेश) बहुत सुंदर। ७ पँवरी=दहलीज, ड्योढ़ी। ८ अवासा=महल। ९ मेद=कस्तूरी। १० ओठँगि=सहारा लेकर बैठना। ११ अहनिसि=रातोदिन। १२ कुंकुहि=कुमकुम (केसर)। १३ धवलसिरी=सफेदी, सफेद रंग (चूना वा खरिया मिट्टी)। १४ वेना=खस। १५ बेसाहा=खरीद, सौदा।

दोहा—कोऊ करै वेसाहनी काहू केर बिकाय।
कोऊ चलै लाभ सौं कोऊ मूर[1] गँवाय ॥ ३७ ॥

चौपाई

पुनि सिंगारहाट[2] भल देसा। किय सिंगार बैठीं जहँ वेस्या ॥
मुख तँबोल[3] तन चीर कुसुंभी। कानन कनक जराऊ खुंभी[4] ॥
हाथ बीन सुनि मिरिग भुलाहीं। नर मोहहिं सुनि पैग न जाहीं ॥
भौंहँ धनुष तिन नैन अहेरी[5]। मारहिं बान सैन सौं फेरी ॥
अलक कपोल डोल हँसि देहीं। लाय कटाच्छ मारि जिउ लेहीं ॥
कुच कंचुकि जानहु जुग सारी[6]। अंचर देहिं सुभायहि ढारी ॥
केत[7] खेलार हार तिन्ह पाँसा। हाथ झारि है चलहिं निरासा ॥

दोहा—चेटक[8] लाय हरहिं मन जौ लग है गथ[9] फेंट[10]।
साँठ[11] नाठि उठि भागहिं ना पहिचान न भेंट ॥ ३८ ॥

चौपाई

लै कै फूल बैठि फुलहारी[12]। पान अपूरब धरे सँवारी ॥
सोंधा[13] सबै बैठु लै गाँधी[14]। मेलि कपूर खिरौरी[15] बाँधी ॥
कतहूं पंडित पढ़ै पुरानू। धरम ग्रंथ कर करहिं बखानू ॥
कतहूं कथा कहै कछु कोई। कतहूं नाच कूद भल होई ॥
कतहुं चिरहँटा[16] पंखी लावा। कतहुँ पखंडी[17] काठ[18] नचावा ॥
कतहूँ नाद[19] सबद है भला। कतहूँ नाटक चेटक कला।
कतहूँ ठगैं ठग-विद्या लाई। कतहुँ लेहिं मानुष बौराई ॥

---

१ मूर=मूलधन। २ सिंगारहाट=वेश्याओं का बाज़ार, चकला। ३ तंबोल=पान। ४ खुंभी=करनफूल, कर्ण भूषण। ५ अहेरी=शिकारी। ६ सारी=चौपड़ की गोट। ७ केत=कितने ८ चेटक=चालाकी। ९ गथ=पूंजी, धन। १० फेंट=फेंटा, कमरबंद। ११ साँठ=धन, पूंजी। १२ फुलहारी=मालिन। १३ सोंधा=सुगंधित द्रव्य। १४ गांधी=गंधीगर, अतर फुलेल बेचने वाला। १५ खिरौरी=(खैरौरी) खैर की गोलियां। १६ चिरहँटा=चिड़िया पकड़ने वाला। १७ पखंडी=तमाशे वाला। १८ काठ=कठपुतरी। १९ नादसबद=गान वाद्य, गानां बजाना।

दोहा—लोभी धूरत चोर ठग गठछोरा ये पाँच।
जो यहि हाट सजग भा ताकर गथ पै बाँच ॥ ३९ ॥

चौपाई

पुनि आये सिंघलगढ़ पासा। का बरनौं जनु लाग अकासा ॥
तरेहिं कुरुम बासुकि की पीठी। ऊपर इन्द्र लोक पर डीठी ॥
परा खाँव[1] चहुँ दिस तस बाँका। काँपै जाँघ जाय नहिं झाँका ॥
अगम असूझ देखि डर खाई। परै सो सपत पतारै जाई ॥
नौ पँवरी बाँके नव खंडा। नवौ जो चढ़ै जाय ब्रहमंडा[2] ॥
कंचन कोट जड़े नग सीसा। नखतन भरा गगन जनु दीसा ॥
लंका चाहि[3] ऊंच गढ़ ताका। निरखि न जाय दिष्ट मन थाका ॥

दोहा—हिय न समाय न दिष्टि गति जानहु ठाढ़ सुमेरु।
कहँ लग कहौं उँचाई कहँ लग बरनौं फेरु[4] ॥ ४० ॥

चौपाई

नित गढ़ बाँचि चलैं ससि सूरू। नाहिंत बाजि[5] होय रथ चूरू ॥
पँवरी नवौ वज्र की साजे। सहस सहस तहँ बैठे पाजे[6] ॥
फिरैं पाँच कोतवार[7] सो भँवरी[8]। कँपै पाँउ चाँपत वै पँवरी ॥
पँवरिहि पँवरि सिंह गढ़ि काढ़े। डरपहि राउ देखि तिन्ह ठाढ़े ॥
बहु बनाव वे नाहर गढ़े। जनु गाजहिँ चाहहिँ सिर चढ़े ॥
टारहिँ पूंछि पसारहिँ जीहा। कुंजर डरहिँ कि गंजहिँ लीहा[9] ॥
कनक सिला गढ़ि सीढ़ी लाईं। जगमगाहि गढ़ ऊपर ताईं ॥

दो०—नवौ खंड नव पँवरीँ औ तिन्ह वज्र कँवार।
चारि बसेरे सौं चढ़ै सत सौं चढ़ै सो पार ॥ ४१ ॥

चौपाई

नौ पँवरीँ पर दसौं दुवारू। तेहि पर बाज राज घरियारू ॥
घरी सो बैठि गनैं घरियारी। पहर पहर पर फेरैं पारी ॥

---

१ खाँव=खंदक। २ ब्रहमंडा=आकाश। ३ चाहि=बहुत अधिक। ४ फेरु=घेरा। ५ बाजि=भिड़कर, टक्कर खाकर (बाजना=लड़ना, भिड़ना) ६ पाजे=प्यादे, पदचर सिपाही। ७ कोतवार=कोतवाल (कोटपाल) ८ भौंरीफिरना=गश्त लगाना, रौंद पर फिरना। ९ गजहिं लीहा=गंजन कर डाला, मारडाला।

जबहिं घरी पूजै ओहि मारा। घरी घरी घरियार पुकारा॥
परा जो डाँड़[1] जगत सब डाँड़ा[2]। "का निश्चित माटी के भाँड़ा"॥
तुम तेहि चाक चढ़े होइ काँचे। आऊ[3] भरै न थिर हैं बाँचे॥
घरी जो भरी घटी तुम्ह आऊ। का निचिंत भा सोवै बटाऊ॥
पहरहिं पहर गजर नित होई। हिया बज्र भा जागु न कोई॥

दो०—मुहमद जीवन जलभरन घरी रहँट की रीति।
घरी आई जीवन[4] भरी ढरी जनम[5] गा बीति॥ ४२॥

चौपाई

गढ़पर नीर खीर[6] दुइ नदी। पानि भरैं मानहु दुरपदी[7]॥
और कुंड एक मोती चूरू[8]। पानी अमिरितु कीच कपूरू॥
ओहिक पानि राजा पै पिया। बृद्ध होय नहिं जौलहि जिया॥
कंचन बिरिछ एक तेहि पासा। कलप बिरिछ जस इन्द्रबिलासा[9]॥
मूल पतार सरग ओहि साखा। अमरबेलि को पाउ को चाखा॥
चाँद पात औ फूल तराई। है उजियार नगर जहँ ताँई॥
वै फर पावै तप कै कोई। बृद्ध खाय तौ जोबन होई॥

दोहा—राजा भये भिखारी सुनि ओहि अमिरित भोग।
जेइ पावा से अमर भा न कुछ बियाधि न रोग॥ ४३॥

चौपाई

गढ़ पर बसैं चारि गढ़पती। असुपति गजपति औ नरपती॥
सब क धौरहर[10] सोने साजा। सब अपने अपने घर राजा॥
रूपवंत धनवंत सुभागे[11]। पारस पाहन पँवरिन[12] लागे॥
भोग बिलास सदा मनमाना। दुख चिंता कोउ जनम[13] न जाना॥

---

१ डांड़=घंटा बजाने का डंडा। २ डांडा=डांटा, दपट कर कहा। ३ आऊ=आयु (जीवनकाल)। ४ जीवन=(क) पानी (ख) जिंदगी। ५ जनम=जीवनकाल। ६ खीर=(क्षीर) दूध। ७ दुरपदी=द्रोपदी। ८ मोतीचूर=स्वच्छ और निर्मल जल वाला। ९ इन्द्रबिलास=इन्द्रपुरी। १० धौरहर=ऊंचे महल। ११ सुभागे=सौभाग्यमान। १२ पँवरिन=पाँवरिन, सीढ़ियों में। १३ जनम=आजीवन, जीवन पर्यंत।

मँदिर मँदिर सबके चौपारी[१] । बैठि कुंवर सब खेलहिं सारी[२] ॥
पाँसा ढरैं खेल भल होई । खरग[३] दान सरि पूज न कोई ॥
भाट पढ़हिं सब कीरति भली । पावहिं घोर हस्ति सिंघली ॥

दोहा—मँदिर मँदिर फुलवारी चोवा चंदन बास ।
निस दिन रहै बसंत तहँ छहु रितु बारा मास ॥ ४४ ॥

चौपाई

पुनि चलि देखा राज-दुवारू । महि घूमिय पाइय नहिँ बारू[४] ॥
हस्ति सिंघली बाँधे बारा[५] । जनु सजीव सब ठाढ़ पहारा ॥
कवन्यौ सेत पीत रतनारे । कवन्यौ हरे धूम औ कारे ॥
बरनहिं बरन गगन जस मेघा । उठे गगन बैठे जनु ठेघा[६] ॥
सिंघल के बरनौं सिंघली[७] । एक एक चाहि सो एक एक बली ॥
गिरि पहार परबत सब पेलहिँ । बिरिछ उचारि फारि मुख मेलहिँ ॥
मात निमत[८] सब गरजहिं बाँधे । निस दिन रहहिँ महावत काँधे ॥

दो०—धरती भार न अंगवै[९] पाँउ धरत उठु हाल ।
कुरुम[१०] टूट फंन[११] फाटै तिन हस्तिन की चाल ॥४५॥

चौपाई

पुनि बाँधे रजवार[१२] तुरंगा । का बरनौं जस उनके रंगा ॥
नीले समँद[१३] चाल जग जाने । हाँसुल[१४] भँवर[१५] कियाह[१६] बखाने

---

१ चौपार=द्वार पर की दालान, बैठक । २ सारी=चौपड़ । ३ खरग······कोई=खड्ग (युद्ध) में और दान में कोई उनकी बराबरी नहीं कर सकता था । ४ बारू=(वारः) दरवाजा । ५ बारा=द्वार । ६ ठेघा=पहाड़ । ७ सिंघली=सिंहलदीप के हाथी । ८ निमत=अन माते, जो मते न हों । ९ भार न अंगवै=बोझा नहीं सह सकती । १० कुरुम=कछुआ । ११ फन=शेषनाग का फण । १२ रजवार=(राजा + वार) राजद्वार । १३ समन्द=समंद रंग का । १४ हाँसुल=कुम्मैत रंग का । १५ भँवर=काले, मुश्की । १६ कियाह=जिस घोड़े का रंग ताड़ के पके फल के समान हो (पक्व ताल निभो वाजी कियाहः परिकीर्तितः) ।

हरे सुरंग महुव[1] बहु भाँती । गरर[2] कोकाह[3] बोलाह[4] सुपाँती ॥
मन ते अगमन[5] डोले बागा । लेत उसास गगन सिर लागा ॥
पवन समान समुँद पर धावहिँ । पाँउ न बूड़ पार होइ आवहिँ ॥
थिर न रहहिँ रिस लोह चबाहीँ । भाजहिँ पूँछि सीस उपराहीँ ॥
तीख तुखार[6] चाँड़[7] औ बाँके । तरपहिँ तवहिँ[8] चलहिँ बिन हाँके ॥

दो०—अस तुखार सब देखे, जनु मन के रथबाह[9] ।
नयन पलक पहुंचावहीँ जहँ पहुँचा कोउ चाह ॥ ४६ ॥

चौपाई

राज सभा पुनि दीख बईठी । इन्द्र सभा जनु परिगइ डीठी ॥
धनि राजा अस सभा सँवारी । जानहु फूलि रही फुलवारी ॥
मुकुट बाँधि सब बैठे राजा । दर[10] निसान सब जिन्हके साजा ॥
रूपवंत-मनि दिपै लिलाटा । माथे छात[11] बैठ सब पाटा[12] ॥
जानहु कमल सरोवर फूले । सभा क रूप देखि मन भूले ॥
पान कपूर मेद[13] कसतूरी । सुगँध बास सब रही अपूरी[14] ॥
माँझ ऊंच इन्द्रासन[15] साजा । गंध्रबसेन बैठ तहँ राजा ॥

दोहा—छतर गगन लग ताकर, सूर तवै[16] जस आप ।
सभा कँवल अस बिकसी, माथे बड़ परताप ॥ ४७ ॥

चौपाई

साजा राजमँदिर कैलासू[17] । सोने कर सब पुहुमि अकासू ॥
सात खंड धौराहर साजा । वहै सँवारि सकै अस राजा ॥
हीरा ईंट कपूर गिलावा[18] । औ नग लाइ सरग लौं लावा ॥

---

१ महु=महुवा के रंग का । २ गरर=गर्रा । ३ कोकाह=श्वेत रंग का । ४ बोलाह=वह घोड़ा जिसकी पूँछ और गर्दन के बाल पीले हों (बोल्लाह स्त्वय मेवस्याद पांडु केशर वालधिः) ५ अगमन=आगे । ६ तुखार=सफेद रंग का घोड़ा । ७ चांड=प्रचंड, बलवान । ८ तवहिं=तपते हैं, तेज दिखलाते हैं । ९ रथबाह=रथवान, सूत । १० दर=दल, सेना । ११ छात=छत्र । १२ पाटा=सिंहासन । १३ मेद=इत्र । १४ अपूरी=आपूर्ण, भरपूर । १५ इन्द्रासन=इन्द्र का सा सिंहासन । १६ तवै=तपै । १७ कैलासू=स्वर्ग के समान । १८ गिलावा=गारा ।

जाँवत सबै उरेह[1] उरेहे। भाँति भाँति नग लाग उबेहे[2] ॥
भा कटाव सब अनुपम भाँती। चित्र कटाव सो पाँतिहिं पाँती ॥
लाग खाँभ मनि मानिक जरे। जनहु दिया दिन आछहिं[3] धरे ॥
देखि धौरहर कर उजियारा। छिपि गये चाँद सुरिज औ तारा ॥

दोहा—सजे सात बैकुंठ[4] जस, तस साजे खँड सात।
बीहर[5] बीहर भाव तिन्ह, खँड खँड ऊपर छात ॥ ४८ ॥

चौपाई

बरनौं राज मँदिर रनिवासू। अछरन[6] भरा जनहु कैलासू[7] ॥
सोरह सहस पदुमिनी रानी। एक एक ते रूप बखानी ॥
अति सुरूप औ अति सुकुवारा। पान फूल के रहहिं अधारा ॥
तिन्ह ऊपर चंपावत रानी। महा सुरूप पाट परधानी[8] ॥
पाट बैठि रह किहे सिंगारू। सब रानी ओहि करैं जुहारू ॥
नित नव रंग सुरंगम सोई। प्रथम बैस नहिँ सरवरि कोई ॥
सकल दीप महँ जेती रानी। तिन्ह महँ कनक सो बारह बानी[9] ॥

दो०—कुँवरि बतीसौलच्छनी[10] औ सब चाहि अनूप।
जाँवत सिंघलदीप जन, सबै बखानैं रूप ॥ ४९ ॥

॥ इति दूसरा खंड ॥

---

१ उरेह=चित्र। २ उबेहें=उभड़े हुए। ३ दिन आछहिं=दिन ही में, दिन आछत। ४ सात बैकुंठ=सातों स्वर्ग लोक (भूर्लोक भुवर्लोक, स्वर्लोक, महर्लोक जनलोक, तपो लोक, सत्य लोक)। ५ बीहर बीहर=अलग अलग, (उन सातों खंडों के अलग अलग भाव अर्थात बनावट और सजावट के सामान हैं) ६ अछरन=अप्सरायें। ७ कैलासू=स्वर्ग। ८ पाट परधानी=पटरानी। ९ बारह-बानी=बारहो सूर्य का रंग (नोट) कवि शिरोमणि 'सूरदास' जी ने भी इस मुहावरे का प्रयोग 'सोने' की प्रशंसा में किया है, जिसका अर्थ "अत्यंतखरा" किया गया है। १० बतीसौलच्छनी=स्त्रियों के ३२ शुभ लक्षण ये हैं।

(१) नख—लाल। (२) पादपृष्ठ—कूर्मपृष्ठवत्। (३) गुल्फ—गोल। (४) पदांगुली—अविरल। (५) पदतल (तरवा)—लाल और शुभ चिह्नयुत। (६) जंघा—

३—तीसरा खण्ड

पद्मावती जन्म वर्णन

चौपाई

चंपावति[1] जो रूप सँवारी। पदुमावति चाहै अवतारी॥
भइ चाहै अस कथा जो लोनी[2]। मेटि न जाय लिखी जस होनी॥
सिंघल दीप भयो तब नाऊं। जो अस दीप दिपा[3] तेहिं ठाऊँ॥
प्रथम सो जोति गगन निरमई। पुनि सो पिता माथे मनि भई॥
पुनि सो जोति माता घट आई। तेहिं ओदर[4] आदर बहु पाई॥
जस अंचल झीने महँ दिया। तस उजियार दिखावै हिया॥
जस अउधान[5] पूर होइ तासू। दिन दिन हियें होय परगासू॥

दो०—सोने मँदिर सँवारे, औ चंदन सब लीप।
दिया जो मन सिव लोक महँ, उपना[6] सिंघलदीप॥५०॥

गोल और गावदुम। (७) जानु—सुढार और बराबर। (८) ऊरु—अविरल। (९) भग—पीपर पत्र के आकार। (१०) भग का मध्य भाग—गुप्त। (११) पेडू—कूर्मपृष्ठवत्। (१२) नितंब—मांसल। (१३) नाभी—गंभीर और दाहिनी ओर को घूमी हुई। (१४) नाभी के ऊपर का भाग—त्रिवलीयुक्त। (१५) स्तन—सम, गोल, घन और कठोर। (१६) पेट—मृदु और अलोम। (१७) ग्रीवा—शंखवत। (१८) ओंठ—लाल। (१९) दाँत=कुंदवत्। (२०) वाणी—मधुर। (२१) नासिका—सीधी ऊँची। (२२) नेत्र—कमलदलवत्। (२३) भौंह—वंक धनुषाकार। (२४) ललाट—अर्द्ध चंद्रवत्। (२५) कान—कोमल और सम। (२६) केश—नीले, चिकने और चमकीले। (२७) शीश—सुडौल। (२८) हथेली—लाल और शुभ रेखा युक्त। (२९) कलाई—कोमल और गोल। (३०) बाहु—सुढार। (३१) मणिबंध—नीचे को दबा हुआ। (३२) हस्तांगुली—पतली और सुडौल।

१ चम्पावति=रानी चंपावती में जो ऐसा रूप दिया गया था, उसका कारण यह था कि ब्रह्मा उसके गर्भ से पदमावती का अवतार कराना चाहते थे। २ लोनी=सुन्दर, अच्छी। ३ दिपा=प्रदीप्त हुआ, जला। ४ ओदर=उदर (पेट गर्भ)। ५ अउधान=अवधान, (गर्भ)। ६ उपना=उत्पन्न हुआ।

चौपाई

भे दस मास पूरि भइ घरी । पदमावति कन्या अवतरी ॥
जानहु सुरिज किरन हुति काढ़ी । सूरज करा[1] घाटि वह बाढ़ी ॥
भा निसि महँ दिन कर परकासू । सब उँजियार भयो कैलासू ॥
एते रूप मूरति परगटी । पून्यो ससि सो खीन ह्वै घटी ॥
घटतहिँ घटत अमावस भई । दिन दुइ लाज गाड़ि भुइँ गई ॥
पुनि जो उठी दुइज होइ नई[2] । निहकलंक ससि[3] बिधि निरमई ॥
पदुम गंध बेधा जग बासा । भँवर पतंग भँवहिँ चहुँ पासा ॥

दो०—एते रूप भइ कन्या, जेहि सरि पूज न कोइ ।
धनि सो देस रुपवंता, जहां जनम अस होइ ॥ ५१ ॥

चौपाई

भइ छठि राति छठी सुख मानी । रहस कूद सौं रैनि बिहानी[4] ॥
भा बिहान[5] पंडित सब आये । काढ़ि पुरान जनम अरथाये[6] ॥
उत्तिम घरी जनम भा तासू । चाँद उआ भुइँ, दिपा[7] अकासू ॥
सूर[8] परस[9] सों भयो गुरीरा[10] । किरन जामि उपना[11] नग हीरा ॥
कन्या रासि उदौ जस किया । पदमावती नाउँ जग दिया ॥
तेहि ते अधिक पदारथ[12] करा[13] । रतन जोग उपना निरमरा ॥
सिंघल दीप भयो अवतारू । जंबू दीप जाय जम-बारू[14] ॥

दो०—रामा आये अजोध्या, लखन[15] बतीसौ संग ।
रावन[16] रूप सब भूले, दीपक जैस पतंग ॥ ५२ ॥

---

१ करा=कला । २ नई=टेढ़ी हो गई । ३ ससि='ससि' शब्द को जायसी स्त्रीलिंग मानता है । ४ बिहानी=व्यतीत हुई । ५ बिहान=सबेरा । ६ अरथाये=जन्म लग्न के अनुसार जातक का फल कहा । ७ दिपा=प्रकाशित हो गया । ८ सूर्य और पारस मणि से जब प्रेमयुक्त संयोग हुआ, तब सूर्य किरण अंकुर की तरह जमी और उससे हीरा नग पैदा हुआ । ९ परस=पारस पत्थर । १० गुरीरा=(गुरीला) गुड़ ऐसा मीठा प्रेम, संयोग । ११ उपना=उत्पन्न हुआ । १२ पदारथ=रत्न, जवाहिर । १३ करा=कला । १४ जम-बारू=जम का द्वार (यमपुरी) १५ लखन=लक्षण । १६ रावन=राव राजा ।

चौपाई

अही[1] जनमपत्री जो लिखी । दई असीस फिरे जोतिषी ॥
पांच बरिस महँ भइ सो बारी । दीन्ह पुरान पढ़ै बैसारी[2] ॥
भइ पदमावत पंडित गुनी । चहूं खूंट के राजन सुनी ॥
सिंघल दीप राज घर बारी । महा सरूप दई अवतारी ॥
एक पदुमिनि औ पंडित पढ़ी । दहुँ[3] केहि जोग दई अस गढ़ी ॥
जा कहँ लिखी लच्छि[4] घर होनी । सो असि पाउ पढ़ी औ लोनी ॥
सात दीप के बर जे आवैं । फिरि फिरि जाहिं न ऊतर पावैं ॥
दो०—राजा कहै गरब सों, हौं रे इन्द्र सिव लोक ।
को सरि मो सों पावै, कासों करौं बरोक[5] ॥ ५३ ॥

चौपाई

बारह बरिस माँह भइ रानी । राजैं सुना सँजोग सयानी ॥
सात खंड धौराहर तासू । सो पदुमिनि कहँ दीन्ह निवासू ॥
औ दीन्ही सँग सखी सहेली । जे सँग करैं रहस[6] औ केली ॥
सबै नवल पिउ संग न सोईं । कँवल पास जनु बिकसीं कोईं[7] ॥
सुवा एक पदमावति ठाऊँ । महा पंडित हीरामन नाऊँ ॥
दई दीन्ह पंखिहिं अस जोती । नैन रतन मुख मानिक मोती ॥
कंचन बरन सुवा अति लोना । मानहु मिला सुहागहिं सोना ॥
दो०—रहैं एक संग दोऊ, पढ़ैं सासतर[8] वेद ।
ब्रह्मा[9] सीस डोलावै, सुनत लाग तस भेद ॥ ५४ ॥

चौपाई

भइ उतंत[10] पदमावत बारी । धज[11] धौरी सब करैं सँवारी ॥
जग बेधा तेहिं अङ्ग सुबासा । भँवर आय लुबधे[12] चहुँ पासा ॥

---

१ अही=(आसीत्र) थी । २ बैसारी=बैठाली । ३ दहुँ—धौं, न जाने । ४ लच्छि=लक्ष्मी । ५ बरोक=बरेखी, विवाह संबंध । ६ रहस=एकांत के खेल । ७ कोंई=कुमुदिनी । ८ सासतर=शास्त्र । ९ उनका वेद शास्त्र का मर्म युक्त पढ़ना सुनकर ब्रह्मा भी प्रशंसा सूचक मुद्रा से सिर हिलाते हैं । १० उतंत=(उद्+तंत्र) अधिकार वा दबाव से बाहर (यौवनावस्था के कारण) ११ धज=सफेद सजधज से सब तरह से बनी ठनी रहती थी । १२ लुबधे=मोहे, लुभाय रहें ।

वेनी नाग मलयगिरि[१] पीठी। ससि माथे होइ दुइज[२] बईठी॥
नासिक कीर कँवल मुख सोहा। पदुमिनि रूप देखि जग मोहा॥
भौंहैं धनुष साधि सर फेरी। नैन कुरंगि[३] भूलि जनु हेरी॥
मानिक अधर दसन जनु हीरा। हिय हुलसैं कुच कनक जँभीरा॥
केहरि लंक गवन गज हारे। सुर नर देखि माथ भुंइँ धारे॥
दो०—जग कोउ दिष्टि न आवै, आछर[४] नहिन अकास।
जोगि जती सन्यासी, तप साधहिं तेहिं आस॥ ५५॥

चौपाई

पदुमावति भइ बैस सँजोगा[५]। कीन्हा चहै प्रेम रस भोगा॥
काम प्रवेस भयो तन आई। रतिपति हिये उदास जनाई॥
भा उतपात[६] काम के लागे। कहा हँकारि सुवा के आगे॥
सो पुनि कह सुनु राज कुंवारी। जो विधि लिखा सकै को टारी॥
अज्ञा देहु तो लेहुँ वियोगा। मेरवौं आनि तुम्हार सँयोगा[७]॥
पदुमावति सुनि कै सुख माना। जोग जानि कै मेरौ सुजाना॥
तव हँसि कहा सुवा सज्ञानी। जगत हेरि नग मेरवहुँ[८] आनी॥
दो०—दुष्ट रहा कोउ सुनत सव, कहेसि राय सों जाय।
पदुमावति संजोग भय, सुवहि मुकुति देउ राय॥ ५६॥

चौपाई

राजैं सुना दिष्ट भइ आना[९]। वुधि जो दई सँग सुवा सयाना॥
भयो रजायसु मारहु सूवा। सूर न आव चाँद[१०] जहँ ऊवा॥
सत्रु सुवा के नाऊ बारी। सुनि धाये जस धाव मँजारी[११]॥
तव लग रानी[१२] सुवा छिपावा। जब लग आव मँजारि न पावा॥
पिता क आयसु माथे मोरे। कहौ जाय विनवै कर जोरे॥

---

१ मलयगिरि=मलयागिरि चंदन का वृक्ष। २ दुइज=द्वितीय का चंद्रमा। ३ कुरङ्गि=हिरनी। ४ आछर=अप्सरा। ५ वैस संयोग=पुरुष प्रसंग योग्य अवस्था वाली। ६ उतपात=उपद्रव। ७ संयोगा=जोड़ा, वर। ८ मेरवहुँ=मिलाऊं। ९ दिष्टि भइ आना=और ही नज़र होगई अर्थात् क्रोध हो आया। १० सूर······ऊवा=जहां कलंकी जीव रहते हैं वहां विवेकी ज्ञानी आते ही नहीं। ११ मँजारी=बिल्ली। १२ रानी=पद्मावती।

पंखि न कोऊ होइ सुजानू। जानहि भुगुति[1] कि जानु उड़ानू॥
सुवा जो पढ़ै पढ़ाये बैना। तेहि कित बुधि जेहि हिये न नैना॥

दो०—मानिक मोति दिखावहु, हिये न ज्ञान करेइ।
दार्‌यों[2] दाख जानि कै, उभय ठोर[3] भरि लेइ॥ ५७॥

चौपाई

वै तो फिरे उतरु अस पावा। विनवा सुवा हिये डर खावा॥
रानी तुम जुग जुग होइ आऊ[4]। हौं रे दास विनवौं गहि पाऊ॥
मोतिहिं जो मलीन भइ कला। पुनि सो पानि कहाँ निरमला॥
ठाकुर[5] अंत[6] चहै जेहि मारा। तेहि सेवक कहँ कहाँ उबारा॥
जेहि घर काल मँजारी नाचा। पंखी नाउँ जीव नहिं बाँचा॥
मैं तुम राज बहुत सुख देखा। जो पूँछहु दै जाय न लेखा॥
जो इच्छा मन कीन्ह सो जेंवा[7]। यह पछिताव चल्यौं विन सेवा॥

दो०—मारै सोई निसोगा[8], डरै न अपने दोस।
केला[9] केलि करै का, जो भइ बेरि[10] परोस॥ ५८॥

चौपाई

रानी उतरु दीन्ह कै मया[11]। जो जिउ जाय रहै किमि कया[12]॥
हीरामन तुइँ प्रान परेवा। धोख न लाग करत तुव सेवा॥
तोहि सुवना विछुरन का आखौं[13]। पिंजर हिये घालि तोहि राखौं॥
हौं मानुस तूं पंखि पियारा। धरम पिरीति तहाँ को मारा॥
का पिरीति तनु[14] माँह विलाई[15]। सो पिरीति जिउ साथ जो जाई॥
पिरिति भार लै हिये न सोचू। ओहै पंथ भल होइ कि पोचू[16]॥
पिरिति पहार भार जो कांधा[17]। तब कित छूट लाय जिउ बाँधा॥

---

१ भुगुति=भोजन करना। २ दार्‌यों=(दाड़िम) अनार (यहाँ अनार के दाने)। ३ ठोर=चोंच। ४ आऊ=आयू (जीवन)। ५ ठाकुर=मालिक। ६ अंत=निदान, निश्चय। ७ जेंवा=खाया, भोजन किया। ८ निसोगा=वेगम, शोक रहित। ९ केला=कदली वृक्ष। १० बेरि=बेरी का पेड़। ११ मया=कृपा। १२ कया=काया, तन। १३ आखौं=(आख्यान) कहूं। १४ तनुमांह=तनक सी बात पर, तनक भय से। १५ बिलाई=विलीन हो जायगी। १६ पोच=बुरा। १७ काँधना=कंधे पर लेना।

दो०—सुवा न रहै खुरुक[1] जिय, अब हीं काल सो आव ।
सत्रु अहै जेहि करिया[2], कबहुँ सो बोरै नाव ॥ ५९ ॥

४—चौथा खंड

मानसरोवर जल बिहार वर्णन

चौपाई

एक दिवस पून्यो तिथि आई। मानसरोवर चलीं अन्हाई ॥
पदमावत सब सखीं बोलाईं। जनु फुलवारि सबै चलि आईं ॥
कोइ चंपा कोइ कुंद सहेली। कोइ सुकेत[3] करना[4] रस बेली ॥
कोइ सु गुलाब- सुदरसन राती। कोइ सु बकाउरि[5] बकुचन[6] भाँती ॥
कोइ सु मौलसिरी पुहपावती। कोइ जाही जूही सेवती ॥
कोई सोनजरद कोइ केसर। कोइ सिंगार हार नागेसर ॥
कोइ कूजा[7] सतवरग[8] चँबेली। कोई कदम सुरस रस बेली ॥

दो०—चलीं सबै मालति सँग, फूलीं कँवल कुमोद ।
बेधि रहे गन गंधरब[9], बास परिमला मोद ॥ ६० ॥

चौपाई

खेलत मानसरोवर गईं। जाय पारि[10] पर ठाढ़ीं भईं ॥
देखि सरोवर रहसैं[11] केली। पदुमावति सों कहैं सहेली ॥
ए रानी मन देखु विचारी। यहि नैहर[12] रहना दिन चारी ॥
जौ लहि अहै पिता कर राजू। खेलि लेहु जो खेलन आजू ॥
पुनि सासुर हम गवनब काली। कित हम कित यह सरवर पाली ॥

---

१ खुरुक=खटका, भय। २ करिया=कर्णधार, केवट। ३ केत=केतकी। ४ करना=नींबू की सुगंध वाला एक फूल। ५ बकाउरि=बकावली। ६ बकुचन भांती=बहुत प्रकार की। ७ कूजा=गुलाब की भांति का एक फूल। ८ सतवर्ग=गेंदा। ९ गन गंधरब=राजा गंधर्बसेन के सिपाही जो रक्षार्थ साथ में थे, अथवा गंधर्वों के गण। १० पारि (पालि)=तालाब के गिर्द का भीटा (बांध)। ११ रहसना=खेलना। १२ नैहर=मातृगृह (मायका)।

कित आवन पुनि अपने हाथा। कित मिलि कै खेलब एक साथा॥
सासु ननँद बोलन जिउ लेई। दारुन[1] ससुर न आवन देई॥
दो०—पिउ पियार सब ऊपर, सोउ करै दहुँ काह।
दहुँ[2] सुख राखै की दुख, दहुँ कस जनम निबाह॥६१॥

चौपाई

मिलीं रहसि सब चढ़ीं हिंडोरे। झेलि लेहु सखि बारे भोरे॥
पुनि सासुर लै राखी तहाँ। नैहर चाह[3] न पाउब जहाँ॥
झूलि लेहु नैहर जब ताईं। पुनि झूलन दीहैं नहिँ साईं॥
कित यह धूप कहाँ यह छाँहाँ। रहब सखिन बिन मंदिर माँहाँ॥
गुन पुछिहैं औ लाइहि दोखू। कौन उतर पाउब तहँ मोखू[4]॥
सासु ननँद की भौंहन ओरी। रहब सकोचि दोऊ कर जोरी॥
कित यह रहस जो आउब करना। ससुरेउ अंत जनम दुख भरना॥
दो०—कित नैहर पुनि आउब कित ससुरे यह केलि।
आपु आपु कहँ होइबे, परब पंखि जस डेलि[5]॥ ६२॥

चौपाई

सरवर तीर जो पदुमिनी आईं। खोंपा[6] छोरि केस बिखराईं॥
ससि मुख अंग मलयगिरि बासा। नागन झाँपि लीन्ह चहुँ पासा॥
उनए[7] मेघ परी जग छाँहा। चाँदे झाँपि लीन्ह जनु राहा॥
छिपि गई दिनहिं भानु कै दसा। लै निसि नखत चाँद परगसा[8]॥
भूलि चकोर दिष्टि सुख लावा। मेघ घटा मुहँ चाँद दिखावा॥
दसन दामिनी कोकिल भाखी। भौंहैं धनुष गगन लै राखी॥
नैन खँजन दुइ केलि करेहीं। कुच नारँग मधुकर[9] रस लेहीं॥
दो०—सरवर रूप बिमोहा, हिये हिलोर करेइ।
पाँव छुवैं मकु[10] पाऊं, यहि मिस[11] लहरें लेइ॥ ६३॥

---

१ दारुन=कठिन। २ दहुं=धौं, न जाने। ३ चाह=खबर, सँदेसा। ४ मोख=मोच, छुटकारा। ५ डेलि=डेलैया (डलिया, झांपी) ६ खोंपा=जूड़ा। ७ उनए=घुमड़कर झुक आये। ८ परगसा=प्रकाशित हुआ। ९ मधुकर=भौंरा (कुचाग्र की श्यामता)। १० मकु=शायद। ११ मिस=बहाना।

चौपाई

धरीं तीर सब कंचुकि सारीं। सरवर महँ पैठी सब बारीं॥
पानी तीर जानु सब बेलैं। हुलसैं करैं काम की केलैं॥
कुटिल केस बिसहर[1] बिस भरे। लहरा लेहिं कँवल मुख धरे॥
नवल बसंत सँवारी करी[2]। होइ परगट चाहैं रस भरी॥
उठी कोंप ज्यों दाखों दाखा। भईं उलपन्न प्रेम की साखा॥
सरवर नहिं समाय संसारा। चाँद नहाय पैठि लिय तारा॥
धनि सु नीर ससि तरईं उईं। अब कित दिष्टि कँवल औ कुईं[3]॥

दो०—चकई बिछुरि पुकारई, कहाँ मिलौं हो नाह।
एक चाँद निसि सरग पर, दिन दूसर जल माँह॥ ६४॥

चौपाई

लागीं केलि करैं मँझ नीरा। हंस लजाय बैठ तेहि तीरा॥
*पदुमावति कौतुक कहँ राखी। तुम ससि होहु तराइन साखी॥
बाद[4] मेलि कै खेल पसारा। हार[5] देइ जो खेलत हारा॥
सँवरिहिं साँवरि गोरिहिं गोरी। आपनि आपनि लीन्ह सो जोरी॥
बूझि खेल खेलहु एक साथा। हार न होय पराये हाथा॥
आजुहि खेल बहुरि कित होई। खेल गये पुनि खेल न कोई॥
धनि सो खेल खेलहि रस प्रेमा। रौताई[6] औ कूसल खेमा[7]॥

दो०—मुहमद बाजी प्रेम की, ज्यों चाहै त्यों खेल।
तिल फूलन कर संग ज्यों, होय फुलायल[8] तेल॥ ६५॥

---

१ बिसहर=(विषधर) सर्प। २ करी=कली। ३ कुंई=कुमुदिनी। *पदुमावति=पदमावती को खेल देख कर हार जीत बताने वाली बनाया और कहा कि ऐ शशि (पद्मावती) तुम तरैयों (सब सहेलियों) की साखी बनो। (कि कौन हारी, कौन जीती)। ४ बाद मेलिकै=बाजी लगा कर। ५ हार=गले की माला, हमेल। ६ रौताई=ठकुराई। ७ खेमा=तात्पर्य यह है कि ठकुराई करना और कुशल क्षेम से रहना असंभव बात है, परन्तु प्रेम के खेल में ये दोनों निभ जांती हैं अर्थात ठकुराई भी करो और कुशल क्षेम से भी रहो। मिलाओ—"दानि कहाउब अरु कृपिनाई। होय कि खेम कुसल रौताई"। (तुलसी दास) ८ फुलायल=फूल की बास के समान वाली बास का।

चौपाई

सखी एक तेइ खेल न जाना। चित अचेत भइ हार गँवाना॥
कँवल डार[1] गहि भइ बिकरारा[2]। का सो पुकारै आपनि हारा[3]॥
कत खेलन आइउँ इन्ह साथा। हार गँवाय चलिउँ लै हाथा॥
घर पैठत पुंछिहै सब हारू। कौन उतर पाउब पैसारू[4]॥
नैन सीप आँसुन तस भरे। मानो मोति करहिं कर[5] ढरे॥
सखिन कहा भोरी कोकिला। कौन पानि जेहि पवन न मिला॥
हार गँवाय सो ऐसहिं रोवा। हेरि हेराय लेब जो खोवा॥

दो०—लगीं सबै मिलि हेरन बूड़ि बूड़ि एक साथ।
कोइ उठै लै मोती कोऊ घोंघी हाथ॥ ६६॥

चौपाई

कहा मानसर चाह[6] सो पाई। पारस रूप इहाँ लगि आई॥
भा निरमल तेहि पायन परसे। पावा रूप रूप के दरसे॥
मलय समीर बास तन आई। भा सीतल गइ तपन बुझाई॥
न जनौं कौन पुन्य लै आवा। पुन्यदसा भइ पाप गँवावा॥
ततखन[7] हार बेगि उतराना। पावा सखिन चंद[8] बिहँसाना॥
बिगसे कुमुद देखि ससिरेखा[9]। भइ तहँ ओप जहाँ जो देखा॥
पावा रूप रूप जस चहे। ससि-मुख जनु दरपन ह्वै रहे॥

दो०—नैन जो देखे कँवल भए, निरमल नीर सरीर।
हँसत जो देखी हँस भए दसन जोति नग हीर[10]॥ ६७॥

---

१ डार=शाखा। २ बिकरारा=बेक़रार, अति दुखी। ३ हारा=हार, ग़फ़लत। ४ पैसार=पैठारी, घर के भीतर जाना। ५ करहिंकर=क्रम क्रम से, धीरे धीरे। ६ चाह=इच्छा। ७ ततखन=तत्क्षण, फ़ौरन, उसी समय। ८ चंद=यहां पदमावती से तात्पर्य है। ९ ससिरेखा=पदमावती की हँसी। १० हीर=हीरा।

५—पाँचवां खंड

सुआ-उड़ान वर्णन

चौपाई

पदुमावति तहँ खेलु धमारी[1] । सुवा मँदिर महँ परी मँजारी ॥
* चेरी कतहुं जाय उरझानी । तहाँ सो जाय भोग रस सानी ॥
लीन्हेसि रानि क फूल तँबोला । बोला सुवा तहां एक बोला ॥
तेहिकर पुहुप सुवसि री चेरी । जोहनहार[2] अहै जेहि केरी ॥
पान फूल तेहिँ सौंप न कोई । जो तौ लोभी हिय को होई ॥
पान फूल लीजिय निज पाहीं[3] । औ नहिं दीजै हाथ पराहीं[4] ॥
† का जानै दहुं हिय केहि मोखा । कौनहु पान फूल का धोखा ॥

दो०—सुवा कहै री चेरी, बौरी भई अकाज[5] ।
लिहे फूल रानी के, तोहि मन आव न लाज ॥ ६८ ॥

चौपाई

चेरी औ दूमन[6] बैरागा[7] । सुवा क बोल जानु विष लागा ॥
बाउर अंध प्रीति कर लागू[8] । सौँहँ धसै नहिं सूझै आगू ॥
सुनतै हिये मानि अन[9] भाऊ । [10]यहि के घाल गया घर राऊ ॥
भा निसि भोर कवन[11] मुख खोला । ना तमच्चूर[12] रहे अनबोला ॥

---

१ धमारि=वह खेल जिसमें बहुतसा उछलकूद, हो हुल्लड़ करना पड़े ।

* एक चेरी की किसी जार से गुप्त प्रीति थी । पदमावती को मानसरोवर पर गई हुई जानकर उस जार के साथ भोग विलास में रत हुई । २ जोहनहार= मुहँ जोहने वाली अर्थात चेरी । ३ निज पाहीं=अपने लिये । ४ पराहीं=पराये ।

† तू क्या जानती है कि उसका हृदय किस तरह का है । शायद पान फूल में कोई धोखा है । ५ अकाज=व्यर्थ । ६ दूमन=द्विविधा में पड़ा हुआ मन । ७ काम काज से उदासीन । ८ प्रीति कर लागू=जिसका मन किसी की प्रीत में फँसा हो । ९ अन=अन्य, बुरा । १० यहि के······राऊ=इस के कारण राजा का घर नष्ट हो रहा है । ११ कवन=कौनों ने । १२ तमचूर=मुर्गा ।

सुवा जो रहा पिंजर सुख भारी। धरेसि आय जस धरै मँजारी॥
चूरेसि पंख मरोरेसि गीवा[1]। यहि बिधि, बिधनै[2] राखा जीवा॥
सुवा पखी पै बुधि है ओछी। लीन्हेसि भांड[3] घालि कै कोंछी॥

दो०—सीस धुनै तस सुवटा[4], भा भोजन सुख ठाँउ।
रहौं एक तरवर चढ़ि, चरिहौं सब अँबराउ॥ ६९॥

चौपाई

कछु न बसाय[5] भूलि गा पढ़ा। बरहिँ[6] पाँव जो जोधा चढ़ा॥
सबुहि कोउ पाव जो बांधा। छांड़ि निरप[7] केइ कीन्ह न बाधा॥
बैरी दाँउँ पाव जो कोई। लागा घात रहै पुनि सोई॥
जो रे सयान होय तौ बाँचै। होय अजान बिहँसि कै नाँचै॥
अगमन[8] देखि करै जो काजा। डरै वृथा अपने मन लाजा॥
बुधि चाँटी[9] परवत ले काँधा। बुधि का हीन हस्ति गा बाँधा॥
अब बुधि करो तो बाँचौ सुवा। जियत[10] जो मरै न मारे मुवा॥

दो०—मरै सो सोई निसोगा, डरै जो काज अकाज।
हरष न बिसमौ[11] जानै, दुहुं[12] निवारै लाज॥ ७०॥

चौपाई

भाँड़ा आय खंड जहँ कुवा। कहेसि मारि मेलौं अब सुवा॥
देखत पाँइ सो अगमन[13] तानी। कुँआ मेलि कै बहुत रिसानी॥
पँखी न डोला पकौ नैना। परा कूप महँ कह तब बैना॥
कहेसि तोहि सँवरौं हौं एका। जिन महि गगन अंतरिख[14] टेका॥

---

१ गीवा=ग्रीवा। २ विधना=ईश्वर ही ने। ३ भाँड़ घालि=सुग्गे को एक हाँड़ी में डालकर कोंछे में ले लिया। ४ सुवटा=सुग्गा। ५ बसाय=वश चलना। ६ बरहिं=(सुग्गा का कुछ वस नहीं चलता) जैसे उस योद्धा का किया कुछ भी नहीं हो सकता जिसके पैर चढ़ाई करते समय ही जलने लगें। ७ निरप=नृप (राजा)। ८ अगमन=भविष्य। ९ चाँटी=चींटी। १० जियत......मुवा=जो जीते ही मर जाता है। (अपने को तुच्छ समझता है वा अहंकार छोड़ देता है) वह मारने से भी नहीं मरता। ११ विसमौ=(विस्मय) संदेह। १२ दुहुं=दोनों दशाओं में अर्थात् हर्ष में तथा शोक में। १३ अगमन=पहले ही से। १४ अंतरिख=अंतरिक्ष।

अगिन माँझ राखा जिन सँउरा। कुँवा परे तें रोवै बउरा ॥
धरी जलंधर जोगी काचा[1]। विक्रम स्वर्ग हु ते गुरु बाचा ॥
श्रीवछु नहीँ डयन[2] ना पाँखा। रहौं कूप महँ राकस[3] राखा ॥
दो०—जो प्रभु राखा चाहै, टूट न एकौ रूं[4]।
नाहीँ तो का मो जुगुति, जो भाऊँ कोइं[5] ॥ ७१ ॥

चौपाई

जो निसचय सँवरै विधि[6] नाऊँ। तेहि कहँ टेक दुहूं जग ठाऊं ॥
का[7] देखै तरवर कुँव माँहाँ। पिपर तीर औ सीतल छाँहाँ ॥
परतै कहेसि डारतें सुवना[8]। भा कैलास बिसरि गा कुँवना[9] ॥
फरी सो तरवर देखी साखा। भुगुति न मेटै जौलहि राखा ॥
बिसरा दुख पंखन कर चूरा। गा सो सोग भोग भा पूरा ॥
कुछु न बसाय भूलि गा पढ़ा। नैनन माँझ बहुरि दिन[10] चढ़ा ॥
पाहन महँ न पतंग बिसारा। कस न कूदि मुँहँ प्रबिसै चारा ॥
दो०—घरी एक के सुख महँ, बिसर गई सब झंख[11]।
फिरि गई दिष्टि सुवा कै, लखि कै आपन पंख ॥ ७२ ॥

चौपाई

कहेसि चलौं जौलहि तन पाँखा। जिउ लै उड़ा ताकि बन ढाँखा[12] ॥
जाइ परा घन खँड जिउ लीन्हे। मिले पंखि बहु आदर कीन्हे ॥
आनि धरे आगे फल साखा। भुगुति न मेटै जौलहि राखा ॥
पावा भुगुति सुखी मन भयऊ। अहा[13] जोदुःखबिसरिसबगयऊ ॥
अइ गोसाइँ तू ऐस बिधाता[14]। जाँवत जिउ सबका भख[15] दाता ॥
पाहन महँ न पतंग बिसारा। जेइँ तोहिँ सँवरा तेहि कहँ चारा ॥

१............। २ डयन=डैना, बाजू। ३ राकस=(सं० रक्षस्) रक्षक, रखवारा। ४ रूं=रोम। ५ कोइं=किसी को। ६ विधि=ईश्वर। ७ का=क्या देखता है कि कुंवाँ में एक पेड़ है। ८ सुवना=सुवा। ९ कुंवना=कुंवा। १० दिन चढ़ा=देख पड़ा कि मेरा ज़माना फिरा है (दुःख के दिन गये और सुख का समय आया)। ११ झंख=दुख, मुसीबत। १२ ढाँखा=पलास। १३ अहा=था। १४ विधाता=विधान करने वाला, व्यवस्था करने वाला। १५ भख=भोजन।

दो०—तौलहि सोग[1] बिछोह कर, भोजन परा न पेट।
पुनि बिलरा भा सँवरना, जनु सपने भइ भेंट ॥ ७३ ॥

चौपाई

पदमावति पहँ आइ भँडारी। कहेसि मँदिर महँ परी मँजारी ॥
सुवा जो उतरु देत हा[2] पूछा। उड़िगा पिँजर न बोलै छूँछा ॥
रानी सुना सूखि जिउ गयऊ। जनु निसि परी अस्त दिन भयऊ ॥
गहने गही चाँद की करा[3]। आँसु गगन जस नखतन भरा ॥
टूटि पालि[4] सरवर बहि लागे। कँवल बूड़ मधुकर उड़ि भागे ॥
यहि विधि आँसु नखत ह्वै चुए। गगन छाँड़ि सरवर भरि उए ॥
झरहिं चुवहिं मोतिन की माला। अब सकेत[5] बाँधा चहुँ पाला ॥

दो०—उड़िगा सुवटा[6] कहँ बसा खोजहु सखि सो बासु।
दहुँ है धरती की सरग पवन न आवै तासु ॥ ७४ ॥

चौपाई

चहुँ पास समुझावैं सखी। कहाँ सो पाय सकैं अब पँखी ॥
जौलहि पिँजरा अहा[7] परेवा। अहा बंदि कीन्हेसि नित सेवा ॥
तेहि बँद ते जो छूटै पावा। पुनि फिरि बंदि होय कत आवा ॥
वै उड़ान-फर तहियै[8] खाये। जब भा पंखि!पांख तन पाये ॥
पिंजर जेहि क सौंपि तेहि गयऊ। जो जाकर सो तांकर भयऊ ॥
दस बाटैं[9] जेहि पिंजर माँहा। कैसे बाँच मँजारी पाँहा ॥
यहि धरती अस केत[10] न लीले। पेट गाढ़[11] तस बहुरि न ढीले ॥

दो०—जहाँ न राति न दिवस है जहाँ न पान न खान।
तेहि बन होय सुवा बसा कौन मिलावै आन ॥ ७५ ॥

चौपाई

सुवैं तहाँ दिन दस कल काटी[12]। आय बियाध ढुका[13] लै टाटी ॥
पैग पैग भुइँ चाँपत आवा। पंखिन दीख सबहिं डर खावा ॥

---

१ सोग=शोक। २ हा=था। ३ करा=कला। ४ पालि=तालाब का बाँध। ५ सकेत=तंग स्थान। ६ सुवटा=सुग्गा। ७ अहा=था। ८ तहियै=तभी, उसी समय। ९ बाटैं=रास्ता। १० केत=कितने। ११ गाढ़=तंग। १२ कलकाटी=सुख से समय व्यतीत किया। १३ ढुका=ताक लगाई।

देखहु कछु अचरज अनभला। तरवर एक आवत है चला॥
यहि बन रहत गई हम आऊ[1]। तरवर चलत न देखा काऊ॥
आजु जो तरवर चल भल नाहीँ। आवहु यह बन छाँड़ि पराहीँ॥
वै तो उड़े आन बन ताका। पंडित सुवा भूलि मन थाका॥
साखा देखि राज जनु पावा। रहा निचिंत चला वह आवा॥

दो०—पाँच बान कर खोंचा[2] लासा भरे सो पाँच।
पाँख भरे तन उरझा कित मारे बिन बाँच॥ ७६॥

चौपाई

बँद भा सुवा करत सुख केली। चूरि पाँख धरि मेलिसि डेली[3]॥
तहवाँ पंखि बहुत खर भरहीँ। आप आप महँ रौंदन करहीँ॥
बिष दाना कित देइ अँगूरा। जेहि भा मरन उहन[4] धरि चूरा॥
जो न होति चारा कै आसा। कित चिरहार[5] ढुकत[6] लै लासा॥
यहि बिष चारैं सब बुधि ठगी। औ भा काल हाथ लै लगी[7]॥
यहि झूठी माया मन भूला। चूरे पाँख जैस तन फूला॥
यह मन कठिन मरै नहिँ मारा। जार[8] न देखु देखु पै चारा॥

दो०—हम तौ बुद्धि गँवाई बिष चारा अस खाय।
सुवटा[9] तूँ पंडित हता तूँ कित फाँदा आय॥ ७७॥

चौपाई

सुवैं कहा हमहूं अस भूले। टूट हिँडोल गरब जेहिँ झूले॥
केरा के बन लीन्ह बसेरा। परा साथ तहँ बैरी केरा॥
सुख कुरुवार[10] फुरेहरी[11] खाना। बिष भा जबहिँ बियाध तुलाना[12]॥
काहे क भोग बिरिछ अस फरा। आड़ लाय पंखिन कहँ धरा॥

---

१ आऊ=आयु, उमर। २ खोंचा=काँपों का गुच्छा। ३ डेली=झाँपी। ४ डहन=डैना, बाजू। ५ चिरहार=पक्षी पकड़ने वाला, बहेलिया। ६ ढुकना=ताक लगाना। ७ लगी=लग्गी, चिड़ीमारों का लंबा बाँस जिस के सिरे पर लासा लगा खोंचा बांधा जाता है। ८ जार=जाल। ९ सुवटा=सुवा। १० कुरुवार=पक्षियों का आनंद में आकर पंख फड़फड़ाना। ११ फुरेहरी खाना=आनंद से रोम फुलाना (पक्षियों का)। १२ तुलाना=निकट आया।

हाइ निचिंत बैठे तेहि आड़ा। तब जाना खोंचा हिय गाड़ा ॥
सुखी निचिंत जोरि धन करना[1]। यह न चित[2] आगे है मरना ॥
भूले हमहु गरब तेहि माँहाँ। सो बिसरा[3] पावा जेहि पाँहाँ ॥
दो०—चरत न खुरुक[4] कीन्ह तब जब रे चरा सुख सोय।
अब जो फाँद परा गिव[5] तब रोये का होय ॥ ७८ ॥

चौपाई

सुनि कै उतर आँसु सब पोंछे। कौन[6] पंखि बाँधी बुधि ओछे ॥
पंखिन जो बुधि होइ उज्यारी। पढ़ा सुवा कत धरै मँजारी ॥
कत तीतर बन जीभ उघेला[7]। सो कत हँकारि फाँद गिव मेला ॥
ता दिन ब्याध भयो जिउ लेवा। उठे पाँख भा नाम परेवा ॥
भइ बियाधि तिसना सँग खाधू[8]। सूझै भुगुति न सूझ बियाधू ॥
हमहिँ लोभ वैं मेला चारा। हमहिँ गरब वह चाहै मारा ॥
हम निचिंत वह आव छिपाना। कौन बियाधहिँ दोष अपाना[9] ॥
दो०—सो औगुन कत कीजै, जिउ दीजै जेहि काज।
अब कहना कुछ नाहीं, मष्ट[10] भली पँखिराज ॥ ७९ ॥

६—छठा खंड

रतनसेन-जनम बर्णन

चौपाई

चित्रसेन चितउर गढ़ राजा। कै गढ़ कोट चित्र सम साजा ॥
तेहि घर रतनसेन उजियारा। धनि जननी जनमा अस बारा[11] ॥

---

१ करना (करण)=सामग्री सामान। २ चित=चिंता। ३ सो बिसरा... पाँहाँ=उसी ईश्वर को भुला दिया जिससे सब सुख सामग्री पाई थी। ४ खुरुक= खटका। ५ गिव=ग्रीवा, गला। ६ कौन...ओछे=पक्षियों में ओछी बुद्धि किसने बाँध दी है ? अर्थात् पक्षियों को ओछी बुद्धि किसने दी है। ७ उघेला=खोली। ८ खाधू=खाद्य पदार्थ। ९ अपाना=अपनाही। १० मष्ट=मौन्य, खामोशी। ११ बारा=बालक।

पंडित गुनि सामुद्रिक[1] देखा। दीख रूप औ लखन[2] बिसेखा॥
रतन सेन यह नग[3] अवतरा। रतन जोति मनि माथे बरा॥
पदुम[4]-पदारथ लिखी सो जोरी। चाँद सुरिज जस होय अँजोरी[5]॥
जस मालति गुन[6] भँवर वियोगी। तस ओहि लागि चलै होइ जोगी॥
सिंघल दीप जाय ओहि पावा। सिद्ध[7] होय चितउर लै आवा॥

दो०—भोज भोग जस मानै, विक्रम साका[8] कीन्ह।
परखि सो रतन पारखी, सबै लखन लिखि दीन्ह॥ ८०॥

७—सातवाँ खंड

बनजारा सिंहलगमन वर्णन

चौपाई

चितउर गढ़ का एक बनजारा[9]। सिंघल दीप चला बैपारा॥
बाह्मन एक हुत निपट[10] भिखारी। सो पुनि चला चलत बैपारी॥
रिनु काहू कर लीन्हेसि काढ़ी। मकु[11] तहँ गये होय कछु बाढ़ी[12]॥
मारग कठिन बहुत दुख भये। नाँघि समुन्द्र दीप ओहि गये॥
दीख हाट कछु सूझ न ओरा। सबै बहुत कुछ दीख न थोरा॥
पै सुठि[13] ऊँच बनिज[14] तहँ केरा। धनी पाव निधनी मुख हेरा॥
लाख करोरिन बस्तु बिकाई। सहसन केरि न कोउ ओनाई[15]॥

---

१ सामुद्रिक=अंग लक्षणों से शुभाशुभ कहने का शास्त्र। २ लखन=लक्षण। ३ नग=कुल में रत्न के समान, सर्व प्रधान, सर्वोत्तम। ४ पदुम=हीरा। पदारथ=रत्न। (अर्थात पदुमावती और रतन सेन की जोड़ी लिखी है)। ५ अँजोरी=उजियारा, चाँदनी। ६ गुन=लिये, वास्ते। ७ सिद्ध=योगी। ८ साका=नाम का स्मारक। ९ बनजारा=बैपारी, सौदागर। १० निपट=अत्यंत। ११ मकु=शायद, कदाचित। १२ बाढ़ी=लाभ। १३ सुठि=बहुत। १४ बनिज=लेन देन, खरीद फरोख्त। १५ ओनाना=बात सुनना।

दो०—सबही कीन्ह बिसाहना[1], औ घर कीन्ह बहोर[2]।
बाह्मन तहाँ लेइ का, गाँठ साँठ[3] सुठि थोर ॥ ८१ ॥

चौपाई

झुरै ठाढ़ काहे क हौं आवा। बनिज[4] न मिला रहा पछतावा ॥
लाभ जानि आयौं यहि हाटा। मूर गँवाय चल्यौं तेहि बाटा ॥
का मैं मरब सिखावन[5] सिखी। आयौं मरैं मीचु हुति लिखी ॥
अपने चलत सो कीन्ह कुवानी[6]। लाभ न दीख मूर भई हानी ॥
का मैं बवा जनम ओहि भूंजी। खोय चल्यौं घरहू कै पूंजी ॥
घर कैसे पैठब मैं छूँछे। कौन उतर देबे तिन्ह पूंछे ॥
जेहि व्यवहरिया[7] कर व्यवहारू। का लै देब जो छेंकै बारू[8] ॥

दो०—साथि चला सत[9] बिचला, भये बिच समुंद पहार।
आस निरासा हौं फिरौं, तू बिधि[10] देइ अधार[11] ॥८२॥

चौपाई

तबहि बियाध सुवा लै आवा। कंचन बरन अनूप सोहावा ॥
बेंचै लाग हाट लै ओही। मोल[12] रतन मानिक जेहि होही॥
सुवहिं[13] को पूंछ पेखि मन डारे। चलन देख आछै मन मारे ॥
बाम्हन आय सुवा सों पूंछा। दहुँ गुनवंत कि निरगुन छूंछा ॥
कहु परवते[14] जो गुन तोहिं पाँहाँ। गुन न छिपाइय हिरदै माँहाँ ॥

---

१ बिसाहना=खरीद। २ बहोर=लौट, वापसी। ३ सांठ=धन, पूंजी। ४ बनिज=सौदा। ५ सिखावन=शिक्षा। ६ कुवानी=(कु+वान्य), वान्यकर्म, वणिक कर्म जो ब्राह्मण को वर्ज्य है। ७ व्यवहरिया=धनी, ऋण दाता, महाजन। ८ बारू=द्वार। ९ सत=प्रतिज्ञा (ऋण चुकाने का वादा)। १० बिधि=परमेश्वर। ११ अधार=आश्रय, टेक। १२ मोल=जिस बजार में रत्नादि बिकते थे। १३ सुवहिं=इस बाज़ार में मुझ जैसे तुच्छ पक्षी सुवा को कौन पूंछैगा, यह देख कर उदास होकर, अपने चलने का मार्ग देखने लगा कि देखैं अब कहां जाना पड़े (किसके हाथ बेंचा जाऊं) अपने मन को मारे (सब्र किये हुए) बैठा है। १४ परवते=पर्वती सुग्गा।

हम तुम जाति बराम्हन दोऊ। जातिहि जाति पूँछ सब कोऊ॥
पंडित हहु तो सुनावहु बेदू। बिन पूंछे पाइय नहि भेदू॥

दो०—हौं पंडित औ बाम्हन, कहु गुन आपन सोय।
पढ़े के आगे जो पढ़ै, दून लाभ तेहि होय॥ ८३॥

चौपाई

तब गुन मोहि अहा[1] हो देवा। जब[2] पंखिन महँ हता परेवा॥
अब गुन कौन जो बँद जजमाना[3]। घालि मँजूसा[4] बेंचै आना॥
पंडित होय सो हाट न चढ़ा। चहौं बिकान भूलि गा पढ़ा॥
दुइ मारग देखौं यहि हाटा। दई चलावै दहुं केहि बाटा॥
रोवत रकत भयो मुख राता। तन भा पियर कहौं का बाता॥
राता[5] स्याम कंठ दुइ गीवा। तिन्ह दुइ फाँद डरौं सुठि जीवा॥
अब[6] ही कंठ फाँद दुइ चीन्हा। दहुं गिव फाँद चाह का कीन्हा॥

दो०—पढ़ि गुनि देखा बहुत मैं, है आगे डरु सोय।
धुंध जगत सब जानि कै, भूलि रहा बुधि खोय॥ ८४॥

चौपाई

सुनि बाम्हन बिनवा चिरिहारू[7]। करु पंखी पर मया[8] न मारू॥
कत रे निठुर जिउ बधसि परावा। हत्या केर न तोहि डरु आवा॥
*कहेसि पँखी "तैं ब्याध मनावा[9]। निठुर सोई जो पर[10]मसु खावा॥

---

१ अहा=था। २ जब=जब मैं पक्षियों के साथ था और स्वतंत्रता से उड़ता फिरता था। ३ जजमान=यज्ञ करने वाला, यहाँ व्याधा। ४ घालि मँजूसा=झाँपी में डाल कर। ५ राता=लाल और काला जो दो कंठे मेरी गर्दन में पड़े हुए हैं, इन्हीं दोनों फंदों से मैं अपने जी में बहुत डरता हूं। ६ अब=मैंने इन कंठे रूपी दो फंदों को पहचाना कि यही मेरे दुःख का कारण हैं, अब देखूं कि ये फंदे और क्या करना चाहते हैं। ७ चिरिहारु=चिड़ीमार। ८ मया=दया। ९ मनावा=मनई, मनुष्य। *पंखी (सुआ) ने कहा कि हे व्याध तू मनुष्य है, (समझ ले, ब्राह्मण सत्य कहता है कि)। १० परमसु=पराया मांस।

*आवहिँ रोय जाहिँ कै रोना। तबहुँ न तजै भोग सुख सोना॥
औ जानहिँ तन होइ है नासू। पोसैं माँस पराये माँसू॥
जो न होत अस पर मस खाधू। कत पंखिन कहँ धरत बियाधू॥
जो बियाध पंखिन नित धरई। सो बेंचत मन लोभ न करई"॥

दो०—बाम्हन सुवा बिसाहा, सुनि मत वेद गिरंथ।
मिला आय साथिन सँग, भा चितउर के पंथ॥ ८५॥

चौपाई

तौ लहि चित्रसेन सिव साजा[1]। रतनसेन चितउर भा राजा॥
आय बात तेहि आगे चली। राजा बनिज[2] आए सिंघली॥
हैं गजमोति भरी बहु सीपी। और वस्तु बहु सिंघलदीपी॥
बाम्हन एकु सुवा लै आवा। कंचन बरन अनूप सोहावा॥
राता स्याम कंठ दुइ काँठा। राते डहन लिखा सब पाठा॥
औ दुइ नैन सुहावन राता। राती ठोर[3] अमीरस बाता॥
मस्तक टीका काँध जनेऊ। कवि[4] बियास पंडित सहदेऊ॥

दो०—बोल अरथ सों बोलै, सुनत सीस पै डोल।
राज मँदिर महँ चाहिय, अस वह सुवा अमोल॥ ८६॥

चौपाई

भयो रजायसु जन दौरावा। बाह्मन सुवा वेगि लै आवा॥
विप्र असीस बिनति अवधारा[5]। सुवा जीउ नहिँ करौं निनारा[6]॥
पै यह पेट भयो बिसवासी[7]। जेइ सब नाये[8] तपा सन्यासी॥

---

१ आवहिं=रोते हुये आते हैं (जन्म लेते हैं) और जाते समय (मरते समय) रोना पिटना कराके जाते हैं। (नोट) स्मरण रखना चाहिये कि "तैं ब्याध मनावा" से लेकर "मन लोभ न करई" तक सब सुवा का वचन है। १ सिव साजा= शिव हो गया (कैलाशवासी हो गया, मर गया) २ बनिज=व्यापारी। ३ ठोर= चोंच। ४ कवि=व्यास के समान कवि और सहदेव के समान पंडित है। ५ अवधारा=आरंभ किया। ६ निनारा=न्यारा, अलग। ७ बिसवासी=(विश्व आशी) संसार भर को खा जाने वाला (बहुत खाने वाला)। ८ नाये=नवाये, नीचा दिखाया, अधीन किये।

दारा सेज जहाँ जेहि नाहीं। भुइँ परि रहै लाय गिउ बाहीं॥
अंधहु रहै जो देख न नैना। गूंग रहै मुख आव न बैना॥
बहिर रहै जो स्रवन न सुना। पै यह पेट न रह निरगुना[१]॥
कै कै फेरा नित बहु दोखी। बारहिँ[२] बार फिरै न सँतोषी॥

दो०—सो मोहि लिये[३] मँगावै, लावै भूख पियास।
जो न होय अस बैरी, केहिँ काहु की आस॥ ८७॥

चौपाई

सुवैं असीस दीन्ह "बढ़साजू"। "बढ़ परताप अखंडित राजू"॥
भागवंत बुध[४] विधि अवतारा। जहाँ भाग तहँ रूप जोहारा[५]॥
को केहि पास आस कै गवना। जो निरास दृढ़ आसन मौना॥
कोउ बिन पूंछे बोल जो बोला। होइ सो बोल माँटी के मोला[६]॥
पढ़ि गुनि जानि वेद मत भेऊ। पूंछे बात कहै सहदेऊ॥
गुनी न कोऊ आप सराहा। सो जो बिकाय[७] कहा पै चाहा॥
जौ लहि गुन परगट नहिँ होई। तौ लहि मरम न जानै कोई॥

दो०—चतुर वेद हौं पंडित, हीरामन मोहि नाउँ।
मधु[८] मालति सों मेरवौं, सेव करौं तेहि ठाउँ॥ ८८॥

चौपाई

रतन सेन हीरामन चीन्हा। टका[९] लाख बाह्मन कहँ दीन्हा॥
विप्र असीसा कीन्ह पयाना। सुवा सो राज मँदिर महँ आना॥

---

१ निरगुना=निकम्मा। २ बारहि बार=द्वार द्वार, दरवाज़े दरवाज़े। ३ लिये=वही पेट मुझ को लिये हुये भिक्षा मंगवाता फिरता है और भूख तथा प्यास लगाता है। ४ बुध=पंडित, ज्ञानी। ५ जोहारना=प्रणाम करना। ६ मांटी के मोल=अत्यंत तुच्छ। ७ विकाय=परंतु जो बिका चाहता है वह अपना गुण कहना ही चाहता है। ८ मधु मालति········तेहि ठाउँ=सुग्गा कहता है कि मुझ में विशेष गुण यह है और उसी ठौर मैं अच्छी सेवा करता हूं जहां मधु (चेतमास) को मालती से मिलाने का काम हो (प्रेमी को प्रेमिका से मिलाने का दूतत्व मैं अच्छी भांति कर सकता हूं)। ९ टका=रुपया।

बरनौं काह सुवा कै भाषा। धनि सो नाउँ हीरामन राखा ॥
जो बोलै सब मानिक मूंगा। नाहिँ त मौन बाँधि रह गूँगा ॥
जो बोलै राजा मुख जोवा। जानहु मोतिन हार पिरोवा ॥
जनहु मरे मुख अमृत मेला। गुरु होइ आप कीन्ह जग चेला ॥
सुरिज चाँद कै कथा जो कहा। प्रेम की कहन लाइ जिउ गहा ॥
दो०—ज्यौं ज्यौं सुनै धुनै सिर, राजा प्रीत अगाहि[1]।
अस गुनवंत नाहिं भल, बाउर कीन्ह जो चाहि ॥ ८९ ॥

———

८—आठवां खंड

धाय-सुवा-संवाद

चौपाई

लच्छ टका दै सुवटा लीन्हा। साज जराव नगन कर कीन्हा ॥
रतन जराव क पिंजरा साजा। सुखि भा देखि सुवा कहँ राजा ॥
हीरामनि है पंडित गुनी। बहुतै भांति पंडतिन सुनी ॥
अँबिरित भोजन सदा खवावा। अँबिरित बचन सुतनसचु[2] पावा
सुवा वचन जो अँबिरित कहा। नैन ओट राजा नहिँ चहा ॥
सत्य भाव सुअटा सों लावा। सुवा छाँड़ि चित और न भावा ॥
पंडित सुवा चतुर बड़ गुनी। गढ़ चितउर आये विधि बनी ॥
दो०—सुवा सुपंडित जानि कै, अधिक प्रीति जिय कीन्ह।
कै मनुहारि[3] विप्र कै, लच्छ टका फिरि दीन्ह ॥ ९० ॥

चौपाई

सुरिज चाँद कै कथा कहानी। प्रेम कहनि हिय लाय बखानी ॥
सुवा भयो राजा बिसरामी। तेहि आदर जेहि चाहै स्वामी ॥
और न काहुहिँ राजा रतै[4]। जो कछु मंत्र सुवा सों मतै[5] ॥

---

१ अगाहि=अगाध, अथाह। २ सचु=सुख। ३ मनुहारि=खातिर। ४ रतना=प्रेम करना। ५ मतना=सलाह करना।

धाय दामिनी सेवा लाई। पिँजरा तजि नहिँ पल कहुँ जाई ॥
पूँछ धाय हीरामन सुवा। सिंहल तजे कितक दिन हुवा ॥
कस छाँड़ेहु तुम सिंघल अपनी। तुम बिन कैसे रहै पदुमिनी ॥
का पूँछौ सिंघल कै वाता। आवत भये मास मोहिँ साता ॥

दो०—राजा अनुचित माना, तहाँ विरस[1] हम कीन्ह।
पदुमिनि गई सरोवरै, बनोवास हम लीन्ह ॥ ६१ ॥

चौपाई

पदुमावति पंडित पढ़ि भई। उन्ह कै गढ़नि दइउ असि दई ॥
तरुन वैस रस की विधि जाना। राजैं सुना बहुत दुख माना ॥
कछु राजा तब हमहिँ सुगाना[2]। को बुधि देइ सुवा बिन आना ॥
क्रोध कीन्ह दुख जिय महँ भयऊ। हम कहँ मारन दूतहिँ कहेऊ ॥
तव पदुमावति हमहि छिपावा। विनै दूत कहँ फेरि पठावा ॥
हम कहँ चिंता भौ तिन्ह पाहीँ। गयउँ उदास होय बन माहीँ ॥
तेहि बन मा पंछी सब मिले। आदर भाव कीन्ह अति हिले ॥

दो०—बहुत भाँति कै सेवा, साथ बसेरा कीन्ह।
बिहँसि हिरामनि बोले, धायहिँ उत्तर दीन्ह ॥ ६२ ॥

९—नवाँ खण्ड

नागमती-सुवा संवाद

चौपाई

दिन दस पाँच तहाँ जो भये। राजा कतहुँ अहेरहिँ[3] गये ॥
नागमती रुपवंती रानी। सब रनिवास पाट परधानी[4] ॥
कै सिँगार कर दरपन लीन्हा। परसन देखि गरव जिय कीन्हा ॥

---

१ विरस=अनवन। २ सुगाना=संदेह किया। ३ अहेर=शिकार। ४ पाट-परधानी=रानियों में प्रधान पटरानी।

हँसत सुवा पहँ आइ सो नारी। दिहें कसौटी[1] औ पनवारी॥
भले सुवा औ प्यारे[2] नाँहा। मोर रूप कै कोउ जग माँहाँ॥
सुवा वरन[3] दहुँ कस है सोना। सिंघल दीप तोर कस लोना॥
कौन रूप तोरी रुपमनी[4]। दहुं हौं लोनि कि वा पदुमिनी॥

दो०—जो न कहसि सत सुवटा, तोहि राजा कै आन।
है कोऊ यहि जगत महँ, मोरे रूप समान॥ ९३॥

चौपाई

सँवरि रूप पदुमावति केरा। हँसा सुवा रानी मुख हेरा॥
जेहिं सरवर महँ हंस न आवा। बगुलहि तेहिं सर हंस कहावा॥
दई कीन्ह अस जगत अनूपा। एक एक ते आगर[5] रूपा॥
कै मन गरब न छाजा काहू। चाँद घटा औ लागा राहू॥
लोनि बिलोनि[6] तहाँ को कहा। लोनी सोइ कंत जेहि चहा॥
का पूँछौ सिंघल कै नारी। दिनहि न पूजै निसि अँधियारी॥
पुहुप सुबास सु उनकै काया। जहाँ माथ का बरनौं पाया[7]॥

दो०—गढ़ीं सो सोने सोंधे[8], भरीं सो रूपे[9] भाग।
सुनत रूखि भइ रानी, हिये लोन अस लाग॥ ९४॥

चौपाई

जो यह सुवा मँदिर महँ अहई। कबहुँ होय[10] राजा सों कहई॥
सुनि राजा पुनि होय वियोगी[11]। छाँड़े राज चलै होइ जोगी॥
बिष राखे नहिं होय अँगूरू। सबद न देइ बिरह तमचूरू[12]॥
धाय दामिनी बेगि हँकारी[13]। ओहि सौंपा हिय रिस न सँभारी॥

---

१ दिहें...पनवारी=आँखों में काजल रेख और दातों में पान की धड़ी जमाये हुए। (कसौटी=काजलकी रेख, पनवारी=पान की धड़ी) २ प्यारे नाहां=मेरे पति के प्यारे। ३ वरन=वर्णन कर। ४ रूपमणि=(जिसको तू रूपवती समझता है—पदमिनी)। ५ आगर=बढ़ कर। ६ विलोनी=कुरूप। ७ पाया=पाँव, पैर। ८ सोंधा=सुगंध। ९ रूपे का भाग्य=उज्ज्वल भाग्य। १० होय=कभी ऐसा हो सकता है कि। ११ वियोगी=दूसरे का अनुरागी और प्रथम से उदासीन। १२ तमचूर=मुर्गा। १३ हँकारी=बुलवाई।

देखु सुवा यह है मँदचाला[१]। भयो न ताकर जाकर पाला ॥
मुख कह आन पेट पै आना। तेहि औगुन दस हाट बिकाना ॥
पंखि न राखिय होइ कुभाखी। लै तहँ मारु जहाँ नहिं साखी ॥

दो०—जेहि दिन कहँ हौं नित डरौं, रैनि छिपाऊँ सूर।
लै चह दीन्ह कमल कहँ, मो कहँ होय मयूर[२] ॥ ६५ ॥

चौपाई

धाय सुवा लै मारै गई। समुझि ज्ञान हिरदै मति भई ॥
सुवा सो राजा कर बिसरामी[३]। मारि न जाइ चहै जेहि स्वामी ॥
यह पंडित खंडित पै[४] रागू। दोष ताहि जेहि सूझ न आगू ॥
जो तियान के काज न जाना। परै धोख पाछे पछताना ॥
नागमती नागिनि-बुधि ताऊ। सुवा मयूर होय नहिं काऊ ॥
जो न कंत के आयसु माँहाँ। कौन भरोस नारि तेहि बाँहाँ[५] ॥
मकु यहि खोज होय निसि आये। तुरी[६] रोग हरि माँथे जाये ॥

दो०—दुइ सो छिपाये ना छिपैं, एक हत्या औ पाप।
अंतहिं करहिं बिनास ये, सैं[७] साखी दै आप ॥ ६६ ॥

चौपाई

राखा सुवा धाय मति साजा। भयो खोज निसि आये राजा ॥
रानी उतर मान[८] सों दीन्हा। पंडित सुवा मँजारी लीन्हा ॥
मैं पूँछी सिंघल पदुमिनी। उतरु दीन्ह तुम को[९] नागिनी ॥
वह जस दिन तुम निस अँधियारी। जहां बसंत करील[१०] को बारी ॥

---

१ मँदचाल=बुरी चाल वाला। २ मयूर=मोर (शत्रु) रानी का नाम 'नागमती' है, नाग का शत्रु मयूर है राजा को सूर्य कहा है इसी से पदमावती को कमल कहा (पद्म=कमल)। ३ बिसरामी=विश्राम देने वाला। ४ पै=द्वेष। खंडित पै रागू=राग और द्वेष से खंडित है (किसी से राग द्वेष नहीं रखता)। ५ बाँह=हिमायत, सहारा। ६ तुरी रोग...जाये=घोड़े की बला बंदर के सिर जाय (हरि=बंदर)। ७ सैं=निश्चय करके। ८ मान=घमंड। ९ तुमको नागिनी=हे नागमती तुम उसके सामने क्या हो। १० करील=जहाँ बसंत ऋतु वर्तमान है वहां करील की वाटिका क्या है—अर्थात् तुच्छ है।

का तोर पुरुष रैनि कर राऊ। उलू[1] न जान दिवस कर भाऊ ॥
का वह पंखि कूट[2] मुहँ कूटी। अस बड़ बोल जीभ कहँ छोटी ॥
जहर चुवै जो जो कह बाता। भोजन बिन भोजन मुख राता ॥

दो०—माथे नहिं बैसारिये, सुठि जो सुवा है लोन।
कान टूट जेहि आभरन, का लै करिय सो सोन ॥ ८७ ॥

चौपाई

राजैं सुनि वियोग[3] तस माना। जैस हिये बिकरम पछिताना ॥
पंडित दुख खंडित निरदोखा। पंडित होइ तेहि परै न धोखा ॥
पंडित केरि जीभ मुख सूधी। पंडित बात कहै न निबूधी[4] ॥
पंडित सुमति देइ पँथ लावा। जो कुपंथ तेहिं पँडित न भावा ॥
पंडित राते बदन सरेखा[5]। जो हत्यार रुहिर[6] तेइ देखा ॥
वह हीरामनि पंडित सुवा। जो बोलै मुख अमिरितु चुवा ॥
कै परान घट आनहु मती[7]। कै जरि होहु सुवा सँग सती ॥

दो०—जनि जानहु कइ औगुन, मँदिर होय सुख-राज।
आयसु मेटि कंथ[8] कर, का कर भा भल काज ॥ ८८ ॥

चौपाई

चांद जैस धनि उजियर अही। भा पिउ रोस गहन अस गही ॥
परम सोहाग निबाह न पारी। भा दोहाग[9] सेवा जब हारी ॥
इतनिक दोस बिरचि पिउ रूठा। जो पिउ आपन कहै सो झूठा ॥
ऐसे गरब न भूलै कोई। जेहि डर बहुत पियारी सोई ॥
रानी आइ धाय के पासा। सुवा मुवा सेंवर[10] की आसा ॥

---

१ उलू=उल्लू। २ कूट=एक अति कड़ुई जड़ी—वह पक्षी क्या है? उसके मुहँ में तो कूट ही कूट कूट कर भरी है (बहुत कड़ुई बात बोलता है)। ३ वियोग=दुःख। ४ निबूधी=निर्बुद्धि। ५ सरेख=श्रेष्ठ। ६ रुहिर=रुधिर, खून। ७ मती=नागमती। ८ कंथ=पति। ९ दोहाग=दौर्भाग्य, अभागापन। १० सेंवर=जैसे कोई सुवा फल की आशा से सेमर वृक्ष के पास जाता है, परन्तु केवल भुवा ही पाता है।

परा प्रीति कंचन महँ सीसा। बिथरि न मिलै स्याम पै दीसा॥
कहाँ सोनार पास जेहिं जाऊँ। देइ सुहाग करै एक ठाऊँ॥

दो०—मैं पिउ पिरित भरोसे, गरब कीन्ह मन माँह।
तेहि रिस हौं परहेली[1], नागरि[2] रूसा नाह[3]॥ ९९॥

चौपाई

उतर धाय तब दीन्ह रिसाई। रिस आपुहि बुधि आनहिं खाई॥
मैं जो कहा रिस करहि न वाला। को न गवा यहि रिस कर घाला[4]॥
तू रिस भरी न देखिसि आगू। रिस महँ का कहँ भयो सोहागू॥
विरस विरोध रिसहिं ते होई। रिस मारै तेहिं मार न कोई॥
जेहि रिस तेहि रस जोग न जाई। बिनु रस हरदि होय पियराई॥
जेहि के रिस मरिये रस जीजै। सो रस तजि रिस कौंहुँ न कीजै॥
कंत सोहाग कि पाइय साधा[5]। पावै सोइ जो ओहि चित बांधा॥

दो०—रहै जो पिय के आयसु, औ बरतै होइ हीन[6]।
सो धन चांद अस निरमल, जनम न होय मलीन॥ १००॥

चौपाई

जुआ हार समझी मन रानी। सुवा दीन्ह राजा पहँ आनी॥
मानमती[7] होइ गरबु न कीन्हा। कंत तुम्हार मरम हौं लीन्हा॥
सेवा करै जो बरहौ मासा। एतनिक औगुन करहु बिनासा॥
जो तुम्ह देइ नाइ कै गीवा। छाँड़हु नहिं बिन मारे जीवा॥
मिलतहु महँ जनु अहहु निरारे। तुम सों आहि अँदेस पियारे॥
का रानी का चेरी कोई। जा कहँ मया करहु भल सोई॥
मैं जाना तुम मोंही माँहाँ। देखौं ताकि तो हौ सब माँहाँ॥

दो०—तुम सौं कोउ न जीता, हारा बररुचि[8] भोज[9]।
पहले आपुहिं खोवै, करै तुम्हार सो खोज॥ १०१॥

---

१ परहेली=(अवहेली) निरादरित। २ नागरि=हे चतुर धाय। ३ नाह=पति। ४ घाला=नष्ट किया हुआ। ५ साधा=(साध)=इच्छा। ६ हीन=तुच्छ, छोटा। ७ मानमती=अहंकार से मस्त हो कर। ८ वर रुचि=एक प्रसिद्ध पंडित, विशेष वा सुंदर रुचि वाला कोई व्यक्ति। ९ भोज=प्रसिद्ध राजा विशेष।

१०—दसवाँ खंड

राजा-सुवा-संवाद

चौपाई

राजै कहा सत्त कहु सुवा। बिन सत कस जस सेंबर भुवा॥
होइ मुख रात सत्त कहे बाता। जहाँ सत्त तहँ धरम सँघाता॥
बाँधी सिष्टि अहै सत केरी। लछिमी आहि सत्त कै चेरी॥
सत्त जहाँ साहस सिधि पावा। औ सतवादी पुरुष कहावा॥
सत गहि सती सँवारै सरा[1]। आगि लाइ चहुँदिस सत जरा॥
दुउ जग तरा सत्त जेइँ राखा। और पियारि दइहिँ[2] सत भाषा॥
सो सत छाँड़ि जो धरम बिनासा। का मति कीन्ह हिये सत नासा॥
दो०—तुम सयान औ पंडित, असत न भाषेहु काउ।
सत्त कहहु सो मो सों, दहुँ काकर अनियाउ॥ १०२॥

चौपाई

सत्त कहत राजा जिउ जाऊ। पै मुख असत न भाषौं काऊ॥
हौं सत लै निसरा यहि बूते[3]। सिंघल दीप राज घर हूते॥
पदुमावति राजा कै बारी। पदम सुगँध ससि दई सँवारी॥
ससि मुख अंग मलयगिरि रानी। कनक सुगंध दुवादस[4] बानी॥
हैं पदुमिनि जो सिंघल माँहाँ। सुगँध सरूप सो ओहि कै छाँहाँ॥
हीरामनि हौं तेहिक परेवा। काँठा फूट करत ओहि सेवा॥
औ पायौं मानुस कै भाषा। नाहिँ त पंखि मूँठि भर पाँखा॥
दो०—जौलहि जिअउँ राति दिन सँवरि मरौं ओहि नाँउँ।
मुख राता तन हरियरा दुहूँ जगत लै जाउँ॥१०३॥

चौपाई

हीरामनि जो कँवल बखाना। सुनि राजा होइ भँवर लोभाना॥

---

१ सरा=चिता। २ दइहिँ=ईश्वर को। ३ बूते=बल। ४ दुवादस बानी=अत्यंत खरा सोना।

आगे आउ पंखि उजियारे। कहु सो दीप पतँग कै मारे॥
रहा जो कलक सुवासिक[१] ठाऊं। कस न होय हीरामनि नाऊं॥
को राजा कस दीप उतंगू। जेहि रे सुनत मन भयो पतंगू॥
सुनिसोसमुँदचखभयेकिलकिला[२]। कँवलहिँ चहौं भँवर होइ मिला॥
कहु सौगँद[३] धन[४] कस निरमरी। दहुँ अलि संग कि अब ही करी[५]॥
औ कहु तहाँ जो पदुमिनि लोनी। घरघर सबहिँ कि होइँ[६]जहँहोनी॥

दो०—सबै बखानु[७] तहाँ कर कहत सो मोसौं आउ।
चहौं दीप वह देखा सुनत उठा तस चाउ॥१०४॥

चौपाई

का राजा हौं बरनौं तासू। सिंघल दीप आहि कैलासू॥
जो गा तहाँ भुलाना सोई। गए जुग बीति न बहुरा कोई॥
घर घर पदुमिनि छतिसौ जाती। सदा बसंत दिवस औ राती॥
जेहि जेहि बरन फूल फुलवारी। तेहि तेहि बरन सुगंध सो नारी॥
गंध्रपसेन तहाँ कर राजा। अछरन[८] महँ इँदरासन साजा॥
सो पदुमावति ताकर बारी। औ सब दीप माँहँ उजियारी॥
चहूँ खूंट के बर जो ओनाहीं[९]। गरबहिं राजा बोलै नाहीं॥

दो०—उदित सूर जस देखी, चाँद छिपै जेहिं धूप।
ऐसहि सबै जाहिं छिपि पदुमावति के रुप॥ १०५॥

चौपाई

सुनि रवि नाउ रतन भा राता। पंडित फेरि यहै कहु बाता॥
तैं सुरंग मूरति वह कही। चित महँ लागि चित्र होइ रही॥
जनु ह्वै सुरिज आइ मन बसी। सब घट पूरि हिये परगसी[१०]॥

---

१ सुवासिक=सुगंधित। २ किलकिला=एक छोटा पक्षी जो पानी में गोता मारमार कर मछली पकड़ता है। ३ सौगंद=कसम खाकर। ४ धन=(धनिया) स्त्री। ५ करी=कली। ६ होइँ जहँ होनी=जहाँ कहीं होनी होती हैं अर्थात् कहीं कहीं। ७ बखानु=व्याख्यान। ८ अछरन=अप्सराओं। ९ ओनाहीं=झुकते हैं। १० परगसी=प्रकाशित हुई।

अब हौं सुरिज चांद वहि छाया। जल विन मीन रकत बिन काया॥
किरन[1] करा भा पेम अँकूरू। जो ससि सरग चढ़ौं होइ सूरू॥
सहसउ करा[2] रूप मन भूला। जहँ जहँ दिष्टि कँवल जनु फूला॥
तहाँ भँवर जहँ कँवला[3] गंधी। भइ ससि[4] राहु केरि रिन-बंधी॥
दो०—तीनि लोक खँड़ चौदह, सबै परै मोहिं सूझि।
पेम छांड़ि कुछ लोन[5] नहिं, जो देखा मन बूझि॥ १०६॥

चौपाई

पेम सुनत मन भूलु न राजा। कठिन पेम सिर देइ तो छाजा॥
पेम फाँद जो परा न छूटा। जिउ दीन्हे वह फाँद न टूटा॥
गिरगिट छंद[6] धरै दुख तेता। खिन खिन रात पीत खिन सेता॥
जानि पुछारि[7] जो भइ बनवासी। रों रों फाँद परे नग-फाँसी[8]॥
पाँखन फिरि फिरि परा सो फाँदू। उड़ि न सकै उरझी भइ बाँदू[9]॥
मुयों मुयों अहनिसि चिल्लाई। ओही रोस नागन धरि खाई॥
पाँडुक सुवा कंठ वहि चीन्हा। जेहि गिव परा चहै जिउ दीन्हा॥
दो०—तीतर गीव जो फाँद है, नितहि पुकारै दोख।
सेले फाँद हँकारि कह, कत मारै बिन मोख॥ १०७॥

चौपाई

राजै लीन्ह ऊभि कै स्वाँसा। पेस बोलु जिन बोलु निरासा॥
पहिल पेम है कठिन दुहेला[10]। दोउ जग तरा पेम जेइ खेला॥
दुख भीतर सो पेम मधु राखा। गंजन[11] मरन सहै सो चाखा॥

---

१ किरन=उसकी किरण की कला से प्रेम का अँकुर उगा है। २ सहसउ करा=(राजा ने अपने को सूर्य कहा है) हज़ारों कला से (परिपूर्ण) उसके रूप पर मेरा मन भूल गया है। ३ कंवला=जहाँ कंवला अर्थात् पदमावती की गन्ध है वहीं मेरा मन भंवर हो रहा है। ४ ससि=अब वह ससि (पदमावती) मेरे प्रेम रूपी राहु की ऋणी हो गई। अर्थात् मेरा प्रेम अवश्य कभी पदमावती शशि को ग्रसैगा। ५ लोन=अच्छा, सुन्दर। ६ छंद धरना=रूप बदलना। ७ पुछारि=लंबी पूंछ वाला मोर। ८ नगफाँसी=नागफाँस। ९ बाँदू=बंदी, बंधुवा, कैदी। १० दुहेला=(दुहेला) बुरा खेल। ११ गंजन=अपमान।

जेइ नहिँ सीस पेम पँथ लावा। सो पृथिमिहिँ काहे कहँ आवा॥
अब मैं पेम फाँद सिर मेला। पाँउ न ठेलु राखु कै चेला॥
पेम वार[1] सो कहै जो देखा। जेइँ न दीख का जान विसेखा॥
तव लग दुख प्रीतम नहिँ भेंटा। जो भइ भेंट जनम दुख मेटा॥

दो०—जस अनूप तैं बरने, नख सिख बरनु सिंगार।
है मोहि आस मिलैं कै, जो मेरवै करतार॥ १०८॥

११—ग्यारहवाँ खंड

सिख-नख वर्णन

चौपाई

का सिँगार ओहि बरनउँ राजा। ओहि क सिँगार ओही पै छाजा॥
प्रथम सीस कसतूरी केसा[2]। वलि[3] वासुकि को अवर नरेसा॥
भँवर केस वह मालति रानी। विसहर लुरहिं लेइ अरघानी[4]॥
बेनी छोरि झार जो वारा। सरग पतार होइ अँधियारा॥
कोंवल कुटिल केस नग[5] कारे। लहरैं भरहिं भुवंग विसारे[6]॥
बेधे जानु मलयगिरि वासा। सीस चढ़े लोटहिं चहुँ पासा॥
घुँघरवार अलकैं विष भरीं। सँकरै[7] पेम चहैं गिव परीं॥

दो०—अस फँदवार केस वै, परा सीस गिव फाँद।
आठौ कुरी नाग सब, भए केसन के बाँद[8]॥ १०९॥

चौपाई

बरनौं मांग सीस उपराहीं। सेंदुर अबहिं चढ़ा तेहिं नाहीं॥
बिन सेंदुर अस जानहु दिया। उजियर पंथ रैनि महँ किया॥

---

१ बार=दरवाज़ा। २ कसतुरी केसा=(जुल्फ़मुश्कीं—यह फ़ारसी कवियों की उपमा है)। ३ वलि=वलिहारी जाते हैं। ४ अरघानी=सुगंध। ५ नग कारे=काले नाग हैं। ६ भुवंग बिसारे=विषैले सांप। ७ सँकरै=सांकरैं (शृंखला, ज़ंजीरें)। ८ बाँद=बन्दी।

कंचन रेख कसौटी कसी। जनु घन महँ दामिनि परगसी॥
सुरिज किरनि जनु गगन बिसेखी। जमुना मांझ सरसुती देखी॥
खांडे धार रुहिर[1] जनु भरा। करवत लै बेनी पर धरा॥
तेहि पर पूरि धरे जो मोती। जमुना मांझ गंग कै सोती॥
करवत तपा लेहिं होइ चूरू। मकु[2] सो रुहिर लै देइ सिंदूरू॥

दो०—कनक दुवादस बानि होइ, चह सोहाग[3] वह माँग।
सेवा करहिं नखत सब, उई गगन जस गाँग[4]॥ ११०॥

चौपाई

कहौं लिलार[5] दुइज[6] कै जोती। दुइजहिं जोति कहाँ जग ओती[7]॥
सहस करा जो सुरिज दिपाहीं। देखि लिलार सोऊ छिपि जाहीं॥
का सरवरि तेहिं देउँ मयंकू[8]। चांद कलङ्की वह निकलंकू॥
ओहि चांदहिं पुनि राहु गरासा। ओहि पर राहु सदा परगासा॥
तेहि लिलार पर तिलक बईठा। दुइज पास जानहु धुव दीठा॥
कनक पाट जनु बैठा राजा। सबै सिंगार अत्र[9] लै साजा॥
वहि आगे थिर रहै न कोऊ। दहुँ का कहँ अस जुरा संजोऊ[10]॥

दो०—खरग धनुष चक[11] बान औ, जग-मारन तेहि नाउँ।
सुनि मुरछित भा राजा, मनो खुभे[12] एक ठाउँ॥ १११॥

---

१ रुहिर=(पहले कहा है कि अभी सेन्दूर नहीं चढ़ा, मगर फिर मांग की ललाई का वर्णन है। तात्पर्य यह कि बिना सेन्दुर चढ़े ही उस मांग में ऐसी स्वाभाविक ललाई है कि) २ मकु=शायद। ३ सोहाग=बारहबानी (खरा) सोना हो कर वह मांग सोहाग (सोहागा) चाहती है—सोहागा से सोने का रङ्ग और अधिक निखरता है। वह चाहती है कि मुझे ऐसा पति मिलै जिससे मेरी शोभा और बढ़े। ४ गाँग=आकाश गङ्गा। ५ लिलार=ललाट। ६ दुइज=द्वितिया का चन्द्रमा। ७ ओती=उतनी। ८ मयंकू=चन्द्रमा। ९ अत्र=अस्त्र। १० संजोउ=(संयोग) साज सामान, सामग्री। ११ चक=(चक्र) आंख की पुतली, खरग=नासा, धनुष=भौंह, बाण= कटाक्ष। १२ खुभे=मानो चारो अस्त्र मर्मस्थान (एक ठाउँ) में चुभ गये।

चौपाई

भौहैं स्याम धनुष जनु ताना। जा सउँ[1] हेर मार विस वाना॥
स्याम धनुष ओहि भौंहन चढ़ा। केइँ हत्यार कालु अस गढ़ा॥
ओही धनुष किसुन पहँ अहा। ओही धनुष राघो कर गहा॥
ओही धनुष कंसासुर मारा। ओही धनुष रावन संहारा॥
ओही धनुष वेधा हुत राहू[2]। मारा ओही सहसरा बाहू॥
ओही धनुष मैं ता पहँ चीन्हा। धानुक[3] आपु वेध[4] जग कीन्हा॥
उन्ह भौंहन सरि कोउ न जीता। अछरी[5] छिपीं छिपीं गोपीता[6]॥

दो०—भौंह धनुष धन[7] धानुक, दूसर सरि न कराइ।
गगन धनुष जो उगवै, लाजहिं सो छिपि जाइ॥ ११२॥

चौपाई

नैन वाँक सरि पूज न कोऊ। मानु समुँद अस उलथहिं[8] दोऊ॥
राते कँवल करहिं अलि भँवाँ[9]। घूमहिं माति चहूं उपसवाँ[10]॥
उठहि तुरंग लेहिं नहिं वागा। चाहहिं उलथि गगन कहँ लागा॥
पवन झकोरहिं देहिं हिलोरा। सरग लाइ भुइं लाइ वहोरा॥
जग डोलै डोलत नैनाहा[11]। उलटि अड़ार[12] जाहिं पल माँहाँ॥
चहैं फिराय गगन कहँ वोरा। अस वै भँवैं चक्र[13] के जोरा॥
समुँद हिंडोल करहिं जनु झूले। खंजन लरहिं मिरिग वन भूले॥

दो०—भर समुंद अस नैन दुइ, मानिक भरे तरंग।
आवत तीर फिरावहीं, काल भँवर तेहि संग॥ ११३॥

---

१ सउँ=सामने। २ राहू=रोहू मछली (अर्जुन कृत मत्स्यवेध से तात्पर्य है)। ३ धानुक=(धानुष्क) धनुष धारी। ४ वेध=लक्ष्य, निशाना। ५ अछरी=अप्सरायें। ६ गोपीता=गोपियां। ७ धन=(धन्या) सुन्दर स्त्री। ८ उलथहिं=उलट पुलट कर देते हैं। ९ भँवाँ=भ्रमण। १० उपसवाँ=(उप+पार्श्व) इर्द गिर्द, चारो ओर। ११ नैनाहा=नयन। १२ अड़ार=(अटाला) समूह, ढेर। १३ चक्र के जोरा=चाक के समान।

चौपाई

वरुनी का बरनौं इमि बनी। साधे बान जानु दुइ अनी॥
जुरी राम रावन कै सैना। बीच समुंद्र भए दुइ नैना॥
वारहिं प्रार बनाउरि[1] साधा। जा सउँ[2] हेर लाग विष बाधा॥
उन बानन अस को जो न मारा। बेधि रहा सगरौ संसारा॥
गगन नखत जस जाहिं न गने। वै सब बान ओही के हने॥
धरती बान बेधि कै राखी। साखी[3] ठाढ़ देहिं सब साखी[4]॥
रोंव रोंव मानुस तन ठाढ़े। सोतहिं सोत[5] बेधि अस काढ़े॥

दोहा—बरुनि बान अस ओपहिं[6], बेधे रन बन ढंख[7]।
साउज[8] तन सब रोंवाँ, पंखिन तन सब पंख॥ ११४॥

चौपाई

नासिक खरग देउँ किमि जोगू। खरग खीन वहि बदन सँयोगू॥
नासिक देखि लजान्यो सूवा। सूक[9] आय बेसर होइ ऊवा॥
सुवा सो पियर हिरामनि लाजा। और भाव का बरनौं राजा॥
सुवा सो नाक कठोर पँवारी[10]। वह कोंवल तिल पुहुप सँवारी॥
पुहुप सुगंध करहिं सब आसा। मकु हिरकाइ[11] लेइ हम वासा॥
अधर दसन पर नासिक सोभा। दारिम देखि सुवा मन लोभा॥
खंजन दुहु दिस केलि कराहीं। दहुँ ओहि रस को पाव को नाहीं॥
दोहा—देखि अमीरस अधरन, भयो नासिका कीर।
पवन वास पहुँचावै, आस्रम[12] छाँड़ न तीर॥ ११५॥

चौपाई

अधर सुरंग अमीरस भरे। बिंब सुरंग लाजि बन परे॥

---

१ बनाउरि=बाणावली। २ सउँ=सामने। ३ साखी=वृक्ष। ४ साखी=गवाही। ५ सोत=रोमकूप। ६ ओपहिं=ओपवान हैं, अर्थात् तेज़ हैं। ७ ढंख=ढाक, पलास (यहां वृक्षमात्र) ८ साउज=(शवज) शिकार वाले पशु (यहां पशु मात्र) ९ सूक=शुक्र। १० पँवारी=(पै+वारी=दोषवाली) टेढ़ी। ११ हिरकाइ=निकट रखि कर। १२ आस्रम=इसी आशा से निकट नहीं छोड़ता, आस्रय=आश्रय, आशा।

फूल दुपहरी जानहु राता। फूल झरहिँ जो जो कह बाता॥
हीरा लिहे सु विद्रुम धारा। विहँसत जगत होइ उजियारा॥
भइ[1] मँजीठ बातन रंग लागे। कुसुम रंग थिर रहै न आगे॥
अस कै अधर अमी भरि राखे। अबहुँ अछूत[2] न काहू चाखे॥
मुख तँबोल रँग ढारहि रसा[3]। केहि मुख जोग सो अमिरितु बसा॥
राता जगत देखि रँग राते। रुहिर[4] भरे आछहिँ विहँसाते॥

दोहा—अमी अधर अस राजा, सब जग आस करेइ।
केहि कहँ कँवल बिकासा, को मधुकर रस लेइ॥ ११६॥

चौपाई

दसन चौक[5] बैठे जनु हीरा। औ बिच बिच रँग श्याम गँभीरा॥
जनु भादौं निसि दामिनि दीसी। चमकि उठै तस विहँस बतीसी॥
वह सो जोति हीरा उपराहीं। हीरा दिपहिँ सो तेहि परछाहीं॥
जेहि दिन दसन जोति निरमई। बहुतै जोति जोति वहि भई॥
रबि ससि नखत दिपहिँ तेहि जोती। रतन पदारथ मानिक मोती॥
जहँ जहँ विहँसि सुभावहिँ हँसै। तहँ तहँ छिटकि जोति परगसै॥
दामिनि चमक न सरवरि पूजी। पुनि वहि जोति होइ को दूजी॥

दो०—हँसत दसन तस चमकै, पाहन उठै झरक्कि[6]।
दारयौं सरि जो न कै सका, फाटा हिया दरक्कि॥ ११७॥

चौपाई

रसना कहौं जो कह रस बाता। अमिरित बचन सुनत मन राता॥
हारे सुर चातक कोकिला। बीन बंसि ओहि बैन न मिला॥

---

१ भइ मँजीठ=मजीठ ने उससे कुछ बातें कर ली हैं, इसी से उसकी बातों का कुछ रंग मजीठ में लग गया है, तब मजीठ ने ऐसा रंग पाया है। २ अछूत=जिसे किसी ने छुआ न हो। ३ रसा=पृथ्वी। ४ रुहिर=हँसते समय खून में डूबे हुए देख पड़ते हैं। ५—दसन चौक=दाँतों का चौका (सामने के चार दाँत—दो नीचे के, दो ऊपर के) ६—झरक्कि=झलक उठता है (चकमक पत्थर से चिनगारी झरती हैं।)

चातक कोकिल रहैं जो नाहीं। सुनि वेइ बैन लाज छिपि जाहीं ॥
भरे पेम-मधु[1] बोलै बोला। सुनै सो माति घूमि कै डोला ॥
चतुर वेद मत सब ओहि पाँहाँ। रिग जजु साम अथरबन माँहाँ ॥
अमर[2] भागवत पिंगल गीता। अरथ बूझि[3] पंडित नहिं जीता ॥
एक एक बोल अरथ चौगुना। इन्द्र मोहि बरम्हा सिर धुना ॥

दो०—भासवती[4] ब्याकरण सब, पूरन पढ़ै पुरान ।
वेद भेद सौं बात कह, तस जनु लागहि बान ॥ ११८ ॥

चौपाई

पुनि बरनौं का सुरँग कपोला। एक नारँग दुइ टूक अमोला ॥
पुहुप सुरँग रस अमिरितु साँधे[5]। केइँ ये सुढर खेरौरा[6] बाँधे ॥
तेहि कपोल बायें तिल परा। जेइँ तिल दीख सो तिल तिल जरा ॥
जनु वह तिल घुँघुची[7] करमुहाँ। विरहबान साधे सामुहाँ ॥
अगिन बान जानहु तिल सूझा। एक कटाछ लाख दस जूझा ॥
सो तिल काल मेटि नहिं गयऊ। अब वह काल काल जग भयऊ ॥
देखत नैन परी परछाहीँ। तेहि ते रात स्याम उपराहीँ ॥

दो०—सो तिल देखि कपोल पर, गगन रहा धुव गाड़ि ।
खिनहि उठै खिन बूड़ै, डोलै नहिँ तिल छाँड़ि ॥ ११९ ॥

चौपाई

स्रवन सीप दुइ दीप सँवारे। कुंडल कनक रचे उजियारे ॥
मनि कुंडल चमकैं अति लोने। जनु कौंधा लौकहिँ[8] दुइ कोने ॥
दुहुँ दिस चाँद सुरिज चमकाहीँ। नखतन भरे निरखि नहिँ जाहीँ ॥
तेहि पर खुटिल[9] दीप दुइ बारे। दुहुँ खूंट दुइ धुव बैसारे ॥
पहरे खुंभी[10] सिंघल दीपी। जानहु भरी कचपची[11] सीपी ॥

---

१ मधु=मदिरा। २ अमर=अमर कोश। ३ बूझि=बुद्धि। ४ भासवती=(भास्वती) शतानंद कृत प्रसिद्ध ज्योतिष ग्रंथ। ५ साँधे=सने हुए। ६ खेरौरा=लड्डू। ७ घुँघुची=घुँघची रत्ती। ८ लौकहिं=लपकहिं। ९ खुटिल=(खोटिला) कान में पहनने का एक भूषण विशेष। १० खुम्भी=एक कर्णभूषण विशेष। ११ कचपची=कचपचिया, कृत्तिका नक्षत्र।

खिन खिन जबहिँ चीर सिर गहा । काँपत बीजु दुहूं दिस रहा ॥
डरपहिँ देवलोक सिँघला । परै न टूटि बीजु एहि कला ॥

दो०—करहिँ नखत सब सेवा, स्रवन दीन्ह अस दोउ ।
चाँद सुरिज अस गहनें, और जगत का कोउ ॥ १२० ॥

चौपाई

बरनौं गीव कुंज कै रीसी[१] । कंचन तार लागु जनु सीसी ॥
कूँदइ[२] फेरि जानु गिउँ काढ़ी । हारि पुछारि[३] ठगी जनु ठाढ़ी ॥
जनु हिय काढ़ि परेवा ठाढ़ा । तेहि ते अधिक भाव गिउँ बाढ़ा ॥
चाक चढ़ाइ साँच[४] जनु कीन्हा । बाग तुरंग जानु गहि लीन्हा ॥
गिउँ मयूर तमचूर जो हारा । उहइ पुकारै साँझ सकारा ॥
पुनि तेहि ठाँउँ परी तिर[५] रेखा । घूंट जो पीक लीक[६] तस देखा ॥
धनि ओहि गीवँ दीन्ह विधि भाऊ । दहुँ का सौं लै करै मेराऊ[७] ॥

दोहा—कंठसिरी मुकुतावली, अभरन सोहैं गीव ।
को है हार कँठ लागै, केइँ तप साधा जीव ॥ १२१ ॥

चौपाई

कनक दंड दुइ भुजा कलाईं । जानहु[८] फेरि कुँदेरैं[९] भाँईं ॥
कदलि खाँभ की जानहु जोरीं । औ राती कर कँवल हथोरीं ॥
जानहु रकत हथोरीं बूड़ीं । रबि परभात तात वै जूड़ीं ॥
हिया काढ़ि जनु लीन्हेसि हाथा । रुहिर भरीं अँगुरीं तेहि साथा ॥
औ पहिरे नग-जरी अँगूठी । जग विन जीउ जीउ ओहि मूँठी ॥
बाँह कंकन टाड़[१०] सलोनी । डोलत बाँहु भाव गति लोनी ॥
जानहु गति बेड़िन[११] दिखराई । बाँह डोलाइ जीउ लै जाई ॥

---

१ रीसी=(ऋष्या) एक प्रकार की मृगी विशेष जिसकी गर्दन बहुत सुंदर होती है । (ऋष्यश्रृंग ऐसी ही मृगी से पैदा हुए थे) २ कूँदा=खराद । ३ पुछारि=लंबी पूंछ वाला मोर । ४ साँच=मानो साँचे में ढाला है । ५ तिर=तीन । ६ लीक=लकीर । ७ मेराऊ=मिलान । ८ जानहु=मानो खराद पर कुंदेरे ने खरादी हो । ९ कुंदेरे=खराद करने वाला । १० टाड़=बहुँटा, बरा । ११ बेड़िन=वेश्या ।

दोहा—भुज उपमा पौनार[1] नहिं, खीन भई तेहिं चित।
ठाँउँ ठाँउँ बेधा हिया, ऊभि साँस लेइ नित ॥ १२२ ॥

चौपाई

हिया थार कुच कंचन लाड़ू[2]। कनक कचोर[3] उठै कै चाँड़ू ॥
बेधै भँवर कंट[4] केतकी। चाहहिं बेध कीन्ह कंचुकी ॥
कुंदन बेलि[5] साजि जनु कूँदे। अमिरित भरे रतन दुइ मूँदे ॥
जोवन बान लेहिं नहिं बागा[6]। चाहहिं हुलसि हिये केहिं लागा ॥
अगिन बान जानहु दोउ साँधे[7]। जग बेधैं जो हौंहिं न बाँधे ॥
उतँग जँभीर होइ रखवारी। छुइ को सकै राजा कै बारी ॥
दारवौं दाख फरे अनचाखे। अस नारँग दहुं का कहँ राखे ॥

दोहा—राजा बहुत मुए तपि, लाइ लाइ भुइँ माथ।
कोऊ छुवै न पारै, गये मरोरत हाथ ॥ १२३ ॥

चौपाई

पेट पत्र जनु चंदन लावा। कुंकुँह[8] केसर बरन सोहावा ॥
खीर अहार न कर सुकुवारा। पान फूल के रहै अधारा ॥
स्याम भुवंगिनि रोमावली। नाभि तें निकसि कँवल कहँ चली ॥
आय दोउ नारँग[9] बिच भई। देखि मयूर[10] ठमकि[11] रहि गई ॥
जनहु चढ़ी नागन कै पाँती। चंदन खाँभ बास कै माती ॥
कै कालिंदी बिरह सताई। चलि प्रयाग अरयल[12] बिच आई ॥
नाभि कुंड बिच बारानसी[13]। सौंह को होइ मीचु तहँ बसी ॥

---

१ पौनार=कमल नाल। २ लाड़ू=लड्डू। ३ कचोर=(कचोल=कशकोल) पियलिया, छोटी कटोरी। (दोनों कुच मानो सोने की कटोरियां हैं जिन्हें और अधिक उठने की प्रबल इच्छा है)। ४ कंट=डंक। ५ बेलि=बेलिया, छोटी कटोरी। ६ बागलेना=रुकना। ७ साँधे=संधान किये हुए। ८ कुंकुंह=रोरी। ९ नारंग=नारंगी से कुच। १० मयूर=मोर की सी गर्दन। ११ ठमकि=ठिठक कर। १२ अरयल=ग्राम विशेष जो प्रयाग के सामने जमुना के उस पार है। १३ बारानसी=बनारस (काशी)।

दोहा—सिर करवत[1] तन करसि[2] लै, बहु सीझे तेहि आस।
बहुत धूम घूंटत मुए, उतर न देइ निरास ॥ १२४ ॥

चौपाई

चोटी पीठि लीन्ह वै पाछे। जनु फिरि चली अपछरा काछे[3] ॥
मलयागिरि कै पीठि सँवारी। बेनी नाग चढ़ा जनु कारी[4] ॥
लहरैं लेत पीठि जनु चढ़ा। चीर ओढ़ावा केँचुलि मढ़ा ॥
दहुँ का कहँ अस बेनी कीन्ही। चंदन वास भुवंगहि लीन्ही ॥
किसुन[5] की कला चढ़ा वह माथे। तव सो छूट अब छूट न नाथे ॥
कारी कँवल गहे मुख देखा। ससि पाछे जनु राहु बिसेषा ॥
को देखै पावै वह नागू। सो देखै माथे मनि भागू ॥

दो०—पन्नग पंकज मुख गहे खंजन तहाँ बईठ।
छात सिंघासन राज धन ताकहँ होय जो दीठ ॥१२५॥

चौपाई

लंक पुहुमि अस आहि न काहू। केहरि कहौं न ओहि सरि ताहू ॥
बसा[6] लंक वरनी जग झीनी[7]। तेहि ते अधिक लंक वह खीनी ॥
परिहसु[8] पियरि भई तेहि बसा। लिहे डंक मानुस कहँ डसा ॥
मानहु नलिन खंड दुइ भवा। दुहुँ बिच कनक तार रहि गवा ॥
हिय सो मोरि चलै वह तागा। पैग देत कत[9] सहँसक[10] लागा ॥
छुद्रघंटि[11] मोहहिं नर राजा। इन्द्र अखाड़ बाज जनु बाजा ॥
मानहु बीन गहे कामिनी। गावहिं सबै राग रागिनी ॥

---

१ करवत=आरा। २ करसी=सूखे कंडे (काशी में लोग मनोवांछित फल पाने के लिये आरा से अपना सिर कटवाते थे और प्रयाग में सूखे कंडों की आग में जलते थे इसी बात को इसमें इंगित किया है)। ३ काछे=पोशाक पहने हुए—बनी ठनी। ४ कारी=काली नाग। ५ किसुन=श्रीकृष्ण। ६ बसा=बर्रे, भिड़। ७ झीनी=बारीक। ८ परिहसु=परिहास जनित दुःख, खिसी। ९ कत=कितना (बहुत अधिक)। १० सहँसक=संशय, डर। ११ छुदघंटि=करधनी (घुंघुरूदार)।

दो०—सिंह न जीता लंक सरि हारि लीन्ह बनवासु ।
तेहि रिस रकत पियत फिरै खाइ मारि कै मासु ॥१२६॥

चौपाई

नाभी कुंडर[1] मलय समारू । समुँद भँवर जस भँवै गँभीरू ॥
बहुतै भँवर बौंडरा[2] भये । पहुँचि न सके सरग कहँ गये ॥
अबहिं सो आहि कँवल कै करी । न जनौं कौन भँवर कहँ धरी ॥
चंदन माँझ कुरंगिनि खोजू[3] । दहुँ को पाव को राजा भोजू ॥
को ओहि लागि हेवंचल[4] सीझा । का कहँ ऐसि रची को रीझा ॥
कौंवल कमल सुगंध सरीरू[5] । समुंद लहर सोहै तन चीरू ॥
झूलहिं रतन पाट के झोंपा[6] । साजि मयन[7] दहुँ का कहँ कोंपा ॥

दो०—बेधि रहा जग बासना, परिमल मेद सुगंध ।
तेहि अरघान[8] भँवर सब, तजैं न नीवीबंध[9] ॥१२७॥

चौपाई

बरनौं नितँब लंक के सोभा । औ गज-गवन देखि सब लोभा ॥
जुरे जंघ सोभा अति पाये । केरा खाँभ फेरि जनु लाये ॥
कँवल चरन अति रात विसेखी । रहैं पाट पर भूमि न देखी ॥
देउता हाथ हाथ पग लेहीं । जहँ पग परै सीस तहँ देहीं ॥
माथे भाग न कोउ अस पावा । चरन कँवल लै सीस चढ़ावा ॥
चूरा[10] चाँद सुरिज उजियारा । पायल बीच करहिं झनकारा ॥
अनवट[11] बिछियाँ नखत तराईं । पहुँचि सकै को पायन ताईं ॥

---

१ नाभी कुंडर=नाभिकुंड । २ बौंडरा=ववंडर । ३ खोज=पैर का निशान (भग की उपमा हिरनी के खुर के चिन्ह से दी जाती है) । ४ हेवंचल=हिमाचल । ५ सरीरू-पद्मिनी नायिका की भग से कमल की गंध आती है (इसमें यही कथन है) । ६ झोंपा=गुच्छा, (नीवीबंध के छोर के).फुँदना । ७ मयन=मदन (कामदेव) । ८ अरघान=सुगंध । ९ नीवीबंध=नीवी की गाँठ । १० चूरा=पैर के कड़े । ११ अनवट=अँगूठा (पैर के अँगूठे में पहनने का जेवर) ।

दो०—बरनि सिँगार न जान्यों, नख सिख जैस अभोग[1] ।
तस जग कछू न पायों, उपम देउँ ओहि जोग ॥१२८॥

१२—बारहवाँ खंड

(पूर्वानुराग वर्णन)

चौपाई

सुनि कै राजा गा मुरझाई । जानहु लहरि[2] सुरिज कै आई ॥
पेम घाउ दुख जान न कोई । जेहि लागै जानै पै सोई ॥
परा सो पेम समुन्द्र अपारा । लहरहिं लहर होय बिसँभारा[3] ॥
बिरह भँवर होइ भाँवर देई । खन खन जीव हिलोरा लेई ॥
खनहि निसाँस बूड़ि जिउ जाई । खनहि उठै निसँसइ[4] बौराई ॥
खनहि पीत खन होइ मुख सेता । खनहि चेत खन होइ अचेता ॥
कठिन मरन ते पेम व्यवस्था[5] । ना जिउ जाय न दसौं-अवस्था[6] ॥

दो०—जेइ लेनहार[7] लीन जिउ, हरै तरासहिं ताहि ।
इतना बोलि न आव मुख, करै तराहि तराहि ॥ १२९ ॥

चौपाई

जहँ लग कुटुम्ब लोग औ नेगी[8] । राजा राइ आये सब वेगी ॥
जाँवत गुनी गाररू[9] आए । ओझा[10] वैद सयान बोलाए ॥
चरचैं चेष्टा निरखहिं नारी । नियर नाहँ ओषद तेहि बारी ॥
है राजहिं लछिमन कै करा[11] । सकति-वान मोहै हिय परा ॥

---

१ अभाग=अभुक्त जिसे किसी ने भोग न किया हो, अछूता । २ सूर्य की लहर=(लू) लूक । ३ बिसँभारा=बे सँभार, व्याकुल । ४ निसंसइ=निःसंशय, निःसंदेह । ५ व्यवस्था=स्थिति । ६ दसौं अवस्था=मरण । ७ लेनहार=जिस लेने वाले ने प्राण लिये हैं, वही इस त्रास को दूर कर सकता है । ८ नेगी=नौकर-चाकर । ९ गाररू=(गारुड़ी) सर्प विष झारनेवाले । १० ओझा=तंत्र मंत्र करने वाले । ११ करा=(कला) दशा ।

नहिं सो राम हनुवँत बड़ि दूरी। को लै आव सजीवन मूरी॥
विनय करंहिं जेते। गढ़पती। का जिउ कीन्ह कौनि मति मती॥
कहौ सो पीर काहि विन खाँगा। समुँद सुमेरु आव तुम मांगा॥

दो०—आवन तहाँ पठावहिँ, देहिं लाख दस रोक[1]।
है सो बेलि जेहिं बारी, आनहिँ सबै बरोक[2]॥ १२॥

चौपाई

जो भा चेत उठा बैरागा। वाउर जनहु सूति उठि जागा॥
आवत जग वालक जस रोवा। उठा रोइ हा ज्ञान सो खोवा॥
हौं तो अहा अमर पुर जहाँ। इहाँ मरनपुर आयौं कहाँ॥
केइ उपकार मरन कर कीन्हा। सकति जगाइ जीउ हरि लीन्हा॥
सोवत अहा जहाँ सुख साखा। कस न तहाँ सोवत विधि राखा॥
अब जिउ तहाँ इहाँ तन सूना। कब लग रहै परान बिहूना[3]॥
जो जिउ घटै काल के हाथा। घटन नीक पै जीवन[4] साथा॥

दो०—अहुँठ[5] हाथ तन सरवर, हिया कमल तेहि माँहि।
नैनन जानो नीयरे, कर पहुँचव अवगाहि[6]॥ १३१॥

चौपाई

सवन कहा मन समझौ रांजा। काल सेतीं[7] कोउ जूझि न छाजा॥
तासों जूझि जात जो जीता। जातन किसुन तजत गोपीता[8]?॥
औ न नेह काहू सों कीजै। नाउँ मीठ खाए जिउ दीजै॥
पहिले सुख सनेह जब जोरा। पुनि है कठिन निवाहव ओरा[9]॥
अहुँठ हाथ तन जैस सुमेरू। पहुँचि न जाय परै तस फेरू॥
गगन दिष्ट[10] सो जाय पहूंचा। पेम अदिष्ट[11] गगन ते ऊँचा॥
धुव ते ऊँच पेम धू[12] उवा। सिर दै पाँउँ देइ सो छुवा॥

---

१ रोक=नगद रुपया। २ बरोक=(वलौकः) बलवान लोग, बल करके, सेना के बल से। ३ बिहून=विहीन, बिना। ४ जीवन=जीवनाधार, प्रेमपात्र। ५ अहुंठ=साढ़े तीन (हुंठा)। ६ अवगाहि=कठिन। ७ सेतीं=से। ८ गोपीता=गोपियां। ९ ओर=अंत। १० दिष्ट=दृश्यमान=जो दिखाई पड़ सकै। ११ अदिष्ट=जो देखा (समझा) न जा सकै। १२ धू=(ध्रुव)।

दो०—तुम राजा औ सुखिया, करहु राज सुखभोग।
यहि रे पंथ सो पहुँचै, सहै जो दुःख वियोग ॥ १३२ ॥

चौपाई

सुवैं कहा सुनु मो सों राजा। करब पिरीति कठिन है काजा ॥
तुम अबहीं जेईं घर पोईं। कँवल न भेंटा भेंटौं कोईं ॥
जानहिं भँवर जो तिन्ह पथ लुटे। जीउ दीन्ह औ दिहेउ न छुटे ॥
कठिन आहि सिंघल कै राजू। पाइय नाहिं राज के साजू ॥
ओहि पथ जाय जो होय उदासी। जोगी जती तपा सन्यासी ॥
भोग छाँड़ि पैयत वह भोगू। तजि सो भोग कोउ करत न जोगू ॥
तुम राजा चाहहु सुख पावा। जोगिहिं भोग करत नहिं भावा ॥

दो०—साधहिं[1] सिद्धि न पाइय, जौ लग साध न तप्प[2]।
सो पइ जानैं बापुरे, सीस जो करैं अरप्प[3] ॥ १३३ ॥

चौपाई

का भा जोग :कहानी कथे। निकसै घीउ न बिन दधि मथे ॥
जौलहि आपु हेराइ न कोई। तौ लहि हेरत पाव न सोई ॥
पेम पहार कठिन बिधि गढ़ा। सो पै जाइ सीस सों चढ़ा ॥
सूरि-पंथ[4] कर उठा अँकूरू। चोर चढ़ा कि चढ़ा मंसूरू[5] ॥
तुइँ राजा का पहिरसि कंथा[6]। तोरे घरहिं माँझ दस पंथा ॥
काम क्रोध तिसना मद माया। पाँचौ चोर न छाँड़हिं काया ॥
नौ सेंधैं घट के मँझियारा। घर मूँसैं दिन के उँजियारा ॥

दो०—अब हूं जाग अजानी, होत आव निसि भोर।
पुनि कछु हाथ न लागै, मँसि जाहिं जब चोर ॥ १३४ ॥

१—साध=इच्छा। २—तप्प=तपस्या। ३—अरप्प=अर्पण। ४—सूरि-पंथ=सूली चढ़ने का रास्ता। ५—मंसूर=एक प्रसिद्ध ब्रह्मज्ञानी फकीर जिसे 'सोऽहं' जपने के कारण बिगदाद के शाह ने सूली पर चढ़वा दिया था। ६ कंथा=गुदड़ी।

चौपाई

सुनि सो बात राजा मन जागा। पलक न मार टकटका लागा ॥
नैन ढरहिं मोती औ मूंगा। जस गुर खाय रहा होइ गूँगा ॥
हिय की जोति दीप वह सूझा। यह जो दीप अँधियर भा बूझा ॥
उलटि दिष्टि माया सों रूठी। पलटि न फिरै जानि कै झूठी ॥
जो पै नाहिन अस्थिर[1] दसा। जग उजार का कीजै बसा ॥
गुरू बिरह चिनगी पै मेला। जो सुलगाइ लेइ सो चेला ॥
अब की पतँग भृङ्ग की करा[2]। भँवर होहुं जेहिं कारन जरा ॥

दो०—फूल फूल फिरि पूँछौं, जो पहुँचौ वह केत[3]।
तन न्यौछावरि करि मिलौं, ज्यों मधुकर जिउ देत ॥ १३५ ॥

चौपाई

बंधू मीत बहुत समुझावा। मान न राजा गवन[4] भुलावा ॥
उपजै पेम पीर जेहि आई। परबोधे होइ अधिक सवाई ॥
अमिरित बात कहत विष जाना। पेम को बचन मीठ कै माना ॥
जो ओहि विषै मारि कै खाई। पूँछौ ता सों पेम मिठाई ॥
पूँछौ बात भरथरिहिं जाई। अमिरित राज तजा विष खाई ॥
औ महेस वड़ सिद्ध कहावा। उनहू विषै कंठ पै लावा ॥
होत उदौ रवि किरन निकासा। हनुमत है को देइ अस्वासा[5] ॥

दो०—तुम सब सिद्धि मनावहु, है गनेस सिधि लेउ।
चेला की न चलावहु, मिलै गुरू जेहिं भेउ ॥ १३६ ॥

१—अस्थिर=(स्थिर) सदैव एक सी रहने वाली। २—पतँग भृंग की करा=पतंग भृंग की कला। कला=भांति, तरह। ३—केत=केतकी। ४—गवन भुलावा=रास्ता भूला हुआ, भटका हुआ। ५—अस्वासा=अश्वासन, दिलासा। (पहले कह आये हैं कि राजा की दशा लक्ष्मण की सी है अर्थात् शक्तिबाण लगा है। अतः अब कहते हैं कि वहां तो आश्वासन देने वाले हनुमान जी थे, यहां हनुमान कौन बनता है)।

१३—तेरहवाँ खंड

जोगी होना

चौपाई

तजा राज राजा भा जोगी। औ किँगरी[१] कर गहेउ वियोगी॥
तन विसँभर मन बाउर लटा[२]। उरझा पेम परी सिर जटा॥
चन्द्रबदन औ चंदन देहा। भसम चढ़ाय कीन्ह तन खेहा॥
मेखल सिंगी चक्र धँधारी[३]। लीन्ह हाथ तिरसूल सँभारी॥
कंथा पहिर डंड कर गहा। सिद्ध होय कहँ गोरख कहा॥
मुद्रा स्रवन कंठ जपमाला। कर अधियान[४] काँध बघछाला॥
पाँवरि[५] पाँय लीन्ह सिर छाता। खप्पर लीन्ह भेस करि राता॥

दोहा—चला भुगुति[६] माँगै कहँ, साज किया तप जोग।
सिधि होइ पदुमति[७] पाये, हिरदै जेहिक बियोग॥ १३७॥

चौपाई

गनक[८] कहैं गनि गवन न आजू। दिन[९] लै चलहु होय सिधि काजू॥
पेम-पंथि दिन घरी न देखा। तब देखै जब होय सरेखा[१०]॥
जेहि तन पेम कहाँ तेहिँ माँसू। कया न रकत नैन नहिँ आँसू॥
पंडित भुला न जानै चालू[११]। जीव लेत दिन पूंछ न कालू॥
सती कि बौरी पूँछै पाँड़े। औ घर बैठि न सैंतै भाँड़े॥
मरै जो चलै गंग गति[१२] लेई। तेहि दिन तहाँ घरी[१३] को देई॥
मैं घरबार कहाँ कर पावा। घर काया पुनि अंत परावा॥

---

१ किंगरा=(किन्नरी) चिकारा। २ लटा=खीन। ३ चक्र-धँधारी=गोरख-धंधे का छल्लेदार चक्र। ४ अधियान=सुमिरनी (छोटी माला) ५ पाँवरी=खड़ाऊँ। ६ भुगुति=भोजन, भीख। ७ पदुमति=पदमावती। ८ गनक=ज्योतिषी। ९ दिन=मुहूर्त, साइत। १० सरेख=समझदार। ११ चाल=गमन की साइत। १२ गति=मोक्ष। १३ घरी=शुभ मुहूर्त।

दोहा—हौंरे पखेरू पंखी, जेहि बन मोर निबाहु।
खेलि चला तेहि बन कहँ, तुम अपने घर जाहु॥ १३८॥

चौपाई

चहुँ दिस आन[1] सोंटियन[2] फेरी। भइ कटकाई[3] राजा केरी॥
जाँवत अहैं सकल अरकाना[4]। साँबर[5] लेउ दूर है जाना॥
सिंघल दीप जाइ सब चाहा। मोल न पाउब जहाँ बेसाहा[6]॥
सब पै निबहै आपन साँठी[7]। साँठी बिन सो रह मुख माँठी॥
राजा चला साजि कै जोगू। साजौ बेगि चलौ सब लोगू॥
गरब जो चढ़े तुरी की पीठी। अब सो तजहु सरग[8] सों डीठी॥
मंत्रा[9] लेहु होहु सँग लागू। गुदरी पहरि होहु सब आगू॥

दोहा—का निचिंत रे मनई[10], अपनी चिंता आछु।
लेहु सजग ह्वै अगमन, फिरि पछितासि न पाछु॥ १३९॥

चौपाई

बिनवै रतनसेन कै माया। माथे छात, पाट नित पाया[11]॥
बिलसहु नौ लख लच्छि पियारी। राज छाँड़ि जिन होहु भिखारी॥
नित चंदन लागै जेहि देहा। सो तन देख भरत अब खेहा॥
सब दिन रहेउ करत तुम भोगू। सो कैसे साधब तप जोगू॥
कैसे धूप सहब बिन छाँहा। कैसे नींद परब भुइँ माँहा॥
कैसे ओढ़ब कामरि कंथा। कैसे पाँइ चलब तुम पंथा॥
कैसे सहब खिनहि खिन भूखा। कैसे खाब कुरकुटा[12] रूखा॥

---

१ आन=दोहाई, मनादी। २ सोंटियन=सोंटेबर्दार, नकीब। ३ कटकाई=फौज की तैयारी। ४ अरकान=(फा० ارکان) मंत्री, बड़े सरदार। ५ साँबर=(सँबल) राह का खर्च। ६ बेसाहा=सौदा। ७ साँठी=(साँठ) धन, पुंजी। ८ सरग सों डीठी=ईश्वर पर भरोसा कर के। ९ मंत्रा=मन्त्र, दीक्षा। १० मनई=मनुष्य। ११ माथे छात, पाट नित पाया=सिर पर छत्र रहता है और पैर सदा रेशम पर रहते हैं। १२ कुरकुटा=रोटी का टुकड़ा।

दोहा—राज पाट दर[१] परिगन[२], सब तुम सौं उजियार।
बैठि भोग रस मानहु, कै न चलहु अँधियार ॥ १४० ॥

चौपाई

मोहिं यह लोभ सुनाउ न माया। काकर सुख काकर यह काया ॥
जो निआन[३] तन होइहै छारा। माटी पोखि मरै को भारा ॥
का भूलउँ यहि चंदन चोवा। वैरी जहाँ अंग के रोवाँ ॥
हाथ पाउ सरवन मुख आँखी। ये सब भरहिं उहाँ पुनि साखी ॥
सोत सोत[४] तन बोलहि दोखू। कहु कैसे होइहै गति मोखू ॥
जो भल होत राज औ भोगू। गोपीचंद न साधत जोगू ॥
उनहु सिष्टि जो दीख परेवा[५]। तजा राज कजली बन सेवा ॥
दोहा—देखि अंत अस होइ है, गुरू दीन्ह उपदेस।
सिंघलदीप जाब मैं, तुम सौं मोर अदेस[६] ॥ १४१ ॥

चौपाई

रोवै नागमती रनिवासू। केइँ तुम्ह कंत दीन्ह बनवासू ॥
अब को हम करिहै भोगिनी। हमहु साथ होइहैं जोगिनी ॥
कै हम लावहु अपने साथा। कै अब मारि चलहु सइँ[७] हाथा ॥
तुम अस बिछुरै पीउ पिरीता। जहँवाँ राम तहाँ सँग सीता ॥
जौलहिं जिउ सँग छाँड़ न काया। करिहौं सेव[८] पखरिहौं पाया ॥
भलेहिं पदुमिनी रूप अनूपा। हमतें कोई न आगर[९] रूपा ॥
भँवै[१०] भलेहिं पुरुषन कै डीठी। जिन्ह जाना तिन दीन्ह न पीठी ॥
दोहा—दीन्ह असीस सबहिं मिलि, तुम माथे नित छात।
राज करहु गढ़ चितवर, राखहु पिय अहिवात[११] ॥१४२॥

---

१ दर=दल, सेना। २ परिगन=परिजन, नौकर चाकर, सेवकजन। ३ निआन=निदान, अंत में। ४ सोत सोत=सकल रोम कूप। ५ परेवा=उड़नेवाली (अस्थिर)। ६ अदेस=प्रणाम। ७ सइं=से। ८ सेव=सेवा। ९ आगर=बढ़कर। १० भवै.........पीठी=पुरुषों की दृष्टि अच्छी वस्तु की ओर अवश्य घूमती है (पुरुष लोग अच्छी स्त्री को पसंद करते हैं) और जिसको अच्छी समझ लेते हैं उसे छोड़ते नहीं। ११ अहिवात=(आधिपत्य) सोहाग।

चौपाई

तुम तिरिया मति हीन तुम्हारी। मूरुख सो जो मतै[1] घर नारी॥
राघौ जो सीता सँग लाई। रावन हरी कौन सिधि पाई॥
यह संसार सपन जस हेरा। अंत न आपन को केहि केरा॥
राजा भरथरि सुनै न अजानी। जेहि के घर सोरह सै रानी॥
कुच लीन्हे तरवा सोहराई। भा जोगी कोउ संग न लाई॥
जोगिहि कहा भोग सों काजू। चहै न मेहरी[2] चहै न राजू॥
जूड़[3] कुरकुटा पै भखु[4] चाहा। जोगिहिं तात भात[5] सौं काहा॥

दोहा—कहा न मानै राजा, तजी सबाहीँ भीर।
चला छाँड़ि कै रोवत, फिरि कै दीन्ह न धीर॥ १४३॥

चौपाई

रोवै माता फिरै न बारा। रतन चला जग भा अँधियारा॥
बार मोर रे जियाउर[6] रता। सो लै चला सुवा परबता॥
रोवहिं रानी तजहिं पराना। फोरहिं बरै[7] करहिं खरिहाना[8]॥
चूरहिं गिउ-अभरन उर हारू। अब का कहँ हम करब सिंगारू॥
जा कहँ कही रहसि[9] कै पीऊ। सोइ चला का कर यह जीऊ॥
मरै चहहिं पै मरै न पावैं। उठी आगि सब लोग बुझावैं॥
घरी एक सुठि भयो अँदोरू[10]। पुनि पाछे बीता होइ रोरू[11]॥

दोहा—टूट मने नौ मोती, फूट मने नौ काँच।
लीन्ह समेटि सब अभरन, होइगा दुख कर नाँच॥ १४४॥

चौपाई

निकसा राजा सिंगी पूरी। छाँड़ि नगर मेला[12] होइ दूरी॥
राय राँक सब भए बियोगी। सोरह सहस कुंवर भे जोगी॥

---

१ मतै घर नारी=घर की स्त्री का मत मानै। २ मेहरी=स्त्री। ३ जूड़=ठंढा, बासी। ४ भखु=भोजन। ५ तात भात=गर्म चावल। ६ जियाउर रता=जिस पर मेरा जी अनुरक्त था। ७ बरै=(वलय) चूड़ी। ८ खरिहान=ढेर। ९ रहसि कै=खुश होकर। १० अंदोरू=आन्दोलन। ११ रोरू=शोर। १२ मेला=मेलान किया, पड़ाव डाला।

माया मोह हरी सैं हाथा। देखेनि बूझि निश्रान[1] निसाथा[2] ॥
छाँड़ेन लोग कुटुंब सब कोऊ। भे निरार दुख सुख तजि दोऊ ॥
सँवरैं राजा सोइ अकेला। जेहि रे पंथ खेले होइ चेला ॥
नगर नगर औ गाँवहिं गाँवाँ। छाँड़ि चला सब ठावहिं ठाँवा ॥
का कर घर का कर मढ़[3] माया। ता कर सब आकर जिउ काया ॥
दो०—चला कटक़ जोगिन कर, कै गेरुवा सब भेसु।
कोस बीस चारहु दिस, जानहु फूला टेसु ॥ १४५ ॥

चौपाई

आगे सगुन सगुनियन[4] ताका। दहिउ माँछ रूपे कर टाका।
भरे कलस तरुनी चलि आई। दहिउ लेहु ग्वालिन गोहराई ॥
मालिनि आई मौर लै गांथे। खंजन बैठ नाग[5] के माथे ॥
दाहिन मिरिग आय गा धाई। प्रतीहार[6] बोला खर[7] बाँई ॥
बिरिष[8] सँवरिया दाहिन बोला। बाँयें दिस गारुर[9] तहँ डोला ॥
बाँयें अकासी[10] धौरी आई। लोवा दरस आय दिखराई ॥
बायें कुररी[11] दाहिन कोंचा[12]। पहुँचै भुगुति जैस मन रोचा ॥
दो०—जा कहँ सगुन होय अस, औ ग़वनहिं जेहि आस।
अस्ट महा सिधि पंथहिं, जस कवि कहा बिग्रास ॥१४६॥

चौपाई

भयो पयान चला तब राजा। सिंगिनाद जोगिन कर बाजा ॥
किहिन आजु कछु थोर पयाना। काल्हि पयान दूर है जाना ॥
ओहि मेलान[13] जो पहुँचै कोई। तब हम कहब पुरुष भल सोई ॥
है आगे परवत कै बाटी[14]। बिषम पहार अगम सुठि घाटी ॥
बिच बिच खोह नदी औ नारा। ठाँवहिं ठाँव बैठ बटपारा[15] ॥

---

१ निश्रान=निदान, अंत में। २ निसाथा=अकेला (निसत्था)। ३ मढ़=घर। ४ सगुनियन=सगुन परखने वाले। ५ नाग=हाथी। ६ प्रतीहार=तीतर। ७ खर=गदहा। ८ बिरिष=(वृष) बैल, साँड। ९ गारुर=गिद्ध पची। १० अकासी धौरी=सफेद चील्ह, क्षेमकरी। ११ कुररी=टिटिहरी। १२ कोंच=क्रौंच पची। १३ मेलान=पड़ाव, ठहरने का मुकाम। १४ बाटी=राह। १५ बटपारा=डाकू।

हनुवँत[1] केर सुनत पुनि हाँका। दहुँ को पार होय को थाका॥
अस मन जानि सँभारहु आगू। अगुवा केर होहु पछलागू॥
दो०—करहिं पयान भोर उठि, नितहिं कोस दस जाहिं।
पंथी पंथा जे चलहिं, ते कि राह उबटाहिं[2]॥ १४७॥

चौपाई

करहु दिष्टि थिर होहु बटाऊ[3]। आगू देखि धरहु भुइं पाऊ॥
जो रे उबटि[4] भुइँ परे भुलाने। गये मारे पँथ चलै न जाने॥
पायन पहिर लेहु सब पँवरी[5]। काँट न चुभै न गड़ै कँकवरी[6]॥
परे आय अब बन खँड माँहाँ। दँडकारन्य[7] बिजनबन[8] जाँहाँ॥
सघन ढाँख बन चहुं दिस फूला। बहु दुख मिलै उहाँ कह भूला॥
झाँखर जहाँ सो छाँड़हु पंथा। हिलगि[9] मकोइ न फारहु कँथा॥
दहिने बिदर चँदेरी बाँयें। दहुँ केहि होब बाट दुइ ठाँये॥
दो०—एक बाट गइ सिंघल, दूसर लंक समीप।
हैं आगे पंथ दोऊ दहुँ गवनब केहि दीप॥ १४८॥

चौपाई

ततखन बोला सुवा सरेखा। अगुवा सोइ पंथ जेइँ देखा॥
सो का उड़ै न जेहि तन पाँखू। लै सो परासहिं बूड़ै साँखू॥
जस अंधा अंधे कर संगी। पंथन पाव होय सहलंगी[10]॥
सुनु मत काज चहसि जो साजा। बीजा नगर विजयगिरि राजा॥
पहुँचौ जहाँ गोंड़[11] औ कोला। तजु बाँयें अँधियार[12] खटोला[13]॥

---

१ हनुवंत=बन्दर। २ उबटाना=ठोकर खाना (जैसे घोड़ा नाखून लेता है)। ३ बटाऊ=बटोही, पथिक। ४ उबटि भुइँ परे=ठोकर खाकर जमीन पर गिरे। ५ पंवरी=खड़ाऊं। ६ कंकवरी=कंकड़ी। ७ दँडकारन्य=दण्डकारण्य। ८ बिजनबन=निर्जन वन। ९ हिलगना=उरझना। १० सहलंगी=साथ ही में लगा रहनेवाला। ११ गोंड़=गोंड़ों और कोलों का देश (गोंड़वाना)। १२ अँधियार=अनूजार नामक नगर जो इसी नाम की नदी के किनारे पर था। यह नदी होशंगाबाद के जिले में है। १३ खटोला=सागर, दमोह, शाहगढ़ इत्यादि के जिले प्राचीन काल में खटोला नाम से प्रसिद्ध थे।

दक्खिन दहिने रहै तिलंगा। उतर माँझ होइ गढ़ा[1] कटँगा[2] ॥
माँझ रतनपुर सिंह दुआरा[3]। झारखंड दै बाँउँ पहारा ॥
दो०—आगे बाँउँ उड़ैसा, बाँयें देहु सो बाट।
दहिनावरत लाइ कै, उतरु समुँद के घाट ॥१४९॥

चौपाई

होत पयान जाय दिन गेरा[4]। मिरगारन महँ होत बसेरा ॥
कुस साथरि भइँ सौंर[5] सुपेती। करँवट[6] आइ बनै भुइँ सेती ॥
कया मलिन जस भूमि मलीजा। चलि दसकोस ओस[7] तन भीजा ॥
ठाँउँ ठाँउँ सब सोवहिं चेला। राजा जागै आपु अकेला।
जेहि के हिये पेम रङ्ग जामा। का तेहि नींद भूख बिसरामा ॥
बन अँधियार रैनि अँधियारी। भादौं बरन भई निस कारी ॥
किंगरी हाथ गहे बैरागी। पाँच तन्तु[8] एकै धुनि लागी ॥
दो०—नैन लागु तेहि मारग, पद्मावत जेहि दीप।
जैस सेवा तिहि सेवै, बन चातक जल सीप ॥१५०॥

१४—चौदहवां खंड

(राजा रतनसेन—गजपति संवाद)

चौपाई

मासक लाग चलत तेहि बाटा। उतरे जाय समुँद के घाटा ॥
रतनसेन भा जोगी जती। सुनि भेंटै आवा गजपती[9] ॥
जोगी आप कटक सब चेला। कौन दीप कहँ चाहहु खेला ॥
भल आए अब माया[10] कीजै। पहुनाई[11] कहँ आयसु दीजै ॥

१ गढ़ा=जबलपूर के निकट है। २ कटंगा=जबलपूर के निकट है। ३ सिंह-दुआरा=जिसे अब 'छिंदवारा' कहते हैं। ४ गेरा जाना=व्यतीत कर देना। ५ सौंर सुपेती=ओढ़ने का वस्त्र (चादर वा रजाई) और बिछौना। ६ करवट=तकिया। ७ ओस=पसीना की बूंदै। ८ तंतु=तार। ९ गजपती=कलिंग देश के राजा जिसके देश में हाथी बहुत पैदा होते थे। यह राजा चितौर के राजों के बंश से था। १० माया=कृपा। ११ पहुनाई=मेहमानी।

सुनहु गजपती उतरु हमारा। हम तुम एकै भाव निरारा॥
सो तेहि कहँ जेहि महँ भव भाऊ[1]। जो निरभंव[2] तेहिं लाड़ नसाऊ॥
इहै बहुत जो बोहित पाऊँ। तुम्ह तें सिंघलदीप सिधाऊँ॥
दो०—जहाँ मोहिं निजु[3] जाना, कटक होइँ लै पार।
जो रे जिअउँ तो लै फिरौं, मरौं तो ओहि के वार॥१५१॥

चौपाई

गजपति कहा सीस पर माँगा। एतना बोल न होइहै खाँगा॥
मैं सब देउँ आनि नव गढ़े। फूल सोइ जो महेसुर चढ़े॥
पै गोसाइं सुनु एक विनाती[4]। मारग कठिन जाब केहि भाँती॥
सात समुन्द्र असूझ अपारा। मारहि मगर मच्छ घरियारा॥
उठै हिलोर न जाइ सँभारी। भागन कोउ निवहै बैपारी॥
तुम सुखिया अपने घर राजा। एता दुख जो सहहु केहि काजा॥
सिंघलदीप जाय सो कोई। हाथ लिहें आपन जिउ होई॥
दो०—खार खीर दधि अजि[5] सुरा, पुनि किलकिला अकूत[6]।
को चढ़ि नाँघै समुद ये, है काकर अस बूत[7]॥१५२॥

चौपाई

गजपति यह मन सकती सीऊ[8]। पै जेहि पेम कहाँ तेहि जीऊ॥
जो पहिलेंइ सिर दै पगु धरई। मूए केर मीचु का करई॥
सुख सँकलपि दुख साँवर[9] लीन्हा। तब पयान सिंघल कहँ कीन्हा॥
भँवर जान पै कँवल पिरीती। जेहि महँ विथा पेम कै बीती॥
औ जेइँ समुँद पेमकर देखा। तेइँ यह समुँद बूँद परि-लेखा[10]॥
सात समुँद सत लीन्ह सँभारा। जो धरती, का गरुअ पहारा॥
जो पै जीउ बाँध सत वेरा। बरु जिउ जाय फिरै ना फेरा॥

---

१ भव-भाऊ=साँसारिक भाव। २ निरभव=सांसारिक भाव रहित अर्थात् त्यागी। ३ निजु=निश्चय कर के। ४ विनाती=विनती। ५ अजि=(आज्य) घी। ६ अकूत=बे अन्दाज, बहुत बड़ा—इस समुद्र का नाम कवि ने आगे के खंड में 'मानसुरोवर' कहा है। ७ बूत=बल, शक्ति। ८ सकतीसीऊ=शक्तिसींव, बल-सींव, बली। ९ साँवर=(संबल) राहखर्च। १० परिलेखा=समझा।

दोहा—रंग[1] नाथ हौं चेला हाथ ओही के नाथ[2]।
गहे नाथ सो खींचै फिरै न फेरै माथ ॥१५३॥

चौपाई

पेम समुंद्र पेस अवगाहा। जहां न वार न पार न थाहा ॥
जे यहि समुंद अगाधहिं परे। जो[3] अवगाह हंस होइ तरे ॥
हौं पदमावत कर भिखमंगा। दिष्टि न आव समुद औ गंगा ॥
अस मन जानि समुद महँ परौं। जो कोउ खाय वेगि निस्तारौं ॥
जेहि कारन गिउँ काँथरि कंथा। जहाँ सो मिलै जाउँ तेहि पंथा ॥
अब यहि समुँद पर्यों है मरा। मुए केर पानी का करा ॥
मरि[4] भा कोउ कतहुँ, लै जाऊ। ओहि के पंथ, कोउ धरि खाऊ ॥

दोहा—सरग सीस धर[5] धरती हिया सो पेम समुंद।
नैन कौड़िया[6] है रहे लै लै उठहिं सो बुंद ॥१५४॥

चौपाई

कठिन वियोग जोग दुख दाहू। जनम जरत होइ ओर निबाहू ॥
डर लज्या तेहि दोउ गँवानी। देखै कछु नहिँ आगि न पानी ॥
आगि देखि वह आगे धावा। पानि देखि वह सौंहँ धँसावा ॥
जस बाउर न बुझाये बूझा। तौंनहिँ भाँति जाय का सूझा ॥
मगरमच्छ डर हिये न लेखा। आपुहिँ चहै पार भा देखा ॥
औ न खाइँ ओहि सिंह सदूरा[7]। काठहु चाहि अधिक सो झूरा ॥
कया मया सँग नाहीं आथी[8]। जेहिँ जिउ सौंपा सोई साथी ॥

दोहा—जो कुछ दरब[9] अहा सँग दान दीन्ह संसार।
का जानौं केहि के सत दइउ उतारै पार ॥१५५॥

---

१ रंग=अनुराग, प्रेम। २ नाथ=नकेल, नाक में पड़ी हुई रस्सी (जैसे बैलों की)। ३ जो अवगाह=यद्यपि अगाध हो। ४ मार भा=मर चुका। ५ धर=धड़, शरीर। ६ कौड़िया=वह जल जंतु जिसका ऊपरी ठट्ठर कौड़ी कहलाता है। ७ सदूरा=(शार्दूल) एक प्रकार का बाघ। ८ आथी=सारवस्तु। ९ दरब=द्रव्य, धन।

चौपाई

धनि जीवन औ ताकर हीया। ऊंच जगत महँ जाकर दीया॥
दिया सो सब जप तप उपराहीँ। दिया बराबर जग कछु नाहीँ॥
एक दिया तेइ दस गुन लाहा[1]। दिया देखि सब जग मुख चाहा[2]॥
दिया करै आगे उजियारा। जहाँ न दिया तहाँ अँधियारा॥
दिया मँदिर निस करै अँजोरा[3]। दिया नाहिँ घर मूसहिँ[4] चोरा॥
हातिम[5] करन[6] दिया जो सिखा। नाउँ रहा धरमिन महँ लिखा॥
दिया सो काज दुहूं जग आवा। इहाँ जो दिया उहाँ सब पावा॥

दोहा—निरमल पंथ कीन्ह तिन्ह जिन्ह रे दिया कुछ हाथ।
कछु न कोइ लै जाइहि दिया जाय पै साथ॥१५६॥

१५—पंद्रहवाँ खंड

(बोहित खंड)

चौपाई

सत न डोल देखा गजपती। राजा दत्त[7] सत्त[8] दुहुँ सती॥
आपन नाहिँ कया औ कंथा। जीउ दीन्ह अगमन तेहिँ पंथा॥
निहचै चला भरम डर खोई। साहस जहाँ सिद्धि तहँ होई॥
निहचै चला छाँड़ि कै राजू। बोहित दीन्ह दीन्ह सब साजू॥
चढ़ा बेगि औ बोहित पेले[9]। धनि वे पुरुष पेम पँथ खेले॥
पेम पंथ जो पहुंचै पारा। बहुरि न आय मिलै यहि छारा॥
तिन पावा उत्तिम कैलासू। जहाँ न मीचु सदा सुख वासू॥

---

१ लाहा=लहा, पाया। २ मुख चाहना=मुंह देखना। ३ अंजोरा=उजियाला। ४ मूसना=मूसों की तरह सेंध देकर धन ले जाना, लूटना। ५ हातिम=अरब देश का एक प्रसिद्ध दानी सज्जन। ६ करन=अंगदेश का राजा जो प्रसिद्ध दानी था। सवा मन सोना नित्य दान करके दतून करता था। ७ दत्त=दान। ८ सत्त=सत्यसंधता। ९ पेले=प्रेरित किये, चलाये।

दोहा—यहि जीवन कै आस का जैस सपन तिल आधु।
मुहमद जियतहिँ जे मरहिँ तेइ पुरुष सिध साधु ॥१५७॥

चौपाई

जस बन रेंगि चलै गज ठाटी[1]। बोहित चले समुँद गा पाटी ॥
धावहिँ बोहित मन उपराहीँ। सहस कोस एक पल महँ जाहीँ ॥
समुँद अपार सरग जनु लागा। सरग न घाल[2] गनै बैरागा ॥
तत खन चाल्ह[3] एक दिखरावा। जनु धवलागिरि परबत आवा ॥
उठी हिलोर जो चाल्ह बराजी[4]। लहर अकास लागि भुइँ बाजी[5] ॥
राजा सेतीँ[6] कुंवर सब कहहीँ। अस अस मच्छ समुँद महँ अहहीँ ॥
तेहि रे पंथ हम चाहहिँ गवना। होहु सचेत बहुरि नहिँ अवना ॥

दोहा—गुरु हमार तुम राजा हम चेला तुम नाथ[7]।
जहां पाउँ गुरू राखै चेला राखै माथ ॥१५८॥

चौपाई

केवट हँसे सो सुनत गवेँजा[8]। समुँद न जान कूप कर मेँजा[9] ॥
यह तौ चाल्ह न लागै कोहू[10]। का कहिहौ जब देखिहौ रोहू ॥
सो अबहीँ तुम देख्यौ नाहीँ। जेहि मुख ऐसे सहस समाहीँ ॥
राजपंखि तेहि पर मँड़राहीँ। सहस कोस तिनकै परछाहीँ ॥
ते वै मच्छ ठोर[11] गहि लेहीँ। सावक[12] मुख चारा लै देहीँ ॥
गरजै गगन पंखि जो बोलहिँ। डोलै समुँद डहन[13] जो डोलहिँ ॥
तहाँ न सुरिज न चाँद असूझा। चढ़ै सोई जो अगमन बूझा ॥

---

१ ठाटी=ठट्ट, समूह। २ घाल गनना=घिलौना (घलुवा) समझना, कुछ न समझना। [मिलाओ—रघुवीर बल गर्वित विभीषण घाल नहिं ता कहँ गनै—(तुलसीदास)—लङ्का कांड]। ३ चाल्ह=एक प्रकार की मछली। ४ बराजी=चली (ब्रजन=गमन)। ५ बाजी=टकराई (बाजना=भिड़ना)। ६ सेतीं=से। ७ नाथ=मालिक (यहाँ गुरु)। ८ गवेंजा=(गुंजन) बात चीत का शोर गुल। ९ मेंजा=मेढक। १० कोह=(फा०) पहाड़। ११ ठोर=चोंच। १२ सावक=बच्चा। १३ डहन=पंखों के डैना।

दो०—दस महँ एक जाय कोउ, धरम करम सत नेम।
बोहित पार होय जो, तौहु कुसल औ खेम ॥ १५९ ॥

चौपाई

बात कहत भई देस गोहारी। केउटन चाल्ह समुंद महँ मारी ॥
हस्ती सिस्ट[1] लाइ हठि ढीला। दौरि आय एक चाल्ह सो लीला ॥
केवट लोग लाख हुत बली। फिरी न चाल्ह जैस किलकिली[2] ॥
बोहित सहस जाहिँ चहुँ ओरा। होय कलोल जाहिँ तरबोरा[3] ॥
सुनि कै आपु चढ़ा स्वैं[4] राजा। औ सब देस लोग मिलि बाजा ॥
भाल बाँस खाँड़े बहु परहीँ। जानि पखाल[5] बादि कै[6] चढ़हीँ ॥
चारा लीलि सो माँछरि भाजी। कहाँ जाय जो जाकर खाजी[7] ॥

दो०—माँछर कर विष हिरदै, तेहि साँधे विष बान।
सबहिँ पहुँचि कै मारा, चाल्हर तजे परान ॥ १६० ॥

चौपाई

जस धौलागिरि परवत होई। तेही भांति उतरान्यो सोई ॥
सबहि देस[8] मिलि तीरहिँ आना। लीन्ह कुल्हारी लोग जहाना[9] ॥
जनु परवत कहँ लागहिँ चाँटी। लै गए माँसु रही सब काँटी[10] ॥
माँजरि[11] परी कोस दस बेंड़ी। कस माँजरि जस सेत बरेंड़ी[12] ॥
नैन सो जानु कोट की पवँरीं[13]। कित[14] अस गये फिरैं तहँ भँवरीं ॥
रतनसेन सो सुनि कै कहैं। अस अस मच्छ समुंद महँ अहैं ॥
राजा तुम चाहहु तहँ गवना। होहि सँजोग[15] बहुरि नहिं अवना ॥

---

१ सिस्ट लाय=जंजीर में बांध कर। २ किलकिली=एक पक्षी जो मछली को पकड़ कर दूर ले जाकर निगलता है और जब तक निगल नहीं लेता लौटता नहीं। ३ तरबोर=नीचे, गहराई की तह। ४ स्वैं=स्वयं, आपखुद। ५ पखाल=मशक। ६ बादि कै=हठ करके, बलात्। ७ खाजी=खूराक, भक्ष्य। ८ देस=लोग। ९ लोग जहाना=सब लोग। १० काँटी=कंटक मयी ठठरी। ११ माँजरि=हड्डियों की ठठरी। १२ बरेंड़ी=धरन शहतीर। १३ पँवरि=द्वार पर की दालान। १४ कित=कितने ही लोग उसमें जाकर चक्कर लगाते थे। १५ सँयोग=जान पड़ता है कि ऐसा संयोग होगा कि वहाँ से लौट कर आवैंगे नहीं।

दो०—तुम राजा औ्रौर गूरू, हम सेवक औ चेर[1]।
कीन्ह चहहिं सब आयसु, अब गवनब तहँ फेर[2] ॥१६१॥

चौपाई

राजैं कहा कीन्ह मैं पेमा। जहाँ पेम कहँ कूसर[3] खेमा॥
तुम खेवहु जो खेवहि पारौ[4]। जैसे आपु तरौ मोहि तारौ[5]॥
मोहि कुसर कर सोच न ओता[6]। कुसर होत जो जनम न होता॥
धरती सरग जाँतपिल[7] दोऊ। जो यहि विच, जिउ राख न कोऊ॥
हौं अब कुसल एक पै माँगौं। पेम पंथ सत बाँधि न खाँगौं॥
जो सत हिये तो पंथहि दीया। समुंद न डरै देखि मरजीया[8]॥
तहँ लगि हेरौं समुंद ढंढोरौं[9]। जहँ लगि रतन पदारथ जोरौं॥
दो०—सपत[10] पतार खोजि कै, काढ़ौं वेद गरंथ।
सात समुंद चढ़ि धावौं, पदुमावति जेहि पंथ॥ १६२॥

१६—सोलहवां खंड

[सात समुद्र वर्णन]

चौपाई

सायर[11] तरै हिये सत पूरा। जो जिउ सत कायर पुनि सूरा॥
तेहि सत बोहित पूर चलाये। जेहि सत पवन पंख जनु लाये॥
सत साथी सतगुरु कनहारू[12]। सत्त खेइ लै लावै पारू॥

---

१ चेर=चेला। २ अब गवनब तहँ फेर=अब वहाँ का जाना बंद कीजिये, लौट चलिये। ३ कूसर खेम=कुशल क्षेम। ४ पारौ=खे सको। ५ तारौ=पार करो। ६ ओता=उतना। ७ जाँत पिल=जाँता के पाट (नीचे ऊपर के दोनों पत्थर)। ८ मरजीया=मोती निकालने वाला गोता खोर, डुबकैया। ९ ढँढोरौं=तलाश करूँगा खोजूंगा। १० सपत=(सप्त) सात। ११ सायर=सागर। १२ कनहारू=कर्णधार, मल्लाह।

सतइ ताक सब आगू पाछू। जहँ जहँ मगर मच्छ औ काछू॥
उठे लहर जनु ठाढ़ पहारा। चढ़ै सरग औ परै पतारा॥
डोलैं बोहित लहरैं खाहीं। खन तर[1] कहँ खन होइँ उपराहीं॥
राजै सो सत हिरदैं बाँधा। जेहि सत टेकि करै गिरि[2] काँधा॥

दोहा—खार समुंद सब नाँघा, आये समुंद जहँ खीर।
मिले समुंद वै सातौ, बीहर बीहर[3] नीर॥ १६३॥

चौपाई

खीर समुंद का बरनौं नीरू। सेत सरूप पियत जस खीरू॥
उलथहिं मानिक मोती हीरा। दरब देखि मन होय न धीरा॥
मनवा[4] चाह दरब औ भोगू। पंथ भुलाइ बिनासै जोगू॥
जोगी मनहिं ओही रिस मारहिं। दरब हाथ कै समुंद पवाँरहिं॥
दरब लेइ सो अस्थिर राजा। जो जोगी तेहि के केहि काजा॥
पंथिहि पंथ दरब रिपु होई। ठग बटपार चोर सँग सोई॥
पंथी सो जो दरब सों रूसे। दरब समेट बहुत अस मूसे॥

दोहा—खीर समुंद सब नाँघा, आये समुंद दधि माँह।
जो है नेह क बाउर, ना तेहि धूप न छाँह॥ १६४॥

चौपाई

दधि समुंद्र देखत तस दहा। पेम क लुबुध दगध पै सहा॥
पेम जो दाधा धनि वह जीऊ। दधि जमाइ मथि काढ़ै घीऊ॥
दधि एक बूँद जाम सब खीरू। काँजी बूंद बिनासै नीरू॥
सो अस दधि मन मथनी काढ़ी। हिये जोति बिन फूट न साढ़ी॥
जेहिं जी पेम चंदन तेहि आगी। पेम बिहून फिरै डर भागी॥
पेम की आग जरै जो कोई। ताकर दुख न अबिरथा[5] होई॥
जो जानै सत आपुहि जारा। निसत हिये सत करै न पारा॥

---

१ तर=तल, नीचे। २ गिरि=जिस सत को टेककर मनुष्य कंधे पर पहाड़ उठा लेता है। ३ बीहर=न्यारा न्यारा। ४ मनवा=मन चाहे। ५ अबिरथा=व्यर्थ, वेफायदा।

दोहा—दधि समुंद्र पुनि पार भे, पेमहिं कहाँ सँभार ।
भावै पानी सिर परै, भावै परहिं अँगार ॥ १६५ ॥

चौपाई

आजि[1] उदधि सो समुंद अपारा । धरती सरग जरै जेहि झारा ॥
आजि जो उफना[2] ओही समुंदा । लंका जरी ओही एक बुन्दा ॥
विरह जो उफना उहईं काढ़ा । खन न बुझाइ जगत तस बाढ़ा ॥
जेहिं सो विरह तेहि आगि न डीठो । सौंह जरइ फिरि देइ न पीठी ॥
जग महँ कठिन खरग कै धारा । तेहि ते अधिक विरह कै झारा ॥
अगम पंथ जो पेम न होई । साध[3] किहें पावै सब कोई ॥
तेहि रे समुन्द महँ राजा परा । चहै जरा पै रोम न जरा ॥

दोहा—तलफै[4] तेल कराह जिमि, इमि तलफै सब नीर ।
यह जी मलयगिरि पेमका, बुन्द समुंद-सरीर ॥ १६६ ॥

चौपाई

सुरा समुंद पुनि राजा आवा । महुवामद छाता[5] दिखरावा ॥
जो तेहिं पियै सो भाँवरि लेई । सीस फिरै पँथ पैगु न देई ॥
पेम सुरा जेहि के जिय माँहाँ । कित बैठे महुवा की छाँहाँ ॥
गुरु के पास दाख रस रसा । वेरी बँबुर मार मन कसा ॥
बिरहें दगध कीन्ह तन भाठी । हाड़ जराइ दीन्ह जस काठी ॥
नैन नीर सौं पोती किया । तस मद चुवै वरै जस दिया ॥
बिरह सुरागिन भूँजै मासू । गिरि गिरि परहिं रकत के आँसू ॥

दोहा—मुहमद मद जो प्रेम का, हिये दीप तेहिं राखि ।
सीस न देइ पतंग ज्यों, तौलहि जाइ न चाखि ॥ १६७ ॥

चौपाई

पुनि किलकिला समुंद महँ आये । गा धीरज देखत डर खाये ॥
भा किलकिल अस उठै हिलोरा । जनु अकास टूटै चहुँ ओरा ॥

---

१ आजि उदधि=घी का समुद्र । २ उफना=उबला । ३ साध=इच्छा ।
४ तलफै=खौलता है । ५ छाता दिखरावा=छाती उभाड़ी, घमंड से उमड़ा ।

उठै लहर परबत की नाईं। फिर आवै जोजन लख ताईं ॥
धरती लेत[1] सरग लहि बाढ़ा। सकल समुंद जानौ भा ठाढ़ा ॥
नीर होय तर ऊपर सोई। महा अरंभ[2] समुंद महँ होई ॥
फिरत समुंद जोजन लख ताका। जैसे फिरै कुम्हार क चाको ॥
भा परलौ[3] नियराना जबहीं। मरै सो ता कहँ परलौ तबहीं ॥

दोहा—गे अउसान[4] सबन के, देखि समुन्द कै बाढ़ि।
निथर होत जनु लीलै, रहा नैन अस काढ़ि ॥ १६ ॥

चौपाई

हीरामनि राजा सों बोला। इहै समुंद्र आइ सत-डोला[5] ॥
सिंघल पंथ जो नाहिं निबाहू। यही ठाँव साँकर[6] सब काहू ॥
यहै किलकिला समुँद गँभीरू। जेहि गुन होय सो पावै तीरू ॥
यही समुंद्र पंथ मँझधारा। खाँडे कै अस धार निनारा ॥
तीस सहस कोसन कै बाटा। अस साँकर[7] चलि सकै न चाँटा ॥
खाँड़े चाहि[8] पइनि पइनाई[9]। बार चाहि पातर पतराई ॥
यही पंथ कहँ गुरु संग लीजै। गुरु संग होय पार तौ कीजै ॥

दोहा—मरन जियन यही पँथ, यही आस निरास।
परा सो गवा पतारहिं, तरा सो गा कैलास ॥ १६६ ॥

चौपाई

राजैं दीन्ह कटक कहँ बीरा। सुपुरुष होहु करहु मन धीरा ॥
ठाकुर जेहि क सूर भा कोई। कटक सूर पुनि आपुहि होई ॥
जौलहि सती न जिय सत बांधाँ। तौलहि देइ कहार न काँधा ॥
पेम समुंद महँ बाँधा बेरा। यहि सब समुंद बूंद जेहि केरा ॥
ना हौं सरग न चाहौं राजू। ना मोहिं नरक सेतीं[10] कछु काजू ॥
चाहौं ओहि के दरसन पावा। जेइ मोहिं आनि पेम पँथ लावा ॥

---

१ लेत=लेकर, से। २ अरंभ=वेग। ३ परलौ=प्रलय। ४ अउसान=धीर्य, मानसिक शान्ति। ५ सत-डोला=सत डोलाने वाला। ६ सांकर=संकट। ७ साँकर= तंग, संकुचित। ८ चाहि=बढ़कर। ९ पइनाई=तीक्ष्णता, तेजी। १० सेतीं=से।

काठहिं काह गाढ़[1] का ढीला। बूड़ न समुंद मगर नहिं लीला॥

दोहा—कान्ह[2] समुंद धँसि लीन्हेंसि, भा पाछे सब कोइ।
कोउ काहू न सँभारै, आपन आपन होइ॥ १७०॥

चौपाई

कोइ बोहित जस पवन उड़ाहीँ। कोई चमकि बीजु अस जाहीँ॥
कोई भल जस धाव तुषारा[3]। कोई जैस बैल गरियारा[4]॥
कोई हरुअ[5] जानु रथ हाँका। कोई गरुअ भार भा थाका॥
कोई रेंगहि जानहु चाँटी। कोई टूटि होहिँ सरि माँटी॥
कोई खाहिँ पवन कर झोला। कोई करहिं पात ज्यों डोला॥
कोई परहिँ भँवर जल माँहाँ। फिरत रहैं कोऊ देइ न बाँहाँ॥
राजा कर भा अगमन खेवा। खेवक[6] आगे सुवा परेवा॥

दोहा—कोइ दिन मेला[7] सबेरे, कोइ आवा पछ राति।
जाकर हुत जस साजू, सो उतरा तेहिँ भाँति॥१७१॥

चौपाई

सतयें समुँद मानसर आये। सत जो कीन्ह सहस सिधि पाये॥
देखि मानसर रूप सोहावा। हिय हुलास पुरइन होइ छावा॥
गा अँधियार रैनि मसि[8] छूटी। भा भिनसार[9] किरन रबि फूटी॥
अस्तु अस्तु सब साथी बोले। अंध जो अहे नैन बिधि खोले॥
कँवल बिगस तस बिहँसी देहीं। भँवर मगन होइ होइ रस लेहीँ॥
हँसहिँ हंस औ करहिँ किरीरा[10]। चुगहिँ रतन मुकुताहल हीरा॥
जो अस साधि आव तप जोगू। पूजै आस मान रस भोगू॥

दोहा—भँवर जो मनसा[11] मानसर, लीन्ह कँवल रस आय।
घुन जो हियाउ[12] न कै सका झूर काठ तस खाय॥१७२॥

---

१ गाढ़=तंग। २ कान्ह=(कर्ण)=पतवार। ३ तुषार=घोड़ा। ४ गरियार=जो चलते समय बैठ बैठ जाय। ५ हरुअ=हलका। ६ खेवक=खेने वाला। ७ मेला=पड़ाव डाला। ८ मसि=कालिख। कालापन। ९ भिनसार=सवेरा। १० किरीरा=क्रीड़ा। ११ मनसाना=हिम्मत करना। १२ हियाउ=साहस, हिम्मत।

१७—सत्रहवां खंड

सिंघलदीप दृश्य वर्णन

चौपाई

पूँछा राजैं कहु गुरु सुवा। न जनौं आजु कहाँ दिन उवा॥
पवन बास सीतल लै आवा। कया दहत चंदन जनु लावा॥
कबहुँ न ऐस सिरान[1] सरीरू। परा अगिन महँ जानहु नीरू॥
निकसत आव किरन रवि रेखा। तिमिर गयो निरमल जग देखा॥
उठे मेघ अस जानहु आगे। चमकै बीजु गगन पै लागे॥
तेहि ऊपर जनु ससि परगासा। औ सो चाँद कचपची गरासा॥
और नखत चहुँ दिस उजियारे। ठाँवहिं ठाँवँ दीप अस बारे॥

दोहा—और दखिन दिस नियरहिं, कंचन मेरु दिखाव।
जस बसंत रितु आवैं, तैस बास जग आव॥१७३॥

चौपाई

तुइँ राजा जस बिकरम आदी। पुनि हरिचंद बैन[2] सतबादी॥
गोपिचंद तैं जीता जोगू। औ भरथरी न पूज वियोगू॥
गोरख सिद्ध दीन्ह तोहि हाथू। तारी[3] गुरू मछंदर नाथू॥
जिता पेम तैं पुहुमि अकासू। दिष्टि पड़ा सिंघल कैलासू॥
वै जो मेघ गढ़ लागु अकासा। बिजुरी कनक कोट चहुँ पासा॥
तेहि पर ससि जो कचपची भरा। राज मँदिर सोने नग जरा॥
और नखत ओहि के चहुँ पासा। सब रानिन के अहैं अवासा॥

दोहा—गगन सरोवर ससि कँवल, कुमुद तराईं पास।
तुइँ रवि ऊवा भँवर होइ, पवन मिला लै बास॥१७४॥

चौपाई

सो गढ़ देखु गगन ते ऊंचा। नैन देख कर नाहिं पहूँचा॥

---

१ सिराना=शीतल होना। २ वैन=राजा वेणु का पुत्र राजा पृथु। तारी=ताली (कुंजी)।

बिजुरी चक्र फिरहिँ चहुँ फेरे। ज्यौं जमकात[1] फिरैं जम केरे ॥
धाय जो बाजा कै मन साधा[2]। मारा चक्र भयो दुइ आधा ॥
चाँद सुरिज औ नखत तराईं। तेहि डर अँतरिख फिरहिँ सवाईं ॥
पवन जाइ तहँ पहुँचा चहा। मारा तैस लोटि भुइँ रहा ॥
अगिन उठो जरि बुझी नियाना[3]। धुँवाँ उठा उठि बीच बिलाना ॥
पानि उठा उठि जाय न छुआ। बहुरा रोइ आइ भुइँ चुआ ॥

दोहा—रावन चहा सउँ[4] हेरौं, उतरि गये दस माथ।
संकर धरा लिलार भुइँ, और को जोगी नाथ ॥१७५॥

चौपाई

तहाँ देखु पद्मावत रामा[5]। भँवर न जाय न पंखो नामा ॥
अब बुधि एक देउँ तेहिँ जोगू। पहिले दरस होइ पुनि भोगू ॥
कंचन मेरु दिखावसि जहाँ। महादेव कर मंडह तहाँ ॥
ओहिक खंड परवत जस मेरू। मेरुहिँ लाग होय तसु[6] फेरू[7] ॥
माघ मास पाछिल पख लागे। सिरीपंचमी[8] होइहै आगे ॥
उघरहि महादेव कर बारू[9]। पूजै जाय सकल संसारू ॥
पदुमावति पुनि पूजै आई। होइहि यहि मिस दिष्टि मेराई ॥

दोहा—तुम गवनहु ओहि मंडप हौं पद्मावति पास।
पूजै आइ वसंत जो तौ पूजै मन आस ॥१७६॥

चौपाई

राजै कहा दरस जो पाऊं। परबत काह गगन कहँ धाऊँ ॥
जेहि परबत पर दरसन लीन्हा। सिर सौं जाउँ पाँउ का कीन्हा ॥
मोहि रे भावै ऊंच सो ठाऊं। ऊंचे लेउँ पिरीतम नाऊँ ॥
पुरुषहिँ चाहिय ऊँच हियाऊ। दिन दिन ऊंचे राखै पाऊ ॥
सदा ऊंच पै सेइय बारू। ऊंचइ सँग कीजै व्यवहारू ॥

---

१ जमकात=यम के अस्त्र, यम के हथियार। २ साध=अभिलाप। ३ नियान=निदान। ४ सऊँ=सामने। ५ रामा=रमणीय स्त्री। ६ तसु=तासु (उसी का) ७ फेरू=कुंभाकार मंडप। (उसी मेरु से लगा हुआ उस मन्दिर का मंडप है) ८ सिरीपंचिमी=वसंत पंचमी। ९ बारू=द्वार।

ऊंचे चढ़े ऊंच खँड सूझा। ऊंचे पास. ऊंच मति बूझा॥
ऊंचे सँग संगति नित कीजै। ऊंचे लागि जीउ बलि दीजै॥
दोहा—दिन दिन ऊंचा होइ सो, जेहिँ ऊंचे पर चाउ।
ऊंच चढ़त जो खसि[1] परै, ऊंच न छाँड़ै काउ॥१७७॥

चौपाई

नीच संग नित होय निचाई। जैसे हंस काग की नाई॥
नीच न कबहूं मन महँ राखै। नीच न कबहूं भाखन भाखै॥
नीचे सौं संगति नहिं कीजे। नीचे पंथ पाउँ नहि दीजे॥
नीचे नहिं कीजै व्यवहारू। नीचे कहँ नहिं दीजै भारू[2]॥
नीच संग नहिं कीजै साथू। नीच गहे कछु आव न हाथू॥
नीच न कबहूँ आवै काजा। नीचहिं अहै न एको लाजा॥
नीच करम कबहूं नहिं कीजै। नीच काज कै अजस न लीजै॥
दोहा—होय नीच नहिं कबहूं, जेहिं ऊंचे मन चाउ।
नीच ऊंच लै बोरै, नीचै सबै नसाउ॥ १७८॥

चौपाई

हीरामनि दै बचा[3] कहानी। चला जहाँ पदुमावति रानी॥
राजा चला सँवरि सो लता[4]। परवत कहँ ज्यौं चलै परवता[5]॥
का परवत चढ़ि देखै राजा। ऊंच मँडप सोने सब साजा॥
अँबिरित फर पुनि फरे अपूरी[6]। औ तहँ लागि सजीवन मूरी॥
चौमुख[7] मंडप चहूं केवारा। बैठे देउता चहूं दुआरा॥
भीतर मँडप चारि खँभ लागे। जिन वेइ छुए पाप तिन भागे॥
संख घंट घन बाजहिं सोई। औ बहु होम जाप तहँ होई॥
दोहा—महादेउ कर मंडप, जगत जातरा[8] आउ।
जो इच्छा मग जेहि के, सो तेहि फल पाउ॥ १७९॥

---

१ खसि परै=गिर पड़े। २ भारू=जिम्मेदारी का काम, बड़ा काम। ३ बचा=बाचा, वचन, वादा। ४ लता=लता रूप पदमावती। ५ परवता=पर्वत पर रहने वाला जन। ६ अपूरी=(आपूर्ण) अधिकता से। ७ चौमुख=चारो दिशा में। ८ जातरा=यात्रा, दर्शन पूजनादि।

१८—अठारहवां खंड

मंडप गमन वर्णन

चौपाई

राजा बाउर बिरह बियोगी । चेला सहस तीस सँग जोगी ॥
पदुमावति के दरसन आसा । डँडवत कीन्ह मँडप चहुँ पासा ॥
पुरुब बार होइ कै सिर नावा । नावत सीस देव पहँ आवा ॥
नमो नमो नारायन देवा । का तोहि जोग सकौं कै सेवा ॥
तुइँ दयाल सब के उपराहीं । सेवा केरि आस तोहि नाहीं ॥
ना मोहि गुन न जीभ रस बाता । तू दयाल गुनि निरगुनि दाता ॥
पुरवहु मोरि दरस कै आसा । हौं मारग जोवौं हर स्वासा ॥

दोहा—तेहि बिधि बिनय न जानौं, जेहि बिधि अस्तुति तोरि ।
करु सुदिष्टि औ किरपा, इच्छा पूजै मोरि ॥१८०॥

चौपाई

कै अस्तुति जो बहुत मनावा । सबद अकूत[1] मँडप तें आवा ॥
मानुस पेम भयो बैकूँठी । नाहित कहा छार एक मूँठी ॥
पेमहिं माँहँ बिरह औ रसा । मैन[2] के घर मधु-अमिरितु बसा[3] ॥
निसती धाय मरै तौ काहा । सत जो करै होइ तेहि लाहा ॥
एक बार जो मन दै सेवा । सेवा-फल परसन होइ देवा ॥
सुनिकै सबद मँडप झनकारा । बैठेउ आय पुरुब के बारा ॥
पिंड चढ़ाय छार जेत[4] आँटी । माँटी होहु अंत जो माँटी ॥

दोहा—माँटी मोल न कुछ लहै, औ माँटी सब मोल ।
दिष्टि जो माँटी हू करै, माँटी होय अमोल ॥ १८१ ॥

---

१ अकूत=अकस्मात । २ मैन=(मदन)=मोम । ३ बसा=बरैं । भिड़ (यहाँ मधुमक्खी) मोम के छत्ते ही में अमृत रूपी शहद और (=डंक मारने वाली) मधु मक्खी रहती है । ४ जेत=जितनी ।

चौपाई

माटी जो रे गरब सों होती। पावत कत सरूप औ जोती॥
जो माटी तजि आपुहि चीन्हा। फरे रतन मोती विधि कीन्हा॥
अस्तुति कै बिनवा बहु भाँती। भये मयाउर सुनत बिनाती॥
जिन कर फूल चढ़े एक बारा। सो निरफल नहिं जाय सँसारा॥
सोचु न करु बिरही बलबीरा। पूजहि आस राखु मन धीरा॥
सुनत वचन बैठे सब आई। मंडप के सनमुख मुख लाई॥
जोगिन केर कटक सब मेला। गुरू माँझ चारिहु दिस चेला॥

दोहा—रतनसेन सोचन लगे, सुवा वचन सुधि पारि।
बाढ़ा बिरह सरीर महँ, पीर न सके सँभारि॥ १८२॥

चौपाई

बैठ सिंहछाला होइ तपा। पदुमावति पदुमावति जपा॥
दिष्टि समाधि ओही सों लागी। जेहि दरसन कारन बैरागी॥
किंगिरी गहे बजावै झूरी। भोर साँझ सिंगी नित पूरी॥
कंथा जरै आगि जनु लाई। बिरह धँधोर[1] जरत न बुझाई॥
नैन रात निसि मारग जागे। चकित चकोर जानु ससि लागे॥
कुंडर[2] गहे सीस भुइँ लावा। पाँवरि होउँ जहाँ ओहि पावा॥
जटा छोरि कै बार बहारौं[3]। जेहि पँथ आव सीस तहँ वारौं[4]।

दोहा—चार चक्र फिरौं खोजत, डँड[5] न रहौं थिर मार[6]।
होइ कै भसम पवन सँग, जहाँ सो प्रान अधार॥१८३॥

---

१ धँधोर=लपट, ज्वाला। २ कुंडर=कुन्डल। ३ बहारना=झारना। ४ वारौं=निछावर करौं। ५ डड=दंड। ६ थिरमार=स्थिर होकर।

१९—उन्नीसवां खंड

पद्मावती का पूर्वानुराग वर्णन

चौपाई

पदुमावति तहँ जोग सँजोगा। परी पेम बस गहे बियोगा ॥
नींद न परै रैनि जो आवा। सेज केवाँच जानु कोउ लावा ॥
दहै चाँद औ चंदन चीरू। दगध करै तन बिरह गँभीरू ॥
कलप समान रैनि तेहि बाढ़ी। तिल तिल भइ जुग जुग परगाढ़ी ॥
गही बीन मकु रैनि बिहाई। ससि-बाहन[1] तब रहा ओनाई ॥
पुनि धन सिंह उरेहै लागै। ऐसी बिथा रैनि सब जागै ॥
कहाँ हो भँवर कँवल रस लेवा। आइ परहु ह्वै घिरिनि[2] परेवा ॥

दोहा—सो धन बिरह पतंग ज्यौं, जरा चहै तेहिं दीप।
कंत न आव भिरिंग ह्वै, को चंदन तन लीप ॥ १८४ ॥

चौपाई

परी बिरह बन जानहु घेरी। अगम असूझ जहाँ लगि हेरी ॥
चतुर दिसा चितवै जनु भूली। सो बन कौन जो मालति फूली ॥
कँवल भँवर ओही बन पावै। को मिलाइ तन तपनि बुझावै ॥
अंग अंग अस कँवल सरीरा। हिय भा पियर पेम की पीरा ॥
चहै दरस रवि कीन्ह प्रकासू। भँवर दिष्टि महँ कँवल अकासू ॥
पूँछै धाय बारि कहु बाता। तुइँ जस कँवल-कली रँग राता ॥
केसर बरन हिया भा तोरा। मानहु मनहिं परा कछु भोरा[3] ॥

दोहा—पवन न पावै संचरै, भँवर न तहाँ बईठ।
भुली कुरंगिनि कस भई, मनहुँ सिंह तोहि दीठ ॥ १८५ ॥

---

१ ससिबाहन=चंद्रमा के रथ का मृग। २ घिरिनि परेवा=गिरहबाज कबूतर।
३ भोरा=भ्रम।

चौपाई

जब जनमी तुइँ पदुमिनि रानी। ता दिन गनकन कहा बखानी॥
जंबूदीप देस इक आहा। पदुमावति कर तहाँ बिआहा॥
जब यहि विधि कहि धाय सुनावा। सुनि अति सै जिय गहबर[1] आवा॥
जब रतिपति संजोग समाना। सीस हीन दुइ उठे अमाना[2]॥
स्रवत नीर निसि औ दिन जाई। भूषन बसन न भवन सोहाई॥
बिरह बिथा अति व्याकुल बारी। हरिहित[3] लेपन भाव न सारी॥
जलसुत[4] सीतल देह चढ़ाई। अधिक बिरह तन लाग डहाई[5]॥

दोहा—वनिता बैठी सँवरे, बिरह साँस भरि लेइ।
सुरिज चाँद कब मिलि हैं, रतिपति अति दुख देइ॥१८६॥

चौपाई

धाय! सिंह बरु खात्यौ मारी। की तस रहति अही[6] जस बारी॥
जोवन सुनेउँ कि नवल बसंतू। तेहि बन परेउ हस्ति मैमंतू[7]॥
अब जोवन बारी[8] को राखा। कुंजर बिरह बिधंसै[9] साखा॥
मैं जाना जोवन रस भोगू। जोवन कठिन सँताप बियोगू॥
जोबन गरुअ सुमेर पहारू। सहि न जाय जोवन कर भारू॥
जोवन अस मैमंत न कोई। नवै हस्ति जो आँकुस होई॥
जोवन भर भादौं जस गंगा। लहरैं देइ समाय न अंगा॥

दो०—परिउँ अथाह धाय हौं, जोवन सलिल गँभीर।
तेहि चितवउँ चारिउ दिस, को गहि लावै तीर॥१८७॥

चौपाई

पदुमावति तुइँ समुँद सयानी। तोहि सरि समुँद न पूजै रानी॥
नदी समाहिँ समुँद महँ आई। समुँद डोलि कहु कहाँ समाई॥
अबहीँ कँवलकली हिय तोरा। अइहै भँवर जो तो कहँ जोरा॥

---

१ गहवर=हृदय गद्गद हो आया। २ अमाना=आम के टकोरा। ३ हरिहित=चंदन। ४ जलसुत=मोती। ५ लाग डहाई=जलने लगा। ६ अही=थी। ७ मैमंत=मदमस्त (मता हुआ) ८ बारी=वाटिका। ९ बिधंसैं=बिनासैगा।

जोबन तुरी[1] हाथ गहि लीजै। जहाँ जाय तहँ जान न दीजै॥
जोबन जोर मात[2] गज अहै। गहहु ज्ञान आँकुस जिमि रहै॥
अबहिं बारि तुइँ पेम न खेला। का जानसि कस होय दुहेला[3]॥
गगन दिष्टि करु नाइ[4] तराहीँ। सुरिज दीख कर आवत नाहीँ॥

दो०—जब लग पीउ मिलै तोहिं, साध पेम कै पीर।
जैसे सीप सेवाति कहँ, तपै समुँद मँझ नीर॥ १८८॥

चौपाई

रह न धाय जोबन औ जीऊ। जानहु परै अगिन महँ घीऊ॥
करवत सहैँ होत दुइ आधा। सही न जाय बिरह की दाधा[5]॥
बिरहा सुभर समुद्र अपारा। भँवर मेलि जिउ लहरहिं मारा॥
बिरह नाग होइ सिर चढ़ि डसा। औ होइ अगिन चाँद महँ बसा॥
जोबन पंखी बिरह बियाधू। केहरि भयो कुरंगिनि खाधू[6]॥
कनक वानि[7] कत जोबन कीन्हा। औटनि कठिन बिरह ओहि दीन्हा॥
जोबन जलहिं बिरह हँस छूवा। फूलहिं भँवर फरहिं भा सूवा॥

दो०—जोबन चंद उवा जस, बिरह संग भा राहु।
घटतहिं घटत खीन भइ, कहै न पारउँ काहु॥ १८९॥

चौपाई

नैन जो चाक[8] फिरहिं चहुँ ओरा। चरचै[9] धाय समाय न कोरा[10]॥
कहेसि पेम उपना[11] जो बारी। बाँधहु सत मन डोल न भारी॥
जेहि जी महँ सत होय पहारू। परे पहार न बाँकै[12] बारू॥
सती जो जरै पेम पिय लागी। जो सत हिये तो सीतल आगी॥
जोबन चाँद जो चौदस करा। बिरह की चिनिगि[13] सो उ पुनि जरा

---

१ तुरी=घोड़ा। २ मात=मस्त। ३ दुहेला=दुःख। ४ नाइ=नवाकर, झुकाकर। ५ दाधा=जलन। ६ खाधू=खाद्य वस्तु, शिकार। ७ वानि=आदत, सुभाव। ८ चाक=चक्र (की भांति)। ९ चरचै=अनुमान करती है। १० कोरा=गोद (क्रोड़)। ११ उपना=उत्पन्न हुआ है। १२ बांकना=वंक होना, टेढ़ा होना। १३ चिनगी=आग की चिनगारी।

पवन बाँध सो जोगी जती। काम बाँध सो कामिनि सती॥
आव बसंत फूल फुलवारी। देव वार सब जैहैं वारी॥

दो०—तुम्ह पुनि जाहु बसंत लै, पूजि मनावहु देव।
जिउ पाई जग जनमें, पिउ पाई कै सेव॥ १९०॥

चौपाई

जउ लगि अवधि आइ नियराई। दिन जुग जुग बिरहिनि कहँजाई॥
नींद भूख निसि दिन गइ दोऊ। हिये माँझ जस कलपै[1] कोऊ॥
रोम रोम जनु लागे चाँटे। सोत सोत जनु बेधे काँटे॥
दगध कराह जरै जस घीऊ। वेगि न आव मलयगिरि पीऊ॥
कवन देव कहँ परसौं जाई। मिलै पीउ जेहि परसत आई॥
गुप्त जो फल साँसहिं परगटे। अब होइ सुभर[2] चहैं सो घटे॥
भयउ सँजोग जुरा अस मरना। भूखहि गए भोग का करना॥

दो०—जोबन चंचल ढीठ है, करै निकाजइ[3] काज।
धनि कुलवंति जो कुल धरै, कै जोबन मन लाज॥ १९१॥

२०—बीसवाँ खंड

पद्मावती हीरामनि भेंट वर्णन

तेहिं बियोग हीरामनि आवा। पदुमावति जानहु जिउ पावा॥
कंठ लगाइ सुवा सौं रोई। अधिक मोह जो मिलै बिछोई[4]॥
आगि उठी दुख हिये गँभीरू। नैनन आइ चुवा होइ नीरू॥
रही रोइ जब पदुमिनि रानी। हँसि पूँछहिं सब सखी सयानी॥
मिले रहसि[5] चाहिय भा दूना। कित रोइय जो मिलै बिछूना[6]॥

---

१ कलपना=(कपटना) काटना। २ सुभर=पूरे, बड़े। ३ निकाज=खराब, बुरा। ४ बिछोई=बिछुड़ा हुआ। ५ रहसि=खुश होकर। ६ बिछूना=बिछुड़ा हुआ।

तेहि क उतर पदुमावति कहा। बिछुरन दुख सो हिये भरि रहा ॥
मिलतै हिये आय सुख भरा। वह दुख नैन नीर होइ ढरा ॥

दो०—बिछुरंता जब भेंटइ, सो जानै जेहि नेह।
सुक्ख सुहेला[१] उग्गवै[२], दुःख झरै ज्यों मेह ॥ १९२ ॥

चौपाई

पुनि रानी हँसि कूसर[३] पूँछा। कित गवनेहु कै पींजर छूंछा ॥
रानी तुम जुग जुग सुख पाटू[४]। छाज न पंखी पींजर ठाटू ॥
जो भा पंख कहाँ थिर रहना। चाहै उड़ा पांख औ डहना ॥
पींजर महँ जो परेवा घेरा। आइ मँजार कीन्ह तहँ फेरा ॥
दिवसक आइ हाथ पै मेला। तेहि डर बनोवास कहँ खेला ॥
तहाँ बियाध आय नर[५] साँधा। छूट न पाव मीचु कर बाँधा ॥
वैं धरि बेंचा बाम्हन हाथा। जंबूदीप गयौं तेहि साथा ॥

दो०—तहाँ चितर[६] चितउर गढ़, चितरसेन कर राज।
टीका[७] दीन्ह पुत्र कहँ, आप लीन्ह सिउसाज[८] ॥१९३॥

चौपाई

बैठ जो राज पिता के ठाऊं। राजा रतनसेन ओहि नाऊं ॥
का बरनौं धनि देस दियारा[९]। जहँ अस नग उपना उजियारा ॥
धनि माता औ पिता बखाना। जेहि के बंस अंस[१०] अस आना ॥
लखन बतीसौ कुल निरमरा। बरनि न जाइ रूप औ करा[११] ॥
वैं हौं लीन्ह अहा अस भागू। चाहै सोने मिला सोहागू ॥
सो नग देखि इच्छा भइ मोरी। है यह रतन पदारथ जोरी ॥
है ससि जोग इहै पै भानू। तहँ तुम्हार मैं कीन्ह बखानू ॥

---

१ सुहेला=सुहेल नाम का सितारा जो अरब देश में बरसात से पहले उदय होता है। २ उग्गवै=उगता है। ३ कूसर=कुशल। ४ पाट=राज सिंहासन। ५ नर=नरसल की लग्गी। ६ चितर=चित्र समान सुन्दर। ७ टीका दीन्ह=राज्याभिषेक कर दिया। ८ सिउसाज लेना=कैलासवासी होना, मर जाना। ९ दियारा=दीपक के समान। १० अंस=भाग्यवान। ११ करा=कला-कुशलता।

दोहा—कहाँ रतन रतनागिरी, कंचन कहाँ सुमेरु।
दई जो जोरी दुहुँ लिखी, मिली सो कवनेहु फेरु[1] ॥१९४॥

चौपाई

सुनि कै बिरह चिनिंग ओहि परी। रतन पाउ जस कंचन करी[2] ॥
कठिन पेम बिरहा दुख भारी। राज छाँड़ि भा जोगि भिखारी ॥
मालति लागि भँवर जस होई। होइ बाउर निसरा[3] बुधि खोई ॥
कहेसि पतंग होय रस लेऊं। सिंघलदीप जाय जिउ देऊं ॥
पुनि ओहि कोउ न छांड़ अकेला। सोरह सहस कुँवर भे चेला ॥
और गनै को संग सहाई। महादेव-मढ़ मेला आई ॥
सूरज-पुरुष दरस की ताईं। चितवै चाँद चकोर की नाईं ॥

दोहा—तुम बारी रसजोग जेहि, कँवलहि जस अरघानि[4]।
तस सूरज परगास कै, भँवर मिलायों आनि ॥१९५॥

चौपाई

हीरामनि जो कही यह बाता। सुनिकै रतन पदारथ राता[5] ॥
जैस सुरिज देखे है ओपा। तस भा बिरह काम दल कोपा ॥
सुनि कै जोगी केर बखानू। पदमावत मन भा अभिमानू ॥
कंचन-करी[6] न काँचहि लोभा। जो नग जरै होय तब सोभा ॥
कंचन जो कसिये कै ताता। तब जानिय दहुँ पीत कि राता ॥
नग कर मरम सो जड़िया[7] जानै। जरै जो अस नग हेरि[8] बखानै ॥
को अस हाथ सिंह मुख घालै। को यह बात पिता सों चालै[9] ॥

दोहा—सरग इन्द्र डरि काँपै, बासुकि डरै पतार।
कहाँ ऐस बर पिरथिमी[10], मोहिं जोग संसार ॥१९६॥

---

१ फेरु=हेर फेर, विचित्र घटना। २ कंचन करी=सोने की अँगूठी। ३ निसरा=निकला। ४ अर्घानि=सुगन्ध। ५ राता=अनुरक्त हुआ। ६ कंचन-करी=सोने की अँगूठी। ७ जड़िया=नग जड़नेवाला। ८ हेरि=ढूँढ़कर। ९ चालै=कहै। १० पिरथिमी=पृथ्वी पर।

चौपाई

तुइँ रानी ससि कंचन-करा[1] । वह नग रतन सूर निरमरा ॥
बिरह बजागि[2] बीच गा कोई । आगि जो छुवै जाइ जरि सोई ॥
आगि बुझाय धोय जल काढ़ै । वह न बुझाय आगि अति बाढ़ै ॥
बिरह की आगि सूर जर कया । रातिहुं दिवस जरै औ तया[3] ॥
खिनहिं सरग खिन जाय पतारा । थिर न रहै तेहि आगि अपारा ॥
धनि सो जीउ दगध इमि सहा । पेस जरै दुसरे नहिं कहा ॥
सुलुगि सुलुगि भीतर होइ स्यामा । परगट होइ नहिं काढ़ै[4] नामा ॥

दोहा—काह कहौं हौं ओहि सों, जेइ दुख कीन्ह न मेट[5] ।
आगि करौं यह बाहेर, जेहि दिन होय सो भेंट ॥१६७॥

चौपाई

सुना जो अस धन जारै कया[6] । तन भा साँच नयन भा मया[7] ॥
देखौं जाय जरै जस भानू । कंचन जरे अधिक होय बानू[8] ॥
अब जो जरै सो पेम बियोगी । हत्या मोहि जेहि कारन जोगी ॥
हीरामन सो कहीं रस बाता । सुनिकै रतन[9] पदारथ राता ॥
जोगी जोग सँभारै छाला । देहौं भुगुति[10] देउँ जयमाला ॥
आव बसंत कुसल सों पाऊं । पूजा मिस मंडप कहँ जाऊँ ॥
गुरु के बचन फूल हिय गाँथे । देखौं नैन चढ़ावौं माथे ॥

दो०—कँवल बरन तुम्ह बरना[11], मैं माना पुनि सोय ।
चाँद सुरिज कहँ चाहिय, जो रे सुरज वह होय ॥ १६८ ॥

चौपाई

हीरामनि जो कही रस बाता । पावा पान भवा मुहँ राता ॥

---

१ कंचन करा=सोने के समान । २ बजागि=बज्राग्नि, बिजली की आग । ३ तया=तपता है । ४ काढ़ै=प्रगट अपने प्रियतम का नाम ज़बान से नहीं निकालता । ५ मेट=जिसने मेरा दुख न मिटाया । ६ कया=काया, शरीर । ७ मया=मयन (प्रेम) ८ बानू=रंग, चमक । ९ सुनिकै……राता=रतनसेन का हाल सुनकर पद्मावती अनुरक्त हुई । १० भुगुति=भिक्षा । ११ बरना=वर्ण, रंग ।

चला सुवा तब रानी कहा । भा जो पराउ सो कैसे रहा ॥
जो नित चलै सँवारहि पाँखा । आजु जो रहा कालिह को राखा ॥
न जनौ आजु कहाँ दिन उवा । आवा मिले चला मिलि सुवा ॥
मिलिकै बिछुरन मरन कि आना । कत आयो जो चल्यो नियाना[1] ॥
सुनु रानी हौं रहतेउँ राँधा[2] । कैसे रहौं बचा[3] कर बाँधा ॥
ताकर दिष्टि ऐसि तुम्ह सेवा[4] । जैस कुंज मन सेच परेवा[5] ॥

दोहा—बसै मीन जल धरती, अंबा बिरिछ अकास ।
जो पै पिरीति दोउ महँ, अंत होहिँ एक पास[6] ॥१९९॥

चौपाई

आवा सुवा बैठ जहँ जोगी । मारग नयन बियोग बियोगी ॥
आय पेम रस कहा सँदेसू । गोरख मिला मिला उपदेसू ॥
तुम कहँ गुरू मया[7] बहु कीन्हा । कीन्ह अदेस[8] अवन[9] कहिदीन्हा ॥
सबद एक है कहा अकेला । गुरु जस भिरिंगपतिंगजस चेला ॥
भृङ्गिहि ओही पंखि पै लेई । एकहि बार गहे जिउ देई ॥
ता कहँ गुरू मया भल कीन्हा । नव अवतार कया नव दीन्हा ॥
होइ अमर अस मरि कै जिया । भँवर कँवल मिलि कै मधु पिया ॥

दोहा—आवै रितू बसंत जब, तब मधुकर तब बासु ।
जोगी जोग जो इमि सहै, सिद्धि समापति[10] तासु ॥२००॥

---

१ नियाना=निदान, अंत में । २ रांधा=निकट, पास । ३ बचा=वचन, प्रतिज्ञा । ४ सेवा=उसकी (राजा की) दृष्टि तुम्हारी सेवा में ऐसी लगी रहती है । ५ परेवा=जैसे कबूतर मन से अपनी कुंज (अड्डा) को कभी नहीं भूलता । ६ पास="आँब और मछली की भेंट" एक प्रसिद्ध कहावत है (मछली पकाते समय आँब की खटाई डाली जाती है, अथवा मछली सड़ाकर आंब के वृक्ष में खाद दी जाती है । इस तरह उनका मिलन मरने पर हो जाता है) ७ मया=छोह, कृपा । ८ अदेस=प्रणाम (यहाँ आशिर्वाद) बहुधा गोरख पंथी साधु 'प्रणाम' के स्थान पर 'आदेश' शब्द बोलते हैं । ९ अवन=आगमन । १० समापति=(समाप्ति) पूर्ण, निःशेष ।

२१—इक्कीसवां खंड

बसंत क्रीड़ा वर्णन

चौपाई

दई दई[1] कै सो रितु गँवाई। सिरी-पंचमी-पूजा आई॥
भयां हुलास नवल रितु माहाँ। खिन न सोहाय धूप औ छाहाँ॥
पदमावत सब सखीं हँकारी। जाँवत सिंहलदीप की बारी॥
आजु बसंत नवल रितु राजा। पंचमि होय जगत सब साजा॥
नवल सिंगार बनापति[2] कीन्हा। सीस परासन[3] सेंदुर दीन्हा॥
बिकसे कँवल फूल बहु बासा। भँवर आय लुबुधे चहुँ पासा॥
पियर पात दुख झारि निपाले। सुख पल्लव उपने[4] है राते॥
दो०—अवधि आय सो पूजी, जो इच्छा मन कीन्ह।
चलौ देव-मढ़ गोहन[5], चहौं सो पूजा दीन्ह॥ २०१॥

चौपाई

फिरी आन रितु बाजन बाजे। औ सिंगार बारिन सब साजे॥
कँवल करी पदमावति रानी। होय मालति जानहु बिकसानी॥
तारामँडर[6] पहिर भल चोला[7]। भरे सीस सब नखत अमोला॥
सखी कुमोद सहस दस संगा। सबै सुगंध चढ़ाये अंगा॥
सब राजा रायन की बारी। बरन बरन पहिरे सब सारी॥
सबै सुरूप पदमिनी जाती। पान फूल सेंदुर सब राती॥
करहिं कलोल सो रंग रंगीली। औ चोवा चंदन सब गीली॥
दो०—चहुँदिस रही बासना[8], फुलवारी अस फूलि।
वै बसंत सों फूलीं, गा बसंत उन्ह भूलि॥ २०२॥

---

१ दई दई कै=मुशकिल से। २ बनापति=बनस्पति (वृच्छलतादि) ३ परास=पलास। ४ उपने=उत्पन्न हुए। ५ गोहन=साथ मिलकर। ६ तारा मण्डर=तारा मण्डल नामक एक कपड़ा जिसमें सोने के काम की बूटियां होती हैं। ७ चोला=कुरता। ८ बासना=सुगंध।

चौपाई

भई अहान[1] पदमावति चली। छतिस कुरी भईं गोहन[2] भली॥
भईं गौरी[3] सँग पहिर पटोरा[4]। बाम्हनि ठाउँ सहस अँग मोरा॥
अगरवारि गज-गवन करेई। बैसिनि पाउँ हंसगति देई॥
चंदेलिनि ठमकत पगु धारा। चलि चौहानि होय झनकारा॥
चली सोनारि सोहाग सोहाती। औ कलवारि पेम-मद माती॥
बानिनि चली सेंदुर दै माँगा। कैथिन चली समाइ न आँगा॥
पटइनि पहिरि सुरँग तन चोला। औ बरइनि[5] मुख रात तँबोला॥

दो०—चलीं पउनि[6] सब गोहन, फूल डालि[7] लै हाथ।
बिस्सुनाथ[8] कै पूजा, पदुमावति के साथ॥ २०३॥

चौपाई

ठाठेरिनि बहु ठाठर[9] कीन्हे। चली अहीरिनि काजर दीन्हे॥
गुजरिनि चली गोरस की माँती। बढ़इनि चली भाग[10] की ताँती॥
चली लोहारिनि पैने नैना। भाटिनि चली मधुर अति बैना॥
गंधिनि चली सुगंध लगाये। छीपिनि[11] चली सो छीट छुपाये॥
रँगरेजिनि बहु राती सारी। चलीं जुगुति सों नाउनि बारी॥
मालिनि चलीं हार लिय गाँथे। तेलिन चलीं फुलायल[12] माथे॥
कै सिंगार बहु बेसवा[13] चलीं। जहँ लग मूँदी बिकसी कलीं॥

---

१ भई अहान=यह बात प्रख्यात हुई। २ गोहन=साथ। ३ गौरी=गौड़ ब्राह्मणों की स्त्रियां। ४ पटोर=रेशमी कपड़ा। ५ तँबोलिन। ६ पउनि=पौनीं (नेग पानेवालीं), दासियाँ। ७ डाली=डलिया, टोकरी। ८ बिस्सुनाथ=(विश्वनाथ) महादेव जी। ९ ठाठर=ठाठ (बनाव सिंगार)। १० भाग की तांती=सौभाग्य की कतार (पंक्ति)। बहुतों को सौभाग्यवती बनाने वाली (विवाह का मण्डप स्तम्भ बढ़ई बनाता है। यह स्तंभ विवाह सामग्री का एक मुख्य अंग है। उसी स्तंभ के निकट बहुतों को सोहाग प्राप्त होता है। इसी से बढ़इनि को 'जायसी' ने "भाग की ताँती" विशेषण दिया है)। ११ छीपिनि=छीट छापने वाली जाति की स्त्री। १२ फुलायल=(फूल तेल) फुलेल। १३ बहु बेसवा=वेश्याओं की कई जातियां होती हैं—जैसे—गंधरबिन, किंनरी, बेड़िन, रामजनी, कंचनी, गणिका इत्यादि॥

दो०—नटिनि डोमिनी ढारिनी, सहनाइनि[1] भेरिकारि[2] ।
निरतत नाद विनोद सों, बिहँसत खेलत नारि ॥ २०४ ॥

चौपाई

कमल सहाय चली फुलवारी । फर फूलन की इच्छा-बारी[3] ॥
आप आप महँ करहिं जोहारू[4] । यह बसंत सब कहँ तेवहारू ॥
चहैं मनोरा झूमक[5] होई । फर औ फूल लेइ सब कोई ॥
फाग खेलि पुनि दाहब होरी । सैंतब[6] खेह उड़ाउब झोरी ॥
आजु छाँड़ि पुनि दिवस न दूजा । खेलि बसंत लेउ कै पूजा ॥
भा आयसु पदुमावति केरा । फेरि न आय करब हम फेरा ॥
तस हम कहँ होइहि रखवारी । पुनि हम कहाँ कहाँ यह बारी ॥
दो०—पुनि रे चलब घर आपन, पूजि बिसेसर देव ।
जेहिका होहि खेलना, आजु खेलि हँसि लेव ॥ २०५ ॥

चौपाई

काहु गही आँब कै डारा । काहु बिरह जाम्बु[7] अति छारा ॥
कोइ नारँग कोइ झार चिरौंजी । कोइ कटहर बड़हर कोइ न्यौजी[8] ॥
कोइ दाखौं कोइ दाख सु खीरी[9] । कोइ सो सदाफर तुरँज जँभीरी ॥
कोइ जयफर कोइ लौंग सुपारी । कोइ कमरख कोइ गुवा[10] छोहारी ॥
कोइ बिजउर कोइ नरियर चूरी । कोइ अमिली कोइ महुव खजूरी ॥
कोइ हरफारेउरी जो कसौंदा[11] । कोइ अनार कोइ बेर करौंदा ॥
काहु गही केरा कै घौरी[12] । काहु हाथ परी निंबकौरी[13] ॥
दोहा—काहु पाईं नियरे, काहु कहँ गये दूर ।
काहु खेल भया विष, काहु अमिरितमूर ॥ २०६ ॥

---

१ सहनाइनि=सहनाई बजाने वाली । २ भेरिकारि=भेरी बजाने वाली । ३ इच्छा-बारी=ऐसी वाटिका जिसमें मन चाहे फल फूल मिलें । ४ जोहारू=प्रणाम । ५ मनोरा झूमक=एक बसंती गान । ६ सैंतना=संचय करना । ७ जाम्बु=जामुन । ८ न्यौजी=चिलगोजा । ९ खीरी=खिरनी । १० गुत्रा=एक प्रकार की सुपारी ११ कसौंदा=आँवला । १२ घौरी=फलों का गुच्छा । १३ निबकौरी=निबौरी, नींब के फल ।

चौपाई

पुनि बीनहिं सब फूल सहेली। जो जेहि आस पास सब बेली॥
कोइ केवरा कोइ चंप नेवारी। कोइ केतकि मालति फुलवारी॥
कोइ सदबर्ग[1] कुंद कोइ करना। कोइ चँबेलि नागेसर बरना[2]॥
कोइ सु गुलाब सुदरसन कूजा[3]। कोई सोनजरद भल पूजा॥
कोइ सो मौलसिरी पुहुप बकउरी[4]। कोई रूप-मँजरि कोइ गौरी[5]॥
कोइ सिंगारहार तेहि पाहाँ। कोई सेवती कदम की छाँहाँ॥
कोइ चंदन फूलहिं जनु फूली। कोइ अजान बिरवा तर भूली॥

दोहा—फूल पात्र कोइ पाती, जेहि क हाथ जो आँट।
चीर हार उरझाना, जहाँ छुवै तहँ काँट॥ २०७॥

चौपाई

फर फूलन सब डालि[6] भराई। झुंड बाँधि कै पंचम गाई॥
बाजहिं ढोल दुंदुभी भेरीं। मिरदँग तूर झाँझ चहुफेरीं॥
सिंगि संख डफ संग म बाजे। बंसकार[7] महुवर सुर साजे॥
और कहा, जित बाजन भले। भांति भांति सब बाजत चले॥
रथहिं चढ़ीं सब रूप सोहाई। लै बसंत मढ़-मँडफ सिधाई॥
नवल बसंत नवल वै बारीं। सेंदुर बुक्का[8] करहिं धमारी[9]॥
खिनहि चलहिं खिन चाँचरि[10] होई। नाच कूद भूला सब कोई॥

दोहा—सेंदुर खेह[11] उठा तस, गगन भयो सब रात।
राति सकल महि धरती, रात बिरिछ बन पात॥ २०८॥

चौपाई

यहि बिधि खेलत सिंहल रानी। महादेव मढ़ जाय तुलानी[12]॥
सकल देवता देखै लागे। दृष्टि पाप सब उनके भागे॥

---

१ सदवर्ग=गेंदा। २ वरना=(वरुणः) बरुना वृक्ष का फूल। यह वृक्ष पलास की जाति का है। ३ कूजा=(कुब्जिका) एक प्रकार का गुलाब। ४ बकउरी=बकावली। ५ गौरी=सफेद मल्लिका। ६ डालि=डलियां (फूल रखने की टोकरियां)। ७ बंसकार=वंशी। ८ बुक्का=अबीर। ९ धमार=फाग का गान। १० चाँचरि=फाग के स्वांग। ११ खेह=धूल। १२ तुलानी=निकट पहुंची।

यहि कैलास[1] सुनी अपछरी। कहँ ते आय टूटि भुइ परीं॥
कोई कहै पदुमिनी आई। कोइ कहै ससि नखत तराई॥
कोइ कह फूल कोइ फुलवारी। भूले सबै देखि सब बारी॥
एक सुरूप औ सेंदुर[2] सारी। जानहु दिया सकल महि बारी॥
मुरछि परै जाँवत जो जोहै। मानहु मिरिग दवारिहिँ[3] मोहै॥
दोहा—कोई परा भँवर होइ, बास लीन्ह जनु चाँप[4]।
कोइ पतँग भा दीपक, है अधजर तन कांप॥ २०९॥

चौपाई

पदुमावति गइ देव दुवारू। भीतर मँडप कीन्ह पैसारू॥
देवहु संसौ[5] भा जिउ केरा। भागौं केहि बिधि मंडप घेरा॥
एक जोहार कीन्ह औ दूजा। तिसरे आय चढ़ाई पूजा॥
फर फूलन सब मँडप भरावा। चंदन अगर देव अन्हवावा॥
भरि सेंदुर आगे भइ खरी। परसि देव औ पायन परी॥
और सहेली सबै बियाहीं। मोकहँ देव कतहुँ बर नाहीं॥
हौं निरगुन जेइ कीन्ह न सेवा। गुन निरगुन दाता तुम देवा॥
दोहा—बर सँजोग मोहिँ मेरवहु[6], कलस जाति हौं मानि[7]।
जेहि दिन इच्छा पूजै, वेगि चढ़ाऊं आनि॥ २१०॥

चौपाई

ईछि ईछि[8] विनवा जस जानी। पुनि कर जोरि ठाढ़ भइ रानी॥
उतरु को देय देव मरि गयऊ। सब अकूत[9] मँडफ महँ भयऊ॥
काटि पवारा जैस परेवा। मरि गा ईस उतरु को देवा॥
भै बिन जिउ सब नाउत[10] ओझा[11]। विषभइँपूरि[12]कालभयेगोझा[13]॥

---

१ कैलास=स्वर्ग, इन्द्रपुरी। २ सेन्दुर सारी=लाल सारी पहने हुए। ३ दवारि=दावाग्नि में पड़कर। ४ चांप=चंपा। ५ संसौ=(संशय) संदेह, संकट, खटका। ६ मेरवहु=मिलाओ। ७ कलस मानना=कलस चढ़ाने की प्रतिज्ञा करना। ८ ईछि=इच्छा भर जैसा उचित समझा उस भांति विनती की। ९ अकूत=जो कूता न जा सके। १० नाउत=जादूगर, मंत्र जंत्र करने वाले। ११ ओझा=भूत झाड़नेवाले। १२ पूरि=पूड़ियां। १३ गोझा=कुसली, गुझिया।

जेहि देखा जनु बिसहर डसा। देखि चरित पदुमावति हँसा[1] ॥
भल हम आय मनावा देवा। गा जनु सोय को मानै सेवा ॥
को इच्छा पुरवै दुख खोवा। जहँ मन[2] आयसो तनि तनि सोवा॥

दोहा—जेहि धरि सखी उठावहिँ, सीस बिकल नहिँ डोल।
धर[3] कोउ जीव न जानै, मुख रे बकत कुबोल ॥२११॥

चौपाई

ततखन आई सखि बिहँसानी। कौतुक एक न देखेहु रानी ॥
पुरुब बार जोगी कोइ छाये[4]। नजनौं कौन देस ते आये ॥
जनु उन जोग तंत अब खेला। सिद्ध होन निसरे सब चेला ॥
उन महँ एक जो गुरू कहावा। जनु गुरु दै काहू बउरावा ॥
कुँवर बतीसौ लच्छन सो गाता। दसयें लखन कहै एक बाता ॥
जानहु आहि गोपिचँद जोगी। कै सो आहि भरथरी वियोगी ॥
वै पिँगला[5] गये कजरी आरन[6]। या सिंघला सेवै केहि कारन ॥

दो०—यहि मूरति यहि मुद्रा, हम न दीख अवधूत।
जानहु होहि न जोगी, कोइ राजा कर पूत ॥ २१२ ॥

चौपाई

सुनि सो बात रानी रथ चढ़ी। कहँ अस जोगि जो देखउँ मढ़ी ॥
लै सँग सखिन कीन्ह तहँ फेरा। जोगि आइ जनु अछरन[7] घेरा ॥
नैन कचोर[8] पेम-मद भरे। भइ सुदिष्टि जोगी सउँ[9] ढरे ॥
जोगी दिष्टि दिष्टि सउँ लीन्हा। नैन रूप नैनन जिउ दीन्हा ॥
ज़ो मद चहत परा तेहि पाले। सुधि न रही ओहि एक पियाले ॥

---

१ ऐसा प्रयोग गो० तुलसीदासजी ने भी किया है। यथाः—
'मर्म वचन सीता तब बोला' (आ०)

२ मन=जहां जिसका मन आया तहँ वह ताने सो रहा है। ३ धर=धड़।
४ छाये=ठहरे हैं। ५ पिंगला=गोपीचन्द की रानी का नाम। ६ आरन=(अरण्य) वन। ७ अछरन=अप्सरायें। ८ कचोर=पियाला। ९ सउँ=सामने।

परा माति गोरखकर चेला। जिउ तन छाँड़ि सरग कहँ खेला[१] ॥
किँगिरी गहे जो हुत बैरागी। मरतिहु बार ओही धुनि लागी ॥
दो०—जेहि धंधा जाकर मन, सपनेहु सूझ सो धंध।
तेहि कारन तप साधहिं, करहिं पेम मन बंध ॥ २१३ ॥

चौपाई

पदुमावत जस सुना बखानू। सहसकरा देखेसि तस भानू ॥
मेलेसि चंदन मकु खिन जागा। अधिकौ सूत सीर तन लागा ॥
तब चंदन आखर हिय लिखे। भीख लेबु तैं जोगि न सिखे ॥
बार आइ तब गा तुइँ सोई। कैसे भुगुति परापति होई ॥
अब जो सूर आहि ससि राता। आय चढ़ै सो गगन पुनि साता ॥
लिखि कै बात सखी सों कही। यहै ठाउँ हौं बारत[२] अही ॥
प्रगट[३] होउँ तौ होय अस भिगू[४]। जगत दिया कर होय पतिंगू ॥
दो०—जा सउँ हौं चख हेरौं, सोइ ठाउँ जिउ देइ।
ग्रहि दुख कतहुँ न निसरौं, को हत्या अस लेइ ॥ २१४ ॥

चौपाई

कीन्ह पयान सबन्ह रथ हाँका। परवत छाँड़ि सिंघल गढ़ ताका ॥
बलि भये सबै देवता बली। हत्यारिंन हत्या कै चली ॥
को अस हितू मुए गह बाहीं। जो पै जीउ अपने तन नाहीं ॥
औ लहि जिउ आपन सब कोई। बिन जिउ सबै निरापन[५] होई ॥
भाइ बंधु औ लोग पियारा। बिन जिउ घरी न राखै पारा ॥
बिन जिउ पिंड छार कर कूरा। छार मिलावै सोइ हितु[६] पूरा ॥
तेहि जिउ बिना अमर भा राजा। को अब उठै गरब सों गाजा ॥
दो०—परी कया भुइँ लोटै, कहँ रे जीउ बल[७] भीउ।
को उठाइ बइसारै, बाजि[८] पिरीतम जीउ ॥ २१५ ॥

---

१ खेला=चला गया। २ यहै ठाउँ......अही=मैं इसी मौके को बचाती थी। ३ प्रगट होउँ=जब मैं बाहर निकलती हूं। ४ भिगू=कोई अशुभ घटना। ५ निरापन=(निःआपन) पराया। ६ हितु=हितुवा। ७ बल भीउ=भीम के समान बली। ८ बाजि=बिना, बग़ैर।

चौपाई

सो पदुमावति मँदिर पईठी। हँसत सिंहासन जाइ बईठी॥
निस सूती सुनि कथा बिहारी[1]। भा बिहान औ सखिन हँकारी॥
देव पूजि हौं आइउँ काली। सपन एक निसि देखेउँ आली॥
जनु ससि उदय पुरुब दिस लीन्हा। औ रवि उदौ पछिम दिस कीन्हा॥
पुनि चलि सूर चाँद पहँ आवा। चाँद सुरिज दुहुँ भयो मेरावा॥
दिन औ राति जानु भए एका। राम आय रावन गढ़ छेंका॥
तस कछु[2] कहा न जाय निखेधा। अरजुन बान राहु गा बेधा॥

दो०—जनहु लंक सब लूसी[3], हनू[4] बिधंसी बारि।
जागि उठिउँ अस देखत, कहु सखि सपन बिचारि॥२१६॥

चौपाई

सखी सो बोली सपन बिचारू। काल्हि जो गई देव के बारू[5]॥
पूजि मनायहु बहुत बिनाती[6]। परसन आइ भयो तुम्ह राती॥
सूरज पुरुष चांद तुम रानी। अस बर देव मिलावै आनी॥
पछूँ[7] खंड कर राजा कोई। सो आवै बर तुम कहँ होई॥
कछु पुनि जूझि[8] लागि तुम रामा। रावन[9] सौं होइहि संग्रामा॥
चंद सुरिज सौं होइ बियाहू। बारि बिधंसब बेधब राहू॥
जस ऊषा कहँ अनिरुध मिला। मेटि न जाय लिखा पुरबिला[10]॥

दो०—सुख सुहाग है तुम कहँ, पान फूल रस भोग।
आजु काल्हि भा चाहै, अस सपने क सँजोग॥ २१७॥

---

१ बिहारी=विहार की। २ तसकछु······निखेधा=पुनः वह बात हुई जो कही नहीं जा सकती। ३ लूसी=लूटी। ४ हनू विधंसी बारि=हनुमान ने वाटिका विध्वंस की। ५ बारू=द्वार। ६ बिनाती=विनती। ७ पछूं खंड=पश्चिम देश का। ८ जूझि=युद्ध। ९ रावन=लंका का राजा (यहाँ सिंहल दीपका वर्तमान राजा गंधर्वसेन, पदमावती का पिता)। १० पुरबिला=पूर्व जन्म के कर्मों का फल।

२२—बाईसवाँ खंड

राजा रतनसेन का जलने को तैयार होना

चौपाई

कै बसंत पदुमावति गई। राजहिं तब बसंत सुधि[1] भई॥
जो जागा न बसंत न बारी। नहिं सो खेल न खेलन हारी॥
ना वहँ[2] कै वह रूप सोहाई। गइ हेराय पुनि दिष्टि न आई॥
फूल झरे सूखी फुलवारी। दिष्टि परीं उकठी[3] सब झारी[4]॥
केइँ यह बसत बसंत उजारा। गा सो चाँद अथवा लै तारा॥
अब तेहि बिन भा जग अँधकूपा। वह सुख छाँह, जरौं हौं धूपा॥
बिरह दवाँ[5] को जरत सिरावा। को पीतम सौं करै मेरावा[6]॥

दोहा—हिये दीख चंदन घुरा[7] मिलि कै लिखा बिछोउ[8]।
हाथ मींजि सिर धुनि रोवै, जो निचिंत अस सोउ॥२१८॥

चौपाई

जस बिछोह जल मीन दुहेला[9]। जलहु ते काढ़ि अगिनि महँ मेला॥
चंदन आँक दाग होइ परे। बुझहिं न ते आखर परजरे॥
जेहि[10] सर अगिन होय होइँ लागै। सब तन दागि सिंह बन दागै॥
जरैं मिरिग बनखँड तेहि ज्वाला। औ तेउ जरैं बैठ तेहि छाला॥

---

१ वसंत की सुध होना=ठीक ठीक ज्ञान होना, होश हवास ठीक होना। २ वहँ कै=वहां की, उस स्थान की। ३ उकठी=सूखी। ४ झारी=झाड़ी। ५ दवां=दावाग्नि। ६ मेरावा=मिलान, मुलाकात। ७ घुरा=लगा हुआ। ८ बिछोउ=बिछोह। ९ दुहेला=दुखित। १० जेहि······दागै=जिस बांस में अग्नि होती है, पहले उसी बांस में लगती है, और सारे शरीर को जलाकर फिर वनके सिंहों को जलाती है। (अथवा) जिसके सिर में विरहकी अग्नि होती है, वह उसे अवश्य जलाती है और उसके सारे शरीर में जंगली शेर के से दाग पड़ जाते हैं।

कत तैं[1] आँक लिखे जो सोवा। मकु आँकन करतार बिछोवा॥
जस दुखंत[2] कहँ साकुंतला[3]। माधोनलहिं कामकंदला[4]॥
राजा नल कहँ जैस दमावति[5]। नैना मूँदि छिपी पदुमावति॥

दोहा—आय बसंत जो छिपि रहा, होइ फूलन के भेस।
केहि बिधि पाऊं भँवर होइ, केहि गुरु के उपदेस॥२१९॥

चौपाई

रोवै रतन माल जनु चूरा[6]। जहँ होइ ठाढ़ होय तहँ कूरा[7]॥
कहाँ बसंत सो कोकिल बैना। कहाँ कँवल अलि बेधी-नैना[8]॥
कहाँ सो मूरति परी जो डीठी। काढ़ि लिहिसि जिउ हिये पईठी॥
कहाँ सो दरस परस जेहिं लाहा। जो सुबसंत, करीलहिं काहा॥
पात बिछोही रूख जो फूला। सो महुवा अस रोवै भूला॥
टपकैं महुव आँसु तस परहीं। होइ महुवा बसंत जस झरहीं॥
मोर बसंत सो पदुमिनी बारी। जेहि बिन भयो बसंत उजारी॥

दोहा—पावा नवल बसंत पुनि, बहु आरति बहु चोंप[9]।
ऐस न जाना अंत पुनि, पात झरे होइ कोंप[10]॥२२०॥

चौपाई

अहो महा बिसवासी[11] देवा। कत मैं आइ कीन्ह तोरि सेवा॥
अपनी नाव चढ़ै जो देई। सो तौ पार उतारै खेई॥
सुफल लागि पगु टेक्यों तोरा। सुवा का सेमर तू भा मोरा॥

---

१ कत तैं=हे ब्रह्मा! तू ने मेरी भाग्य में ऐसे अंक क्यों लिखे कि जिनके कारण मैं पदमावती के आने पर सो गया। शायद ब्रह्मा के अक्षरों ही ने मेरी और पदमावती की भेंट नहीं होने दी। २ दुखंत=दुःष्यन्त। ३ साकुन्तला=शकुन्तला। ४ कामकन्दला=माधवानल और कामकंदला की प्रेम कथा प्रसिद्ध है। ५ दमावति=दमयन्ती। ६ माल जनु चूरा=जैसे मोतियोंका माला चूर चूर हो गया हो (मोती से आंसू गिरते थे) ७ कूरा=(कूट) ढेर। ८ अलि बेधी-नैना=जिसने भँवर के नेत्रों का बेध डाला। ९ चोंप=हुलास। १० कोंप=कोंपल, नव पल्लव। ११ बिसवासी=(विश्व—आशी=संसार को खाने वाला)।

पाहन चढ़ि जो चहै भा पारा। सो ऐसे बूड़े मँझ-धारा॥
पाहन सेवा कहां पसीजा। जनम न पलुहै[1] जो नित भीजा॥
बाउर सोइ जो पाहन पूजा। सकति क भार लेइ सिर दूजा[2]॥
काहे न पूजिय सोइ निरासा[3]। मुए जियत मन जाकर आसा॥

दोहा—सिंह तरेंड़ा[4] जिन गहा, पार भये तेहिं साथ।
ते पै बूड़े वारहिं[5], भेड़ पूछ जिन्ह हाथ॥२२१॥

चौपाई

देव कहा सुनु बौरे राजा। देवहिं अगमन[6] मारा गाजा॥
जो पहिले अपनेइ सिर परई। सो का काहु क धरहरि[7] करई॥
पदुमावति राजा कै बारी। आइ सखिन सँग मँडप उघारी॥
जैस चाँद गोहन सब तारा। परेउ भुलाय देखि उजियारा॥
चमकै दसन बीजु की नाईं। नैन चक्र जमकात[8] भँवाईं[9]॥
हौं तेहिं दीप पतँग होइ परा। जिउ जम काढ़ि सरग लै धरा॥
फेरि न जानौं दहुँ का भई। दहुँ कैलास कि कहुँ अपसई[10]॥

दोहा—अब हौं मरौं निसाँसी, हिये न आवै साँस।
रोगिहा कै को चालै, वैदहि जहाँ उपास॥ २२२॥

चौपाई

अबैं[11] दोष देउँ का काहू। संगी कया मया नहिं ताहू॥
हितू पियारा मीत बिछोई। साथ न लाग आपु गा सोई॥
का मैं कीन्ह जो काया पोखी। दूषन मोहिं आपु निरदोषी॥
फागु बसंत खेलि गइ गोरी। मोहि तन लाय आगि ज्यों होरी॥

---

१ पलुहै=कृपालु हो। द्रवै (पल्ल-वित हो)। २ सकति क·········दूजा=शक्तिवान का भार कोई दूसरा अपने सिर कैसे ले सकता है। ३ निरासा=जो किसी से कुछ आशा न रखता हो। ४ तरेंड़ा=नीचे का भाग (यहां पूँछ)। ५ वारहिं=इसीपार। ६ अगमन=पहले ही। ७ धरहरि=रक्षा, सहायता। ८ जमकात=यमकतरी एक प्रकार की छोटी तलवार। ९ भँवाईं=भौहैं। १० अपसई=(अपसरण) चली गई। ११ अबैं=व्यर्थ, बेफाइदा।

अब अस काहि छार सिर मेलौं। छारै होउँ फागु तस खेलौं ॥
कत तप कीन्ह छाँड़ि कै राजू। आयुर[1] गई न भा सिधि काजू ॥
पायौं नहिँ ह्वै जोगी जती। अब सर[2] चढ़ौं जरौं जस सती ॥
दोहा—आय पिरीतम फिरि गयो, मिला न आय बसंत।
अब तन होरी घालि[3] कै, जारि करौं भसमंत[4] ॥२२३॥

चौपाई

कुकुनू[5] पंखि जैस सर साजा। तस सर बैठि जरा चह राजा ॥
सकल देवता आय तुलाने। दहुँ कस होय देव-अस्थाने ॥
बिरह अगिनि बजरागि असूझा। जरै सूर न बुझाये बूझा ॥
तेहि के जरत जो उठै बजागी[6]। तीनौ लोक जरहिँ तेहिँ लागी ॥
अब की घरी चिनँग पै छूटै। जरैं पहार पहन[7] सब फूटैं ॥
देउता सबै भसम होइ जाहीं। छार समेटे पाउब नाहीं ॥
धरती सरग होय सब ताता। है कोई यहि राख बिधाता ॥
दोहा—मुहम्मद चिनँग परेम कै, सुनि महि गगन डेराइ।
धनि बिरहिनि औ धनि हिया, जहँ यह आगि समाइ ॥२२४॥

चौपाई

हनुमत बीर लंक जेइ जारी। परबत उहै अहा रखवारी ॥
बैठ तहाँ भे लंका ताका। छठयेँ मास देइ उठि हांका ॥
तेहि की आगि उहउ पुनि जरा। लंका छाँड़ि पलंका[8] परा ॥
जाय तहाँ यह कहा सँदेसू। पारवती औ जहाँ महेसू ॥
जोगी आहि बियोगी कोई। तुम्हरे मँडफ आगि तेहिँ बोई ॥
जरे लँगूर सो राते ऊहां। निकसि जो भाग भये करमूहां ॥
तेहि बजरागि जरै हौं लागा। बजर अंग जरि उठा तो भागा ॥

---

१ आयुर=उमर, जिंदगी। २ सर=चिता। ३ घालिकै=डालकर। ४ भसमन्त=भस्म, राख। ५ कुकुनू=(अ० कुकुनुस) =एक पक्षी जिसकी चोंच में अनेक छेद होते हैं। यह पक्षी जब मस्त होकर गाता है, तब उसके घोंसले में आग लग जाती है और पक्षी जलकर राख हो जाता है। ६ बजागी=वज्राग्नि। ७ पहन=पाहन, पत्थर। ८ पलंका=पलंग, आराम का स्थान (यहां कैलाश पर्वत)।

दोहा—रावन लंका हौं दही, वैं मोहिँ दाधा आय।
कनक[1] होत है रावट[2], को गहि राखै पाय ॥२२५॥

२३—तेईसवां खण्ड

राजा रत्नसेन महादेव संवाद

चौपाई

ततखन पहुँचा आय महेसू। बाहन बैल कुष्टि कर भेसू॥
कांथर कया हड़ावरि[3] बांधे। मुंडमाल औ हत्या कांधे॥
सेसनाग सोहै कँठमाला। तन भभूति हस्ती कर छाला॥
पहुँची रुद्र[4] कँवल के गटा[5]। ससि माथे औ सुरसरि जटा॥
चवँर घंट औ डमरू हाथा। गौरापारवती धन साथा॥
औ हनुमंत वीर सँग आवा। धरे भेस जनु बंदर छावा[6]॥
अउतहिँ कहेन न लावहु आगी। ताकर सपथ जरै जेहि लागी॥
दो०—की तप करै न पारेहु, की रे नसायहु योग।
जियत जीव कस काढ़ै, कहु सो मोहिँ वियोग[7] ॥२२६॥

चौपाई

कहेसि को मोहिँ बातन बिलमावा। हत्या केर न तोहि डर आवा॥
जरै देहु दुख जरौं अपारा। निस्तरि जाउँ जरे इकवारा॥
जस भरथरी लागि पिंगला। मो कहँ पदुमावति सिंघला॥
मैं पुनि तजा राज औ भोगू। सुनि सो नाउँ लीन्हेउँ तप जोगू॥
यहि मढ़ सेयों आय निरासा। गई सो पूजि, मन पूजि न आसा॥

---

१ कनक=सोने के पर्वत। २ रावट=रावटी, (एक प्रकार का काला पत्थर) झांवा। ३ हड़ावरि=हड्डियों का समूह। ४ रुद्र=रुद्राक्ष। ५ कँवल के गटा=कमल गट्टा। ६ छावा=बच्चा। ७ वियोग=दुःख।

तैं यह जिउ दाधे पर दाधा। आधा निकसि रहा घट आधा॥
जो अधजर सो विलँब न लावा। करत विलंब बहुत दुख पावा॥
दो०—एतना बोल कहत मुख, उठी बिरह कै आगि।
जो महेस न बुझावत, सकल जगत हुति लागि॥२२७॥

चौपाई

पारवती मन उपना चाऊ[1]। देखउँ कुँवर केर सतभाऊ॥
दहुँ यह बीच कि पेमहिं पूजा। तन मन एक कि मारग दूजा॥
भइ सुरूप जानहु अपछरा। बिहँसि कुँवर कर आँचर धरा॥
सुनहु कुँवर मो सौं एक बाता। जस रँग मोहि न औरहि राता॥
औ बिधि रूप दीन्ह है तो कहँ। उठा सो सबद जाय सिउलोकहँ॥
तब हौं तो कहँ इँदर पठाई। गइ पदुमिनि तुइ आछरि पाई॥
अब तजु जरन मरन तप जोगू। मों सो मान जनम भर भोगू॥
दो०—हौं आछरि कैलास कै, जेहि सरि पूज न कोइ।
मोहि तजि सँवरि जो ओहि मरसि, कौन लाभ तोहि होइ॥२२८॥

चौपाई

भलेहि रंग तोहि आछरि राता। मोहि दुसरे सौं भाव न बाता॥
मोहि ओहि सँवरि मुयउ अस लाहा। नैन जो देखसि पूँछसि काहा॥
अबहिं ताहि जिउ देइ न पावा। तोहि असि आछरि ठाढ़ मनावा॥
जो जिउ देहौं ओहि की आसा। न जनौं काह होय कैलासा॥
हौं कैलास काह लै करौं। सो कैलास लागि जेहि मरौं॥
ओहि के बार जीउ तन बारौं। सिर उतारि न्यौछावरि डारौं॥
ताकर चाह[2] कहै जो आई। दोउ जगत तेहि देउँ बड़ाई॥
दो०—ओहि न मोरि कछु आसा, हौं ओहि आस करेउँ।
तेहि निरास पीतम कहँ, जिउ न देउँ का देउँ॥२२९॥

चौपाई

गौरी हँसि महेस सौं कहा। निसचै यह बिरहानल दहा॥

---

१ चाऊ=प्रबल इच्छा। २ चाह=खबर।

निसचै यह ओहि कारन तपा। परिमल[1] पेम न आछै[2] छपा॥
निसचै पेम पीर यह जागा। कसे कसौटी कंचन लागा॥
बदन पियर जल डभके[3] नैना। परगट दोउ पेम के धैना॥
यहि ओहि जनम लागि ओहि सीझा। चहै न औरहिं ओहई रीझा॥
महादेव देउतन के पिता। तुम्हरे सरन राम रन जिता॥
एहु कहँ तस मया करेहू। पुरवहु आस कि हत्या लेहू॥

दो०—हत्या दुइ लिए काँधे, अजहुँ न गा अपराध।
तिसरि लेहु कै माथे, जोरे लेइँ कै साध॥ २३०॥

चौपाई

सुनि कै महादेव कै भखा[4]। सिद्धपुरुष राजैं मन लखा॥
सिद्धहिं अङ्ग न वैठै माखी। सिद्धहि पलक न लागै आँखी॥
सिद्धहिं संग होय नहिं छाया। सिद्धहि होय न भूख न माया॥
जो जग सिद्ध गोसाईं[5] कीन्हा। परगट गुप्त रहै को चीन्हा॥
बैल चढ़ा कुष्टी कर भेसू। कह राजा सत आय महेसू॥
चीन्है सोइ रहै तेहि खोजा। जस बिकरम औ राजा भोजा॥
क जिउ तंत[6] संत सउँ हेरा। गयो हेराय जो ओहि भा मेरा॥

दो०—बिन गुरु पंथ न पावइ, भूलै सोइ जो मेंट।
जोगी सिद्ध होय तब, जब गोरख सौं भेंट॥ २३१॥

चौपाई

ततखन रतनसेन गहबरा[7]। छांड़ि डफार[8] पाँय लै परा॥
माता पिता जनमि कत पाला। जो अस पेम फाँद गिउँ घाला॥
धरती सरग मिले हुत दोऊ। कत निरार करि दीन्ह बिछोऊ॥
पदिक पदारथ करहु ते खोवा। टूटहिं रतन रतन तस रोवा॥
गगन मेघ जस बरसहिं भले। धरती पूरि सलिल होइ चले॥

---

१ परिमल=सुगंध। २ आछै=है। ३ जल डभके नैना=आंसू से भरे हुए नेत्र। ४ भखा=भापा। ५ गोसाईं=परमेश्वर। ६ तंत=ठीक, बराबर। ७ गहबरा=गह्वर हृदय होकर। ८ डफार छाँड़ना=फूट फूट कर रोना।

सायर[1] उमड़ि सिखर गे पाटे[2]। चढ़े पानि पाहन हिय फाटे ॥
प्रान बूंद होइ होइ सब गिरै। पेम फांद कोऊ जनि परै ॥

दो०—तस रोवै जस जिउ जरै, गिरै रकत औ मांसु।
रोंव रोंव सब रोवहिं, सोत सोत[3], बहि आँसु ॥ २३२ ॥

चौपाई

रोवत बूड़ि उठा संसारू। महादेव तब भयो मयारू[4] ॥
कहेसि न रोउ वहुत तैं रोवा। अब ईसुर सब दारिद खोवा ॥
जो दुख सहै होय दुख ओका[5]। दुख बिन सुख न जाय सिउलोका ॥
अब तू सिद्ध भया सिधि पाई। दरपन कया छूटि गइ काई ॥
कहौं बात अबहूं उपदेसी। लागु पंथ भूले परदेसी ॥
जौ लहि चोर सेंधि नहिं देई। राजा केर न मूसै पेई[6] ॥
चढ़ै तो जाइ पार ओहि खूंदी[7]। परै तो सेंधि सीस सौं मूंदी ॥

दो०—कहौं सो तोहि सिंहल गढ़, है खँड सात चढ़ाव।
फिरा न कोई ज़ियत जी, सरग पंथ दै पाव ॥२३३॥

चौपाई

गढ़ तस बांक जैस तोरि काया। परखि देखु तैं ओहि कै छाया ॥
पाइय नाहि जूझि हठ कीन्हें। जेइँ पावा तेइँ आपुहि चीन्हें ॥
नौ पँवरीं तेहिं-गढ़ मंझारा। औ तहँ फिरैं पाँच कोतवारा ॥
दसौं दुवार गुपुत एक नाकी[8]। अगम चढ़ाव बाट सुठि[9] बांकी ॥
भेदी[10] कोउ जाइ ओहि घाटी। जो लै भेद चढ़ै होइ चाँटी ॥
गढ़तर कुंड सुरँग[11] तेहि माँहा। ते वै पंथ कहौं तोहि पाहाँ ॥
चोर पैठि जस सेंधि सँवारी। जुवा पैंत[12] जस लाइ जुवारी ॥

---

१ सायर=(सागर) तालाब। २ पाटे=धोबियों के पाट। ३ सोत सोत=रोमकूप। ४ मयार=कृपालु। ५ सुखओक=सुख का घर। ६ पेई=पूंजी, धन। ७ खूंदना=कूदना। ८ नाकी=तंग दरवाज़ा। ९ सुठि बांकी=बहुत टेढ़ी। १० भेदी=भेद जानने वाला। ११ सुरंग=गुप्त रास्ता। १२ पैंत=दांव, बाज़ी।

दो०—जस मरजिया[1] समुँद धसै, हाथ आव तब सीप।
ढूँढ़ै सरगदुवारि[2] जो, चढ़ै सो सिंघल दीप ॥२३४॥

चौपाई

दसौं दुवार तालिका[3] लेखा। उलटि दिष्टि जो लाव सो देखा ॥
जाय सो जाय स्वाँस मनबंदी[4]। जस धँसि लीन्ह कान्ह कालिंदी[5] ॥
गा पतार काली फन नाथा। कँवल पुहुप तब आयो हाथा ॥
परगट लोकचार[6] कहु बाता। गुपुत लाउ मन जासों राता ॥
हौं हौं कहत सबै मति खोई। जो तू नाहिं, आहि[7] सब सोई ॥
जियतहि जो रे मरै एक बारा। पुनि को मीचु मरै को मारा ॥
आपुहिं गुरू सो आपुहिं चेला। आपुहिं सब औ आपु अकेला ॥

दो०—आपुहिं मीचु जियन पुनि, तन मन आपुहिं सोय।
आपुहिं करै जो चाहै, कहाँ को दूसर कोय ॥२३५॥

२४—चौबीसवां खंड

रतनसेन ने सिंघलगढ़ छेंका

चौपाई

सिद्धि-गोटिका[8] राजै पावा। औ श्री सिद्ध गनेस मनावा ॥
जब संकर सिधि दीन्हि गोटेका[9]। परा हौर[10] जोगिन गढ़ छेंका ॥
सबै पदुमिनी देखैं चढ़ीं। सिंघल घेरि[11] गईं उठि मढ़ीं ॥

---

१ मरजिया=गोताखोर। २ सरगदुवारि=स्वर्गद्वारी, ऊपर चढ़ने का तंग रास्ता। ३ तालिका=कुंजी। ४ स्वांस मनबंदी=स्वास और मन को बांधने वाला। ५ कालिंदी=जमुना। ६ लोकचार=लोकाचार। ७ आहि=जो तू अपने को नास्ति समझै (अहंकार छोड़ दे) तो तू सब कुछ हो जाय। ८ सिद्धि-गोटिका=कार्य सिद्धि की युक्ति। ९ सिधि गोटेका=सिद्धि गोटिका। १० परा हौर=शोर मचा। ११ सिंघल घेरि गईं उठि मढ़ीं=सिंघल गढ़ के चारो ओर मढ़ी ही मढ़ी बन गईं (जोगियों के रहने के लिये)।

जस घर-फिरा चोर मत कीन्हा। तेहि विधि सेंधि चाह गढ़ दीन्हा ॥
गुपुत चोर जो रहै सो साँचा। परगट होइ जीउ नहिं बाँचा ॥
पँवरि पँवरि गढ़ लागि किंवारा। औ राजा सौं भई पुकारा ॥
जोगी आइ छेंकि गढ़ मेले। न जनौं कौन कहाँ कहँ खेले ॥

दो०—भई रजायसु देखहु, को भिखारि अस ढीठ।
बेगि बरजि तेहि आवहु, जन दुइ जाइ बसीठ[१] ॥२३६॥

चौपाई

उतरि बसिठ दुइ आइ जोहारे। की तुम जोगी की बनजारे।
भई रजायसु आगे खेलहु। गढ़ तर छाँड़ि दूर है मेलहु ॥
अस लागेहु केहि के सिख दीन्हे। आयहु मरैं हाथ जिउ लीन्हे ॥
इहाँ इन्द्र अस राजा तपा। जबहि रिसाइ सूर डर छपा ॥
हौ बनजार तो बनिज[२] बिसाहौ। भरि बैपार[२] लेहु जो चाहौ ॥
जोगी हौ त जुगुति सों माँगौ। भुगुति[३] लेहु लै मारग लागौ ॥
इहाँ देवता अस गये हारी। तुम पतिंग को आहु भिखारी ॥

दो०—तुम जोगी बैरागी, कहत न मानौ कोहु।
लेहु माँगि कुछु भिच्छा, खेलि अनत[४] कहँ होहु ॥२३७॥

चौपाई

आन भीख हौं आयौं लेईं। कस न लेहुं जो राजा देईं ॥
पदुमावत राजा कै बारी। हौं जोगी तेहि लागि भिखारी ॥
खप्पर लिहे बार[५] भा माँगौं। भुगुति देइ लै मारग लागौं ॥
सोई भुगुति परापति पूजा। कहाँ जाउँ अस बार न दूजा ॥
अब धर इहाँ जीउ तेहि ठाऊं। भसम होउँ पै तजौं न नाऊँ ॥
जस बिन प्रान पिंड है छूँछा। धरम[६] लागि कहिये जो पूँछा ॥
तुम बसीठ राजा को ओरा। साखि[७] होहु यहि भीख निहोरा ॥

---

१ बसीठ=दूत। २ बनिज, बैपार=सौदा, सुलुफ। ३ भुगुति=भोजन। ४ खेलि अनत कहँ होहु=अन्यत्र को चल दो। ५ बार भा=दरवाज़े होकर। ६ धरम लागि=धर्म लगा (धर्म की बात) ७ साखि......निहोरा=इस भीख मांगने के साक्षी होना।

दो०—जोगी बार आउ सो, जेहि भिच्छा कै आस।
जो निरास डिढ़[1] आसन, कित गवनैं केहि पास ॥२३८॥

चौपाई

सुनि बसीठ मन अपने रीसा[2]। जौ पीसत घुन जायहि पीसा ॥
जोगी ऐस कहै नहिँ कोई। सो कहु बात जोगि तोहिं होई ॥
वह बड़ राज इँदर कर पाटा। धरती परे सरग को चाटा ॥
जो यह बात जाय तहँ चली। छूटहिं अबहिँ हस्ति सिंघली ॥
औ छूटहि सो बज्र के गोटा[3]। बिसरै भुगुति होय सब खोटा ॥
जहँ लगि दिष्टि न जाय पसारी। तहाँ पसारसि हाथ भिखारी ॥
आगे देखि पाउँ धरु नाथा[4]। तहाँ न हेरु टूट जहँ माथा ॥

दो०—वह रानी जेहि जोह मुँह, तेहि क राज औ पाट।
सुंदरि जाय राज घर, जोगिहिँ बाँदर काट ॥२३९॥

चौपाई

जो जोगी सत बाँदर काटा। एकै जोग न दूसर बाटा ॥
और साधना आवै साधे। जोग साधना आपुहि दाधे ॥
सर[5] पहुंचाव जोग कर साथू। दिष्टि चांहि अगमन होइ हाथू ॥
तुम्हरे जोर सिंघल के हाथी। हमरे हस्ति गुरू बड़ साथी ॥
हस्ति नास्ति[6] तेहि करत न बारा। परबत करै पाउँ कै छारा ॥
जो रे गिरि-गढ़ जाँवत भये। जो गढ़-गरब करहिं ते नये ॥
अंत जो चलना कोउ न चीन्हा। जो आवा सो आपन कीन्हा ॥

दो०—जोगिहि कोह न चाही, तव न मोहिँ रिस लागि।
जोगि तंत ज्यौं पानी[7], काह करै तेहि आगि ॥२४०॥

---

१ डिढ़ आसन=दृढ़ आसन। २ रीसना=रुष्ट होना। ३ गोटा=गोला। ४ नाथ=जोगी। ५ सर पहुँचाव……हाथू=जो कोई योग का साथ अंत तक देता है (अंत तक योग को निबाहता है) उसका हाथ वहां तक पहुँचता है, जहां (दूसरों की) दृष्टि भी नहीं पहुँचती। ६ नास्ति=हाथियों को नाश करने में उसे देर न लगैगी। ७ जोगि तंत ज्यौं पानी=जोगी ठीक पानी की तरह है।

चौपाई

बसिठहिं जाय कही सब बाता। राजा सुनत कोह भा राता ॥
ठाँवहिं ठाँव कुँवर सब माखे[1]। केइँ अब लौं ये जोगी राखे ॥
अबहूं वेगिहि करौ सँजोऊ[2]। तस मारहु हत्या किन होऊ ॥
मंत्रिन कहा रहहु मन बूझे। पति[3] न होय जोगिन सों जूझे ॥
वै मारे। तौ काह भिखारी। लाज होय जो आवै हारी ॥
ना भल मुए न मारे मोखू। दुहूं बात तुम लागै दोखू ॥
रहै देहु[4] जो गढ़ तर मेले। जोगी कत[5] आये पुनि खेले[6] ॥

दो०—रहै देहु जो गढ़ तरे, जिन चालहु यह बात।
नितहिं जो पाहन भख करहिं, अस केहि के मुख दाँत॥२४१॥

चौपाई

गये बसीठ पुनि बहुरि न आये। राजैं कहा बहुत दिन लाये ॥
न जनौ सरग बात दहुँ काहा। काहु न आइ कही फिरि चाहा[7] ॥
पंख न काया पवन[8] न पाया[9]। केहि विधि मिलौं होउँ केहि छाया[10]
सँवरि रकत नैनन भरि चुवा। रोइ हँकारेसि माँझी[11] सुवा ॥
परे जो आंसु रकत के टूटी। रँगि चलीं जनु बीर बहूटी ॥
ओही रकत लिखि दीन्ही पाती। सुवा जो लीन्ह चोंच भइ राती ॥
बाँधी कंठ परा जरि काँठा[12]। विरह क जरा जाय कत नाठा[13]॥

दो०—मसि नैना लिखनी बरुनि, रोइ रोइ लिखा अकत्थ[14]।
आखर दहैं न कोइ छुवै, दीन्ह परेवा हत्थ ॥२४२॥

---

१ माखे=क्रुद्ध हुए। २ करौ सँजोउ=लड़ाई का सामान जोड़ो। ३ पति=इज्जत की बात। ४ रहै देउ=रहने दो। ५ कत=कितने। ६ खेले=चले गये। ७ चाह=खबर, समाचार। ८ पवन=ज़ोर, बल। ९ पाया=पांव। १० होउँ केहि छाया=किसकी शरण जाऊं। ११ मांझी=बीच में पड़ने वाला, बिचवानी। १२ कांठा=कंठा। १३ जाय कत नाठा=कैसे नष्ट किया जा सकता है, कैसे मिटाया जा सकता है। १४ अकरथ=न कहने योग्य बातें।

चौपाई

औ मुख वचन सो कहेसि परेवा। पहिले मोरि बहुत कहि सेवा[१] ॥
पुनि रे सँवारि कहेसु अस दूजी। जिउबल दीन्ह देवतन पूँजी ॥
सो अबही तइसै बल लागा। बल जिए रहा न तन सो जागा ॥
भलेहि ईस हौं तुम्ह बल दीन्हा। जहँ तुम तहाँ भाव[२] बल कीन्हा ॥
जो तुम मया कीन्ह पगु धारा। दिष्टि दिखाय बान बिष मारा ॥
जो अस जाकर आसा-मुखी[३]। दुख महँ पेस न मारै दुखी ॥
नैन भिखारि न मानै सीखा। अगमन[४] दौरि लीन्ह पै भीखा ॥

दो०—नैनन नैन जो बेधि गे, नहिं निकसैं वै बान।
हिये जो आखर तुम लिखे, ते सुठि औंटैं प्रान[५] ॥२४३॥

चौपाई

ते बिष बान लिखौं कहँ ताईं। रकत जो चुवा भीजि दुनियाईं[६] ॥
जान जो गारै[७] रकत पसेऊ। सुखी न जान दुखी कर भेऊ ॥
जेहिँ न पीर तेहिँ काकर चिंता। प्रीतम निठुर होइ अस निंता[८] ॥
का सौं कहौं बिरह कै भाषा। जा सौं कहौं होय जरि राखा ॥
बिरह आगि तन जनमैं जरई। नैन नीर सायर सब भरई ॥
पाती लिखी सँवरि तुम्ह नामा। रकत लिखे आखर भये स्यामा ॥
आखर जरहिँ न कोऊ छुवा। तब दुख देखि चला लै सुवा ॥

दो०—अब सुठि मरन छूँछि गइ, पाती पीतम हाथ।
भेंट होत दुख रोवत, जीउ जात जो साथ ॥२४४॥

चौपाई

कंचन तार बांधि गिउँ पाती। लै गा सुवा जहाँ धन राती ॥
जैसे कँवल सुरिज की आसा। तीर कंथ बहु[९] मरै पियासा ॥

---

१ सेवा=विनय। २ भाव=भावना। ३ आसामुखी=आशा रखनेवाला। ४ अगमन=आगे। ५ सुठि औंटैं प्रान=और अधिक प्राण औंटते हैं (प्राणों को दुःख देते हैं)। ६ दुनियाईं=सारा संसार। ७ गारै=निचोड़े। ८ निंता=नित्य। ९ बहु=बधू (पदमावत)।

बिसरा भोग सेज सुख बासू। जहाँ भँवर तहँ सबै हुलासू॥
तब लग धीर, सुना नहिं पीऊ। सुना तो घरी रहै नहिं जीऊ॥
तब लग सुख, हिय पेम न जाना। जहाँ पेम, कत सुख बिसरामा॥
अगर चँदन सुठि दहै सरीरू। औ भा अगिन कया कर चीरू॥
कथा कहानी सुनि जिउ जरा। जानहु घिउ बैसंदर[1] परा॥

दो०—बिरह न आपु सँभारै, मैल चीर सिर रूख।
पिउ पिउ करति रैनि दिन; पपिहा जस मुँह सूख॥२४५॥

चौपाई

ततखन गा हीरामनि आई। मरत पियास छाँहँ जनु पाई॥
भल तुइँ सुवा कीन्ह है फेरा। कुसर छेम कहु पीतम केरा॥
बाट न जानौं अगम पहारा। हिरदै मिला न होय निरारा॥
मरम पानि कर जानु पियासा। जो जल महँ ता कहँ का आसा॥
का रानी पूँछहु यह बाता। जिन कोउ होय पेम कर राता[2]॥
तुम्हरे दरसन लागि बियोगी। अहा सो महादेउ मढ़ जोगी॥
तुम बसंत लै तहाँ सिधाईं। देउ पूजि पुनि घर फिरि आईं॥

दो०—दिष्टि बान तस मारेहु, खाय रहा तेहि ठाउँ।
दूसर बार न बोला, लेइ पदमावत नाउँ॥२४६॥

चौपाई

रोंवहिं रोंव[3] बान वै फूटे। सोतहिं सोत[4] रुहिर[5] मुख छूटे॥
नैनन चली रकत कै धारा। कंथा भीजि भयो रतनारा[6]॥
सूरज बूड़ि उठा परभाता। औ मजीठ टेसू बन राता॥
भये बसंत राते बनपती[7]। औ जितने सब जोगी जती॥
पुहुमि जो भीजि भई सब गेरू। औ राते तन पंख पखेरू॥
राती सती अगिनि सब काया। गगन मेघ राते तेहि छाया॥
ईंगुर भा पाहन तस भीजा। पै तुम्हार नहिं रोंव पसीजा॥

---

१ बैसंदर=(बैश्वानर) अग्नि। २ राता=अनुरक्त। ३ रोंवहिं रोंवँ=रोम रोम। ४ सोत=रोम कूप। ५ रुहिर=रुधिर। ६ रतनारा=सुर्ख। ७ बनपती=बनस्पति (वृक्षलतादि);

दो०—तहाँ चकोर कोकिला, तिन्ह हिय मया पईठि[1]।
नैनन रकत भरायन, तुम फिरि कीन्ह न डीठि ॥२४७॥

चौपाई

ऐस बसंत तुमहिँ पै खेलहु। रकत[2] पराये सेँदुर मेलहु ॥
तुम तौ खेलि मँदिर कहँ आई। ओहि क मरम जस जानु गोसाईं[3] ॥
कहेसि मरै को बारहिँ बारा। एकहि बार होउँ जरि छारा ॥
सर रचि चहा आगि जो लाई। महादेव गौरी सुधि पाई ॥
आइ बुझाय दीन्ह पँथ तहां। मरन[4] खेल कर आगम जहां ॥
उलटा पंथ पेम का बारा[5]। चढ़ै सरग जो परै पतारा ॥
अब धँसि लीन्ह चहै तेहि आसा। पावै साँति कि मरै निरासा ॥

दो०—पाती लिखि सो पठाई, लिखा सबै दुख रोय।
* दहुँ जिउ रहै कि निसरै; कहा रजायसु होय ॥२४८॥

चौपाई

कहि कै सुवैं छोरि दई पाती। जानहु दीप छुवत तस ताती ॥
गीँव जो बाँधा कंचन तागा। राता स्याम कंठ जरि लागा ॥
अगिन स्वाँस मुख निसरी ताती। तरवर जरहिँ तहाँ का पाती ॥
रोय रोय सुवैं कही सब बाता। रकत के आँसु भयो मुख राता ॥
देखु कंठ जरि लाग सो गेरा[6]। सो कस जरै बिरह अस घेरा ॥
जरि जरि हाड़ भये सब चूना। तहाँ माँसु का रकत बिहूना ॥
वै तोहि लागि कया सब जारी। तपत मीन जल रहै न पारी ॥

दो०—तोहि कारन वह जोगी, भसम कीन्ह तन दाहि।
तू अस निठुर निछोही, बात न पूँछै ताहि ॥२४९॥

---

१ पईठि=पैठी, धँसी। २ रकत......मेलहु=पराये रक्त से अपने सिर सिंदूर देती हो। ३ गोसाईं=ईश्वर। ४ मरन......जहां=मरना ही जिस प्रेम रूपी खेल का आरंभ है। मरना ही प्रेम का श्रीगणेश है। ५ बारा=द्वार। ६ गेरा=चौगिर्द।

* यह दोहार्द्ध हाफ़िज़ शीराजी के निम्नलिखित मिसरे का अनुवाद ही सा है। "बाज़गर्दद या बरायद चीस्त फरमाने शुमा"

चौपाई

कहेसि सुवा मोसों सुनु बाता। चहौं तो आजु मिलौं जस राता ॥
पै सो मरम न जानै भोरा। जानै, प्रीति जो मरि कै जोरा ॥
हौं जानति हौं अबहूं काँचा। ना जेहि प्रीति रङ्ग थिर राँचा ॥
ना जेहि भयो मलयगिर बासा। ना जो रवि होइ चढ्यो अकासा ॥
ना जेहि होय भँवर कर रंगू। ना जो दीपकहि होय पतंगू ॥
ना जेहि करा भृङ्ग कै होई। ना जेहि आप जियै मरि सोई ॥
ना जेहि पेम अवटि इक भयऊ। ना जेहि हिये माँझ डर गयऊ ॥

दो०—तेहि का कहिये रहन थिर, जो है प्रीतम लागि।
जहँ वह सुनै लेइ धँसि, का पानी का आगि ॥२५०॥

चौपाई

पुनि धन कनक[1]पान मसि[2]माँगी। उतर लिखत भीजी तन आँगी ॥
जस कंचन कहँ चहिये सोहागा। जो निरमल नग होय सो लागा ॥
हौं जो गई सिउ मंडफ भोरी। तहवाँ कस न गाँठि गहि जोरी ॥
गा बिसँभारि[3] देखि कै नैना। सखिन लाज का बोलौं बैना ॥
खेलहिँ मिस मैं चंदन घाला। मकु जागसि त देउँ जयमाला ॥
तबहुँ न जागा गा तुइ सोई। जागे भेंट, न सोयें होई ॥
अबजो ससी होइ चढ़ी अकासा। जो जिउ देइ सो आवै पासा ॥

दो०—तब लग भुगुति न लै सका, रावन सिय इक साथ।
कौन भरोसे अब कहौं, जीउ पराये हाथ ॥ २५१ ॥

चौपाई

अब जो सूर गगन चढ़ि आवै। राहु होइ तौ ससि कहँ पावै ॥
बहुतन ऐस जीउ पर खेला। तू रे जोगि को आहि अकेला ॥
विकरम धँसा पेम के बारा। संपावति कहँ गयो पतारा ॥
सिद्धवच्छ मुगधावति लागी। गगनपूर गा होइ बैरागी ॥
राज कुँवर कंचन पुर गयऊ। मिरगावति हित जोगी भयऊ ॥

---

१ कनकपान=सोने का वरक़ (सोनहला कागज) २ मसि=स्याही। ३ गा बिसँभारि=बे सँभार होगया (बेसुध होगया)

साध कुंवर खंडावति जोगू। मधु मालति कहँ कीन्ह बियोगू॥
प्रेमावति कहँ सुर[1]सर[2]साँधा[3]। ऊषा लगि अनिरुध गा बाँधा॥

दोहा—हौं रानी पदमावति, सात सरग पर बास।
हाथ चढ़ौं सो तेहि के, प्रथम करै अप[4] नास॥२५२॥

चौपाई

हौं पुनि अहौं पेल तोहि राती। आधी भेंट पिरीतम पाती॥
तुइं जो प्रीति निबाहै आँटा[5]। भँवर न देख केत महँ काँटा॥
होहु पतंग अधर गहु दिया। लेहु समुँद धँसि होइ मरजिया॥
रातु रङ्ग जिमि दीपक बाती। नैन लाउ होइ सीप सेवाती॥
चातक होहु पुकारु पियासा। पिओ न पानि स्वातिकी आसा॥
सारस हो बिछुरे जस जोरी। रैनि होहु जस चकइ चकोरी॥
होहु चकोर दिष्टि ससि पाँहाँ। मधुकर होहु कँवल दल माँहाँ॥

दोहा—हौं हुं पेसि तोहि राती, सकसि तो ओर[6] निबाहु।
रोहु[7] बेधु अरजुन होइ, जीति दुरपदी ब्याहु॥२५३॥

चौपाई

राजा इहाँ तैस तप झूरा। भा जरि बिरह छार कर कूरा॥
जीउ गँवाइ सो गयो[8] बिमोही। भा बिन जिउ जिउ दीन्हेसि ओही॥
कहाँ पिँगला[9] सुखमन[10] नारी। सुन्न समाधि लागि गइ तारी॥
बूँद समुद्र जैस हो मेरा। गा हेराय तस मिलै न हेरा॥
रंगहि पानि मिला जस होई। आपुहि खोय रहा होइ सोई॥

---

१ सुर=सूर नामक व्यक्ति विशेष। २ सर=सरा, चिता। ३ साँधा=संधान किया, रचा, सँवारा। (प्रेमावती के वास्ते सूर नामक व्यक्ति चिता लगाकर जल गया) ४ अप=आपको। ५ आँटा=अँट सकै। ६ ओर=अंत तक। ७ राहु=(रोहू) मत्स्य लक्ष्य (जिसे अर्जुन ने द्रौपदी के लिये बेधा था।) ८ गयो बिमोही=बिमोहित हो गया (मूर्छित हो गया)। ९ पिंगला नारी=दहने नथुने की सांस। १० सुखमना नारी=दोनों नथुनों से एक साथ चलती हुई सांस (ऊर्द्ध स्वांस)।

सुवैं आय देखा भा नासू। नैन रकत भरि आये आँसू॥
सदा पिरीतम गाढ़ करेई। वह न भूल भूला जिउ देई॥
दो०—मूर सजीवन आनि कै, औ मुख मेला नीर।
गरुर पंख जस झारै, अँबिरितु बरसा कीर॥२५४॥

चौपाई

मुवा जिया अस बास जो पावा। बहुरी साँस पेट जिउ आवा॥
देखेसि जागि सुवा सिर नावा। पाती दै मुख बचन सुनावा॥
सबद सुनाय अमी मुख मेला। कीन्ह सुदिष्टि बेगि चलु चेला॥
तोहिं अलि कीन्ह आपु भई केवा[1]। हों पठवा करि बीच परेवा॥
पवन स्वांस तो सों मन लाये। जोवै मारग दिष्टि बिछाये॥
जस तुम कया कीन्ह अगि दाहू। सो सब गुरु कहँ भयो अगाहू[2]॥
तपावंत[3] छाला[4] लिख दीन्हा। बेगि आउ चाहौं सिध[5] कीन्हा॥
दो०—कहेसि बेगि चलि आवहु, जीउ बसै तुम्ह नाउँ।
नैनन भीतर पंथ है, हिरदै भीतर ठाउँ॥२५५॥

चौपाई

सुनि पद्मावति कै अस मया[6]। भा बसंत उपनी[7] नव कया॥
सुवा क बोल पवन अस लागा। उठा सोय हनुवँत अज जागा॥
चाँद मिलन कहँ दीन्ही आसा। सहसन करा सुरिज परकासा॥
पाती कर लै सीस चढ़ावा। दिष्टि चकोर चाँद जस पावा॥
आज पियासा जो जेहि केरू। जो झिझकार ओही सउँ[8] हेरा॥
अब यह कौन पानि मैं पिया। भे तन पाँख पतिंग मरि जिया॥
उठा फूलि हिरदै न समाना। कंथा टूक टूक बहिराना[9]॥
दो०—जहां पिरीतम वे बसैं, यह जिउ बलि तेहिं बाट।
जो सो बोलावै पाँव सों, मैं तहँ चलौं लिलाट॥२५६॥

---

१ केवा=कदंब का फूल। २ अगाहू=आगाही खबर, इत्तिला। ३ तपावंत=(गरम) संतप्तभाव से। ४ छाला=छाल पर लिखी हुई चिट्ठी। ५ सिध=सिद्ध महात्मा। ६ मया=कृपा। ७ उपनी=उत्पन्न हुई। ८ सउँ=सामने। ९ बहिराना=बाहर होगया।

चौपाई

जो पथ मिला महेसहिं सेई। गयो समुन्द्र ओही धँसि लेई॥
जहँ वह कुंड विषम अवगाहा[१]। जाय परा तहँ पाव न थाहा॥
बाउर अंध प्रीत कर लागू। सौंह धँसै कछु सूझ न आगू॥
लीन्हेसि धँसि जो स्वांस मन मारा। गुरू मछंदरनाथ सँभारा॥
चेला परे न छाड़हिं पाछू। चेला मच्छ गुरू जस काछू[२]॥
जस धँसि लीन्ह समुँद मरजिया[३]। उघरे नैन बरैं जस दिया॥
खोजि लीन्ह सो सरग-दुवारा[४]। बज्र[५] जो मूँदा जाय उघारा॥

दो०—बाँक चढ़ाव सो गढ़ कर, चढ़त गयो होइ भोर।
भइ पुकार गढ़ ऊपर, चढ़े सेंधि दै चोर॥२५७॥

चौपाई

राजैं सुना जोगि गढ़ चढ़े। पूँछा पास पंडित जो पढ़े॥
जोगी गढ़ जो सेंधि दै आवैं। बोलौ सबद सिद्धि[६] जस पावैं॥
कहेनि बेद पढ़ि पंडित बेदी। जोगि भँवर जस मालति भेदी॥
जैसे चोर सेंधि सिर मेलहिं। तस ये दोउ जीउ पर[७] खेलहिं॥
पंथ न चलहिं बेद जस लिखे। सरग जाहिं सूली चढ़ि सिखे॥
चोर होय सूली पर मोखू[८]। देइ जो सूली तेहिं नहिं दोखू॥
चोर पुकारि बेधि[९] घर मूसा[१०]। खोलै राज-भँडार मँजूसा[११]॥

दो०—जस इन राज-मँदिर कहँ, दीन्ह रैनि होइ सेंधि।
तस इनहूं कहँ मोख होइ, मारहु सूली बेधि॥२५८॥

---

१ अवगाहा=अथाह, बहुत गहरा। २ काछू=कछुवा। ३ मरजिया=गोताखोर। ४ सरग दुवारा=ऊपर चढ़ने का गुप्त द्वार। ५ वज्र=भारी पत्थर। ६ सिद्धि=अंतिम फल (अर्थात् दंड); ७ जी पर खेलना=जान जाने को न डरना। ८ मोखू=मोक्ष। ९ बेधि=सेंध देकर। १० मूसा=चोरी की। ११ मंजूसा=सन्दूक।

२५—पचीसवाँ खंड

मंत्रियों की सलाह

चौपाई

राँध[1] जो मंत्री बोले सोई। ऐस जो चोर सिद्ध पै कोई॥
सिद्ध निसंक रैनि दिन भँवहीं। ताका[2] जहाँ तहाँ अपसवहीं[3]॥
सिद्ध न डरपै अपने जीवा। खड़ग देखि कै नावै गीँवा[4]॥
सिद्ध जाय पै जेहि बिधि जहाँ। औरहि मरन पंख अस कहाँ॥
चढ़ा जो कोपि गगन उपराहीं। थोरे साज, मरै पै नाहीं॥
जंबुक जूझ[5] चढ़ै जो राजा। सिंह साज कै चढ़ै तो छाजा॥
सिद्ध अमरकाया जस पारा। जरै छरै[6] पै जाय न मारा॥

दो०—छर[7] कै काज कृष्ण कर, राजा चढ़ै रिसाय।
सिध[8] गिध[9] दिष्टि गगन महँ, बिन छर कुछु न बसाय॥२५९

चौपाई

आवहु करहु कदरमस[10] साजू। चढ़ै बजाय जहाँ लहि राजू॥
होहिँ सँजोइल[11] कुँवर जो भोगी। सब दर[12] छेंकि धरहु अब जोगी॥
चौबिस लाख छत्रपति[13] साजे। छपन कोटि दर[12] बाजन बाजे॥
बाइस सहस हस्ति सिंघली। सकल पहार सहित महि हली॥
जगत बराबर वैं सब चाँपा। डरा इंद्र बासुकि हिय काँपा॥
पदुम कोटि रथ साजे आवहिँ। गढ़ होइ खेह गगन कहँ धावहिँ॥
जनु भुइँचाल[14] चलत तिन्ह परा। कूरम पीठि टूटि हिय डरा॥

---

१ रांध=निकट। २ ताका=देखा। ३ अपसवहीं=पहुँच जाते हैं। ४ गींवा=गरदन। ५ जूझ=युद्ध। ६ छरै=छिन्न भिन्न हो जाता है। ७ छर=छल। ८ सिध=सिद्धपुरुष। ९ गिध=गृद्ध। १०—कदरमस=मारकाट, युद्ध। ११ सँजोइल=साज सामान से लैस। १२ दर=दल। १३ छत्रपति=छत्रधारी राजा। १४ भुइँचाल=भूकम्प।

दो०—छत्रन सरग छाय गा, सूरज गयो अलोप[1]।
दिनहिराति अस देखी, चढ़ा इन्द्र होइ कोप ॥ २६० ॥

चौपाई

देखि कटक औ मैंमत[2] हाथी। बोले रतनसेन के साथी ॥
होत आव दर बहुत असूझी[3]। अस जानव कछु होइहै जूझी[4] ॥
राजा तू जोगी होइ खेला। यही दिवस कहँ हम भये चेला ॥
जहाँ गाढ़ ठाकुर[5] कहँ होई। संग न छाँड़ै सेवक सोई ॥
जो हम मरन दिवस जी ताका। आजु आय पूजी वह साका[6] ॥
बरु जिउ जाय, जाय नहिं बोला[7]। राजा सत्त सुमेरु न डोला ॥
गुरू केर जो आयसु पावैं। हमहुँ सौंह होइ चक्र चलावैं ॥

दो०—आजु करैं रन भारथ, सत्त बचा[8] लें राखि।
सत्त गुरू सत कौतुक, सत्त भरैं पुनि साखि ॥२६१॥

चौपाई

गुरू कहा चेला सिध[9] होहू। पेमबार[10] महँ करहु न कोहू ॥
जा कहँ सीस नाय कै दीजै। रंग[11] न होय ऊभ[12] जो कीजै ॥
जेहि जी पेम, पानि भा सोई। जेहि रँग मिलै तेही रँग होई ॥
जो पै जाइ पेम सौं जूझा। कत तपि मरै, सिद्ध जेइँ बूझा ॥
यह सत बहुत जो जूझ न करिये। खरग देखि पानी होइ ढरिये ॥
पानिहि काह खरग कै धारा। लौटि पानि सोई जेइँ मारा[13] ॥
पानी सेतीं[14] आगि का करई। जाय बुझाय पानि जो परई ॥

दो०—सीस दीन्ह मैं अगमन[15], पेमबार सिर मेलि।
अब सो प्रीति निबाहौं, चलौं सिद्ध होइ खेलि ॥ २६२ ॥

---

१ अलोप गयो=आलुप्त हो गया, छिप गया। २ मैंमत=मदमस्त। ३ असूझी=अँधेरी। ४ जूझी=युद्ध। ५ ठाकुर=मालिक। ६ साका=समय। ७ बोला=वचन। ८ बचा=वचन। ९ सिध=सिद्ध पुरुष। १० पेमबार=प्रेम का द्वार। ११ रंग=लुत्फ, मज़ा। १२ ऊभ=विद्रोह। १३ मारा=पानी उलट कर उसी पर पड़ता है जो उसे मारता है। १४ सेतीं=केप्रति। १५ अगमन=पहले ही।

चौपाई

राजैं छेंकि[1] धरे सब जोगी। दुख ऊपर दुख सहै वियोगी ॥
ना जिय धरक[2] धरत है कोई। जान न मरन जियन कस होई ॥
नाग फाँस उन्ह मेली गींवाँ। हरष न बिसमौ[3] एकौ जीवा ॥
जेइँ जिउ दीन्ह सो लियो निरासा। बिसरै नहिँ जौलहि तन स्वाँसा ॥
कर किंगिरी तिन्ह तंत[4] बजावा। नेह-गीत बैरागिन गावा ॥
भलेहि आनि गिउँ[5] मेली फाँसी। अहै न सोच हिये रिस नासी ॥
मैं गिउँ फाँद वही दिन मेला। जेहि दिन पेमपंथ होइ खेला[6] ॥

दो०—परगट गुपुत सकल महँ, पूरि रहा सो नाउँ।
जहँ देखौं ओहि देखौं, दूसर नहिँ कहँ जाउँ ॥ २६३ ॥

चौपाई

जबलग गुरु मैं अहा न चीन्हा। कोटि अँतरपट[7] विच हुत दीन्हा ॥
जब चीन्हा तब और न कोई। तन मन जिउ जोबन सब सोई ॥
हौं हौं कहत धोख अँतराही[8]। जो भा सिद्ध कहाँ परछाहीं ॥
मारै गुरू कि गुरू जियावा। और को मार, मरै सब आवा ॥
सूरी मेल हस्ति गुरु चूरू[9]। हौं नहिँ जानौ जानै गुरू ॥
गुरू हस्ति पर चढ़े सो पेखा। जगत जो नास्ति नास्ति सब देखा ॥
अंध मीन जल जल महँ धावा। जल जीवन जल दिष्टि न आवा ॥

दो०—गुरू मोर मोरे हिये, दिये तुरंगम-ठाठ[10]।
भीतर करहिं डोलावैं, बाहर नाचै काठ ॥ २६४ ॥

---

१ छेंकि=घेर कर। २ धरक=धड़क, डर। ३ बिसमौ=दुःख। ४ तंत=ताँत (जो किंगरी में तार की तरह लगी रहती है)। ५ गिउँ=ग्रीवा, गर्दन। ६ पेम-पंथ होइ खेला=प्रेमपंथ होकर चला। ७ कोटि अंतरपट विच हुत दीन्हा=करोड़ों परदे बीच में पड़े थे। ८ धोख अँतराहीं=धोखे में पड़ा रहा। ९ सूरी मेल हस्ति गुरु चूरू=गुरू का हाथी सूली को चूर चूर करके फेंक देगा। १० तुरंगम-ठाठ=घोड़े कीसी बाग। ठाठ=ठट्ठी, रुकावट की वस्तु (यहां लगाम)।

चौपाई

सो पदमावत गुरु, हौं चेला। जोग तंत[1] जेहि कारन खेला॥
तजि ओहि बार न जानौं दूजा। जेहि दिन मिलै चढ़ावौं पूजा॥
जीउ काढ़ि भुइँ धरौं लिलाटू। वैठक देउँ हिये कर पाटू[2]॥
को मोहि लै सो छुवावै पाया[3]। नव अवतार देइ नव काया॥
जीउ चाहि[4] सो अधिक पियारी। माँगै जीउ देउँ बलिहारी॥
माँगै सीस देउँ स्यौं[5] गीवा। अधिक नवौं जो मारै जीवा॥
अपने जिउ कर लोभ न मोहीं। पेमबार होइ मागौं ओही॥
दो०—दरसन ओहिक दिया जस, हौं रे भिखारि पतंग।
जो करवत[6] सिर सारै, मरत न मोरौं अंग॥२६५॥

२६—छब्बीसवाँ खंड

(पद्मावत-मूर्च्छा वर्णन)

चौपाई

पदुमावति कँवला[7] ससि जोती। हँसै फूल रोवै तब मोती॥
परजापती[8] हँसी औ रोजू[9]। लाये दूत होइ नित खोजू॥
जबहिं[10] सुरिज कहँ लागा राहू। तबहिं कँवल मन भयो अगाहू॥

---

१ तंत=पूर्ण। २ पाट=पीढ़ा, सिंहासन। ३ पाया=पद, पैर। ४ चाहि=अधिकतर। ५ स्यौं=सहित समेत। ६ जो करवत सिर सारै=यदि सिर पर आरा भी चलवावै। ७ कँवला ससि जोती=कमल सम मृदु और शशि सम ज्योतिमय। ८ परजा पति=राजा (गंधर्व सेन) ९ रोजू=रोना। परजापती...खोजू=राजा गंधर्व सेन (पद्मावत का पिता) ने दूत नियत कर दिये थे जो पद्मावत के हँसने और रोने—सुख दुःख—की खबर नित्य राजा को सुनाते थे। १० अर्थात् जब राजा रतन सेन पकड़ा गया और सूली का हुक्म हुआ, तब इसकी खबर पदमावती को भी लग गई। अगाह होना=जान जाना।

बिरह-अगस्त जो बिसमौ[1] भयऊ। सरवर-हरष सूखि सब गयऊ॥
परगट ढारि सकै नहिँ आँसू। घुटि घुटि माँसु गुप्त होइ नासू॥
जनु दिन माँझ रैनि होइ आई। बिकसित कँवल गयो कुम्हिलाई॥
राता बदन गयो होइ सेता। भँवत भँवर होइ रह्यो अचेता॥

दो०—चितहिँ जो चित्र कीन्ह धनि, रों रों[2] रङ्ग समेटि।
लिहिसि साँस दुख आह भरि, परी मुरछि भुइँ भेंटि॥२६६॥

चौपाई

पदुमावत सँग सखी सयानी। गनत नखत सब रैनि बिहानी॥
जाना मरम कँवल कर कोईं[3]। देखि बिथा बिरहिनि कै रोईं॥
बिरहा कठिन काल की कला। बिरह न सहै काल बरु भला॥
काल काढ़ि जिउ लेय सिधारै। बिरह-काल मारे पै मारै॥
बिरह अगि पर मेलै आगी। बिरह घाव पर घाव बजागी[4]॥
बिरह बान पर बान पसारा। बिरह रोग पर रोग सँचारा॥
बिरह साल पर साल[5] नवेला। बिरह काल पर काल दुहेला[6]॥

दो०—तन रावन पुर[7] जरि बुझा, बिरह भयो हनिवंत।
जारे ऊपर जारै, तजै न कै भसमंत॥२६७॥

चौपाई

कोइ कुमोद[8] परसहिँ कर पाया। कोइ मलयागिरि छिरकहिँ काया॥
कोइ मुख सीतल नीर चुवावहिँ। कोइ आँचर सों पवन डोलावहिँ॥
कोइ मुख अमिरितु आनि निचोवै। जनु विष देहिँ अधिक धन सोवै॥
जोवहिँ साँस खनहि खन सखी। कब जिउ फिरै पवन औ पंखी॥

---

१ बिसमौ=दुःख। विरह रूपी अगस्तोदय से पदमावती को ऐसा दुःख हुआ कि हर्ष रूपी सरोवर सूख गया। (मिलान करो—'उदित अगस्त पंथ जल सोखा'—तुलसी दास) २ रों रों रंग समेटि=रोम रोम में प्रेम भर कर। ३ कोईं=कुमुदिनी। ४ बजागी=वज्राग्नि। ५ साल=छेद। ६ दुहेला=दुःख दुर्भाग्य। ७ रावनपुर=लंका। (मिलान करो—उलटि पलटि-लंका कपि जारी—तुलसी दास) ८ कुमोद=कुमुदनी (यहां सखी जो कुमुदित अर्थात दुखित थीं।)

बिरह काल होइ हिये पईठा। जीउ काढ़ि लै हाथ बईठा॥
खन एक मूँठि बाँध खन खोला। गहेसि जीभ मुख जाय न बोला॥
जनहु बीजु[1] कै बानन मारा। कँपि कँपि नारि मरै बिकरारा[2]॥

दो०—कैसहुँ बिरह न छांड़ै, भा ससि गहन गरास।
नखत चहूँदिस रोवहिं, अँधियर धरति अकास॥२६८॥

चौपाई

घरी चारि इमि गहन गरासी। पुनि बिधि जोति हिये परगासी॥
निसँस[3] ऊभि फिर लीन्हेसि साँसा। भइ उधार[4] जीवन कै आसा॥
बिनवहिँ[5] सखी छूट ससि राहू। तुम्हरिय जोति जोति सब काहू॥
तू ससि बदनि जगत उजियारी। केइँ हरि लींन्ह कीन्ह अँधियारी॥
तू गज गवनी गरब[6]-गहेली। अब कस अस सत छाँड़ दुहेली[7]॥
तू हरिलंक हराये केहरि। अबकस हारि करसि हिय हेहरि[8]॥
तू कोकिल बैनी जग मोहा। को बियाध होइ गहा निछोहा॥

दो०—कँवल-करी तू पदमिनि, गई निसि भयो बिहानु।
अबहुँ न संपुट[9] खोलसि, जो रे उआ जग भानु॥२६९॥

चौपाई

भानु नाँव सुनि कँवल बिकासा। फिरि कै भँवर लीन्ह मधुवासा॥
सरदचंद मुख जीभ उघेली[10]। खंजन नैन उठे करि केली॥
बिरह न बोल आव मुख ताई। मरि मरि बोल, जीव बरियाई॥
दारुन बिरह दाह हिय काँपा। खोलि न जाय बिरह दुख झाँपा॥
उदक समुन्द जस तरँग दिखाआ। चखघूमहिं मुखबाच[11] न आवा॥

---

१ बीजु=बिजली। २ बिकरारा=अत्यंत व्याकुल। ३ निसँस=स्वांस रहित—(मुर्दा) ऊभि=ऊबकर उठकर, चेतन हो कर। ४ भई उधार=उद्धार हो गई, चंद्रमा पर का गहन छूट गया। ५ बिनवहिं=निवेदन करती हैं, हाल कहती हैं। ६ गरब गहेली=गर्व धारण किये हुए, गर्वीली। ७ दुहेली=दुखित। ८ करसि हिय हेहरि=हृदय में हहरती है, घबराती है। ९ संपुट खोलना=बिकसित होना, फूल उठना। १० उघेली=खोली। ११ बाच=बचन बोल।

बहु सुधि लहरि लहरि पै धावा। भँवर परा जिउ थाह न पावा॥
सखी आनि विष देहु तौ मरऊं। जीउ न पेट मरन का डरऊँ॥

दो०—खनहिं उठै खन बूड़ै, अस हिय कमल सकेत[1]।
हीरामनिहिं बुलावहु, सखी बिरह जिउ लेत॥२७०॥

चौपाई

चेरी धाय सुनत उठि धाई। हीरामनिहिं बोलि लै आई॥
जनहुँ वैद औषधि लै आवा। रोगिया रोग मरत जिउ पावा॥
सुनत असीस नैन धन खोले। बिरह बैन जिमि कोकिल बोले॥
कँवलहिं बिरह बिथा जस बाढ़ी। केसर[2] बरन पीर हिय काढ़ी॥
कत कँवलहिं भा पीर अँकूरू। जो पै गहन लीन्ह दिन सूरू॥
पुरइन छाहँ कँवल की करी। सुरिज बिथा सुनि अस मन हरी॥
पुरुष गँभीर न बोलहिं काहू। जो बोलहिं तौ और निबाहू॥

दो०—इतना बोल कहत मुख, पुनि होइ गई अचेत।
पुनि कै चेत सँभारी, यहै बकुर[3] मुख लेत॥२७१॥

चौपाई

उर क दाह का कहौं अपारा। सती जो जरै कठिन अस भारा॥
होइ हनिवंत पैठ हिय कोई। लंका दाह लागु तन होई॥
लंका बुझी आगि जो लागी। यह न बुझै तस उपनि बजागी[4]॥
जनहु अगिनि के उठहिं पहारा। होइ सब लागहिं अङ्ग अँगारा॥
कटि कटि माँसु सराग[5] पिरोवा। रकत के आँसु माँसु सब रोवा॥
खन यकतार[6] माँसु अस भूँजा। खनहिं चियाय[7] सिंहअस गूँजा॥
यहि रे दगध ते उतम मरीजै। दगध न सहिय जीउ बरु दीजै॥

---

१ सकेत=संकुचित। २ केसर बरन=पीले रंग वाला अर्थात् हीरामन सुवा। ३ बकुर लेना=बात कहना। यहै बकुर मुख लेत=मुख से यही बात कहते हुए। ४ बजागी=दवाग्नि। ५ सराग=शलाका, सलाख (लोहे की छड़ जिस पर कबाब भूना जाता है)। ६ यकतार=लगातार, एक सा। ७ चियाइ=चुप रह कर।

दो०—जहँ लग चंदन मलयगिर, औ सायर[1] सब नीर।
सब मिल आय वुझावैं, वुझै न आगि सरीर ॥२७२॥

चौपाई

हीरामनि जो देखेसि नारी। प्रीति बेलि उपनी हिय बारी[2] ॥
कहेसि कि तुम्ह कस होहु दुहेली। उरझी प्रेम प्रीति कै बेली ॥
प्रीति बेलि जनि उरझै कोई। उरझा मुएहु न छूटै सोई ॥
प्रीति बेलि ऐसै तन डाढ़ा। पलुहत[3] सुख बाढ़त दुख बाढ़ा ॥
प्रीति बेलि कै अमर को बोई। दिन दिन बढै खीन नहिं होई ॥
प्रीति बेलि सँग बिरह अपारा। सरग पतार जरै तेहिं झारा ॥
प्रीति अकेलि बेलि जेहि छावा। दूसरि बेलि न सँचरै पावा ॥

दो०—प्रीति बेलि उरझाय जब, तब सो जन सुख साख[4]।
मिलै पिरीतम आय कै, दाख बेलि रस चाख ॥ २७३ ॥

चौपाई

पदमावत उठि टेके पाया। तुम हुत[5] देखौं प्रीतम छाया ॥
कहत लाज उर, हिये न जीऊ। एक दिस आगि दुसर दिस पीऊ ॥
तुम सो मोर खेवक गुरु देवा। उतरौं पार तेही विधि खेवा ॥
सूर उदयगिरि चढ़त भुलाना। गहने गहा कँवल कुम्हिलाना ॥
ओहटे[6] होय तो मरौं न झूरी। यह सुठि मरन जो नियरेहिं दूरी ॥
घट महँ निकट विकट भा मेरू। मिलत न मिला परा तस फेरू ॥
दमनहिं[7] नल; जस हंस मेरावा। तब हीरामनि नाम कहावा ॥

दो०—सूर सजीवन दूर अति, सालै सकती बान।
प्रान मुकत अब होत है, वेगि दिखावहु आन ॥ २७४ ॥

---

१ सायर=सागर। २ बारी=वाटिका। ३ पलुहना=पल्लवित होना। ४ सुख साख=सूख साख जाता है, दुबला हो जाता है। ५ तुम हुत=तुम्हारे द्वारा। ६ ओहटे=ओट, दूर। ७ दमन=दमयंती, जैसे दमयंती और नल को हंस ने मिलाया वैसे ही तू मुझे राजा रतन सेन से मिला दे तब तेरा हीरामनि नाम ठीक हो।

चौपाई

हीरामन भुइँ धरा लिलाटू। तुम रानी जुग जुग सुख पाटू[1] ॥
जेहि के हाथ सजीवन मूरी। सो जोगी अब नाहीं दूरी ॥
पिता तुम्हार राज कर भोगी। पूजै विप्र मरावै जोगी ॥
पँवरि पंथ कोतवार बईठा। पेम क लुबुध सुरङ्ग पईठा ॥
चढ़त रैन गढ़ होइगा भोरू। आवत बार धरा कहि चोरू ॥
अब लै गए देइँ ओहि सूरी। तेहि ते आगु[2] बिथा तुम पूरी ॥
अब जिउ तुम, काया वह जोगी। कया क रोग जानु पै रोगी ॥

दो०—रूप तुम्हार जपै जिय, पिंडक माला फेरि।
आपु हेराय रहा तहां, काल न पावै हेरि ॥ २७५ ॥

चौपाई

हीरामनि जो बात यह कही। सुरिज के गहन चाँद पुनि गही ॥
सुरिज के दुःख जो ससि होइ दुखी। सो कत दुख मानै करमुखी[3] ॥
अब जो जोगि मरै मोहि नेहा। मोहि ओहि साथ धरति गगनेहा[4] ॥
रहैं तो करौं जनम भरि सेवा। चलै तो यह जिउ साथ परेवा[5] ॥
कौन सो करनी केहि कर सोई। परकाया परवेस जो होई ॥
पलटि सो पंथ कवन विधि खेला। चेला गुरू गुरू होइ चेला ॥
कौन खंड सो रहा लुकाई। आवै काल हेरि फिरि जाई ॥

दो०—चेला सिद्धि सो पावै, गुरु सों करै अछेद[6]।
गुरू करै जो किरपा, कहै सो चेला भेद ॥ २७६ ॥

चौपाई

अन[7] रानी तुम गुरु वह चेला। मोहि पूंछौ करि सिद्ध नवेला ॥
तुम चेला कहँ परसन भईं। दरस देयँ मंडप चलि गईं ॥
रूप गुरू कर चेलैं दीठा। चित समाय होय चित्र बईठा ॥

---

१ पाट=सिंहासन। २ आगु=आगे ही, पहले ही। ३ कर मुखी=काले मुख वाली कलंक युक्त (शशि शब्द को जायसी ने सर्वत्र स्त्री लिंग माना है)। ४ गगनेहा=आकाश, स्वर्ग। ५ परेवा=पंछी। ६ अछेद=अभिन्नता; ७ अन=निश्चय कर के, निःसंदेह।

जीउ काढ़ि लै तुम अपसईं[1]। वह भा कया जीउ तुम भईं ॥
कया जो लाग धूप औ सीऊ[2]। कया न जान जान पै जीऊ ॥
भोग तुम्हार मिला ओहि जाई। ओहिकै बिथा सो तुम कहँ आई ॥
तुम ओहि के घट वह तुम माहाँ। काल न चाँपै पावै छाहाँ[3] ॥

दो०—अस वह जोगी अमर भा, पर काया दरवेस।
आव काल तन देखै, फिरै सो करि आदेस[4] ॥ २७७ ॥

चौपाई

सुनि जोगी कै अम्मर[5] करनी। निवरी[6] बिरह बिथा की मरनी ॥
कँवलकरी होइ बिकसा जीऊ। जनु रबि देखि छूटिगा सीऊ ॥
जो भा सिद्ध को मारै पारा। निरखत नैन होइ जरि छारा ॥
कहहु जाय अब मोर सँदेसू। तजहु जोग अब भयो नरेसू ॥
जिन जानहु तुमसों हौं दूरी। नैनन माँझ गड़ी वह सूरी ॥
तुम्हर पसेव[7] गिरे घट केरा। मोहि घट जीउ घटत नहिं बेरा[8] ॥
तुम कहँ पाट[9] हिये मैं साजा। अब तुम मोर दुहूं जग राजा ॥

दो०—जो रे जियहिं मिलि गल रहैं, मरहिं तो एकै दोउ।
तुम्हरे जियहि जनि होउ कछु, मोहिं जिय होउ सो होउ ॥ २७८ ॥

२७—सत्ताईसवाँ खंड

शूली वर्णन

चौपाई

बाँधि तपा[10] आने जहँ सूरी। जुरी आय सब सिंघल पूरी ॥
पहिले गुरूदेव कहँ आना। देखि रूप सब कोउ पछिताना ॥

---

१ अपसईं=खिसक गईं, अपसना=खिसक जाना, टल जाना (सं० अपसर्जन से)। २ सीउ=शीत, सरदी। ३ छाहँन चाँप पावै=निकट नहीं पहुँच सकता। ४ आदेस=प्रणाम, सलाम। ५ अम्मर=अमर। ६ निवरी=निपटी, खतम हो गई। ७ पसेव=पसीना। ८ बेरा=देर। ९ पाट=सिंहासन। १० तपा=तपस्वी, जोगी।

लोग कहहिं यह होय न जोगी। राजकुवाँर आहि कोउ भोगी ॥
काहुइँ लागि भयो है तपा। हिये सुमाल किये मुख जपा ॥
जस मारै कहँ बाजा तूरू[1]। सूरी देखि हँसा मंसूरू[2] ॥
चमके दसन भयो उजियारा। जो जहँ तहाँ बीजु अस मारा ॥
जोगी केर करहु पै खोजू। मकु यह होय न राजा भोजू ॥
दो०—सब पूँछहिं कहु जोगी, जाति जनम औ नाउँ।
जहाँ ठाउँ रोवै कर, हँसा सो कहु केहि भाउ[3] ॥ २७६ ॥

चौपाई

का पूँछहु अब जाति हमारी। हम जोगी औ तपा भिखारी ॥
जोगी जाति कौन हो राजा। गारि न कोह मार नहिं लाजा ॥
निलज भिखारि लाज जेहि खोई। तेहिके खोज परौ जिनि कोई ॥
जाकर जीउ मरै पर बसा। सूरी देखि सो कस नहिं हँसा ॥
आजु नेह सौं होइ निवेरा[4]। आजु भूमि तजि गगन बसेरा ॥
आजु कया पंजर बँद टूटा। आजु परान परेवा छूटा ॥
आजु नेह सौं होय निरारा। आजु पेम सँग चला पियारा ॥
दो०—आजु अवधि सो पहुँची, किये जाउँ मुखरात[5]।
वेगि होहु मोहिं मारहु, जिन चालहु कछु बात ॥ २८० ॥

चौपाई

कहेनि सँवरु जेहि चाहसि सँवरा। हम तोहि करहिं केत[6] कर भँवरा ॥
कहेसि ओही सँवरौं हर फेरा। मुए जियत आहौं जेहि केरा ॥
औ सँवरौं पदमावत रामा। यह जिउ न्यौछावर तेहि नामा ॥
रकत की बूँद कया जत[7] अहई। पदमावत पदमावत कहई ॥

---

१ तूर=तुरही। २ मंसूर=एक फकीर थे जो 'अनलहक़' अर्थात 'अहम ब्रह्म' कहा करते थे। इनको काफिर समझ कर उस समय के राजा ने शूली का दंड दिया था। मंसूर प्रसन्नता पूर्वक शूली पर चढ़े थे। ३ भाउ=(भाव) प्रयोजन। ४ निवेरा=जुदाई। ५ किये जाउँ मुखरात=सुर्खरू होकर जाऊँगा (फारसी मुहावरे का अनुवाद) ६ केत=केतकी (केतकी के कांटों में भँवरा वेध जाता है)। ७ जत=जितनी।

रहै तो बूँद बूँद महँ ठाऊँ। परहि तो सोई लै लै नाऊँ॥
रोम रोम तन तासौं ओधा[1]। सोतहि सोत बेधि जिउ सोधा॥
हाड़ हाड़ महँ सबद सो होई। नस नस माहिँ उठै धुनि सोई॥

दो०—खाय बिरह गा ताकर, गूद[2] मास कै हान।
हौं पुनि साँचा[3] होइ रहा, ओहि के रूप समान॥ २८१॥

चौपाई

जोगिहि जबै गाढ़ अस परा। महादेव कर आसन टरा॥
औ हँसि पारवती सौं कहा। जानहुँ सूर गहन अस गहा॥
आजु चढ़े गढ़ ऊपर तपा। राजैं गहा सूर तन छपा॥
जग देखैं गा कौतुक आजू। जहाँ तपा मारै कर साजू॥
पारबती सुनि पायन परी। चलु महेस देखैं एक घरी॥
भेस भाट भाटिन कर कीन्हा। औ हनिवंत बीर सँग लीन्हा॥
आय गुपुत होइ देखन लागे। दहुँ मूरति कस सती सभागे[4]॥

दो०—कटक असूझ[5] देखि कै, राजा गरब करेइ।
दई[6] की दिसा न देखै, दहुँ का कहँ जय देइ॥ २८२॥

चौपाई

आसन मारि रहा होइ तपा। पदमावत पदमावत जपा॥
मन समाधि तासौं धुनि लागी। जेहि दरसन कारन बैरागी॥
रहा समाय रूप ओहि नाऊँ। और न सूझ बार जहँ जाऊँ॥
औ महेस कहँ करै अदेसू[7]। जेइँ यहि पंथ दीन्ह उपदेसू॥
पारवती पुनि सत्य सराहा। औ फिरि मुख महेस कर चाहा[8]॥

---

१ ओधा=अटक रहा है, बिधा हुआ है। २ गूद=गूदा, मज्जा। ३ सांचा=वस्तु ढालने का। ४ सभागे=कि आया सत्य संध और सौभाग्यमान राजा रतन सेन की मूर्ति कैसी है। ५ असूझ=अगणित, बहुत बड़ा। ६ दई की दिसा=ईश्वर की ओर। ७ अदेसू=प्रणाम। ८ चाहा=देखा।

हियै महेस होइ जो महेसी[1] । केहि सिर नावै या परदेसी ॥
मरतहुँ लेइ तुम्हारइ नाऊँ । तुम चित[2] कियें रहौ यहि ठाऊँ ॥

दो०—मारत हैं परदेसिहिं, राखि लेहु यहि बेर ।
कोऊ या कर नाही, जो चालै यहि टेर ॥ २८३ ॥

चौपाई

लै सँदेस सुवटा गा तहाँ । सूरी देहिं रतन कहँ जहाँ ॥
देखि रतन हीरामनि रोवा । राजा जिउ लोगन हठि खोवा ॥
देखि रुदन हीरामनि केरा । रोवहि सब राजा मुख हेरा ॥
मांगहिं सब बिधना सों रोई । कै उपकार छोड़ावै कोई ॥
कहि सँदेस सब बिपति सुनाई । बिकल बहुत कछु कहि नहिं जाई ॥
काढ़ि परान बैठि लिये हाथा । मरै तो मरौं जियौं एक साथा ॥
सुनि सँदेस राजा तब हँसा । प्रान[3] प्रान घट घट महँ बसा ॥

दो०—हीरामनि जिनि सोचु तैं, करसि देखि दुख मोर ।
जियत जपौं नित नाम वहि, मुए निबाहौं ओर ॥ २८४ ॥

चौपाई

राजा रहा दिष्टि कै औंधी[4] । सहि न सका सो भाट दसौंधी[5] ॥
कहेसि मेलि कै हाथ कटारी । पुरुष न छाजै बैठि पेटारी[6] ॥
कान्ह कोप कै मारा कंसू । गोकुल मांझ बजावा बंसू[7] ॥
गंध्रबसेन जहाँ रिस बाढ़ी । जाय भाट आगे भा ठाढ़ी ॥

---

१ महेसी=ईश्वरता, ईश्वरीय शक्ति । (पार्वती कहती हैं कि हे महेश यदि तुमको अपनी माहेश्वरी शक्ति का कुछ भी अहंकार हो तो इसे ऐसा कर दो कि यह परदेसी किसी से नीचा न देखै । २ तुम चित······ठाऊँ=तुम्हीं इसके चित्त में सदा बसते हो । ३ प्रान प्रान······बसा=प्राणों का प्राण अर्थात् ईश्वर घट घट में बसता है अर्थात् जब मैंने पदमावत से सच्चा प्रेम किया तब ईश्वर की प्रेरणा से उस पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि अब वह भी मेरे प्रेम में मरने को तैयार है । ४ औंधी=(अधः) नीचे की ओर । ५ भाट दसौंधी=दसौंधी जाति का भाट । ६ पेटारी=झांपी । ७ बंसू=बंसी ।

ठाढ़ देखि सब राजा राऊ। बायें हाथ दीन्ह बरम्हाऊ[१] ॥
बोला गंध्रबसेन रिसाई। कैस जोगि कस भाट असाई[२] ॥
जोगी पानि आग तू राजा। आगि पानि सौं जूझ न छाजा ॥
दो०—आगि बुझाइ पानि सौं, जूझ न राजा बूझ।
तोरे बार खपर लिए, भिच्छा देहि न जूझ ॥ २८५ ॥

चौपाई

जोगि न होय आहि सो भोजू[३]। जोगी भयो भोज[४] के खोजू ॥
भारथ होय जूझ जो ओधा[५]। होहिँ सहाय आय सब जोधा ॥
महादेव रनघंट बजावा। सुनि कै सबद ब्रह्म[६] चलि आवा ॥
बासुकि ,फन पतार सौं काढ़ा। आठो कुरी नाग भे ठाढ़ा ॥
छप्पन कोटि बसंदर[७] बरा। सवा लाख परबत फरहरा[८] ॥
चढ़े अत्र[९] लै कृष्ण मुरारी। इन्द्र लोक सब लाग गोहारी[१०] ॥
तैंतिस कोटि देवता साजा। औ छानवे मेघ दल गाजा ॥
दो०—नवौ नाथ चलि आवहिँ, औ चौरासी सिद्ध।
आजु महा भारथ चले, गगन गडुर औ गिद्ध ॥ २८६ ॥

चौपाई

मै आज्ञा को भाट औभाऊ[११]। बायें हाथ दिये बरम्हाऊ[१२] ॥
को जोगी अस नगरी मोरी। जो दै सेंधि चढ़ै गढ़ चोरी ॥
इँदर डरै नित नावै माथा। कृष्ण डरै कारी जेइँ नाथा ॥
बरम्हा डरै चतुरमुख जासू। औ पाताल डरै बलि बासू[१३] ॥
धरति हलै चल मंदर मेरू। चाँद सुरिज औ गगन कुबेरू ॥
मेघ डरै बिजली जेहि डीठी। कुरम डरै धरती जेहि पीठी ॥
चहौं तो सब फैंकौं धरि केसा। औ को गिनति अनेक नरेसा ॥

---

१ बरम्हाऊ=आशिर्वाद। २ असाई=(अशाली) अज्ञानी। ३ भोजू=राजा। ४ भोज=भोग्य पदार्थ (स्त्री)। ५ ओधना=लगना। ६ ब्रह्म=ब्रह्मा। ७ बसंदर=आग। ८ फरहरा=उड़ आये। ९ अत्र=अस्त्र। १० गोहार लगना=सहायता के लिए आ पहुँचना। ११ औभाऊ=(अव भावुक) बुरी भावना वाला। १२ बरम्हाऊ=आशीर्वाद। १३ बासू=बासुकिनाग।

दो०—बोला भाट नरेस सुनु, गरब न छाजा जीउ।
कुंभकरन की खोपरी, बूड़त बाँचा भीउ[1] ॥ २८७ ॥

चौपाई

रावन गरब बिरोधा रामू। ओही गरब भयो संग्रामू ॥
तस रावन अस को बरबंडा। जेहि दस सीस बीस भुज दंडा ॥
सूरज जेहि कै तपै[2] रसोई। वैसन्दर नित धोती धोई ॥
सूक सोंटिया[3] ससि मसियारा[4]। पवन करै नित बार बुहारा ॥
मीचु लाय कै पाटी बाँधा। रहा न दूसर सपनेहु काँधा[5] ॥
जो अस बजर टरै नहिं टारा। सोउ मुव दुइ तपसी कर मारा ॥
नाती पूत कोटि दस अहा। रोवनहार न एकौ रहा ॥

दो०—ओछ[6] जानि कै काहुइ, जिनि कोउ गरब करेय।
ओछी पार दई[7] है, जीतपत्र जो देय ॥ २८८ ॥

चौपाई

अब जो भाट तहाँ हुत आगे। विनय उठा राजहिँ रिस लागे ॥
भाट आहि ईसुर कै कला। राजा सब राखहिँ अरगला[8] ॥
भाट मीचु आपनि पै दीसा। तासौं कौन करै अस रीसा ॥
भयो रजायसु गंध्रपसेनी। काहे मीचु की चढ़ै नसेनी ॥
का यह आँय बाँय अस पढ़ै। करी न बुद्धि भेंट, कछु कढ़ै[9] ॥
जाति कला कस औगुन लावसि। बाँयें हाथ राज बरम्हावसि[10] ॥
भाट नाउँ का मारउँ जीवा। अबहूँ बोलु नाय कै गींवा ॥

---

१ भीउ=भीमसेन। २ रसोई तपना=भोजन पकाना। ३ सोंटिया=सोंटावरदार, चोबदार। ४ मसियारा=मशालची। ५ काँधा=कंधा से कंधा मिलानेवाला, बराबरीवाला। ६ ओछ=छोटा, कमजोर। ७ ओछीपार दई है=कमज़ोर की पालीमें ईश्वर है, बलहीन का पक्ष परमेश्वर करता है। ८ अरगला=बेंड़ा (रोक की वस्तु) सब राजाओं को अनुचित कार्य से रोक कर सीमा में रखते हैं। ९ कढ़ै=क्या तूने बुद्धि से भेंट नहीं की, जिससे तुझे कुछ लाभ होता अर्थात् क्या तू निपट मूर्ख ही है। १० बरम्हाना=ब्राह्मण की तरह असीस देना।

दो०—तुइँ रे भाट वह जोगी, तोहिँ ओहि कहाँ क संग।
कहाँ भुलाय चढ़ा वह, कहा भयो चितभंग ॥ २८९ ॥

चौपाई

जो सति पूँछसि गंध्रब राजा। सति पै कहूं परै नहिँ गाजा ॥
भाटहिँ कहा मीचु सों डरना। हाथ कटार पेट हनि मरना ॥
जंबू दीप चिताउर देसू। चित्रसेन बड़ तहाँ नरेसू ॥
रतनसेन यह ताकर बेटा। कुल चौहान जाय नहिँ मेटा ॥
खाँड़े अचल सुमेर पहारू। टरै न जो लागै संसारू ॥
दान समुद्र देत नहिँ खाँगा। जो ओहि माँग, न औरहिँ माँगा ॥
दाहिन हाथ उठायों ताही। और को अस बरम्हावौं जाही ॥

दो०—नाउँ महापातर[1] मोहिँ, तेहिक[2] भिखारी ढीठ।
खरि[3] बातन रिस लागै, खरि पै कहै बसीठ[4] ॥ २९० ॥

चौपाई

ततखन सुनि महेस मन लाजा। भाटकरा[5] होइ बिनवा राजा ॥
गंध्रबसेन तु राजा महा। हौं महेस मूरति, सुनु कहा ॥
पै जो बात होय भल आगे। कहा चही का भा रिस लागे ॥
राज कुँवर यह होय न जोगी। सुनि पद्मावत भयो बियोगी[6] ॥
जंबू दीप राज घर बेटा। जो है लिखा[7] सो जाय न मेटा ॥
तोरे सुवैं जाय ओहि आना। औ जाकर बिरोग[8] तै माना ॥
पुनि यह बात सुनी सिव लोका। करु सो बियाह धरम बड़ तोका ॥

दो०—भीख खपर लै माँगे, मुयहु न छाँडै बार।
बूझु जो कनक[9] कचोरी, भीख देहु, नहिँ मार ॥ २९१ ॥

१=महापातर=महापात्र। २ तेहिक=उसका अर्थात् चित्रसेन का। ३ खरि=खरी, सत्य। ४ वसीठ=दूत। ५ भाटकरा=भाटकी तरह। ६ बियोगी=अनुरक्त। ७ जोहै लिखा........मेटा=(देखो खंड तीसरा—सिंघल दीप भयो अवतारू। जंबूदीप जाय जम-बारू) ८ बिरोग=दुख। ९ कनककचोरी=सोने की कटोरी अर्थात् अपनी कन्या के लिये योग्य पात्र।

चौपाई

ओहट[1] होहि रे भाट भिखारी। का तू मोहिं देखि अस गारी॥
को मोहि जोग जगत होइ पारा। जा सउँ[2] हेरौं जाय पतारा॥
जोगी जती आव जित[3] कोई। सुनत तरासमान[4] भा सोई॥
भीख लेहु फिरि मांगहु आगे। ये सब रैनि रहे गढ़ लागे॥
* जस जेहि इच्छ चहौं तस दीन्हा। नाहिं बेधि सूरी जिउ लीन्हा॥
जेहि अस साध होय जिउ खोवा। सो पतंग दीपक तस रोवा॥
सुर नर मुनि गुनि[5] गंध्रब देवा। तिन्ह को गनै करै नित सेवा॥

दो०—मौसौं को सरिवर करै, रे सुनु झूठे भाट।
छार होय जो चालौं, गज हस्तिन के ठाट॥ २६२॥

चौपाई

जोगी धरि मेले सब पाछे। ओरे[6] माल्ह[7] आये रन काछे॥
मंत्रिन कहा सुनो हो राजा। देखहु अब जोगिन कर काजा॥
हम जो कहा तुम करहु न जूझा। होत आव दर[8] जगत असूझा॥
खन एक माहिं चरहँटा[9] बीतहि। दहुँ दुइ महँ को हार को जीतहि॥
कै धीरज राजा तब कोपा। अंगद आय पाउं रन रोपा॥
हस्ति पांच जो अगमन धाये। ते अंगद धरि सूँड़ि फिराये॥
दीन्ह उड़ाय सरग कहँ गये। लौटि न फिरे तहइँ के भये॥

दो०—देखत लाग अचंभव[10], हस्ती बहुरि न आय।
जोगिन कर अस जूझब, भूमि न लागै पाय॥२६३॥

---

१ ओहट=ओट, दूर। २ सउँ=सामने। ३ जित=जितने। ४ तरासमान=(त्रासमान), भयभीत। ५ गुनि=गुणी जन। ६ ओरे आये=बहुत से एकत्र हो गये। ७ माल्ह=मल्ल, योद्धा, बीर। ८ दर=दल, सेना। ९ चरहँटा बीतहि=हथियार चलने लगै गा। १० अचंभव=(असंभव) आश्चर्य।

* जिसकी जो इच्छा हो उसको मैं वैसी भिक्षा देना चाहता हूं (लड़की देने के योग्य यह जोगी नहीं है) अगर न मानैगा तो सूली देकर प्राण ले लूंगा।

चौपाई

सुना राउ जोगिन्न बल पावा। खन एक माहिँ करै रन धावा॥
जौलहि धावहिँ अस कै खेलौ। हस्तिन केर जूह सब पेलौ॥
जस गजपेल[1] होय रन आगे। तस बगमेल[2] करहु सँग लागे॥
हस्ति क जूह जबहिँ अगु[3] सारी। हनिवँत तबहिँ लँगूर पसारी॥
जबहिँ सो सैन बीच रन आये। सबहिँ लपेटि लँगूर चलाये॥
बहुतक टूटि भये नौ खंडा। बहुतक जाय परे ब्रहमंडा[4]॥
बहुतक फेंकि दिये अँतरीखा[5]। रहे जो लाख भये ते लीखा[6]॥

दो०—बहुतक परे समुँद महँ, परत न पावा खोज।
जहां गरब तहँ पीरा, जहां हँसी तहँ रोज[7]॥२६४॥

चौपाई

फिरि आगे का देखै राजा। ईसुर[8] केर घंट रन बाजा॥
सुना संख जो बिसुन अपूरा[9]। आगे हनिवँत केर लँगूरा॥
जहँ लग देव दइत नव खंडा। सरग पतार लोक ब्रहमंडा॥
बलि बासुकि औ इन्द्र नरिंदू। राहु नखत सूरज औ चंदू॥
जाँवत दानौ राकस पूरे। अहुठौ[10] बज्र आय रन जूरे॥
जिन्ह कर गरब करत हुत राजा। सो सब फिर बैरी होइ साजा॥
जहँवा महादेव रन खरा। राजा नाय गींउ पग परा॥

दो०—केहि कारन रिस कीजै, हौं सेवक औ चेर[11]।
जेहि चाहिय तेहि दीजै, बारि[12] गोसाईं केर॥ २६५॥

चौपाई

तब महेस उठि कीन्ह बसीठी[13]। पहले करू[14] अंत होइ मीठी॥
तू गंध्रब राजा जग-पूजा। गुन चौदह[15] सिख देइ को दूजा॥

---

१ गजपेल=हाथियोंका हमला। २ बगमेल=हाथों हाथ की लड़ाई। ३ अगुसारी=आगे चलाया। ४ ब्रहमंडा=अन्य ब्रह्माण्ड में। ५ अँतरीखा=अंतरिक्ष। ६ लीख=जूंके अंडे। ७ रोज=रोना। ८ ईसुर=महादेव। ९ अपूरा=(अपूर्ण) पूरे शब्द से। १० अहुट=साढ़े तीन। (हिन्दू ऐसा मानते हैं कि संसार में साढ़े तीन बज्र हैं) ११ चेर=चेला १२ बारि=बारी, लड़की। १३ बसीठी=दूतत्व। १४ करु=कड़ु। १५ गुन चौदाह=चौदहों विद्या का निधान।

हीरामनि जो तुम्हार परेवा। गा चितौर औ कीन्हेसि सेवा ॥
तेहि बोलाय पूँछहु वह देसू। औ पूँछहु जोगिहि जस भेसू ॥
हमरे कहत रीस नहिं मानौ। जो वह कहै सोई परमानौ[1] ॥
जहाँ वारि आवा वर ओका[2]। करहु वियाह धरम बड़ तोका[3] ॥
जो पहिले मन मानि न काँधै[4]। परखै रतन गाँठि तब बाँधै ॥
दो०—रतन छिपाये ना छिपै, पारखि होइ सो परीख[5]।
घालि[6] कसौटी दीजिये, कनक[7] कचोरी भीख ॥ २६६ ॥

२८—अट्ठाईसवां खंड

हीरामनि-राजा-संवाद वर्णन

चौपाई

हीरामनि जो राजैं सुना। रोष बुझाय हिये महँ गुना ॥
अज्ञा भई बोलावो सोई। पंडित ह्व ते दोष न होई ॥
एक कहत सहसक दस धाये। हीरामनिहि वेगि लै आये ॥
खोला आगे आनि मँजूसा[8]। मिला निकसि बहु दिन कर रूसा ॥
अस्तुति करत मिला बहु भांती। राजैं सुना हिये भइ साँती ॥
जानहु जरत अगिन जल परा। होइ फुलवार[9] रहस[10] हिय भरा ॥
राजैं मिलि पूँछी हँसि बाता। कस तन पियर भयो मुख राता ॥
दो०—चतुर बेद तुम पंडित, पढ़े सासतर बेद।
कहा[11] चढ़े जोगी गढ़, आनि कीन्ह घर भेद[12] ॥ २६७ ॥

---

१ परमानना=प्रमाण मानना, सत्य समझना। २ ओका=उमका। ३ तोका=तुझको। ४ काँधना=स्वीकार करना। ५ परीख=परीक्षा कर। ६ घालि कसौटी=कसौटी में कसकर। ७ कनक कचोरी=सोने की कटोरी में (योग्य पात्र में) ८ मँजूषा=पिंजड़ा, झाँपी। ९ फुलवार=प्रफुल्लित। १० रहस=आनंद। ११ कहा=क्यों, किस कारण। १२ भेद=भेदन, छेद, सेंधि।

चौपाई

हीरामनि रसना रस खोला। दै असीस औ अस्तुति बोला ॥
इन्द्रराज राजेसुर महा। सुनि हिय रिस कछु जाय न कहा ॥
पै जेहि बात होय भल आगे। सेवक निडर कहै रिस लागे ॥
सुवा सुफल[1] अँबिरित पै खोजा। होय न बिकरम राजा भोजा ॥
हौं सेवक तुम आदि गोसाईं। सेवा करौं जियौं जब ताईं ॥
जेइँ जिउ दीन्ह दिखावा देसू। सो पै जिय महँ बसै नरेसू ॥
तू सब कुछ सब ऊपर तुहीं। हौं कछु नाहिँ पंखि रतमुहीं[2] ॥
दो०—नैन बैन औ सरवन, सबही तोर प्रसाद।
सेवा मोरि यहै नित, बोलौं आसिर्वाद ॥ २६८ ॥

चौपाई

हौं पंछी सेवक तुव दासा। एक छाँड़ि चित और न आसा ॥
तेहि सेवक के करमहिँ दोसू। सेवा करत करै पति रोसू ॥
औ जब दोष निदोषहिँ लागा। सेवक डरा जीउ लै भागा ॥
जो पंखो कहँवाँ थिर रहना। ताकै जहाँ, जाय लै डहना[3] ॥
सात दीप फिरि देखेउँ राजा। जंबूदीप जाय पुनि वाजा[4] ॥
तहँ चितउर देखेउँ गढ़ ऊँचा। ऊँच राज सरि तोहि पहूंचा ॥
रतनसेन यह तहाँ नरेसू। आन्यो लै जोगी कर भेसू ॥
दो०—सुवा सुफल पै आनै, है तेहि गुन मुख रात।
कया पीत है तासों, सँवरैं बिक्रम[5] बात ॥ २६९ ॥

चौपाई

पहिले भयो भाट सत भाषी। पुनि बोला हीरामनि साखी ॥
राजैं भा निहचै मन माना। बाँधा रतन[5] छोरि कै आना ॥
कुल पूँछा चौहान कुलीना। रतन न बाँधे होय मलीना ॥

---

१ सुवा...खोजा=सुवा तो सदा मीठे ही फल खोजा करता है। २ रतमुहीं=लालमुखवाला। ३ डहना=पंख। ४ जाय वाजा=जा भिड़ा अर्थात पहुँचा। ५ विक्रम वात=राजा विक्रमादित्य ने एक वार अपनी एक रानी के कहने पर एक सुवा को मरवा डाला था—इसी कथा की ओर इशारा है। ५ रतन=राजा रतनसेन।

हीरा दसन पान रँग पागे। विहँसत बदन बीजु बर लागे॥
मुद्रा श्रवन मैन[1] सों चाँपे। राज बैन उघरे सब झाँपे॥
आना काटर[2] एक तुषारू[3]। कहा सो फेरु, भयो असवारू॥
फेरा तुरी छतीसौ खुरी[4]। सबन सराहा सिंघलपुरी॥
दो०—कुँवर बतीसो लच्छना, सहसकरा जस भान।
कहा कसौटी कसिये, कंचन बारह[5] बान॥ ३००॥

चौपाई

देखि सुरिज बर कँवल सँजोगू। अस्तु[6] अस्तु बोला सब लोगू॥
मिला सुवंस अंस उजियारा। भा बरोक[7] औ तिलक[8] सँवारा॥
अनिरुध कहँ जो लिखी जयमारा। को मेटै बानासुर हारा॥
आजु मिली अनिरुध कहँ ऊषा। देव अनन्द दैत सिर दूखा[9]॥
सरग सूर भुइँ सरवर केवा[10]। बनखँड भवँर होय रस लेवा॥
पछूं[11] क बार[12] पुरुब कै बारी। लिखी जो जोरी होय न न्यारी॥
मानुष साज लाख मन साजा। सोइ होइ जो विधि उपराजा[13]॥
दो०—गये जे बाजन बाजत, जिउ मारन रन माहिँ।
फिरि बाजन ते बाजे, मंगलचार उमाहिँ[14]॥ ३०१॥

चौपाई

बोल गोसाइँ कर मैं माना। कौन जुगुति ऊतर कहाँ आना॥
माना बोल हरष जिय बाढ़ा। औ बरोक भा टीका काढ़ा॥
दोनों मेर मेरावा भला। विग्रह[15] आप आप[16] गा चला॥
जो इन लीन्ह राज तजि जोगू। जो तप करै सो मानै भोगू॥

---

१ मैन=मोम। २ काटर=कट्टर, कटहा। ३ तुषार=सफेद घोड़ा। ४ छतीसौ खुरी=छत्तीस प्रकार की चाल। ५ कंचन बारह बान=खरा सोना। ६ अस्तु अस्तु=ऐसाही होना चाहिये, ठीक है, यही उचित है। ७ बरोक=बर-वधू का संबंध सूचक पिता की मंजूरी। ८ तिलक=लगन, विवाह का टीका। ९ दूखा=पीड़ित हुआ। १० केवा=कमल पुष्प। ११ पछूं=पश्चिम। १२ बार=बालक, बर। १३ उपराजा=रचा है। १४ उमाहि=उमंग में आकर। १५ विग्रह=झगड़ा। १६ आप आप=आपे आप, अनायास।

वह मन चित जो एकै अहा । खाई मार न दूसर कहा ॥
जो कोऊ अस जिउ पर खेवा[1] । देउता आय करैं तेहि सेवा ॥
दिन दस जीवन जो दुख देखा । भा जुग जुग सुख जाहि न लेखा ॥
दो०—रतनसेन कर बरनौं, पदमावत सँग व्याह ।
मंदिर बेगि सँवारहु, मंदिर तोर उछाह ॥ ३०२ ॥

चौपाई

लगनधरी औ रचा वियाहू । सिंघल नेवत फिरा सब काहू ॥
बाजन बाजे कोटि पचासा । भा अनंद सिगरे कैलासा ॥
जेहि दिन का नित देव मनावा । सोइ दिवस पद्मावत पावा ॥
चाँद सूर मनि माथे भागू । औ गावहिँ सब नखत[2] सोहागू ॥
रचि रचि मानिक माँड़ौ छावैं । औ भुइँ रात[3] बिछाव बिछावैं ॥
चंदन खाँभ रचे चहुँ पाँती । मानिक दिया बरहिँ दिन राती ॥
घर घर सुंदर रचे दुवारा । जाँवत नगर गीत झनकारा ॥
दो०—हाट बाट सब सिंघल, जहँ देखौं तहँ रात ।
धनि रानी पदमावत, जाकर ऐसि बरात ॥ ३०३ ॥

२९—उन्तीसवां खंड

विवाह वर्णन

चौपाई

रतनसेन कहँ कापर[4] आये । हीरा मोति पदारथ[5] लाये ॥
कुँवर सहस सँग अहें सभागे । विनय करै राजा पहँ लागे ॥
अब लग तुम साधा तप जोगू । लेहु राज मानहु अब भोगू ॥
मंजन करहु भभूत उतारहु । करि असनान चित्र[6] सम सारहु ॥

---

१ खेवा=कष्ट सहन किया । २ नखत=(यहां पर) सखियां । ३ रात=सुर्ख, लाल । ४ कापर=कपड़ा । ५ पदारथ=माणिक । ६ चित्र सम सारहु=बनाव सिंगार करो ।

काढ़हु मुद्रा फटिक अभाऊ[1]। पहिरहु कुंडल कनक जड़ाऊ ॥
छोरहु जटा फुलायल[2] लेहू। झारहु केस मुकुट सिर देहू ॥
काढ़हु कंथा चिरकुट[3] लावा। पहिरहु राता दगल[4] सोहावा ॥
दो०—पाँवरि तजि पग पायरे[5], दीजै बांक तुषार।
बाँधि मौर धरि छत्र सिर, वेगि होहु असवार ॥ ३०४ ॥

चौपाई

साजा राजा बाजन बाजै। मदन सहाय दोउ दल गाजे ॥
औ राता सोने रथ साजा। भइ बरात गोहन[6] सब राजा ॥
बाजत गाजत भा असवारा। सब सिंघल मिलि कीन्ह जुहारा ॥
चहुँदिस मसियर[7] नखत तराई। सूरज चढ़ा चांद की ताई ॥
सब दिन तपा जैस हिय माहाँ। तैस रैनि पाई सुख छाँहाँ ॥
ऊपर छत्र रात तस छावा। इन्द्र लोक सब सेवा आवा ॥
आजु इँदर अच्छर[8] सो मिला। सब कैलास होय सोहिला[9] ॥
दो०—धरती सरग चहूं दिस, पूर रहीं मसियार[10]।
बाजत आये मँदिर कहँ, होहिं मंगलाचार ॥ ३०५ ॥

चौपाई

पदमावत धौराहर[11] चढ़ी। दहुँ कस रबि जाकहँ ससि गढ़ी ॥
देखि बरात सखिन सों कहा। इन्ह महँ कौन सो जोगी अहा ॥
कै सो जोग लै ओर निबाहा। भयो सूर चढ़ि चाँद बियाहा ॥
कौन सिद्ध सो ऐस अकेला। जेइँ सिर लाय पेम सो खेला ॥
कासों पितैं बचा[12] अस हारी। उतर न दीन्ह दीन्ह तेहिं बारी[13] ॥
का कहँ दइउ ऐस जिउ दीन्हा। जेइँ जिउ मारि जीति रन लीन्हा ॥
धनि सो पुरुष नवा न नवाये। सुपुरुष होइ रहा देस पराये ॥

---

१ अभाऊ=तुच्छ, असुंदर, जो न भावै। २ फुलायल=फुलेल। ३ चिरकुट लावा=टुकड़े लगे हुए। ४ दगल=दगला, जामा। ५ पायरा=रकाब (घोड़े के चार जामा के) ६ गोहन=साथ। ७ मसियर=मशाल। ८ अच्छर=अप्सरा। ६ सोंहिला= मंगल गीत। १० मसियार=मशाल। ११ धौराहर=ऊँचा महल, मीनार। १२ बचा=वाचा, वचन। १३ बारी=कन्या, लड़की।

दो०—को बरवंड[1] बीर अस, मोहिं देखै कर चाव[2]।
पुनि जाग्रहि जनवासहिं, सखी री वेगि दिखाव ॥ ३०६ ॥

चौपाई

सखी दिखावहिं चमकैं वाहू। तू जस चाँद सुरिज तोर नाहू[3] ॥
छिपा न रहै सुरिज परकासू। देखि कँवल मन भयो बिकासू ॥
वह उजियार जगत उपराहीं[4]। जग उजियार सो तेहिं परछाहीं ॥
जस रवि दीख उठे परभाता। उठा छत्र देखहिं सब राता ॥
वहै माँझ मा दूलह सोई। और बरात संग सब कोई ॥
सहसहुकरा रूप बिधि गढ़ा। सोने के रथ आवै चढ़ा ॥
मनि माथे दरसन उजियारा। सौंह[5] निरखि नहिं जाय निहारा ॥
दो०—रूपवंत जस दरपन, धनि तूं जाकर कंत।
चाहे जैस मनोहरा, मिला सो मन भावंत ॥ ३०७ ॥

चौपाई

देखा चाँद सुरिज जस साजा। आठौ अंग मदन तन गाजा ॥
हुलसे नैन दरस मद माते। हुलसे अधर रंग[6] रस राते ॥
हुलसा वदन ओप[7] रवि आई। हुलसा हिय कंचुक[8] न समाई ॥
हुलसे कुच कसनीवँद[9] टूटे। हुलसीं भुजा वलय[10] कर फूटे ॥
हुलसि लंक गा रावन राजू। राम लखन दर[11] साजहिं साजू ॥
आजु चाँद घर आवा सूरू। आजु सिंगार होय सब पूरू[12] ॥
आजु कटक जोरा हठि कामू। आजु विरह सौं होइ सँगरामू ॥
दो०—अंग अंग सब हुलसे, कोउ कतहूँ न समाइ।
ठाँवहिं ठाँउ विमोही, गइ मुरछा गति आइ ॥ ३०८ ॥

चौपाई

सखी सँभारि पियावहिं पानी। राजकुँवरि काहे कुँम्हिलानी ॥
हम तो तोहि दिखावा पीऊ। तू मुरझानि कैस भा जीऊ ॥

---

१ बरवंड=अत्यंत वली। २ चाव=शौक। ३ नाह=पति। ४ जग उपराहीं=सारे संसार से ऊपर (अधिक)। ५ सौंह=सामने। ६ रंग=प्रेम। ७ ओप=चमक। ८ कंचुक=वस्त्र। ९ कसनी=अँगिया, चोली। १० वलय=चूड़ियां। ११ दर=दल। १२ पूरू=पूर्ण।

सुनहु सखी सब कहैं बियाहू। मोहि कहँ जैस चांद कहँ राहू॥
तुम जानहु आवै पिउ साजा। यह धमधम मो पर सब बाजा॥
जेत[1] बराती आंव सवारा। ये सब मोरे चालनहारा[2]॥
सो आगम[3] देखत हौं झखी[4]। आपन रहन न देखौं सखी॥
होइ बियाह पुनि होई गवना[5]। गवनव इहाँ बहुरि नहिं अवना॥
दो०—अब सो मिलन कित हे सखी, परा बिछोहा[6] टूट।
तैस गाँठि पिउ जोरव, जनम न होई छूट॥३०९॥

चौपाई

आय बजावत बैठि बराता। पान फूल सेंदुर सब राता॥
जहँ सोने कर चित्र सँवारे। आनि बराती तहँ बैठारे॥
माँझ सिंहासन पाट सँवारा। दूलह आनि तहाँ बैसारा॥
कनक खंभ लागे चहुँ पाँती। मानिक दिया बरहिं दिन राती॥
भयो[7] अचल ध्रुव जोग पखेरू। फूल बैठ थिर जैस सुमेरू॥
आजु दई हौं कीन्ह सुभागा। जस दुख कीन्ह नेग[8] सब लागा॥
आजु सूर ससि के घर आवा। चाँद सुरिज दुहुँ भयो मेरावा॥
दो०—आजु इंद्र होइ आयौं, स्यौं[9] बरात कैलास।
आजु मिली मोहिं अछर[10], पूजी मन की आस॥३१०॥

चौपाई

होन लाग जेंवनार पसारा[11]। कनक पत्र परसे पनवारा॥
सोन थार मनि मानिक जरे। राउ रंक सब आगे धरे॥
रतन जड़ाऊ खोरा[12] खोरीं। जन जन आगे सौ सौ जोरी॥

---

१ जेत=जितने। २ चालनहार=लेजानेवाले। ३ आगम=भविष्य। ४ झखी=झंखी, दुखी हुई। ५गवना=द्विरागमन। ६ बिछोहा=जुदाई। ७ भयो अचल...... सुमेरु=राजा रतन सेन का मन अनेक संकल्प विकल्पों में पड़ा हुआ पक्षी की तरह चंचल रहा करता था, इस मौके पर उस मन को अचल ध्रुवजोग प्राप्त हुआ और प्रसन्न होकर सुमेरु की तरह स्थिर होकर बैठा। ८ नेग सब लागा=सब नेगे लग गया, सब परिश्रम ठिकाने लगा और अच्छा फल मिला। ९ स्यौं=सहित। १० अछर=अप्सरा। ११ पसार=तैयारी। १२ खोरा खोरी=कटोरा कटोरी।

गडुवन हीर पदारथ[१] लागे। देखि बिमोहे पुरुष सभागे॥
जानहु नखत करहि उजियारा। छिप गये दीपक औ मसियारा॥
भइ मिलि चाँद सुरिज की कला। भा उदोत तैसे निरमला॥
जेहि मानुस कहँ जोति न होती। तेहि भइ जोति देखि वह जोती॥
दो०—पांति पांति सब बैठे, भांति भांति ज्यौनार।
कनक[२] पाट तर धोती, कनक-पत्र पनवार॥ ३११॥

चौपाई

पहले भात परोसा आनी। जनहु सुबास कपूर बसानी॥
झालन[३] माँड़े औ घी पोई[४]। उजियर देखि पाप गये धोई॥
लुचई[५] पुवा सोहारि[६] पकौरी। एक तौ ताती औ सुठि कौंरी[७]॥
खँड़रा[८] खाँड़ जो खंड खँड़ौरी[९]। बरी इकोतरसौ[१०] कुम्हड़ौरी[११]॥
पुनि सँधान[१२] आने बहु साँधे। दूध दही कै मोरन[१३] बाँधे॥
पुनि बावन परकार जो आये। नहिं अस दीख न कबहूं खाये॥
पुनि जाउरि बीजाउरि[१४] आई। घिरित खाँड़ का कहौं मिठाई॥
दो०—जेंवत अधिक सुबासित, मुँह महँ परत बिलाय।
सहस स्वाद सो पावै, एक कौर जो खाय॥ ३१२॥

चौपाई

जेंवन[१५] आवा बीन न बाजा। बिन बाजा नहिं जेंवै राजा॥
सब कुँवरन पुनि खैंचा हाथू। ठाकुर जेंव तो जेंवैं साथू॥
बिनय करहिं पंडित बिचवाना। काहे नहिं जेवहु जजमाना॥
यह कैलास इँदर कर बासू। यहाँ न अन्न न माछर माँसू॥

---

१ पदारथ=माणिक। २ कनक पाट तर धोती=सोने के पीढ़े पड़े हैं जिनके नीचे धोया हुआ बिछौना बिछा है। ३ झाल=बड़ा टोकरा। ४ घीपोई=खस्ता रोटी। ५ लुचई=छोटी और मुलायम पूड़ी। ६ सोहारी=बड़ी पूड़ी। ७ कौंरी=कोमल। ८ खँड़रा खाँड़=रसाजों के टुकड़े। ९ खँड़ौरी=अमृतवरी नामक भोजन (मीठी रसाजें)। १० एकोतर सौ=(एकोत्तर शत) १०१ प्रकार की। ११ कुम्हड़ौरी=कुम्हड़ा की बरी। १२ सँधान=अचार। १३ मोरभ=शिखरन। १४ बिजाउरि=खरबूजा इत्यादि के बीजों की खीर। १५ जेंवन=भोजन।

पान फूल बाँछहिं[1] सब कोई। तुम कारन यह कीन्ह रसोई॥
भूख तो जनु अमृत अन[2] सूखा। धूप तो सीरक[3] नींबी रूखा॥
नींद तो भुइँ जनु सेज सुपेती[4]। छाँड़ेहु का चतुराई एती॥

दो०—कौन काज केहि कारन, बिलग[5] भयो जजमान।
होइ रजायसु सोई, बेगि देहि हम आन॥ ३१३॥

चौपाई

तुम पंडित जानहु सब भेदू। पहिले नाद भयो तब बेदू॥
आदि पिता[6] जो बिधि औतारा। नाद संग जिउ कया सँचारा॥
सो तुम बरजि नेग[7] का कीन्हा। जेंवन संग भोग बिधि दीन्हा॥
नैन बैन नासिक दुइ श्रवना। येहि चारो सँग जेंवन अवना॥
जेंवन देखा नैन सिराने। जीभ सवाद भुगुति रस जाने॥
नासिक सबै बासना[8] पाई। सरवन का सँवरहिं पहुनाई[9]॥
तिन्ह कहँ होय नाद तें तोषू। तब चारिहु कर होइ सँतोषू॥

दो०—सुनहिं साध और सिद्ध जन, जिनहिं परा कछु सूझि।
नाद सुनब जो बरजेहु, पंडित तुम का बूझि॥ ३१४॥

चौपाई

राजा उतरु सुनौ अब सोई। महि डोलै जो बेद न होई॥
नाद बेद मद[10] पैंड़[11] जो चारी। काया महँ ते लेहु बिचारी॥
नादहिं ते उपजी यह काया। जस मद पिया पैंड़ तेहिं छाया॥
सुधि नहिं और जूझि सो करई। जो न बेद आँकुस सिर धरई॥
जोगी होय नाद सो सुना। जेहि सुनि काम जरै चौगुना॥

---

१ बाँछहिं=बांछा करते हैं, चाहते हैं। २ अन=अन्न। ३ सीरक=ठंढा। ४ सुपेती=तोशक। ५ बिलग=अप्रसन्न, नाखुश। ६ आदि पिता=हज़रत आदम। ७ नेग=रीति, रस्म। ८ बासना=सुगंध। ९ सरवन......पहुनाई=तुम्हारी पहुनाई की याद कान कैसे करेंगे। १० मद=नशा (किसी कार्य विशेष की ओर चित्त की आसक्ति)। ११ पैंड़=रास्ता, मज़हब, मत।

कै[1] जो प्रेम तंत मन लावा। घूम[2] मात तस और न भावा ॥
कै जो धरम पंथ होइ राजा। सो पुनि सुनै ताहिँ कहँ छाजा ॥

दो०—जस मद पिये घूम कोउ, नाद सुने पै घूम।
तेहि ते बरजन छाजै, चढ़ै रहस[3] कै दूम[4] ॥ ३१५ ॥

चौपाई

भइ ज्यौंनार फिरा खँडवानी[5]। फिरा अरगजा कुँह कँह[6] बानी ॥
फेरे पान फिरा सब कोई। लाग वियाहचार सब होई ॥
माँड़ौ सोन क गगन सँवारा। बंदनवार लाग सब बारा ॥
साजा पाट छत्र के छाहाँ। रतन चौक पूरी तेहिँ माहाँ ॥
कंचन कलस नीर भरि धरा। इन्द्र[7] पास आनी अपसरा[8] ॥
गाँठ दुलह दुलहिनि कै जोरी। दुहू जगत जो जाय न छोरी ॥
वेद पढ़ै पंडित तेहि ठाऊँ। कन्या तुला रासि लै नाऊँ ॥

दो०—चांद सुरिज दोउ निरमल, दुउ संयोग अनूप।
सुरिज चाँद सों भूला, चाँद सुरिज के रूप ॥ ३१६ ॥

चौपाई

दुहूँ नाउँ लै गोत उचारा। सेंदुर लीन्ह कुँवरि सिर सारा ॥
चांद के हाथ दीन्ह जैमाला। चाँद आय सूरज गिउँ घाला ॥
सूरज लीन्ह चाँद पहिराई। हार नखत[9] नियरहिँ सो पाई ॥
पुनि धन भरि अंजुलि जल लीन्हा। जोबन जनम कंत कहँ दीन्हा ॥
कंत लीन्ह दीन्हों धन हाथा। जोरी गाँठ दुहूँ इक साथा ॥
चाँद सुरिज दोउ भाँवरि लेहीं। नखत[9] मोति न्यौछावरि देहीं ॥
फिरे दोउ सतफेरा टेकै[10]। फेरा सात गाँठ पुनि एकै ॥

---

१ कै=कि तो, या तो। २ घूम मात तस=मस्त की तरह घूमता है। ३ रहस=आनंद। ४ दूम=अधिकता। ५ खँडवानी (खाँड़+पानी) शरबत, मीठा पानी। ६ कुंहकुंह=कुंकुम। ७ इन्द्र=राजा रतन सेन। ८ अपसरा=पदमावती। ९ नखत=सहेलियां। १० टेकै=(टेक) मांड़ो का खंभा जिसके गिर्द भाँवर फिरते हैं।

दो०—भईं भाँवरि न्यौछावरि, नेग चार सब कीन्ह।
दाइज कहौं कहाँ लगि, गनि न जाय जत[1] दीन्ह ॥ २१७ ॥

चौपाई

रतनसेन तव दाइज पावा। गँधरबसेन आय कँठ लावा[2] ॥
मानुष चित आन कछु कोई। करै गोसाईं[3] सो पै होई ॥
अब तुम सिंघलदीप गोसाईं। हम सेवक आहैं सेवकाई ॥
जस तुम्हार चितउरगढ़ देसू। तस तुम यहाँ हमार नरेसू ॥
जंबूदीप दूर का काजू। सिंघलदीप करहु नित राजू ॥
रतनसेन विनवा कर जोरी। अस्तुति[4] जोग जीभ कहँ मोरी ॥
तुम गोसाइँ तन[5] छार छुड़ाई। कै मानुष अति दीन्ह बड़ाई ॥

दो०—जो तुम दीन्ह सो पावा, जिअन जनम सुख भोग।
नाहिं त खेह[6] पायँ कै, हौं जोगी केहि जोग ॥ २१८ ॥

३०—तीसवां खण्ड

धौराहर वर्णन

चौपाई

धौराहर पर दीन्ह अवासू[7]। सात खंड सातौ कयलासू ॥
सखीं सहस दस सेवा पाईं। जनहु चाँद सँग नखत तराईं ॥
होइ मंडल ससि के चहुँ पासा। ससि सूरहिं लै चढ़ीं अकासा ॥
चलि सूरज दिन अथवै[8] जहाँ। ससि निरमल तब आवै तहाँ ॥
गंध्रब सेन धौराहर कीन्हा। दीन्ह न राजहिं जोगिहि दीन्हा ॥
मिलीं जाय ससि के चहुँ पाहाँ। सुरिज[9] न चांपे पावै छाँहाँ ॥
अब जोगी गुरु पावा सोई। उतरा जोग भसम गै धोई ॥

---

१ जत=जितना। २ कंठ लावा=गले लगाकर मिला। ३ गोसाईं=ईश्वर। ४ अस्तुति=प्रशंसा। ५ तन छार छोंड़ाई=जोगी भेष त्यागने का कारण हुए। ६ खेह=राख, धूल। ७ अवासू=वास। ८ अथवना=अस्त होना। ९ सुरिज....छांहाँ=सूर्य जिसके निकट तक नहीं पहुंच सकता।

दो०—सात खंड धौराहर, सात रंग नग[1] लाग।
मनहु चढ़ा कयलासहि, दिष्टि-पाप सब भाग ॥ ३१९ ॥

चौपाई

चेरि सहस दस पाईं भलीं। धन गोहन[2] धौराहर चलीं ॥
सातखंड साजा उपराहीं। रानिहिं लिहे सो गावत जाहीं ॥
औ राजा कहँ बातन लावहिं[3]। खंड खंड कौतुक दिखरावहिं ॥
पहले खंड जो देखै राजा। फटिक पखान कनक सब साजा ॥
जस दरपन महँ देखी देहा। चित्र साज सब कीन्ह उरेहा ॥
सावज[4] पंखी कीन्ह चितेरी। और पारधी[5] मिरिग अहेरी ॥
औ जाँवत जत त्रिभुवन लिखा। जनु सब ठाढ़ देहिं आसिखा[6] ॥

दो०—देखि सराहा राजा, गंध्रब सेन कै राज।
धन्य चक्कवै[7] राजा, जो रे मँदिल अस साज ॥ ३२० ॥

चौपाई

दुसर खंड सब रूप[8] सँवारा। साजे चाँद सुरिज औ तारा ॥
तिसर खंड सब कनक जराऊ। नग जो जरे अस दीख न काऊ ॥
चौथ खंड सब मानिक जरे। देखि अनूप पाप सब जरे ॥
पँचएं हीरा ईंट जरावा। औ सब लाग कपूर गिलावा[9] ॥
छठयें लाग रतन नग मोती। होइ उजियार जगमगै जोती ॥
जगत जोति सब खंभै धरे। सब जग जनु दीआ अस बरे ॥
तहाँ न दीपक औ मसियारा। सब नग जोति होय उजियारा ॥

दो०—अस उजियार होय तहँ, चाँद सुरिज नहिं पार।
ओहि उजियारे आउ जो, सोउ लखाय उजियार ॥ ३२१ ॥

---

१ नग=रत्न। २ धन गोहन=मालकिन के साथ साथ। ३ बातन लावहिं=बातों में बहलाती हैं। ४ सावज=वन जंतु। ५ पारधी=वधिक, ब्याधा। ६ आसिखा=(आशिष) आशिर्वाद। ७ चक्कवै=चक्रवर्ती। ८ रूप=चाँदी। ९ गिलावा=गारा।

चौपाई

सातौं खंड उपर कयलासू[1]। का बरनौं जस उत्तम बासू ॥
हीरा ईंट कपूर गिलावा। मलयागिर चंदन सब लावा ॥
चूना कीन्ह औटि गजमोती। मोतिन चाहि अधिक तेहि जोती ॥
बिसकरमैं निज हाथ सँवारा। चारौ ओर चारि चौबारा[2] ॥
अति निरमल नहिं जाय बिसेखा[3]। जस दरपन महँ दरसन देखा ॥
भुइँ गच जानहु समुँद हिलोरा। कनक खाँभ जनु रचा हिँडोरा ॥
रतन पदारथ[4] होइ उजियारा। भूले दीपक औ मसियारा ॥
दो०—तहाँ अछर[5] पदमावत, रतन सेन के पास।
सातो सरग[6] हाथ जनु, औ सातौ कयलास[7] ॥ ३२२ ॥

३१—इकतीसवाँ खण्ड

सेज वर्णन

चौपाई

पुनि तहँ रतनसेन पगुधारा। जहाँ रतन नौ सेज सँवारा ॥
पुतरी गढ़ि गढ़ि खंभन काढ़ीं। जनु सजीव सेवा हित ठाढ़ीं ॥
काहु हाथ चंदन कै खोरी। कोउ सेंदुर कोउ गहे सेंधौरी[8] ॥
कोउ कुँहकुँह केसर ले रहैं। लावैं अंग रहसि जनु चहैं ॥
कोऊ लिहे कुमकुमा चोवा। दहुँ कब चहै ठाढ़ि मुख जोवा ॥
कोउ बीरी कोउ लीन्हे बीरा। कोउपरिमल[9]अतिसुगँधसमीरा ॥
काहु हाथ कस्तूरी मेदू[10]। भांतिहिं भांति लाग सब भेदू ॥
दो०—पाँतिहिँ पाँति चहूं दिस, सब सोंधे कै हाट।
माँझ रचा इन्द्रासन, पदमावत् कहँ पाट ॥ ३२३ ॥

---

१ कयलास=अमरावती, इन्द्रपुरी। २ चौबारी=चौपाल, बैठक। ३ नहिं जाय बिसेखा=विशेष वर्णन नहीं किया जा सकता। ४ पदारथ=माणिक। ५ अछर=अप्सरा। ६ सरग=आकाश। ७ कयलास=स्वर्ग, इन्द्रपुरी। ८ सेंधौरी=सेंदुर भरने की डब्बी। ९ परिमल=सुगंध। १० मेद=इत्र।

चौपाई

सात खंड ऊपर कयलासू। तहँ सोउनार[1] सेज सुख बासू॥
चारि खाँभ चारिउ दिस धरे। हीरा रतन पदारथ जरे॥
मानिक दिया जरै औ मोती। होइ उजियार रहा तेहि जोती॥
ऊपर राता चँदवा छावा। औ भुइँ सुरँग बिछाव बिछावा॥
तेहि महँ पलँग सेज सुख डासी[2]। कीन्ह बिछावन फूलहिँ वासी[3]॥
दुहु दिस गेंडुवा[4] औ गलसूई[5]। काची पाट[6] भरी धुनि रूई॥
फूलहिँ[7] भरी ऐस कोइ जोगू। को तहँ पौढ़ि मान रस भोगू॥
दो०—अति सुकवारि[8] सेज वह, छुवै न पारै कोइ।
देखत[9] नवै खिनहि खिन, पाँव धरत कस होइ॥३२४॥

चौपाई

सखी कुतूहल करहिँ धमारी[10]। कोइ हँसै कोइ आखहिँ[11] गारी।
होइ मनोरा मंगल चारा। कोइ आनि मेलहिँ गिउँ हारा॥
कोउ मुसकाइ उझकि झुकि परहीँ। कोउ मुख मोरि मोरि मन हरहीं॥
बोलैं बैन नैन कोउ फेरी। कोउ छुरि संग लेहिँ तिन्ह घेरी॥
अंचल उलटि चलैं कोउ बांकी। कोउ हरखाहिं झरोखन झाँकी॥
कोउ धरि बाँह नाह मुख हेरहिँ। कोउ सुगंध लै अंगन फेरहिँ॥
कोउ राजहिँ रस रंग रिझावहिँ। कोउ हँसि हँसि रस पान खवावहिँ॥
दो०—गायन गावहिँ अनँद सों, सेज सबद झनकार।
पँवरि पँवरि सखि हरषित, करहिं मंगलाचार॥३२५॥

चौपाई

कनक थार हीरा भरि हाथू। गावहिँ गीत सखी दस साथू॥
तिन कर रूप न जाय बखाना। जिन्ह देखा तिनहीं पै जाना॥

---

१ सोउनार=सोने का कमरा। २ डासी=बिछी हुई है। ३ वासी=सुवासित करके। ४ गेंडुवा=तकिया। ५ गलसुई=गालों के नीचे रखने के अत्यंत मुलायम और छोटे तकिये। ६ काची पाट……रूई=जिनमें कच्ची रेशम रुई की तरह धुन कर भरी गई थी। ७ फूलहिं भरी=मानौ वे तकियाँ आनंद से भर कर फूल उठी हैं। ८ सुकुवारि=मुलायम। ९ देखत=अत्युक्ति अलंकार। १० कुतूहल=हँसी मज़ाक़। ११ आखहिं=कहतीं हैं।

रतन पदारथ लै लै जोरी। चाँद सुरिज अस कला अँजोरी॥
इन्द्रराज़ अछरन ज्यौं पावा। आजु सिँगार होय जस भावा॥
देखु सखी सब दिष्टि पसारी। एक ते एक काम जनु ढारी॥
जो आई साजे धज[1] नई। पुनि सो चली अंत[2] कहँ भई॥
का तिन्ह कहँ भूठे मन दौरा। जो दौरावै मन सो बौरा॥

दो०—चित्रसारि महँ चित्र सी, छिटकि रहीं छबि छाय।
जो तिन्ह भूले ते लुटे, जिन्ह चेते सो पाय॥३२६॥

चौपाई

राजैं तपत सेज जो पाई। गांठि छोरि धन सखिन छिपाई॥
अहै कुँवर हमरे अस चारू[3]। आजु कुँवरि कर करब सिँगारू॥
हरद उतारि चढ़ाउब रंगू। तब निस चांद सुरिज कर संगू॥
जस चातक मुख तकै सेवाती। राजा चख जोहै तेहि भांती॥
जोगि छरा[4] जनु अछरन साथा। जोग हाथ कर भयो बिहाथा॥
देइ चित्र कर लै अपसईं[5]। मित्र अमोल छीन लै गईं॥
बैठा खोय जरी औ बूटी। लाभ न पाउ मूर भइ टूटी॥

दो०—खाय रहा ठग लाडू, तंत मंत बुधि खोय।
भा धौराहर बनखँड, ना हँसि आव न रोय॥ ३२७॥

चौपाई

अस तप करत गयो दिन भारी। चारि पहर बीते जुग चारी॥
परी साँझ पुनि सखी सो आईं। चांद कहा, उपनीं[6] जो तराईं॥
पूँछहिँ गुरू कहाँ रे चेला। बिनु ससि रह कस सूर अकेला॥
धात[7] कमाय सिखे तू जोगी। अब कस अस निरधात[8] वियोगी॥

---

१ धज=बनाव सिंगार। २ अंत=अन्यत्र, अंत कहँ भई, अन्यत्र को चली गई। ३ चार=चाल, रीति। ४ छरा=छला। ५ अपसईं=चली गई। ६ उपनीं=उत्पन्न हुईं अर्थात् प्रगट हुईं। ७ धात कमाना=कीमिया बनाना। ८ निरधात=शक्ति रहित।

कहाँ सो खोयो बीरव[1] लोना[2]। जेहि ते होय रूप औ सोना ॥
कस हरतार पार नहिँ पावा। गंधक कहाँ कुरकटा[3] खावा ॥
कहाँ छिपायहु चांद हमारा। जेहि बिनु रैनि जगत अँधियारा ॥

दो०—नैन कौड़िया हिय समुँद, गुरू सो तेहि महँ जोति।
मन मरजिया न होइ परै, हाथ न आवै मोति ॥ ३२८ ॥

चौपाई

का पूँछहु तुम धात निछोही। जो गुरु कीन्ह अँतरपट[4] ओही ॥
सिधि गुटका जो मोसों कहा। भयो राँग सत हिये न रहा ॥
सो न रूप जासों दुख खोलों। गयो भरोस ताँब का बोलों ॥
जहँ लोना बिरवा कै जाती। कह को सँदेस आन को पाती[5] ॥
कै जो पार हरतार करीजै। गंधक देखि अबहिं जिउ दीजै ॥
तुम जोरा[6] कै सूर मयंकू। पुनि बिछोहि कस लीन्ह कलंकू ॥
जो यहि घरी मिलावै मोहीं। सीस देउँ बलिहारी ओही ॥

दो०—होइ अबरख इँगुर भया, फेरि अगिन महँ दीन्ह।
काया पीपर होय कनक, जो तुम चाहौ कीन्ह ॥ ३२९ ॥

चौपाई

का बिसाय[7] जो गुरु अस बूझा। चकाव्यूह[8] अभिमनु ज्यौं जूझा ॥
बिष जो दीन्ह अँबिरितु दिखराई। ओहिँ रे निछोहहिँ को पतियाई ॥
मरै सु जान होय तन सूना। पीर न जानै पीर-बिहूना ॥
पार न पाव जो गंधक पिया। सो हरतार कहौ किमि जिया ॥
हम सिधि गुटिका जानैं नाहीं। कौन धात पूंछौ तेहिँ पाहीं ॥

---

१ बीरव=बीरवा, पौधा। २ लोना=(क) सुंदर, (ख) लोनिया नामक शाक विशेष। ३ कुरकुटा=टुकड़ा। ४ अंतरपट=परदा। ५ पाती=(क) पत्ती, (ख) चिट्ठी। ६ जोरा करना=(क) मिलाना, (ख) एक रुपया भर चांदी में एक रुपया भर राँगा मिलाकर दो रुपया भर चांदी बना लेने को रसायनी लोग 'जोड़ा करना' कहते हैं। ७ बिसाना=वश चलना। ८ चकाव्यूह=चक्रव्यूह।

अब तेहिं बाज[1] राँग[2] भा डोलौं। होय सार[3] तो बरगी[4] बोलौं ॥
अबरख कै तन इंगुर कीन्हा। सो तन फेरि अगिन महँ दीन्हा ॥

दो०—मिलि जो पिरीतम बिछुरै, काया अगिन जराय।
कै सो मिले तन-तप बुझै, कै अब[5] मुएहिं बुझाय ॥ ३३० ॥

चौपाई

सुनि कै बात सखी सब हँसीं। जनहु- रैनि तरईं परगसीं ॥
अब सो चाँद गगन महँ छपा। लालच कै कित पावसि तपा ॥
हमहुँ न जानैं दहुँ सो कहाँ। करब खोज औ बिनउब तहाँ ॥
औ अस कहब आहि परदेसी। करु माया हत्या जनि लेसी ॥
पीर तुम्हारि सुनत होइ छोहू। देव मनाउ होइ अस ओहू ॥
तू जोगी तप करु मन जथा। जोगिहिं कौन राज कै कथा ॥
वह रानी जहवाँ सुख राजू। बारह अभरन करै सो साजू ॥

दो०—जोगी दृढ़ आसन करु, अस्थिर धरु मन ठाउँ।
जो न सुने तौ अब सुनु, बारह अभरन नाउँ ॥ ३३१ ॥

चौपाई

प्रथमै मंजन होय सरीरू। पुनि पहिरै तन चंदन चीरू ॥
साजि मांग सिर सेंदुर सारा। पुनि ललाट रचि तिलक सँवारा ॥
पुनि अंजन दोउ नैनन करै। पुनि दुउ कानन कुंडल धरै ॥
पुनि नासिक भल फूल अमोला। पुनि रातै[6] मुख खाय तमोला[7] ॥
गिउँ अभरन पहिरै जहँ ताईं। औ पहिरै कर कँगन कलाई ॥
कटि छुद्रावलि[8] अभरन पूरा। पायन पहिरै पायल[9] चूरा[10] ॥
बारह अभरन यही बखानें। ते धारै बरहौ अस्थाने ॥

---

१ बाज=बगैर, बिना। २ राँग=(क) राँगा, (ख) रंक, निर्धन। ३ सार=(क) लोहा, (ख) तत्व वस्तु। ४ बरगी=(क) तिपनिया नामक बूटी, (ख) अपने वर्गवाला। ५ अब मुएहिं बुझाय=मेरे मरने पर बुझैगी। ६ रातै=लाल करै। ७ तमोल=पान। ८ छुद्रावलि=क्षुद्रघंटिका, किंकिणी। ९ पायल=पाज़ेब। १० चूरा=कड़ें।

दो०—पुनि सोरहौ सिंगार जस, चारहु जोग कुलीन।
दीरघ चारि चारि लघु, चारि सुभर[1] चहुँ खीन ॥ ३३२ ॥

चौपाई

पद्मावत जो सँवारै लीन्हो। जनु रति रूपवती रस भीनी ॥
लै मंजन[2] तन कीन्ह अन्हानू। पहिरयो चीर गयो छिपि भानू ॥
केस झारि कै काढ़ी मांगा। जानहुँ निकसि खाँड़[3] भा नाँगा ॥
जनु गजपंथ[4] गगन निसि देखा। गए रबि किरिन रही इमि लेखा ॥
जनहु चंद निकलंक[5] दिखाई। सुरसरि आय सु सील भराई ॥
जो न तरंग दुहूँ दिस देई। मांग गांग जग करवत लेई ॥
सरन लीन्ह तीरथ तिरवेनी। माँगै रुहिर माँग जिउ लेनी ॥

दो०—बेनी मांग सँवारि कै, दीन्ह पीठि पर मेलि।
मोर भँवर तहँ देखिये, करैं दुहूँ दिस केलि ॥ ३३३ ॥

चौपाई

रचि पत्रावलि[6] माँग सेंदूरी। भरि मोतिन औ मानिक पूरी ॥
निकसि किरिनि आवा जनु सूरू। ससि औ नखत होयँ सब चूरू ॥
चंदन चित्र भये बहु भाँती। मेघ घटा महँ जनु बकपाँती ॥
सिर जो रतन मानिक बैसारा। जानहु टूट गगन निसि तारा ॥
तिलक जराउ जो दीन्ह लिलारा। बैठ दुइज ससि सोहिल[7] तारा ॥

---

१ सुभर=भरे हुए, मांसल।

दीरघ चारि=केश, करांगुली, नेत्र, कंठरेखा। चारि लघु=दांत, कुच, ललाट, नाभि। चारि सुभर=कपोल, नितंब, जंघा, भुजदंड। चहुँ खीन=नासिका, अधर, पेट, कटि।

२ मंजन=उबटना। ३ खाँड़=खाँड़ा (तलवार)। ४ गजपंथ=हाथी की राह (आकाशगंगा)। ५ चंद निकलंक=द्वितीया का चंद्रमा। ६ पत्रावलि=पत्रभंग रचना (मरवट की रचना)। ७ सोहिल तारा=सुहेल नामक सितारा (जो अरब देश के यमन नामक प्रांत से दिखलाई पड़ता है) यह अरबी साहित्य की उपमा है। उर्दू शायर कहता है—"जो कशका संदल लगा जबीं पर तो पास अबरू के खाल भी है। सिपहूं खूबी पै बद्र भी है सुहेल भी है हिलाल भी है।"

मनि कुंडल पहिराये लोने। जनु कौंधा लपकै दुहुँ कोने॥
तेहि ऊपर खोटिला[1] धुव दोऊ। दिपहिं दीप भूला सब कोऊ॥

दो०—पहिरि जरावा ठाढ़ि भै, कहि न जाय तस भाव।
मानहु दरपन गगन भा, तहँ ससि तार दिखाव॥ ३३४॥

चौपाई

बाँक नयन औ अंजन रेखा। खंजन जानु सरद रितु देखा॥
जो जो हेर फेर मुख मोरी। लरै चंद महँ खंजन जोरी॥
भौहैं धनुष धनुष पै हारा। नैनन साधि बान विष मारा॥
रतन-फूल[2] नासिक अति सोभा। ससि मुख आय सूक[3] जनु लोभा॥
सुरँग अधर औ लीन तँबोरा। सोहै पान फूल कर जोरा॥
कुसुम गेंद अस सुरंग कपोला। तेहि पर अलक भुवंगिनि डोला॥
तिल कपोल अलि पदुम बईठा। बेधा सोइ जो वह तिल दीठा॥

दो०—देखि सिंगार अनूप सब, बिरह चला तब भागि।
कालकंट[4] जिमि ओनवा,[5] सब मोरे जिय लागि॥ ३३५॥

चौपाई

का बरनौं अभरन उर हारा। ससि पहिरे नखतन कै मारा[6]॥
चीर चारु औ चंदन चोला। हीर हार नग लाग अमोला॥
तेहिं झांपी रोमावलि कारी। नागिनि रूप डसै हत्यारी॥
कुच कंचन दुइ श्रीफल[7] ऊभे[8]। हुलसहिं चहैं कंत उर चूभे॥
बाहन बाजू टाड़[9] सलोनी। डोलत बाँह भाव गति लोनी॥
छुद्रघंटिका[10] कंचन तागा। चलतहिं उठैं छतीसौ रागा॥
तरुनी कँवल-कली जनु बाँधे। बसा[11] लंक जानहु दुइ आधे॥

---

१ खोटिला=करनफूल। २ रतनफूल=बड़ा मोती (बुलाक़ का)। ३ सूक=शुक्र सितारा। ४ कालकंट=कष्ट। ५ ओनवा=उमड़ आया है। ६ मारा=माला। ७ श्रीफल=बेल के फल। ८ ऊभे=उभड़े हैं। ९ टाड़=बहुंटा, बरा। १० छुद्र घंटिका=किंकिणी। ११ बसा=बरं, भिड़।

दो०—पायल अनवट[१] बीछिया, पायन परैं बियोग।
लाय[२] हमैं टुक[३] समदहु,[४] तुम जानहु रस भोग ॥२३६॥

चौपाई

अस बारह सोरह धन साजे। छाज न और ओही पै छाजे ॥
बिनवहिं सखी गहर[५] का कीजै। जेइँ जिउ दीन्ह[६] ताहि जिउ दीजै ॥
सँवरि सेज धन मन भइ संका। ठाढ़ि तँवाइ[७] टेकि कर लंका ॥
अनचिन्ह पिउ काँपौं मन माँहाँ। का मैं कहब गहब जो बाँहाँ ॥
बारि बैस गइ प्रीति न जानी। तरुनी भइ मैमंत[८] भुलानी ॥
जोबन गरब न कछु मैं चेता। नेह न जानौ स्याम कि सेता ॥
अब सो कंत पुछिहैं सब बाता। कस मुहँ होय पीत कै राता ॥
दो०—हौं सो बारि औ दुलहिनि, पिय सो तरुन औ तेज।
ना जानौ कस होइहै, चढ़त कंत की सेज ॥२३७॥

चौपाई

सुनु धन डर हिरदै तब ताईं। जौ लहि रहसि मिला नहिँ साईं ॥
कौन सो करी[९] जो भौंर न राई[१०]। डार न टूट पुहुप गरुवाई ॥
मातु पिता जो ब्याहै सोई। जनम निवाह कंत सँग होई ॥
भरि जमवार[११] चहै जहँ रहा। जाय न मेटा ताकर कहा ॥
ता कहँ बिलँब न कीजै बारी। जो पिय आयसु मान सो प्यारी ॥
चलहु बेगि आयसु भा जैसे। कंत बोलावै रहै सो कैसे ॥
मान न करु थोरा करु लाड़ू[१२]। मान करत रिस मानै चाँड़ू[१३] ॥
दो०—साजन[१४] लेइ पठाई, आयसु जाय न मेट।
तन मन जोबन साज सब, देन चली लै भेंट ॥२३८॥

---

१ अनवट=पैर के अँगूठों का आभूषण। २ लाय=पहिन कर। ३ टुक=थोड़ी देर। ४ समदहु=मिलो, (पतिसे) ५ गहर=देर। ६ जी देना=(क) प्राण निछावर करना (ख) जिलाना, जीव दान देना। ७ तँवाना=दुखित होना, कष्ट अनुभव करना। ८ मैमंत=मदमस्त। ९ करी=कली। १० राई=राती, अनुरक्त। ११ भरि जमवार=मरते दम तक। १२ लाड़=गुमान, नाज़ नखरा। १३ चाँड़ू=अधिक। १४ साजन=पति।

चौपाई

पदुमिनि गवन हंस गये दूरी। हस्ति लाज मेलंहि सिर धूरी॥
बदन देखि घटि चंद छिपाना। दसन देखि कै बीजु लुकाना[1]॥
खंजन छिपे देखि कै नैना। कोयल छिपी सुनत मुख बैना॥
गींव देखि कै छिपा मयूरू। लंक देखि कै छिपा सदूरू[2]॥
भौंहैं देखि धनुष चौफारा[3]। बेनी बासुकि छिपा पतारा॥
खरग छिपी नासिका बिसेखी। अमिरित छिपा अधर रस देखी॥
पहुँचनि देखि छपी पौनारी[4]। जंघ देखि कदली छिपि बारी॥

दो०—अछरीं[5] रूप छिपानीं, जबहिं चली धन साजि।
जावँत गरब[6] गहेली, सबै छिपीं मन लाजि॥३३९॥

चौपाई

मिली सो गोहन[7] सखीं तराईं। लिहे चाँद सूरज पहँ आईं॥
सोरह करा दिष्टि ससि कीन्ही। सहसौ करा सुरिज की लीन्ही॥
अद्भुत रूप चांद दिखराई। देखत सूर गयो मुरझाई॥
भा रबि अस्त तराईं हँसी। सुरिज न रहा चाँद परगसी॥
जोगी आहि न भोगी कोई। खाय कुरकुटा[8] गा परि सोई॥
पदुमावति निरमल जस गंगा। नाहिँ जोग जोगी भिखमंगा॥
सखी जगावहिँ चेला जागहु। आवा गुरू पावँ उठि लागहु॥

दो०—बोलहिँ बचन सहेली, कान लागि गहि माथ।
गोरख आय ठाढ़ भा, उठ रे चेला नाथ[9]॥३४०॥

---

१ लुकाना=छिप गया। २ सदूर=(शार्दूल) सिंह। ३ चौफारा=चार फाँक हो गया (इन्द्र धनुष में सात रंग होते हैं। उनमें से चार रंग चटकीले हैं, तीन रंग कुछ हलके होते हैं। इसी से धनुष को चार चटकीले रंगों में विभाजित मान कर 'चौफारा' विशेषण दिया गया है) ४ पौनार=कमल दंड। ५ अछरी=अप्सरायें। ६ गरब गहेली=अभिमानी, मगरूर। ७ गोहन=साथ। ८ कुरकुटा=रोटी के टुकड़े। ९ नाथ=जोगी।

चौपाई

सुनि यह सवद अमिय अस लागा। निंद्रा छूटि सोय अस जागा॥
गही बाँह धन सेजवाँ आनी। अंचल ओट रही छिपि रानी॥
सकुची डरी मुरी मन बारी। गहु न बाँह रे जोगि भिखारी॥
ओहट[1] होउ जोगी तोरि चेरी। आवै बास कुरकुटा[2] केरी॥
देखि भभूति छूति मोहिं लागा। काँपै चाँद राहु सों भागा॥
जोगि तोर तपसी कै कया। लागै चहै अंग मोर छया[3]॥
बार भिखारि न मांगसि भीखा। मांगै आय सरग चढ़ि सीखा॥

दो०—जोगि भिखारी कोऊ, मँदिर न पैसै पार।
मांगि लेहु कछु भिच्छा, जाय ठाढ़ हो बार॥ ३४१॥

चौपाई

अन[4] तुम कारन पेम पियारी। राज छाँड़ि कै भयों भिखारी॥
नेह तुम्हार जो हिये समाना। चितउर सों निसरयों[5] होइ आना॥
जस मालति कहँ भँवर बियोगी। चढ़ा बियोग[6] चला होइ जोगी॥
भँवर खोजि जस पावै केवा[7]। तुम कारन मैं जिउ पर खेवा[8]॥
भयों भिखारि नारि तुम लागी। दीप पतँग होइ अँगयों[9] आगी॥
एक बार मरि मिलै जो आई। दूसर बार मरै कत जाई॥
कत तेहि मीच जो मरि कै जिया। भँवर कँवल मिलि कै रस पिया॥

दो०—भँवर जो पावै कँवल कहँ, बहु आरति बहु आस।
भँवर होय निउछावरि, कँवल देय हँसि बास॥ ३४२॥

चौपाई

अपने मुँह न बड़ाई छाजा। जोगी कतहुँ होहिं नहिं राजा॥
हौं रानी तू जोगि भिखारी। जोगिहि भोगिहिं कौन चिन्हारी॥

---

१ ओहट होउ=हट जाओ, दूर हो। २ कुरकुटा=रोटी के टुकड़े। ३ छया=छिया, मैल। ४ अन=निश्चय, सत्य। ५ निसरयो=निकला। ६ बियोग=विरह (प्रेम)। ७ केवा=कमल। ८ खेवा=कष्ट सहा। ९ अँगयों=अंगपर सहना।

जोगी सबै छंद[1] अस खेला। तू भिखारि केहि माहँ अकेला॥
पवन बाँधि अपसवहिं[2] अकासा। मनसहिं[3] जहाँ जाहिं तेहि बासा[4]॥
येही भांति सृष्टि बहु छरी। यही भेष रावन सिय हरी॥
भँवरहि मीचु नियर जो आवा। केतकि बास लेइ कहँ धावा॥
दीपक जोति देखि उजियारी। आय पतँग होइ परा भिखारी॥

दो०—रैनि जो देखै चंदमुख, ससि तन होय अलोप।
तू जोगी तप भूला, मैं राजा की ओप[5]॥ ३४३॥

चौपाई

अन[6] धन तू निसिअर[7] निसिमाँहाँ। हौं दिनअर[8] जेहि कै तू छाँहाँ॥
चाँदहिं कहाँ जोति औ कला। सुरिज की जोति चाँद निरमला॥
भँवर बास चंपा नहि लेई। मालति जहाँ तहाँ जिउ देई॥
तुम हुत[9] भयों पतँग[10] की करा। सिंघलदीप आय उड़ि परा॥
सेयों महादेव कर बारू। तजा अन्न भा पवन अहारू॥
तुम सौं प्रीति-गाँठ मैं जोरी। कटै न काटी छुटै न छोरी॥
सिया भीख रावन कहँ दीन्हा। तूं अस निठुर अँतरपट[11] दीन्हा॥

दो०—रंग तुम्हारे रात्यौं, चढ्यौं गगन होइ सूर।
जहँ ससि सीतल कहँ तपनि, मन इच्छा धन पूर॥ ३४४॥

चौपाई

जोगि भिखारि करसि बहु बाता। कहसि रंग देखौं नहि राता॥
कापर रँगे रंग नहिं होई। हियो औटि उपजै रँग सोई॥
चाँद के रंग सूर जो राता। देखै जगत साँझ परभाता॥
दगध बिरह नित होय अँगारू। ओहि की आँच दगधै संसारू॥

---

१ छंद=छल, धोखा। २ अपसवहिं=जाते हैं। ३ मनसना=इच्छा करना। ४ बासा=स्थान। ५ ओप=छवि, प्रभा। ६ अन=निश्चय। ७ निसिअर=शशि चंद्रमा। ८ दिनअर=दिनकर, सूर्य। ९ तुम हुत=तुम्हारे वास्ते। १० भयो पतँग की करा=पतंग की सी दशा का हो गया हूं, पतंग रूप हो गया हूं। ११ अन्तर-पट=परदा।

जो मजीठ औटै बहु आँचा। सो रँग जनम न डोलै राचा ॥
जरै बिरह जो दीपक बाती। भीतर जर ऊपर होइ राती ॥
जर परास कोइला के भेसू। तब फूलै राता होइ टेसू ॥

दो०—पान सुपारी खैर जिमि, मेरै करै चकचून[1]।
तब लग रंग न राचै, जब लग होय न चून[2] ॥३४५॥

चौपाई

धनिया का सुरंग का चूना। जेहि तन नेह दगध तेहि दूना ॥
हौं तुम नेह पियर भा पानू। पेड़ी[3] हुत सनरास[4] बखानू ॥
सुनि तुम्हार संसार बड़ौना। जोग लीन्ह तन कीन गड़ौना[5] ॥
करहिं जो किंगिरी लै बैरागी। नौती[6] होय बिरह कै आगी ॥
फेरि फेरि तन कीन भुंजौना[7]। औटि रकत रँग हरदी अवना ॥
सूखि सुपारी भा मन मारा। सीस सरौता करवत सारा ॥
हाड़ चून भये बिरहैं दहा। जानै सो जो दगध इमि सहा ॥

दो०—कै सो जान पर पीरा, जेहि दुख पेस सरीर।
रकत पियासे जे अहैं, का जानैं पर पीर ॥ ३४६ ॥

चौपाई

जोगिहिं बहुत छंद[8] अउराहीं[9]। बूँद सेवाती जैस पराहीं ॥
परहिं पुहुमि पर होइ कचूरू। परहिं कदलि पर होहिं कपूरू ॥

---

१ चकचून=चकना चूर्ण (चक्की में पीसा हुआ आटा) २ चून=चूना। ३ पेड़ी=पेड़ी का पान (जिस पान की ढ़ेंपी के निकट से लता की नवीन शाखा निकलती है) ४ सनरास=लता के मध्य भाग के पान (यह पान उत्तम माने जाते हैं)। ५ गड़ौना=गाड़ा पान (जो लता की जड़ के पास होते हैं। इनमें मिट्टी लगी रहती है) ६ नौती=(१) नित्य नूतन (२) नौती पान जो वर्षा के आरम्भ में तोड़े जाते हैं। ये पान केवल आठ दस रोज तक ठहरते हैं अधिक नहीं। ७ पान पकाते समय उनमें आग की आंच दी जाती है तब पीला रंग आता है। आंच देते समय वे बार बार फेरे भी जाते हैं। ८ छंद=छल, धोखा। ९ अउराहीं=आते हैं, विचार में आते हैं।

परहिँ समुद्र खार जल ओही। परहिँ सीप सब मोती होहीं॥
परहिँ मेरु फल अमिरित होई। परहिँ नाग मुख विष होइ सोई॥
जोगी भँवर निठुर ये दोऊ। केहि आपन भए कह सब कोऊ॥
एक ठाउँ ये थिर न रहाहीं। रस लै खेलि अंत[1] कहँ जाहीं॥
होइ गिरही[2] पुनि होइँ उदासी। अंतकाल दोनों बिसुवासी[3]॥

दो०—तासों नेह जो दिढ़ करिय, थिर आछै सहदेस[4]।
जोगी भँवर भिखारी, दूरिहिं ते आदेस[5]॥ ३४७॥

चौपाई

थल थल नग[6] न होहिं जिन्ह जोती। जल जल सीप न उपनहिँ मोती॥
बन बन बिरिख[7] न चंदन होई। तन तन बिरह[8] न उपनै सोई॥
जहँ उपना सो औटि मरि गयऊ। जनम निरार[9] न कबहूं भयऊ॥
जल अंबुज रबि रहै अकासा। जो पिरीति जानहु एक पासा॥
जोगी भँवर जो थिर न रहाहीं। जिन्हहि खोजि कोउ पावै नाहीं॥
मैं तोहिँ पावा आपन जीऊ। छाँड़ि सेवाति आन नहिँ पीऊ॥
भँवर मालतिहिँ मिलै जो आई। सो तजि आन फूल कित जाई॥

दो०—चंपा प्रीति न भँवरहिँ, दिन दिन आँकर[10] बास।
भँवर जो पावै मालती, मुएहु न छांड़ै पास॥ ३४८॥

चौपाई

ऐसें राजकुँवर नहिँ मानौं। खेलु सारि पाँसा[11] तब जानौं॥
कच्चे बारहि बार[12] फिरासी। पक्के पौ[13] पर थिर न रहासी॥
रहै न आठ अठारह भाखा। सोरस[14] सतरस[15] रहै सो राखा॥

---

१ अंत=अन्यत्र। २ गिरही=(गृही) गृहस्थ। ३ बिसुवासी=विश्वासघाती, छली। ४ सहदेस=एक देस में साथ रहने वाला, सहवासी। ५ आदेस—प्रणाम। ६ नग=रत्न। ७ बिरिख=वृक्ष। ८ बिरह=प्रेम। ९ निरार=अलग, न्यारा। १० आंकर=कड़ी, अधिकाधिक। ११ सारिपाँसा=पंसासारी, चौपड़। १२ बारह=(क), बारह (ख) द्वार। १३ पौ= (क) एक, (ख) पैर। १४ सोरस=(क) बहु रस, (ख) षोडस, सोलह। १५ सतरस= (क) सत्य रस, (ख) सत्रह।

सत पै ढरै सो खेल न हारा । ढारु इग्यारह जासि न मारा ॥
तू लीन्हे आछसि मन दुआ । औ जुग सारि[1] चहस पुनि छुवा ॥
हौं तौ नेह रच्यौं तोहि पाहां । दसौ दाँव[2] तोरे कर माहां ॥
तब चौपर खेलौं दै हिया । जो तरहेल[3] होइ सौतिया[4] ॥

दो०—जेहि मिलि बिछुरन औ मरन, अंत तंत होइ मित ।
तेहि मिलि बिछुरन को सहै, बरु बिन मिले निचिंत ॥ ३४९ ॥

चौपाई

बोलौं बचन नारि सुनु साँचा । पुरुषक बोल सत्य औ बाचा[5] ॥
यह मन लाग्यौ तोहि अस नारी । दिन तोहि पासा औ निसि सारी ॥
पौ परि बारहि बार मनाऊँ । सोरह खेलु पैंत जिउ लाऊँ ॥
भली भांति हियरे रुचि राची । मारेसि तू सबही कै काची ॥
पाकि उठायों आस करीता । हौं जिय तोहिं हारा तुम जीता ॥
मिलि कै जुग नहिँ होहु निरारी । कहा बीच दूती देनहारी ॥
अब जिउ जनम जनम होहि पासा । चढ्यौ जोग आयौं कयलासा ॥

दो०—जाकर जिउ बस जेहि सेतीं, तेहि पुनि ताकर टेक ।
कनक सोहाग न बिछुरहिँ, औटि होंहि मिलि एक ॥ ३५० ॥

चौपाई

बिहँसी धन सुनि कै सत बाता । निहचै तूं मोरे रँग[6] राता ॥
निहचै भँवर कँवल रस रसा[7] । जो जेहि मन सो तेहि मन बसा ॥
जब हीरामनि भयो सँदेसी । तोहि नित[8] मँडप गई परदेसी ॥
तोर रूप तस देखेउँ लोना । जनु जोगी तैं मेलेसि टोना ॥

---

१ जुगसारि=(क) गोटयों का जुग, (ख) दोनों कुच । २ दसौं दावँ=(क) दस का दाव, (ख) मरण (दशमावस्था) । ३ तरहेल=नीचे खेलने वाली । ४ सौतिया=(क) सवति (ख) सौ स्त्रियां । जो मेरी सवति मुझसे नीचे दरजे ही पर रहे । पदमावत राजा से वचन हरा लेना चाहती है कि आप चाहै सैकड़ों रानियां विवाहै, परन्तु सबसे अधिक स्नेह मुझपर ही होना चाहिये । ५ वाचा=प्रतिज्ञा । (नोट) इस चौपाई भरमें श्लेष अलंकार से काम लिया गया है । ६ रंग=प्रेम, अनुराग । ७ रसना=अनुरक्त होना । ८ नित=निमित्त, वास्ते ।

सिध गुटिका जो दिष्टि कमाई। पारे मेल रूप बसियाई[1] ॥
भुगुति[2] देइँ कहँ मैं तोहि दीठा। कँवल नयन होइ भँवर बईठा ॥
नैन पुहुप तूं अलि भा सोभी। रहा बेधि तस उड़सि न लोभी ॥

दो०—जाकर आस होइ अस, तेहि पुनि ताकर आस।
भँवर जो दाधा कँवल कहँ, कस न पाव रस बास ॥३५१॥

चौपाई

कौन मोहनी दहुँ हुत तोही। जो तोहि बिथा सो उपनी[3] मोही ॥
बिनु जल मीन तपै तस जीऊ। चातकि भइउँ रटत पिउ पीऊ ॥
जरिउँ बिरह जस दीपक बाती। पथ जोवत भइ सीप सेवाती ॥
डार डार ज्यों कोयल भई। भइउँ चकोरि नींद निसि गई ॥
भोरे पेम पेम तोहि भयऊ। राता हेम अगिनि ज्यों तयऊ[4] ॥
हीरा दिपहिं जो सूर उदोती। नाहिंत कित पाहन कित जोती ॥
रवि परगासे कँवल बिकासा। नाहिंत कित मधुकर कित बासा ॥

दो०—तासों कौन अँतरपट[5], जो अस प्रीतम पीउ।
न्यौछावरि करों आप हौं, तन मन जोबन जीउ ॥ ३५२ ॥

चौपाई

हँसि पदमावत बोली बाता। सत्य कहौं उर जानु बिधाता ॥
तूं राजा दुहुँ कुल उजियारा। अस कहिचरचेउ[6] मरम तुम्हारा ॥
पै तुम्ह जंबूदीप बसेरो। का जानसि कस सिंघल मेरो ॥
का जानसि सु मानसर केवा। सुनि भा भँवर जीउ पर खेवा ॥
ना तूँ सुनी न कबहूँ दीठी। कैसे चित्र होइ चित्त पईठी ॥
जौं लहि अगिनि करै नहिं भेदू। तौं लहि अवटि चुवै नहिं मेदू[7] ॥
केहि संकर[8] तोहि पेस लखावा। मिला अलख[9] अस प्रेम जगावा ॥

---

१ बसियाना=(क) बश में कर लेना, (ख) बनाना। २ भुगुति=भोजन, भिक्षा। ३ उपनी=उत्पन्न हुई। ४ तयऊ=तपाया गया। ५ अंतर पट=परदा। ६ चरचना=पहँचान करना, निश्चित करना। ७ मेद=चोवा, इत्र। ८ संकर=कल्याण कारक देव। ९ अलख=(क) ईश्वर, (ख) बिना देखी हुई वस्तु।

दो०—जेहि कर सत्त सँघाती[1], ताकर डर सोइ भेट।
सो सत कहु कैसे भा, दुहूं साथ[2] भइ भेंट ॥३५३॥

चौपाई

सत्य कहौं सुनु पदमावती। जहँ सत पुरुष तहाँ सरसुती ॥
पायों सुवा कही वैं[3] बाता। भा निहचौ देखत मुख राता ॥
रूप तुम्हार सुन्यौं अस नीका। ना[4] जेहिं चढ़ा काहु कहँ टीका ॥
चित्र किहेउँ पुनि लै लै नाऊं। नैनन लागि हिये भा ठाऊं ॥
हौं भा सांच[5] सुनत वहि घरीं। तुम होइ रूप[6] आइ चित भरीं ॥
हौं भा काठ-मूर्ति मन-मारे। जहँ जहँ कर[7] सब हाथ तुम्हारे ॥
तुम जो डोलावहु सोई डोला। मवन[8] सांस जो दीन्ह तो बोला ॥

दो०—को सोवै को जागै, अस हौं गयों बिमोहि।
परगट गुपुत न दूसर, जहँ देखौं तहँ तोहि ॥३५४॥

चौपाई

बिहँसी धन सुनि कै सत भाऊ। हौं रामा तुम रावन राऊ ॥
रहा जो भँवर कमल की आसा। कस न भोग मानै रस बासा ॥
जस सत गहा कुँवर तू मोही। तस मन मोर लाग पुनि तोही ॥
जब तें कहि गा पंखि[9] सँदेसी। सुन्यौं कि आवा है परदेसी ॥
तब तें तुम बिन रहै न जीऊ। चातकि भइउँ कहत पिउ पीऊ ॥
भइउँ चकोरि सो पंथ निहारी। समुँद सीप जस नैन पसारी ॥
बिरह भइउँ दहि कोयल कारी। डार डार जमि[10] पीउ पुकारी ॥

दो०—कौन सो दिन जब पिउ मिलै, यह मन राता जासु।
वह दुख देखै मोर सब, हौं मुख देखौं तासु ॥३५५॥

---

१ संघाती=साथी, सहायक। २ दुहूं साथ=परस्पर। ३ वैं=उसने। ४ ना जेहिं...टीका=जिसका संवन्ध अब तक किसी के साथ स्थिर नहीं हुआ। ५ सांच=सांचा। ६ रूप=चांदी। ७ कर=कल, संचालन यंत्र। ८ मवन=मौन, चुप। ९ पंखि सँदेसी=सदेश लानेवाला पक्षी, हीरामनि सुवा। १० जमि=बैठकर।

चौपाई

रहसि[१] सेज चढ़ि बैठी बाला। अधर अमी रस भरे पियाला॥
अधर कँवल मधि अमृत बानी। लै बैठी पदुमावति रानी॥
बैठा आइ सेज पर राजा। क्रीड़ा करत सिंह होइ गाजा॥
करत कलोल कंचुकी छूटी। कुच कर गहत कसनिबँद[२] टूटी॥
प्रौढ़[३] कुतूहल कर अस दोऊ। मानहि भोग काम रति सोऊ॥
रहस चाव सों खेलै रानी। बकुल[४] होइ पदुमिनि कुँभिलानी॥
देखि राहु ससि लागा सीऊ[५]। छूटा राहु खुटका[६] गा जीऊ॥

दो०—जैसे राहु गरासै, ससिहिँ आय एक ठाँव।
छूटे राहु अँजोर[७] भा, रानिहिँ उपना चाव[८] ॥३५६॥

चौपाई

पुनि सत भाव भयो कँठ लागू। जनु कंचन औ मिला सोहागू॥
चौरासी आसन बँध जोगी। खट रस बिंदक[९] चतुर सो भोगी॥
कुसुमानी[१०] मालति अस पाई। चंगु[११] चांपि गहि डार नवाई॥
करी बेध जनु भँवर लोभाना। हना राहु अरजुन[१२] लै बाना॥
कंचन-करी[१३] जरी नग जोती। बरमा सों बेधा जनु मोती॥
नारँग जानि कीर छत दये। अधर आँबरस जानहु लये॥
कौतुक केलि करत दुख नंसा[१४]। कूजहिँ कुरलहिँ जनु सर हंसा॥

दो०—रही बसाय बासना, चोवा चंदन मेद[१५]।
जो अस पदुमिनि राचै, सो जानै यह भेद ॥३५७॥

---

१ रहसि=आनंद से, प्रसन्न होकर। २ कसनीबंद=चोली के बंद। ३ प्रौढ़ कुतूहल=प्रौढ़ावस्था की सी कोक कला। ४ बकुल=मौलसिरी। ५ सीउ=शीत, जाड़ा। ६ खुटका=खटका, चिंता, भय। ७ अँजोर=उजियाला। ८ चाव=शौक, उत्साह। ९ बिंदक=(विद्) जानने वाला। १० कुसुमानी=फूली हुई, पुष्पिता। ११ चंगु=चंगुल, पंजा। १२ हना राहु...बाना=जैसे अर्जुन ने मत्स्यवेध किया था वैसे ही राजा ने भी ठीक निशाने पर वार किया। १३ कंचन करी=सोने की अँगूठी। १४ नंसा=नाश हुआ। १५ मेद=इत्र।

चौपाई

रतन सेन सो कंत सुजानू। षटरस पंडित सोरह[1] ज्ञानू॥
तस होइ मिले पुरुष औ गोरी। जैसे बिछुरा सारस जोरी॥
रचैं सार[2] दोनों इक पासा। होइ जुग जुग आवहिं कैलासा॥
पिय धन गहि दीन्हीं गलबाँहा। धन बिछुरी लागी उर माहाँ॥
तं छकि रस नव केलि करेहीं। चौक[3] लाइ अधरन रस लेहीं॥
धन नवसात सात औ पांचा। पूरुष दस तेरह किमि बांचा॥
बिरह बिधंसि लीन्ह धन साजा। औ सब रचन जीत तेहि राजा॥

दो०—जनहु औटि कै मिरै गे, तस दोनों भये एक।
कंचन कसत कसौटी, हाथ न कोऊ टेक॥३५८॥

चौपाई

चतुर नारि चित अधिक चिहूंटै[4]। जहाँ पेम बाढ़ै किमि छूटै॥
कुरलै[5] काम-केलि मन हारी। कुरलै जहँ नहिं सो न सुनारी॥
कुरलै होय कंत कर तोषू। कुरलै किहे पाव धन मोखू॥
जाइ कुरलै सो सोहाग सुभागी। चंदन जैस पीव कँठ लागी॥
कुसुम गेंद जानहु कर लई। गेंद चाहि धन कोंवर भई॥
दाखो दाख बेल रस चाखा। पिय[6] के खेल धन जोबन राखा॥
भयो बसंत करी मुख खोला। बैन सोहावन कोकिल बोला॥

---

१ सोरह=सोलहो सिंगार। २ सार=चौपड़। ३ चौक=(क) चौक का दांव (ख) चौका दांत का। ४ चित चिहुटना=चित में चुभना, पसंद आना। ५ कुरलना=मधुर स्वर से बोलना (यहां रति समय में 'सी सी' शब्द करना)—तात्पर्य यह कि काम केलि के समय कुरलना ही तो मन हरने वाली क्रिया है। जिस रति में कुरल नहीं वह रति सयानपने की नहीं वरन् अनारी पने की रति है। बिहारी ने कहा है:—

चमक तमक हांसी सिसक मसक झपटि लपटानि।
ये जेहि रति सो रति मुकति और मुकति अति हानि॥

६ पियके······राखा=रति के खेलने ही के लिये स्त्री अपने कुचों को सुरक्षित रखती है।

दो०—पिउ पिउ करत सूखि धन, बोली चातकि भाँति ।
परी सो बून्द सीप मुख, भई हिंये सुख सांति ॥३५९॥

चौपाई

भयो जूझ जस रावन रामा । बिरह विधांस[1] सेज सँगरामा ॥
लीन्ह लंक[2] कंचन गढ़ टूटा । कीन्ह सिंगार अहा सब लूटा ॥
औ जोबन मैंमंत[3] बिधांसा । बिचला बिरह जीउ जेइ नासा ॥
लूटे अंग रंग सब भेसा । छूटी मंग[4] भंग भये केसा ॥
कंचुकि चूर, चूर भइ तानी[5] । टूटे हार मोति छितरानी ॥
बारी टाड़ सलोनी टूटी । बाजू कंगन बलिया[6] फूटी ॥
चंदन अंग छूट तस भेंटी । बेसर टूट तिलक गा मेटी ॥

दो०—पुहुप सिंगार सँवार सब, जोबन नवल बसंत ।
अरगज ज्यौं हिय लायकै, मरगज[7] कीन्हो कंत ॥३६०॥

चौपाई

विनय करति पदुमावति बाला । सुधि सो रहैअसपियोपियाला ॥
पिय आयसु माथे पर लेऊं । जो मांगै नै नै सिर देऊं ॥
पै पिय बचन एक सुनु मोरा । चाखौ पिय मद थोरा थोरा ॥
पेम सुरा सोई पै पिया । लखै न कोउ कि काहू दिया ॥
चाख दाख मद जो एक बारा । दूसर बार लेत बिसँभारा[8] ॥
एक बार जो लै कै रहा । सुख जीवन सुख भोजन लहा ॥
पान फूल रस रङ्ग करीजै । अधर अधर सों चाखा कीजै ॥

दो०—जो तुम चाहहु सो करहु, ना जानौ भल मंद[9] ॥
जो भावै सो होइ मोहिं, तुम पिय चहौं अनंद ॥३६१॥

चौपाई

सुनु धन पेम सुरा के पिये । मरन जिअन डर रहै न हिये ॥
जहँ मद तहाँ कहा संसारा । कैसे घुमरि रहै मतवारा ॥

---

१ विधांस=विध्वंस हुआ । २ लंक=कमर । ३ मैमंत=मस्ती । ४ मंग=मांग । ५ तानी=तनी, बंद । ६ बलियां=चूड़ियां । ७ मरगज़=मलगजी, मीड़ी मसोसी हुई । ८ बिसँभारा=बेसुध, बेहोश । ९ मंद=बुरा ।

सो पै जानु पियै जो कोई। पी न अघाय जायँ परि सोई॥
जा कहँ होय बार एक लाहा। रहै न ओहि बिनु ओही चाहा॥
अरथ दरव[1] सब देइ बहाई। कह सब जाय न जाय पियाई॥
रातिहु दिवस रहै रस भीजा। लाभ न देख न देखै छीजा[2]॥
भोर होत तब पलुह[3] सरीरू। पाँय घुमरहा[4] सीतल नीरू॥

दो०—एक पियाला देहु भरि, बारबार को माँग।
मुहमद कस न पुकारै, ऐस दाँव जेहि खाँग॥ ३६२॥

३२—बत्तीसवाँ खण्ड

सोहाग वर्णन

भयो बिहान उठा रबि साईं। चहुँ दिस आईं नखत तराईं[5]॥
सब निसि सेज मिले ससि सूरू। हार चीर बलियां[6] भइँ चूरू॥
सोधु[7] न पान चून भइ चोली। रँग रँगीलि बिरँग भइ डोली॥
आगत रैनि भयो भिनसारा। भै बिसँभार सूत बिकरारा[8]॥
अलक सुरंगिनि हियरे परी। नारँग छुइ नागिनि विष भरी॥
लरी[9] मुरीं हिय हार लपेटे। सुरसरि जनु कालिंदी भेंटे॥
जनु-पराग अरयल बिच मिली। बेनी[10] भई मिलि रोमावली॥

दो०—नाभी लाभे[11] ते गई, कासी कुंड कहाव।
देउता मरैं कलपि सिर[12], आपहिं दोष न लाव॥३६३॥

---

१ दरव=द्रव्य। २ छीज=हानि। ३ पलुहना=पल्लवित होना, नवीन उत्साह पैदा होना। ४ घुमरहा=नशे से चूर। ५ तराईं=(यहां) सखियां। ६ बलियां=चूड़ियां। ७ सोधु=पता। चोली में बने हुए पानवत् बूटों का कहीं पता भी न था क्योंकि चोली चूर चूर होगई थी। ८ बिकरार=बे अख़तियार। ९ लरी=दुलरी तिलरी इत्यादि। १० बेनी=त्रिवेनी। ११ लाभे=लाभ करने को, प्राप्त करने को। १२ सिर कलपना=सिर देना, सिर चढ़ा देना।

चौपाई

बिहँसि जगावहिँ सखी सयानी। सूर उठा उठु पदुमिनी रानी॥
सुनत सूर जनु कँवल विकासा। मधुकर आय लीन्ह मधु बासा॥
मनहु[1] माति निसि आये बसे। अति बिसँभार भौंर आरसे॥
नैन कँवल जानहु दुइ खूले। चितवनि मृग सोवत जनु भूले॥
तन बिसँभार केस औ चोली। चित अचेत जनु बारी भोली॥
कँवल माँझ जनु केसर[2] दीठी। जोबन[3] हुत सो गँवाय बईठी॥

दो०—बेलि जो राखी इँदर कहँ, पवन बास नहिँ देइ।
लाग्यो आय भँवर तेहि, कली बेधि रस लेइ॥३६४॥

चौपाई

हँसि हँसि पूँछहिँ सखी सरेखी[4]। जनु कुमुदिनी चंद्र मुख देखी॥
रानी तुम ऐसी सुकुवारा। फूल वास भल भोग तुम्हारा॥
सहि न सकौ हिरदै पर हारू। कैसे सहा कंत कर भारू॥
बदन कँवल विकसित दिन राती। सो कुँम्हिलान कहो केहि भांती॥
अधर कँवल सहि सकत न पानू। कैसे सहा लाग मुख भानू॥
लंक जो पैग देत मुरि जाई। कैसें रही जो रावन[5] राई॥
चंदन चोप पवन अस पीऊ। भइऊ चित्र सम कस भा जीऊ॥

दो०—सब अरगज[6] मरगज[7] भा, लोचन बिंब[8] सरोज।
सत्य कहो पदुमावति, सखी परीं सब खोज॥३६५॥

---

१ मनहु=भुंदी आंखों की पुतलियों पर उत्प्रेक्षा है कि मानो भँवर कमल (चेहरा) की सुगंध से मस्त हो गया है और रात्रि आ जानेपर बेसुध और आलस्य युक्त होकर वहीं बस रहा है। २ केसर=केसर का रंग, पीलापन—पदमावत के कमल सम (लाल) चेहरे पर पीलाई आगई। ३ जोबन=जवानी का रूप और गर्व। ४ सरेखी=समझदार। ५ रावन राई=रावन के राज्य में (उपद्रवी के अधिकार में पड़कर)। ६ अरगज=सामान। ७ मरगज=मैला। ८ बिंब=लाल (रात भर जगने से)।

चौपाई

कहौं सखी आपन सत भाऊ। हौं जो कहौं कस रावन राऊ॥
काँपौं भँवर पुहुप पर देखे। जनु ससि गहन तैस मोहिं लेखे॥
आजु मरम मैं पावा सोई। जस पियार पिउ और न कोई॥
डर तब लग हा[1] मिला न पीऊ। भानु की दिष्टि छूटि गा सीऊ[2]॥
जत खन[3] भानु लीन्ह परगासू। कँवल करी मन कीन्ह बिकासू॥
हिये छोह उपना गा सीऊ। पिउ न रिसाइ लेइ बरु जीऊ॥
हुत जो अपार बिरह दुख दोखा। जनहु अगस्त उदधि जल सोखा॥

दो०—हौंहु रंग बहु जानतिं, लहरैं जेत[4] समुंद।
पी पी गए चतुराई, खसी न एकौ बुंद ॥३६६॥

चौपाई

हँसि हँसि बोलै पदुमिनि रानी। निजुकै[5] बात आजु मैं जानी॥
मैं पिय देखि बहुत डर माना। जो इकठाउँ होय सो जाना॥
आजु संक मो मन ते गई। जो पिय सँग इकठावहिं भई॥
निहचै बचन जो एक सहेली। रंग रँगीलहि रस भरि खेली॥
जो कछु सुख है यहि कलि माहीं। और कंत तजि दूसर नाहीं॥
आजु नाह मैं निजुकै चीन्हा। जोबन भोग कंत कहँ दीन्हा॥
अधर अधर रस लेइ सुजाना। उर सो उर लागे सुख माना॥

दो०—जो कछु भोग भूमि महँ, दीन्ह बिधाता आनि।
यहि संसार प्रान हितु, कंत समान न जानि ॥३६७॥

चौपाई

कै सिंगार ता पहँ कहँ जाऊं। ओहि कहँ देखौं ठावहिं ठाऊं॥
जो जिय महँ तौ ओही पियारा। तन महँ सोइ न होइ निरारा॥
नैनन महँ तो ओही समाना। देखौं जहाँ न देखौं आना॥
आपुहिं रस आपुहि पै लेई। लागे अधर सहस रस देई॥

---

१ हा=था। २ सीऊ=शीत, जाड़ा। ३ जतखन=(यत्क्षण) जिस समय।
४ जेत=जितनी। ५ निजुकै=निश्चय करके, निश्चित।

हिया थार कुच कंचन लाड़ू[1]। अगमन[2] भेंट दीन्ह कै चाँड़ू[3] ॥
हुलसी लंक लंक सौं लसी। रावन रहसि कसौटी कसी ॥
जोवन सबै मिला ओहि जाई। हौं रे बिचहुत[4] गइउं हेराई ॥

दो०—जस कछु दीन्हो धरन कहँ, आपन लीन्ह सँभारि।
तस सिंगार सब लीन्हेसि, मोहिं कीन्हेसि थतिहारि[5] ॥३६८॥

चौपाई

अन[6] री छबीली तोहि छबि लागी। नेत्र गुलाल कंत संग जागी ॥
चंप सुदरसन अस मुख सोई। सोन जरद जस केसर होई ॥
बैठ भँवर कुच नारँग बारी। लागे नख उछरीं[7] रँग धारी[8] ॥
अधर अधर सौं भीजु तँबोरे[9]। अलकाउरि[10] मुरि गइ मुख मोरे ॥
रायमुनी[11] तुम औ रतमुहीं[12]। अलि मुख लागि भईं चुहचुहीं[13] ॥
जस सिंगारहार सो मिलीं। मालति जैस सुँदर होइ खिलीं ॥
पुनि सिंगार रसकरा निवारी। कदम सेवती पियहि पियारी ॥

दो०—कुंदकरी अस बिकसीं, रितु बसंत औ फाग।
फूलहु फरहु सदा सुख, औ सुख सुफल सोहाग ॥३६९॥

चौपाई

कहि यह बात सखी उठि धाईं। चंपावत कहँ जाय सुनाईं ॥
आजु बिरँग[14] पदमावत बारी। जीवन जानौ पवन अधारी ॥
तरकि तरकि गा चंदन चोला। धरकि धरकि उर उठै न बोला ॥
अही[15] जो कँवलकरी रस पूरी। चूर चूर होइ गईं सो चूरी ॥
देखौ जाय जैस कुम्हिलानी। सुनि सोहाग रानी बिहँसानी ॥

---

१ लाड़ू=लड्डू। २ अगमन=सबसे पहले। ३ चांड=उत्साह, चाव। ४ बिचहुत=बीच में। ५ थतिहारि=थतिहारी, जिसके यहां थाती रक्खी जाय। ६ अन=निश्चय। ७ उछरीं=उभड़ आई हैं। ८ धारी=रेखा। ९ तँबोर=पान। १० अलकाउरि=अलकावली। ११ रायमुनी=राय मुनैयां नामक पत्ती विशेष जिसकी चोंच लाल होती है। १२ रतमुहीं=लाल मुख वाली। १३ चुहचुहीं=मैले रंगका एक पत्ती विशेष जो बड़े तड़के चुहँ चुहँ शब्द बोलता है। १४ बिरङ्ग=बेरंग। १५ अही=थी।

लै सँग सबै पदमिनी नारी । आई जहँ पदुमावति बारी ॥
आय रूप सबहीं जो देखा । सोनबरन[1] होइ रही सो रेखा ॥

दो०—कुसुम फूल जस मरदी, विरँग देखि सब अंग ।
चंपावत भइ वारीं[2], चूमि केस औ मंग ॥३७०॥

चौपाई

सब रनिवास बैठ चहुँ पासा । ससिमंडल जनु बैठ अकासा ॥
बोलीं सबै वारि कुम्हिलानी । करहु सिंगार देहु खँड़वानी[3] ॥
कँवलकरी कौंवर रँग भीनी । अति सुकुवांरि लंक कै खीनी ॥
चांद जैस धन हुत परगासी । सहस करा होइ सूर गरासी ॥
तेहि की झार गहन अस गही । भइ बिरंग मुख जोति न रही ॥
दरब वारि कुछु पुन्य करेहू । औ लै बार भिखारिन देहू ॥
भरि कै थार नखत गज मोती । वारन कीन्ह चांद की जोती ॥

दो०—कीन्ह अरगजा मरदन, औ सुख दीन्ह अन्हानु ।
पुनि भई चांद जो चौदसि, रूप गयो छिपि भानु ॥३७१॥

चौपाई

पटवहिं[4] आनि चीर सब छोरे । सारी कंचुकि लहर[5] पटोरे ॥
सुरंग चीर भल सिंघल दीपी । कीन्ह जो छापा धनि वह छीपी[6] ॥
फँदिया[7] और कंसिया[8] राती । छायल[9] पिंडवाही गुजराती ॥
पेमचँदुरियां[10] औ वेंदुरीं[11] । स्याम सेत पीरी औ हरीं ॥
सात रंग सों चित्र चितेरीं । भरि कै दिष्टि जायँ नहिं हेरीं ॥

---

१ सोनबरन=पीली । २ भइ वारी=बलिहारी गई, कुरबान हुई । ३ खँडवानी=शरबत । ४ पटवहिं=वस्त्र पहनाने वाली दासी (पटवाहिनी) । ५ लहर पटोर=लहरियादार रेशमी वस्त्र । ६ छीपी=कपड़ा छापने वाला । ७ फँदिया=एक प्रकार की चोली । ८ कँसिया=एक प्रकार की चोली । ९ छायल=छाया हुआ । १० पेम चँदुरियां=एक प्रकार की टिकुली । ११ वेंदुरी=वेंदुली, टिकुली ।

चिकुवा[1] चीरु मेघौना[2] लोने। मोति लाग औ छापे साने॥
चँदनौता जो खिरोदक भारी। बांसपूर झिलमिल कै सारी॥

दो०—पुनि अभरन बहु काढ़ा, आनै[3] भांति जराव।
फेरि फेरि सब पहिरै, जैस जैस मन भाव॥३७२॥

चौपाई

रतनसेन गये अपनी सभा। बैठे पाट जहाँ अठखँभा॥
आय मिले चितउर के साथी। सबै विहँसि कै दीन्हेनि हाथी[4]॥
राजा कर भल मानहु भाई। जेइँ हमका यह पुहुमि दिखाई॥
जो हम कहँ आनत न नरेसू। तौ हम कहां कहां यह देसू॥
धनि राजा तुइँ राज बिसेखा। जेहि की राज सो यह सब देखा॥
भोग बिरास सबै कुछु पावा। कहां जीभ तस अस्तुति आवा॥
अब तुम आय अँतरपट[5] साजा। दरसन कहँ न तपावहु[6] राजा॥

दो०—नैन सिरान भूख गइ, देखि दरस तुम्ह आज।
नव औतार आजु भा, औ सब भे नव काज॥३७३॥

चौपाई

हँसि के राज रजायसु दीन्हा। मैं दरसन कारन तप कीन्हा॥
अपने लागि जोग अस खेला। गुरु भा आप कीन्ह तुम्ह चेला॥
यहि क मोर पुरुखारथ देखेहु। गुरू चीन्हि कै जोग बिसेखेहु॥
जो तुम तप साधा मोहि लागी। अब जिनि हिये होहु बैरागी॥
जो जेहि लागि सहै तप जोगू। सो तेहि के सँग मानै भोगू॥
सोरह सहस पदुमिनी मांगी। सबहिँ दीन्ह नहिँ काहुइ खांगी॥
सब क धौरहर सोने साजा। सब अपने अपने घर राजा॥

दो०—हस्ति घोर औ कापर, सबहिँ दीन्ह बड़ साज।
भे गृहस्थ सब लखपति, घर घर मानहु राज॥३७४॥

---

१ चिकुवा=चीकट नामक रेशमी कपड़ा। २ मेघौना='मेघवर्णा' नामक रेशमी कपड़ा। ३ आनौ भांति=अन्य अन्य प्रकार का। ४ हाथी देना=हाथ मिलाना। ५ अंतरपट=परदा। ६ तपाना=तरसाना, तकलीफ देना।

चौपाई

पदुमावति सब सखीं बोलाईं। चीर पटोर[1] हार पहिराईं॥
सीस सबन के सेंदुर पूरा। सीस पूरि सब अँग सिंदूरा॥
चंदन अगर चित्र सम भरीं। नये चार[2] जानहु औतरीं॥
जानु कँवल सँग फूलीं कुईं। औ सो चांद सँग तरईं उईं॥
धनि पदमावत धनि तोर नाहू। जेहि पहिरत पहिरा सब काहू॥
बारा अभरन सोर[3] सिंगारा। तोहिंसोहैसखिपिय मसियारा[4]॥
ससि सो कलंकी राहुहि पूजा। तू निकलंक न कोउ सरि दूजा॥

दो०—काहू बीन गहा कर, काहू नाद मृदंग।
सब दिन अनँद बधावा; रहस कूद एक संग॥ ३७५॥

चौपाई

पदुमावति कह सुनौ सहेली। हौं सो कँवल तुम कुमुद नवेली॥
कलस मानि हौं तेहि दिन आई। पूजा चलौ चढ़ावहिं जाई॥
मँझ पदुमावति का जो बिमानू। जनु परभात उठा रथ भानू॥
आस पास चमकत चौंडोला[5]। दंद[6] मृदंग झांझ डफ ढोला॥
एक संग सब सोंधे भरी। देव दुवार उतरि भइँ खरी॥
स्वयं सुहाथ देव अन्हवावा। कलसं सहस एक घिरित[7] भरावा॥
पोता मँडप अगर औ चंदन। देव भरा अरगज औ बंदन[8]॥

दो०—कै प्रनाम आगे भइ, बिनति कीन्ह बहु भाँति।
रानी कहा चलौ घर, सखी होति है राति॥ ३७६॥

चौपाई

भइ निसि धनजससससिपरगसी[9]। राजैं देखि[10] पुहुमि पर बसी॥
भइ कटकई[11] सरद ससि उआ। फेरि गगन रबि चाहै छुआ॥

---

१ पटोर=(पाटम्बर) रेशमी कपड़े। २ नये चार=नवीन तौर से। ३ सोर=सोलह। ४ मसियारा=मशाल। ५ चौंडोला=एक प्रकार की पालकी विशेष। ६ दंद=एक बाजा विशेष। ७ घिरित=घृत, घी। ८ बन्दन=रोली, सिन्दूर। ९ परगसी=प्रकाशित हुई। १० देखि=राजा को देख कर भूमि पर बस गई। ११ भइ

सुनि धन भौंह धनुषगुन[1] फेरी। काम कटाच्छ कोर सों हेरी॥
जानहु नहीं पैज[2] पिय खाँचौं। पिता सपथ हौं आजु न बाँचौं[3]॥
काल्हि न होय सहे सर रामा। आजु करौं रावन सँगरामा॥
सैन सिंगार महूं है सजा। गज गुन[4] चाल अँचल गुन धजा॥
नैन समंद[5] खरग नासिका। सरमुख[6] जूझि को मो सों टिका॥

दो०—हौं रानी पदुमावति, मैं जीता सुख भोग।
तू सरवरि करु तासों, जो जोगी तोहि जोग॥ ३७७॥

चौपाई

हौं जस जोगि जान सब कोऊ। बीर सिंगार जिते मैं दोऊ॥
उहाँ तौ हनू बीर घट माहाँ। इहँ तौ काम कटक तुम पाहाँ॥
उहाँ तौ हय चढ़ि कै महि मंडौं। इहाँ तो अधर अमीरस खंडौं॥
उहाँ तो कोपि नरिंदहिं मारौं। इहाँ तो बिरह तुम्हार सँघारौं॥
उहाँ तो गज पेलौं होइ केहरि। इहाँ तो कुच कामिनि करिहेहरि[7]॥
उहाँ तो लूटौं कटक खँधारू। इहाँ तो जितौं तुम्हार सिंगारू॥
उहाँ तो कुंभी[8] गजहि नवाऊं। इहाँ तो कुच कलसन कर लाऊं॥

दो०—परा बीच धरहरिया[9], पेमराज कै टेक।
मानहु भोग छहों रितु, मिलि दोनों होइ एक॥ ३७८॥

कटकई······छुआ=पदमावती को पुनः साजसामान से तैयार देखकर राजा कहता है) शरद के चंद्रमा ने उदय होकर चढ़ाई की है, पुनः आसमान पर चढ़कर सूर्य को छूना चाहता है। व्यंग से संकेत यह है कि आज पुनः रंग महल की अटारी पर रति संग्राम की तैयारी हुई। कटकई होना=चढ़ाई की तैयारी होना। १ धनुष गुन=धनुष की भांति। २ पैज खांचना=प्रतिज्ञा करना। ३ न बांचौं=न छोड़ूंगी, रतिसमर में पराजित करूंगी। ४ गुन=तरह, भांति। ५ समंद=घोड़ा। ६ सरमुख=(सन्मुख) सामने। ७ हेहार=हहर जाय। ८ कुम्भी गज=कुंभ वाला हाथी। ९ धरहरिया=बीच बचाव करने वाला, प्रेम रूपी राजा ने दोनों का बीच बचाव हठ करके किया (और यह उपदेश दिया कि)।

३३—तैंतीसवाँ खण्ड

षट ऋतु वर्णन

चौपाई

प्रथम वसंत नवल ऋतु आई। सो ऋतु चैत बैसाख सोहाई॥
चंदन चीर पहिरि धन अंगा। सेंदुर दीन्ह विहँसि भर मंगा॥
कुसुम हार औ परिमल बासू। मलयागिरि[१] छिरका कयलासू॥
सौर[२] सुपेती फूलन डासी। धन औ कंत मिले सुख बासी॥
पिउ सँजोग धन जोबन बारी। भँवर पुहुप मिलि करैं धमारी[३]॥
होय फाग भल चाँचरि[४] जोरी। बिरह जराय दीन्ह जस होरी॥
धन ससि सियर[५] तपै पिउ सूरू। नखत सिंगार होहिं सब चूरू॥

दो०—जेहि घर कंता रितु भली, आव वसंता नित्त।
सुख बहरावैं दिवस निसि, दुःख न जानैं कित्त॥३७९॥

चौपाई

ऋतु ग्रीषम कै तपनि न तहां। जेठ असाढ़ कंत घर जहां॥
पहिरैं सुरङ्ग चीर धन झीना। परिमल मेद रहै तन भीना॥
पदमावत तन सीर सुबासा। नैहर राज कंत पुनि पासा॥
औ बड़ जूड़ तहां सोउनारा[६]। अगर पोत सुखनेत[७] ओहारा[८]॥
सेत बिछावन सौर सुपेती। भोग बिरास करहिं सुख सेती॥
अधर तँबोर कपूर भिमसेना। चंदन चरचि लाव तन बेना[९]॥
भा अनंद सिंघल सब कहूं। भागवन्त कहँ सुख रितु छहूं॥

दो०—दाखौं दाख लेहिं रस, बरसहिं आँब छोहार।
हरियर तन सुवटा[१०] कर, जो अस चाखनहार॥३८०॥

---

१ मलयागिरि=चंदन। २ सौर=चादर। ३ धमार=फाग। ४ चांचरि=होली के स्वांग। ५ सियर=ठंढी। ६ सोउनार=सोने का घर। ७ सुखनेत=सुखद। ८ ओहार=परदे। ९ बेना=खस का पंखा। १० सुवटा=सुग्गा, शुक।

चौपाई

ऋतु पावस बरसै पिय पावा। सावन भादौं अधिक सोहावा॥
कोकिल बैन पाँति बक छूटी। धन निसरी जनु बीर बहूटी॥
चमकं बीजु बरसै जल सोना। दादुर मोर सबद सुठि लोना॥
रँग राती पिउ सँग निसि जागी। गरजै गगन चौंकि कँठ लागी॥
सीतल बून्द ऊँच चौबारा[1]। हरियर सब दीखै संसारा॥
सियर[2] समीर बास सुख बासी। कामिनि फूल सेज भल दासी॥
हरियर पुहुमी धानी चोला। औ धन पिउ सँग रचा हिंडोला॥
दो०—पवन झकोरे हिय हरष, लागै सियर बतास[3]।
धन जानै यह पवन है, पवन सो अपनी आस॥३८१॥

चौपाई

आई सरद ऋतु अधिक पियारी। आसिन[4] कातिक ऋतु उजियारी॥
पदमावत भइ पूनो कला। चौदसि चांद उआ सिंहला॥
सोरह कला सिंगार बनावा। नखत भरा सूरज ससि पावा॥
भा निरमल सब धरति अकासू। सेज सँवारि कीन्ह फुलवासू॥
सेत बिछावन औ उजियारी। हँसि हँसि मिलैं पुरुष औ नारी॥
सोने[5] फूल पिरथमी फूली। पिउ धन सौं धन पिउ सौं भूली॥
चख अंजन दै खँजन दिखावा। होइ सारस जोरी रस पावा॥
दो०—यहि ऋतु कंथा पास जेहिं, सुख तिनके हिय माहिं।
धन हँसि लागै पिउ गरे, धन गर पिउ कै बाहिं॥३८२॥

चौपाई

आई सिसर ऋतु तहाँ न सीऊ[6]। अगहन पूस जहाँ घर पीऊ॥
धन औ पिउ महँ सीउ सोहागा। दुहुं अंग एकै मिलि लागा॥
मन सौं मन तन सौं तन गहा। हिये सौं हिय बिच हार न रहा॥
जानहु चंदन लाग्यो अंगा। चंदन रहे न पावै संगा॥

---

१ चौबारा=चार द्वार का बँगला। २ सियर=ठंढा। ३ बतास=हवा। ४ आसिन=कुंवार मास। ५ सोने फूल फूलना=धन और सुख से सम्पन्न होना। ६ सीउ=शीत, जाड़ा।

भोग करहिँ सुख राजा रानी। उन्ह लेखे सब सृष्टि जुड़ानी॥
जूझ दुहूं जोबन सौं लागा। बीच ते सीउ जीउ लै भागा॥
दुइ घट मिलि एकै होइ जाहीं। ऐस मिलहिँ तबहूं न अघाहीं॥

दो०—हंसा केलि करहिँ ज्यौं, कूदहिँ कुरलहिँ दोउ।
सीउ पुकारै पार भा, जस चकवाक बिछोउ॥ ३८३॥

चौपाई

ऋतु हिवंत सँग पियो पियाला। फागुन माघ सिंह सिउ स्याला[1]॥
सौर[2] सुपेती महँ दिन राती। दगल[3] चीर पहिरहिँ बहु भाँती॥
घर घर सिंहल होइ सुख भोजू। रहा न कतहुँ दुःख कर खोजू॥
जहँ धन पुरुष सीउ नहिँ लागा। जानहु काग देखि सर भागा॥
जाइ इन्द्र सौं कीन्ह पुकारा। हौं पदुमावति देस निसारा॥
यहि रितु सदा संग मैं सोवा। अब दरसन ते मोहिं बिछोवा॥
अब हँसि कै ससि सूरहि भेंटा। अहा जो सीउ बीच सो मेटा॥

दो०—भयौ इन्द्र कर आयसु, उवै सो अथवै आइ।
नागमती गढ़ चितउर, ताहि सतावौ जाइ॥ ३८४॥

१ स्याला=शृगाल, सियार। २ सौर=लिहाफ़। (बुन्देलखंड में 'सौर' बोलते हैं)। ३ दगल=रुईदार।

पदमावत

(पूर्वार्द्ध का)

शब्दकोश

(अ)

अँगवाना=अंगपर सहना ।
अँजोर=उजियाला ।
अँटना=(१) समाना ।
(२) कर सकना ।
अंत = (१) छोर, इति ।
(२) अन्यत्र ।
अंतरपट=परदा, अँतरौटा ।
अंतरिख=अंतरिक्ष, आकाश,
अँदोरू=आन्दोलन ।
अँवराउ=अमराई, आम्र बाग ।
अंस==(ईश्वरांश) भाग्यवान ।
अउरना=विचार में आना ।
अउसान=होश हवास, धैर्य ।
अकाज=(१)हानि (२) व्यर्थ ।
अकासी=चील्ह पक्षी ।
अकूत=(१) बेअन्दाज, अतुल ।
(२) अकस्मात ।
अगमन=(१) आगे ही, पहले ही ।
(२) भविष्य ।

अगाह=अथाह ।
अगाह होना=खबर हो जाना ।
अच्छर=अप्सरा ।
अछत=छत्रहीन, राज्यच्युत ।
अजि=(आज्य) घी ।
अड़ार=समूह, ढेर ।
अत्र=अस्त्र ।
अथवना=अस्त होना ।
अदल=न्याय, इन्साफ ।
अदेस=प्रणाम, असीस ।
अधियान=सुमिरनी ।
अन=(१) (अनु) तदनंतर, इसके बाद,
तत्पश्चात । (२) निश्चय ।
अनभाव=बुरा विचार ।
अनवट=अनौटा, पैर के अँगूठे का
आभूषण ।
अनाना=मँगवाना ।
अनेग=अनेक, बहुत से ।
अपछर=अप्सरा ।
अपसना=जाना, चला जाना, पहुंचना ।

अपूर=(आपूर्ण) बहुत अधिक।
अबरन (१) रंग रहित।
(२) अवर्ण्य।
अवास=रहने का स्थान।
अबिरथा=व्यर्थ, बेफ़ायदा।
अभाऊ=जो न भावै।
अभोग=अभुक्त, अछूता।
अमाना=आमके टकोरा।
अरंभ=वेग।
अरकाबां=मंत्री, मुसाहेब।
अरगला=बेंड़, रोक।
अरघान=(आघ्राण) सुगंध।
अलोप जाना=छिप जाना।
अवगाह=अथाह।
अवधान=गर्भ, हमल।
अवधारना=आरंभ करना।
अवधूत=साधु, फकीर।
असाई=(अशास्त्री) शास्त्र की प्रथा से अनभिज्ञ, नादान।
असूझ=(१) अँधेरा।
(२) बहुत अधिक।
अस्वपतिक=घोड़ सवार, शहसवार।
अस्वासा=आश्वासन, दिलासा।
अहा=था।
अहान=(आख्यान) प्रख्याति, कहावत, कहनूत, प्रसिद्धि, शोहरत।
अहिवात=(आधिपत्य) सोहाग।
अहुँठ=साढ़े तीन (३॥)।
अहेर=शिकार।

(आ)

आँकर=कड़ा, गहरा।
आँटना=(अँटना) काफी होना।
आऊ=आयु, उम्र।
आखना=(१) कहना।
(२) चलनी में चालना।
आगर=(१) सुन्दर।
(२) बढ़कर।
आछत=मौजूद रहते हुए।
आछना=होना।
आछर=अप्सरा।
आतमभूत=(१) कामदेव।
(२) कामना, वासना।
आथी=(अस्ति) नित्यवस्तु।
आदिल=न्यायवान।
आदेस=प्रणाम।
आन=दोहाई, मनादी।
आनना=लाना (आनयन)।
आयत=क़ोरान का एक मंत्र।
आरन=(अरण्य) वन, जंगल।
आसरम=आश्रय, आशा।
आसामुखी=आशायुक्त।
आसिन=कुंवार मास।

(इ)

इंदु=(१) चंद्रमा। (२) इंद्र।
इसकंदर=सिकंदर नामक बादशाह।

(उ)

उंदुर=चूहा, मूसा।
उछरना=उमड़ आना।

उघेलना=उघारना, खोलना ।

उतंत=(उत + तंत्र) जो किसी के दवाव में न रह सकै अर्थात् नव जवान, उमंग युक्त ।

उतपात=उपद्रव ।

उतायल=शीघ्र, वेगसे ।

उथला=कम गहरा ।

उनवना=घुमड़ कर झुक आना ।

उपराजना=(उपार्जन) पैदा करना ।

उपसवाँ=आस पास, इर्द गिर्द ।

उपाना=पैदा करना, उपजाना ।

उबटना=ठोकर खाना (चलने में) उपटा लगना ।

उबेहे=उभड़े हुए ।

उरेहना=चित्र लिखना ।

उरेहा=चित्र, तसवीर ।

उलथना=उलट पलट करना ।

(ऊ)

ऊभ=विद्रोह ।

ऊभना=उभड़ना ।

(ए)

एत=इतना ।

(ओ)

ओछ=नीच, कमजोर ।

ओझा=(उपाध्याय) ताँत्रिक, भूतप्रेत झाड़ने वाला ।

ओती=उतनी ।

ओथना=(किसी काम में) लगजाना, मशगूल हो जाना ।

ओनवना=घमड़ कर घिर आना ।

ओनाना=सुनना ।

ओहट=ओट ।

ओहटे=दूर, ओट में ।

(औ)

औभाऊ=अवभाव, बुरा भाव ।

(क)

कंट=(कंटक) डंक—बिच्छू का ।

कंठसिरी=कंठी (रत्नों की) ।

कंथा=गुदड़ी ।

कंसियां=एक प्रकार की चोली ।

कचपची=कृत्तिका नक्षत्र के तारों का समूह ।

कचोर=छोटी कटोरी ।

कटकई होना=चढ़ाई की तैयारी होना ।

कदरमस=मारकाट, घमासान युद्ध ।

कनक पँखुरी=पीला कमल ।

कनहार=(कर्णधार) केवट, नाव खेने वाला ।

कवि=(काव्य) कविता ।

कयलास=स्वर्ग, अति उच्च स्थान ।

कया=(काया) शरीर ।

करवँट=तकिया ।

करण=सामग्री ।

करना=(१) करनी, (२) नींबू की सुगंध का एक फूल ।

करपल्लव=हथेली।
करवत=आरा।
करवरना=कलरव करना, मनोहर शब्द करना।
करसी=सूखा कंडा, गोहरा।
करा=कला।
करिया=कर्णधार, मल्लाह, केवट।
करी=(१) अँगूठी। (२) कली।
कल=आराम, चैन।
कलपना=काटना।
कसनी=चोली, अँगिया।
कसौंदा=(१) कासमर्द नामक पौधा (२) आँवला।
कसौटी=सुरमा की रेख।
काँठा=(१) कंठा, ग्रीवभूषण। (२) किनारा, तट।
काँदो=(कर्दम) कीचड़।
काँधना=कंधे पर लेना, स्वीकार करना।
काछू=कछुआ।
काठ=कठपुतली।
कान्ह=(कर्ण) पतवार (नाव का)।
कापर=कपड़े।
कालकंट=कष्ट, कष्टप्रद वस्तु।
किंगरी=(किन्नरी) छोटी सारंगी।
कित्त=कहाँ।
कियाह=वह घोड़ा जिसका रंग ताड़ के पके फल के समान हो।
किरीरा=क्रीड़ा, खेल।
कुँई=कुमोदिनी।
कुँवना=कुआँ।
कुंकुँह=(१) रोरी, रोचना।
(२) कुंकुम, केसर।
कुरंग=हरिण, मृग।
कुरकुटा=टुकड़ा।
कुररी=टिट्टिभी, टिटिहरी।
कुरलना=क्रीड़ा समय मधुर शब्द करना।
कुराहर=कोलाहल।
कुरुवार करना=पंखों को चोंच से ठीक करना, पंख फड़फड़ाना।
कुसुमाना=मुकुलित होना, फूलना।
कुँदेरा=खराद करने वाला।
कूँद=खराद।
कूँदना=खराद पर चढ़ाना।
कूजा=एक प्रकार का गुलाब।
कूट=(१) एक कड़ुई ओषध।
(२) व्यंग युक्त हँसी।
कॆवाँच=बंदर बेल की फलियाँ।
(कपिकच्छुनाम्नी वेलि की फलियां)
केत=(१) केतकी।
(२) कितना, बहुत सा।
केवा=कमल का फूल।
कैलास=इन्द्र लोक, स्वर्ग।
कोई=कुमुदिनी।
कोँच=क्रौंच पक्षी।
कोँरी=कोमल।
कोकाह=सफेद रंग का घोड़ा।
कोरा=गोद।

(ख)

खँड़रा=रसाजैं।

खँड़वानी=(खाँड़ पानी) शरबत।

खजहजा=(खाद्यादि) अनेक प्रकार के मेवा वा खाद्य पदार्थ।

खताब=हजरत उमर के पिता।

खरिहान=ढेर, खलियान।

खसना=गिर पड़ना।

खाँड़=शक्कर, चीनी।

खाजी=खाद्य, खूराक, भोजन।

खाद्यूं=(खाद्य) भक्ष्य, खूराक।

खिखिंड=(किष्किंध) बीहड़ वन।

खिरौरी=(१) लड्डू। (२) खैरोरी खैर की गोली जिसमें सुगन्ध मिली हो।

खीर=(क्षीर) दूध।

खीहना=खीझना।

खुंभी=कान का आभूषण विशेष।

खुंटिल=कान का आभूषण विशेष।

खुरी=(खुँदी) घोड़े की एक चाल।

खुरुक=खटका।

खूँट=(१) छोर। (२) दिशा, ओर।

खेम=क्षेम।

खेलना=चलना, जाना।

खेरौरा=लड्डू।

खेवक=खेने वाला।

खेवरा=जैनी साधु विशेष।

खेह=धूल, छार।

खोँचा=कंपों का गुच्छा।

खोज=पैर का चिन्ह जो धूल वा कीचड़ में बन जाता है।

खोटिला=कर्णभूषण विशेष।

खोपा=खोपवा, जूड़ा।

खोरा=कटोरा।

खोरी=कटोरी।

(ग)

गजपेल=हाथियों का आक्रमण।

गड़रू=एक पक्षी जो 'तुही तुही' शब्द बोलता है।

गड़ौना=गड़ौता पान।

गथ=धन, पूंजी।

गय=गज, हाथी।

गरर=गर्रे रंग का घोड़ा।

गरियार=वह बैल जो चलते समय बैठ बैठ जाय।

गलसुई=गल तकिया, गालों के नीचे रखने के तकिये।

गरेरना=चारो ओर से घेरना, चारो ओर घूमना।

गर्वेजा=बातचीत, शोर गुल।

गहबर=गद्गद हृदय।

गहर=देर।

गाढ़=(१) संकट, विपत्ति।
(२) तंग, संकुचित।
(३) गड्ढा।

गारना=निचोड़ना ।
गारुड़=गारुड़ी, सर्प विष चिकित्सक ।
गारुर=गरुड़ पक्षी ।
गिलावा=गारा (फा० गिल+आब) ।
गीव=ग्रीव, गला ।
गुन=(१) वास्ते, लिये ।
(२) वजाय ।
गुरौरा=मीठा (प्रेम) ।
गेंडुवा=तकिया ।
गेरा=चौगिर्द ।
गोझा=पिराक, कोसिली ।
गोटा=गोला ।
गोटिका=गुटिका, गोली ।
गोटेका=गुटिका, गोली ।
गोपीता=(१) गोपी ।
(२) सुरक्षिता ।
गोसांई=(१) मालिक ।
(२) परमेश्वर ।
गोहन=साथ
गौरी=(१) एक राग विशेष ।
(२) गौड़ ब्राह्मणों की स्त्रियां ।
(३) सफेद मल्लिका लता ।

[घ]

घट=शरीर ।
घरी=(१) शुभ मुहूर्त ।
(२) घरिया (सोना पिघलाने की)
घाल=घेलौना, घलुवा ।
घाल न गिनना=कुछ भी न समझना ।
घिरिनि परेवा=गिरह बाज कबूतर ।
घरना=(१) कबूतर की भांति बोलना ।
(२) गलना ।

(च)

चक्कवै=चक्रवर्ती ।
चक्र धँधारी=गोरख धंधे का चक्र ।
चखु=नेत्र ।
चतुरदशा=चौदह ।
चरचना=अनुमान कर लेना ।
चरहँटा=घमसान युद्ध ।
चांचरि=फाग के स्वांग ।
चाँड़=अधिक ।
चाल=यात्रा की साइत ।
चालन हार=चलौवा, लेजाने वाला ।
चालना=कहना ।
चाह=(१) खबर समाचार ।
(२) इच्छा ।
चाहना=देखना ।
चाहि=बढ़कर ।
चिकुआ=चीकट नामक रेशमी कपड़ा ।
चिनगी=चिनगारी ।
चियाना=चुप होजाना ।
चिरकुट=टुकड़ा, फटा पुराना कपड़ा ।
चिरहँटा=पक्षी पकड़ने वाला बहेलिया ।
चिरिहार=चिड़ीमार, बहेलिया ।
चीना=चीनिया कपूर ।
चुहचुही=एक पक्षी विशेष जो बड़े प्रातः काल 'चुह चुह' शब्द करता है ।

चूरा=कड़ा ।
चेटक=(१) जादू ।
(२) चालाकी ।
चोल=कुरता ।
चौंडोल=(चंडूल) पालकी ।
चौक=(१) चार वस्तु का समूह ।
(२) आगे वाले चारो दाँत ।
चौवारा=चार द्वार का बँगला, चौपार बैठक ।
चौमुख=(१) चारो ओर ।
(२) चार मुखका ।

(छ)

छंद=धोखा ।
छत्र=छत्रधारी, राजा ।
छपा=(१) छिपा हुआ ।
(२) रात्रि ।
छरना=(१) छिन्न भिन्न हो जाना ।
(२) छलना ।
छात=छत्राकार कोई वस्तु ।
छाजना=(१) शोभा देना ।
(२) उचित जँचना ।
छावा=बच्चा ।
छायल=गुण्डा ।
छीज=हानि, नुकसान ।
छीपिनि=छीपा की स्त्री ।

(ज)

जत=जितना ।
जनम=जीवनकाल ।
जपा=जप करनेवाला ।
जमंकात=जंमदंड, जम राज का अस्त्र ।
जमवार=(यमद्वार) (१) मृत्यु ।
(२) यमपुर ।
जलसुत=मोती ।
जाँवत=(यावत) सब ।
जातरा=(यात्रा) दर्शन पूजनादि ।
जार=जाल ।
जियाउर=जी, मन, चित्त ।
जीना=(संज्ञा) जीवन ।
जुलक़रन=(१) जिसकी कुंडली में दो उच्च ग्रह हों, भाग्यमान ।
(२) जिसने २० वर्ष राज्य किया हो ।
जूड़=ठंढा, शीतल ।
जेंवन=भोजन ।
जेत=जितना ।
जोहनहार=मुंह जोहने वाला, सेवक ।
जोहारना=प्रणाम करना ।

(झ)

झंख=दुःख ।
झरक=झलक ।
झाल=बड़ा टोकरा जिसमें पूड़ी पकवान रखते हैं ।
झोंपा=गुच्छा, फुंदना ।

(ट)

टाड़=बहुँटा, बाहुभूषण ।
टेकना=सहारा देना ।

(ठ)

ठाठर=ठाठबाट ।

ठाहर=स्थान ।

ठेघा=पहाड़, टीला ।

ठोर=चोंच ।

(ड)

डग=फाल, क़दम, पैग ।

डफार छाँड़ना=फूटफूट कर रोना ।

डयन
डहन } डैना, बाजू (पक्षी के)

डाँक=डंका ।

डाँड़=(१) डंडा, चोब ।
(२) सीमा, हद ।

डाभ=दाग, काला चिन्ह ।

डार=शाखा ।

डिढ़=दृढ़, मज़बूत ।

डेली=डलिया, टोकरी, झाँपी।

(ढ)

ढाँख
ढाख } =पलास वृक्ष ।

ढुकना=ताक लगाना ।

(त)

तंत=(१) ठीक बराबर, न कम न ज्यादा । (२) तांत । (३) पूर्ण ।

तंतु=ताँत, रोदा, तार ।

तँबोल=पान ।

ततखन=तत्क्षण, फौरन ।

तनु=तनिक, थोड़ा सा ।

तप=तपस्वी, तप करनेवाला ।

तमचुर=(ताम्रचूड़) मुर्गा ।

तयना=तपना ।

तरवोर=(तलबोर) गहराई की तह ।

तरुनापा=जवानी, युवावस्था ।

तलफना=खौलना ।

तहियै=तभी, उसी समय ।

तार=ताड़ वृक्ष ।

तारामंडल=एक प्रकार का कपड़ा जिसमें सोने की कलाबत्तू की बूटियां होती हैं ।

तारी=ताली, कुंजी ।

तालिका=कुंजी ।

तुखार=सफेद घोड़ा ।

तुरीं=घोड़ा ।

तुलाना=निकट पहुँचना ।

तुपार=(१) सफेद रंग का घोड़ा ।
(२) पाला, बर्फ ।

तूर=तुरही ।

(थ)

थतिहार=थाती रखने वाला, जिसके यहाँ थाती रक्खी जाय ।

थिर मारना=स्थिर होना ।

(द)

दंद=सोच, फिक्र, संदेह ।

दंद=एक प्रकार का बाजा ।

दई=ईश्वर ।

दगल=रुईदार कपड़ा ।

दगला=लबादा, लंबा जामा।
दत्त=दान।
दमन=दमयंती (रानी)
दयेतां=दैत्य।
दर=(१) दल, सेना, फौज।
(२) द्वार, दरवाज़ा।
दसौं अवस्था=मरण।
दसौंधी=भाट।
दस्तगीर=सहायक।
दहुँ=धौं, न जाने।
दातार=दानी।
दादुर=मेंढक।
दारुन=कठिन।
दिन=शुभ मुहूर्त।
दिनअर=(दिनकर) सूर्य।
दिपना=चमकना।
दिव्य=अति सुन्दर।
दियारा=दीपक समान उज्ज्वल।
दिसंतर=देशान्तर।
दीन=मत, संप्रदाय।
दुइज=द्वितिया का चंद्रमा।
दुनियाई=संसार, दुनिया।
दुहेला=दुःख, दुखदाई।
दूम=अधिकता।
दूमन=(दो + मन) दुविधा।
दोहाग=(दौर्भाग्य) दुर्भाग्य।

(ध)

धंधा=काम काज।
धँधोर=धंधर, लपट, ज्वाला।
धन
धनि
धनिया } (धन्या) सुन्दर स्त्री, स्त्री।
धमार=वह खेल जिसमें बहुत कुछ उछल कूद और हो हल्ला होता है।
धमारि=फाग का गान।
धरहरिया=बीच बचाव करने वाला।
धात कमाना=कीमियाँ बनाना।
धानुक=धनुष धारी।
धोती=धोया हुआ वस्त्र।

(न)

नग=रत्न, (संज्ञा)।
नग=(विशेषण) सर्वोत्तम।
नर=नरसल
नाउत=तांत्रिक, झाड़ फूंक कर्ता।
नाका=तंग द्वार, निकास।
नाठना=नष्ट करना।
नाथ=(१) जोगी, साधू।
(२) मालिक।
(३) पति, खसम।
(४) नाक में पहनाई रस्सी नकेल।
(५) नथ, नासा भूषण।
नित=नित्य।
निंबकौरी=नीब के फल।
निआन=(निदान) अंत में।
निकाज=बेकाम का, खराब।
निछत्र=रंक, धनहीन।
निजु=निश्चय पूर्वक, निःसंदेह।

निजुकै=निश्चय करके।
निमारा=अलग, न्यारा।
निबूधी=निर्बुद्धि।
निमत=जो मता न हो, मद रहित।
निरमर=निर्मल।
निरारे=न्यारे, अलग।
निभरोसी=(निर्बलीयसी) निर्बल।
निरापन=(अपना नहीं) पराया।
निसंसइ=निःशंसय।
निसरना=निकलना।
निसाँस=(१) निःश्वास।
(२) निःसंशय।
निसिअर=(निशिकर) चंद्रमा।
नेगी=(नेग लेने वाले) पौनी, नौकर चाकर।
नेगे लगना=अच्छे काम में लगना, काम में आना।
नैहर=मायका, मातृ गृह।
नौती=एक प्रकार का पान।
नौशेरवां=फारिस देश का एक प्रसिद्ध राजा।

(प]

पँखुरी=पुष्प दल, पँखुड़ी फूलकी।
पंडुक=पेंड़की, फाखता।
पँवारी=टेढ़ी।
पखाल=बैल की खाल की मशक।
पटवाहिन=कपड़ा पहनाने वाली दासी।
पटोर=रेशमी कपड़ा।
पतार=पाताल।
पथिक=मुसाफिर, यात्री, बटोही।
पदारथ=रत्न।
पदुम=हीरा।
पनवारी=होठों पर पान की लाली की धड़ी।
परजापति=राजा।
परवता=सुग्गा।
परलौ=प्रलय, विनाश।
परवान=(प्रमाण) सत्य, निश्चित।
परहेली=निरादृत, अपमानित।
परगन=परिजन, नौकर चाकर।
परिहसु=खिसी, दुःख, खेद।
परेवा=कबूतर।
पलुहना=पल्लवित होना, द्रवित होना, पुनः सतेज होना।
पवन=जोर, बल, शक्ति।
पवारना=फेंकना।
पसार=तैयारी।
पसेव=पसीना।
पाँवरी=(१) सीढ़ी, जीना।
(२) खड़ाऊँ।
पाजा=पियादा, पदचर।
पाट=(१) सिंहासन।
(२) रेशम।
पाट परधानी=प्रधान पटरानी।
पादत=पद्धत, पाठ, शिक्षा।
पायरा=रकाब (घोड़े के सामान की)
पारधी=व्याध, बहेलिया।
पारथी=पार्थिव पूजन करने वाला।

पारना=सकना।
पारि=तालाब का भीटा, सरोवर के इर्द गिर्द का बाँध।
पिंडवांही=
पिल=जाँत का पाट, चक्की का पाट।
पीर=गुरु।
पुछारि=(पिच्छालि) मोर, मयूर।
पुरविल=(पूर्वकाल) (१) पूर्व कर्मानुसार फल।
(२) आकबत, अगला जन्म।
पुरान=क़ोरान शरीफ।
पून्यो=पूर्णमासी।
पूरना=फूँकना, बजाना।
सिंगीपूरी=सिंगी फूंकी वा बजाई।
पृथिमी=पृथ्वी, दुनिया, संसार।
पेई=पूँजी, धन।
पेड़ी=एक प्रकार का पान विशेष।
पेम चँदुरियाँ=एक प्रकार की छोटी टिकुलियाँ जिनसे स्त्रियों के भाल पर कुछ रचना की जाती है।
पैंड़=रास्ता, मार्ग।
पैंत=दाँव, बाजी।
पैग=डग, फाल, कदम।
पैसार=पैठारी।
पोढ़ कै=मजबूती से, पुष्टता से।
पौनार=कमलनाल।
पौनी=प्रजागण (नाऊ बारी इत्यादि)।
प्रतीहार=(१) तीतर पक्षी।
(२) द्वारपाल।

(फ)

फँदिया=एक प्रकार की चोली।
फुलायल=फुलेल, सुगंधित तैल।
फेरु=मंडप, मँडवा।

(ब)

बंदन=रोरी, सेंदुर।
बकाउरि=(गुल) बकावली।
बकुचन=बहुत से।
बक्कुर लेना=बोलना।
बखान=(व्याख्यान) वर्णन।
बचा=वाचा, वचन।
बजागि=बज्राग्नि, बिजली।
बतास=वायु।
बनजारा=(वाणिज्यवाला) व्यौपारी।
बनापति=(बनस्पति) वृक्षलतादि।
बनिज=(१) व्यौपारी।
(२) लेन देन।
(३) सौदा सुलुफ।
बर=बल।
बरगी=तिपतिया बूटी जो रसायन बनाने में काम आती है।
बरतना=(१) काम में लाना।
(२) बर्ताव करना।
बरनक=वर्णन।
बरना=बन्ना नामक वृक्ष (एक प्रकार का पलास)।
बरमचर्ज=ब्रह्मचर्य्य।
बरम्हाउ=आशिर्वाद।

बरम्हाना=आशिर्वाद देना ।
बराजना=(व्रजन) चलना, जाना ।
बरियार=बलवान, जोरावर ।
बरेंड़ी=बड़ा शहतीर ।
बरै=(वलय) चूड़ी, कंकण ।
बरोक=बरेखी, विवाह सम्बन्ध, नाता ।
बरोक=(१) (बलौक) बली, ज़बरदस्त ।
(२) सैन्य बल ।
बरोक=बरच्छा, फलदान ।
बलय=चूड़ी ।
बलिया=चूड़ियां ।
बसा=(१) बरैं, भिड़, बरैंया ।
(२) शहद की मक्खी ।
बसाना=सुगंध फैलाना ।
बसियाना=वश में कर लेना ।
बसीठ=दूत, पैगंवर ।
बहु=(वधू) बहू ।
बहोरना=लौटाना ।
बाँकना=टेढ़ा होना ।
बाँद=(बंदा) सेवक, चेरा ।
बाँह=हिमायत, आश्रय ।
बाँह देना=हिमायत करना, पक्ष करना ।
बाज=(वर्ज्य) बिना, बगैर छोड़ कर ।
बाजना=लड़ना, भिड़ना ।
बाजि=बिना, बगैर ।
बाट=रास्ता, मार्ग ।
बाढ़ी=लाभ ।
बाद मेलना=बाजी लगाना ।
बादि कै=हठ से ।

बान=(वर्ण) रंग ।
बानि=आदत ।
बार=द्वार, दरवाजा ।
बारह बानी=बारह वर्णी, बारहो सूर्य के रंग का स्वच्छ कंचन, खरा सोना का सा ।
बारा=बालक ।
बासना=सुगंध ।
बिंदक=(विद) जानने वाला ।
बिकरार=दुखित, बेकरार ।
बिछूना=बिछुड़ा हुआ ।
बिछोई=बिछुड़ा हुआ ।
बिजाउरि=बीजों की खीर ।
बिधंसना=विध्वंस करना, नष्ट करना ।
बिधना=ईश्वर ।
बिधाता=व्यवस्थापक, प्रबन्धक ।
बिधि=ईश्वर ।
बियोगी=दुखी ।
बिरवा=वृक्ष, पौधा ।
बिरस=अनबन, मन मोटाव ।
बिरोग=दुःख, संताप ।
बिलग मानना=अप्रसन्न होना ।
बिलोन=(वि + लावण्य) असुंदर, कुरूप ।
बिसँभार=(बेसँभार) बेहोशी ।
बिसमौ=(१) दुःख, सोच ।
(२) (विस्मय) संदेह ।
बिसरामी=विश्राम देने वाला ।
बिसवासी=(विश्व + आशी) बहुत खाने वाला, बड़ा दुखदाई ।

विसहर=(विषधर) सर्प ।
विसारे=विषैले ।
विहान=सवेरा ।
विहाना=बीतना (समय का) ।
विहूना=विहीन ।
बीजु=बिजली ।
बीनना=चुनकर निकालना ।
बीना=खस, उशीर ।
बीहर=(१) बीरर, जो बहुत घना न हो।
(२) अलग, जुदा, पृथक ।
बुका=अबीर (गुलाल) ।
बूत=बल, जोर ।
बेंदुरी=बिंदुली, टिकुली ।
बेध=(१) छेद, सूराख ।
(२) निशाना, लक्ष्य ।
बेलि=बेलिया, कटोरी ।
बेसाहना=खरीदना, मोल लेना ।
बेसाहनी=खरीद ।
बैकुंठ=ऊपर के सातो लोक ।
बैन=वेणु का पुत्र राजा पृथु ।
बैसंदर=(वैश्वानर) अग्नि ।
बैसारना=बैठालना ।
बोल=वचन, प्रतिज्ञा ।
बोलाह=वह घोड़ा जिसकी गर्दन और दुम के बाल सोने के समान पीले हों ।
बोहित=नाव, जहाज ।
ब्यवस्था=दशा, हालत ।
ब्यवहरिया=धनी, ऋण दाता ।
ब्रह्मंड=आकाश (ऊपर अष्ट भये ब्रहमंडा) ।

(भ)

भख=भोजन, खूराक ।
भव=भय, डर ।
भांजना=तोड़ना, बिगाड़ना ।
भांड=मिट्टी का पात्र ।
भार=बड़ा काम ।
भासवती=(भास्वती) ज्यौतिष का एक प्रसिद्ध और प्रमाणिक ग्रंथ ।
भिंग=बाधा, अशुभ घटना ।
भिनसार=(भानु + सरन) सवेरा ।
भीउ=भीमसेन ।
भीमसेनी=एक प्रकार का कपूर ।
भुइँफरी=भूमिफली नाम्नी एक लता विशेष जिसके फल कड़ू होते हैं ।
भूँजना=भोगना, भोग करना ।
भृंगराज=भुजंगा पक्षी ।
भेरीकार=भेरी बजाने वाला ।
भोला=अज्ञान, नादान ।
भौकस=(भुवौकस) भूमिपर रहनेवाले जीव, थलचर ।

(म)

मंजूसा=संदूक, झाँपी ।
मकु=शायद, कदाचित ।
मखदूम=पूज्य, सेव्य ।
मढ़=घर ।
मतना=(१) सम्मति लेना, सलाह मानना । (२) सलाह करना ।
मधु=(१) मदिरा । (२) चैत मास ।

मनई=मनुष्य ।
मनसना=मनशा करना, इच्छा करना ।
मनसाना=साहस करना ।
मनिमाथा=शिरोमणि ।
मनुहारि=खातिर, सत्कार ।
मनोरा झूमक=एक प्रकार का गान ।
मयन=(मदन) कामदेव ।
मयन=मोम ।
मया=(१) दया, कृपा । (२) मोम ।
मयालु=कृपालु ।
मयूर=मोर ।
मरगज=मीड़ी हुई, मलगजी ।
मरजीया=गोता खोर (मोती निकालने वाला) ।
मरम=(१) भेद, असल तत्व ।
(२) कदर, आदर ।
मलयगिरि=(१) घिसा हुआ चंदन ।
(२) चंदन का वृक्ष ।
(३) मलयागिरि पर्वत ।
मष्ट=मौन, खामोश ।
मसवासी=वह साधु जो एक स्थान पर एक मास ठहरता है ।
मसि=(१) स्याही । (२) दवात ।
(३) कालिख ।
मसियारा=(१) मशाल ।
(२) मशालची ।
महर=दहियर पक्षी ।
माँजरि=हड्डियों की ठठरी ।
माँझी=बीच में पड़ने वाला ।
मात=मता हुआ, मस्त ।
मानावा=(मानव) मनुष्य, मनई ।
माया=(१) धन । (२) माता । (३) छल, कपट, धोखा ।
मीत=मित्र, दोस्त ।
मुरशिद=पथदर्शक, गुरू ।
मूसना=लूटना ।
मेंजा=मेंढ़क ।
मेघावरि=मेघावली, मेघसमूह ।
मेद=(१) कस्तूरी । (२) इत्र ।
(३) सुगंधित द्रव्य ।
मेघौना=(मेघवर्ण) एक रेशमी वस्त्र । विशेष ।
मेरवना } =मिलाना ।
मेराना }
मेलना=डेरा करना, पड़ाव डालना ।
मेलान=पड़ाव ।
मेहरी=स्त्री ।
मैन=मोम ।
मैमंत=मता हुआ, मस्त ।
मोख=मोक्ष, छुटकारा ।
मोतीचूर=स्वच्छ और निर्मल ।
मोरन=शिखरन (सुगंधित द्रव्य तथा मिसरी युक्त मट्ठा वा दही ।)

(र)

रंग=(१) प्रेम (अनुराग)
(२) लुत्फ़, मज़ा, आनन्द ।
रजवार=राजद्वार ।
रतना=प्रेम करना ।

रथवाह=सारथी, रथवान ।
रसना=(१) (क्रि०) अनुरक्त होना ।
(२) (संज्ञा) जवान, जीभ ।
रसा=पृथ्वी ।
रहचह=बातचीत, संभाषण ।
रहस=आनंद ।
रहसना=हँसी मज़ाक करना ।
रांध परोस } =निकट
रांध
राकस=(राक्षस) राक्षस ।
राकस=(सं० रक्षस)=रक्षक ।
राता=लाल ।
रामजन=राम भक्त ।
रीसी=(सं० ऋष्या) एक प्रकार की मृगी विशेष जिसकी गर्दन बहुत सुन्दर होती है ।
रुद्र=रुद्राक्ष ।
रुहिर=रुधिर, खून ।
रुं=रोम, वाल ।
रूप=चांदी ।
रेंगना=(सं० रिंगण) चलना ।
रेह=रेहू, शोरा मिट्टी ।
रोक=नगद रुपया, रोकड़ ।
रोज=(रोदन) रोना ।
रोर=हल्ला गुल्ला, शोर गुल ।
रोसन=प्रसिद्ध, (रोशन) ।
रौताई=ठकुराई, मालिकपन ।

(ल)

लखन=लक्षण
लगी=(लग्गी) लंबा बांस ।
लटा=(१) खीन, दुबला पतला ।
(२) खराब, बुरा ।
लच्छि=लक्ष्मी ।
लहर=एक प्रकार का रेशमी वस्त्र ।
लहरि=लू, सूर्यताप की गर्मी ।
लाड़=प्यार, दुलार ।
लिखनी=कलम, लेखनी ।
लीक=लकीर ।
लूसना=लूटना ।
लेसना=जलाना ।
लोनी=सुन्दर, अच्छी ।
लोवा=लोमड़ी ।
लौकना=(१) चमकना, दमकना ।
(२) दिखाई पड़ना ।

(स)

सँजोइल=साज समान से तैयार, लैस, लिवरी वर्दाना से दुरुस्त ।
संजोउ=सामान, सामग्री ।
सँधान=अचार ।
संसौ=संशय, संदेह, खटका ।
सइं=से ।
सऊं=(सौंह) सामने ।
सकेत=(१) तंग । (२) संकोच ।
सखु=सुख, आनंद ।
सतवरग=गेंदा ।
सत्त=सत्य संधता ।
सदूर=(शार्दूल) सिंह, व्याघ्र ।
सनरास=एक प्रकार का पान :

सबाई=सब कुछ ।
समदना=मिलना, संबंध करना ।
समापति=संपूर्ण, पूर्ण ।
समीर=हवा, वायु ।
सर=सरा, चिता ।
सरवरि=बराबरी, समता ।
सराग=(शलाका) लोहे की सीख ।
सरि=बराबरी, समता ।
सरेख=(श्रेष्ठ) (१) सर्वोत्तम,
(२) समझदार ।
सरेखा=(सलेख) पढ़ा लिखा, शिक्षित ।
ससिवाहन=मृग ।
सहसँक=भय, डर ।
सहलंगी=साथ लगने वाला ।
सांकर=(१) संकट । (२) जंजीर ।
(३) तंग, सकेत ।
सांठ=(१) ऊख । (२) पूंजी ।
सांधना=(१) सानना, मिश्रित करना ।
(२) संधान करना (धनुप पर बाण) ।
सांवर=(संबल) राह का खर्च ।
सावकरन=श्याम कर्ण घोड़ा ।
साउज, सावज=वनजंतु (सिंह, भालु इत्यादि)
साउज=(शवज) शिकार, वनजंतु ।
साका=(१) नाम का स्मारक कोई चिन्ह
(२) समय, अवधि ।
साखी=(१) वृक्ष । (२) गवाही ।
साजना=साज सामान, सामग्री ।

साध=अभिलाषा ।
सामुद्रिक=अंग लक्षणों से शुभाशुभ फल कहने का शास्त्र ।
सायर=सागर, समुद्र ।
सारी=(१) चौपर ।
(२) गोटी (चौपड़ की)
(३) स्त्री वस्त्र विशेष ।
सारौ=शारिका पक्षी, मैना ।
साल=(१) छेद (२) दुःख ।
सिंगारहाट=वेश्याओं का बाज़ार, चकला, सराय ।
सिदिक=(अरबी) सत्य, विश्वास, ईमान ।
सिदीक=सत्यवादी, सच्चा ।
सिद्ध=योगी ।
सियर=(शीतल) ठंढा ।
सिरजना=(सं०) सृष्टि ।
सिरमौर=शिरोमणि ।
सिराना=शीतल होना ।
सिरीपंचिमी=(श्रीपंचमी) वसंतपंचमी ।
सिवसाज लेना=कैलास वासी होना, मरजाना ।
सिस्ट=ज़ंजीर, साँकर ।
सीउ, सीव=शीत, सरदी, ठंढक ।
सुगाना=किसी पर संदेह करना ।
सुठि=बहुत ।
सुपेती=तोशक, बिछावन ।
सुभर=पूरे, बड़े, पूर्ण ।

सुरखुरू=(सुर्खरू) मान्य, आदरणीय।
सुलतान=बादशाह, सम्राट।
सुलैमाँ=(सुलैमान) एक प्राचीन यहूदी राजा जो बड़ा प्रतापी और दानी था
सुहेला=एक सितारा जो अरब देश के यमन प्राँत से दिखलाई पड़ता है। लोग मानते हैं कि इसके उदय से कीड़े मकोड़े मर जाते हैं और ऊटों के चमड़े सुगंधित हो जाते हैं।
सूक=सुक्र (ग्रह)
सूतना=सोना, निद्रा लेना।
सूरनवाई=शूर वीरों को (झुकाना) जीत लेना।
सेती=से।
सेवरा=जैनी साधु विशेष।
सैंतना=संचित करना।
सोंटिया=चोबदार, नकीब।
सोंधा=(१) सुगंध।
(२) सुगंध द्रव्य।
सोग=शोक।
सोत=(स्रोत) रोमकूप।
सोधु=पता, खोज।
सोने फूल फूलना=धन संपन्न रहना।
सौंर }
सौर } =चादर, रजाई, ओढ़ना।
सौंह=(१) सामने।
(२) सौगंद, कसम।
स्याल=(श्रृगाल) सियार, गीदड़।
स्यों=सहित, समेत।
स्वैं=स्वयम्, खुद।

(ह)

हँकारना=बोलाना।
हडावरि=शरीर का अस्थि समूह।
हनुवँत=(हनुमंत) बंदर।
हनिवत=बंदर।
हरि=बंदर।
हरियर=हरा, सब्ज।
हरिहित=(सर्प का प्यारा) चंदन।
हरुअ=हलका।
हय=घोड़ा।
हस्ती=हाथी।
हांसुल=हंसवत् सफेद रंग का घोड़ा।
हाट=(१) बाजार। (२) दूकान।
हातिम=अरब देश का एक प्रसिद्ध दाता।
हाथी देना=(१) सहारा देना।
(२) हाथ मिलाना।
हारिल=हरे रंग का एक पक्षी विशेष जो सदैव चंगुल में लकड़ी पकड़े रहता है।
हियाव=हिम्मत, साहस।
हिरकाना=निकट रखना।
हिलगाना=उलझाना।
हीर=(१) हीरा (रत्न)।
(२) सार भाग।
हुत=द्वारा, जरिया।
हेहरि=हहरना, भयभीत होना।
हौर=हौरा, शोर।